



# आर्थिक और औद्योगिक जीवन बुसकी समस्यायें और हल

भाग - १

गांधीजी

संग्रहक जीर सपादक  
एच० बी० खेर



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर  
अहमदाबाद-१४

मुद्रक और प्रकाशक  
जीवणजी डाह्याभाभी दसाभी  
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

© नवजीवन टस्ट १९६१

पहली आवृत्ति ३

₹० ४००

अगस्त १९६१

## प्रकाशकका निवेदन

आर्थिक और औद्योगिक जीवनस सम्बन्धित प्रश्ना पर गांधीजीकी रचनाआका श्री व्हा० वी० खेर द्वारा सम्पादित यह मकलन प्रकाशित करत हुअ हमें बहुत खशी होती है। दुनियामें और अपनी पचवर्षीय याजनाअकि द्वारा सञ्चारन जा औद्योगिक और आर्थिक नीति अपनायी है अुसक कारण खामकर हमार दामें आजकल अिस विषयका बहुत महत्त्व है। अिसलिअे अिस मग्रहका प्रकाशन बहुत समयाचित है और हम आगा करते ह कि अिस पुस्तकस अुन लागकी अेक बडी आवश्यकताकी पूर्ति हागी जा अिस सम्बन्धमें राष्ट्र पिताके विचारा और आदर्शको जानना चाहत ह और अुनक अनुसार योजना करना चाहत ह।

वसे अिस विषय पर हमारे द्वारा प्रकाशित यह पहली पुस्तक नहा है। गांधी-आहित्यक पाठक जानते ह कि अिस विभाग और महत्त्वपूर्ण विषय पर और अिसक विभिन्न पहलुआ पर हम अभी तक काफा पुस्तकें प्रकाशित कर चुक ह—अस सेंट परसेंट स्वतन्त्री खानी क्या और कस हमारे गांधीका पुनर्निमाण अहिंसक समाजवाङ्की ओर आलि। अिस सग्रहकी विशेषता यह है कि यह अिस प्रश्नके सारे पहलुआका जन सुनियोजित क्रमके अनुसार जेक ही पुस्तकमें अुपलब्ध कर दता है और अुसका सम्पादन अत्यत साग्यतापूर्वक असे ढगसे किया गया है कि सामान्यत आधुनिक दुनियाके और खासकर भारतक सामाजिक-आर्थिक और औद्योगिक सवाल पर गांधीजीके विचार ह्यारे सामन बिल्कुल स्पष्ट हो जात ह।

पुस्तकके परिश्रमी संपादकने अिस विषय पर गांधीजीक विचारोको अक साथ और सुसम्पूर्ण रूपमें पैग करनक लिअे जा मामग्री अिकन्ठी का बह बन्त ज्यादा थी अिसलिअ यह ज्यादा अच्छा समझा गया कि अुसका ठीक ढगम विभाजन कर लिया जाय और अुने खडामें प्रकाशित किया जाय। विद्वान सम्पादकन यह काय बहुत अच्छी तरह कर लिया है।

सारी सामग्री अगारह विभागोंमें बाट दा गयी है और चने हुअ अण प्रत्यक विभागमें अक निश्चित क्रमक अनुसार रखे गथे ह। अिसक सिवा, विद्वान सम्पादकने अक लम्बा भूमिका लिखकर अिन सब विभागका सारी सामग्रीका सार

और गांधीजीके विचारोकी अक स्पष्ट तसवीर दे दी है। य अठारह विभाग  
जुनकी अपयक्तताके अनुसार तीन खंडमें बाट दिय गय ह जिनकी पृष्ठसंख्या  
कुल मित्राकर करीब ८००\* हो गयी है।

पहले खंडमें गांधीजीकी आर्थिक और औद्योगिक विचारधाराके बुनियादी  
सिद्धांतका विवरण है। अिस पहले खण्डमें सम्पूर्ण सग्रहके पहले चार विभाग  
आ जाते ह।

गांधीजीक अनसार स्वदेशी अपन पडोसीके प्रति मनुष्यका कतब्य बतान  
वाला सिद्धान्त है। अिस दष्टिसे देता जाय तो यह सिद्धान्त मनष्यके आर्थिक  
धमका निरूपण करता है। आर्थिक और औद्योगिक सघटनका सही ढांचा  
आर्थिक सत्ता और उत्पादनका विवेकीकरण खानी और प्रामोद्योग आदि  
विषया पर गांधीजीके विचाराका स्रोत यही बनिगानी सिद्धांत या। गांधीजीके  
दशकके अिस 'यापक' पहल और खानी तथा प्रामोद्योग आदि असकी  
निष्पत्तियाका सग्रह सपादकन दूसरे खण्डमें किया है। अिस दूसरे खण्डमें  
अगत सात विभागाका समावेश हुआ है।

अिस समस्याका सारा विवेचन पश्चिमी अद्योगवादकी पष्ठभूमिमें किया  
गया है। आजकल हम सब यह स्वीकार करन लग ह कि यह पश्चिमी  
अद्योगवाद आर्थिक जीवन और आर्थिक सघटनका अक बहुत ज्यादा केनीकरणकी  
दिगामें के जानवाग्रा सिद्धांत है। और अिसमें कारणभूत ह आधुनिक विज्ञान  
यत्र विज्ञान साम्राज्यवादी 'यापार और 'यवसाय तथा राजनीति। ब्रिटिश  
शासनमें आर्थिक और औद्योगिक सघटनकी अिस प्रणालीका — जा अपनी  
जनाकी समस्याओको जम देती है — हमन काफी अनुभव लिया है। गांधीजीन  
अिन सब समस्याओको भी छा है और सत्य तथा अहिंसाक अपन जीवन  
दशकके अक हिस्सके तौर पर सत्याग्रहके अरन अनपम गस्त्रका प्रयोग  
जन पर किया है। अुनके विचाराका यह हिस्सा अिस पुस्तकके तीसरे खण्डमें  
सगहीत आ है जिसमें बाकी सात विभाग ह।

अिन तीना खण्डमें स प्रत्येकक साथ असकी अपनी सूची जोड दी  
गयी है। प्रत्येक खण्डमें पछाकी गिनता अलग अलग हुआ है।

सग्रहका यह सारा काम संपादन शुद्ध प्रमकी भावनासे किया है और  
अिसमें अक कुछ कीमती वप त्वक आ ह। अुन्होन अिस विषय पर गांधीजीके

\* नय परिवर्धित संस्करणमें पृष्ठसंख्या करीब ९ हो गयी है।  
यह द्विती अंशवाद सितंबर १९५९ में छप नय संस्करणका ही है।

विचाराका वैज्ञानिक अध्ययन करलका निश्चय किया और जिनके लिए आवश्यक अनुसंधान-कार्यको एक योजना बनायी। जिसका परिणाम अब जिस पुस्तकके रूपमें भेंट किया जा रहा है। श्री गकराज वकरने पुस्तकके लिए प्रस्तावना लिखनकी महारवानी की है, जिसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। मैं श्री ही० बी० सरका भाष्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अपने सुधीय अध्ययनका यह फल प्रकाशतके लिए नवजीवन ट्रस्टको सौंपा। हम यह पुस्तक जिन आगासे प्रकाशित कर रहे हैं कि हमारे राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी आजकी स्थितिमें हमारे लिये और अकेले इतक दुनियाके लिये भी— जो अनजाने ही सहा, शान्तिकी अब यवम्बाका स्वार्थमें है— यह अुपयोगी सिद्ध होगा।\*

१५-१-५७

---

\* प्रथम अग्रजी मस्करणका निम्न ।



## आभार-प्रदर्शन

आर्थिक और औद्योगिक जीवन — अनुका समस्यायें और हल का यह पृथक् भाग गांधीजीकी कल्पनाक अहिंसक समाजवादीके लक्ष्य और अंशके भागका वर्णन करता है। दूसरे भागमें गांधीजीकी आर्थिक सिद्धांतका वर्णन है। तीसरे भागमें खेती और अद्योगस सम्बन्धित समस्याका पर अनुक विचार पण किया गये ह। अनुकी अिन रचनाओंमें हमें गांधीजीक तमस्व-घा सिद्धांतका और अिन सिद्धांतका व्यवहारमें कस अनुका जा सकता है तथा हमें अिन समस्याका सामना करना पड रहा है अुट ह् करनमें अनुका प्रयोग कम किया जा सकता है अिन प्रश्नका अुत्तर भी मिया। सक्षपमें व हमें अपन आर्थिक आर्गोंकी झाकी भा करात ह और अुहें मूर्तिमान करनक अपाय भी बतात ह।

गांधीजीक अपन लक्ष्यके सिवा अनुके भाषणा या मलाकातिवाके सायकी अनकी वाचकाके दूसरे लागा द्वारा दिये गय विवरणाका भी समावण अिस पुस्तकमें किया गया है। अिन लक्ष्यके मूल नीपक हमका अनु अनु अ्यक मुख्य वक्तव्यका प्रगट नही करत थ। व प्राय अमुक तात्कात्रिक प्रश्नका हा मूचना करत थ। अत कआ जगह मत मू गापक वत्त लिख ह।

म जो गकरलाभात्री वकरका जिहान अिन पुस्तकक सक्त्नमें मरा मागणन किया है, अहुत कृतन ह। गांधीजीका राजनातिक लडाअियामें चरणा प्रचारमें और अनुक द्वारा मजदूरक हितक अिन किया गय काममें व गांधीजीक अत्यंत पुराने और निक्त्नम साधियामें म ह। व यग अिनिया पत्रक पत्रक प्रकाशक थ। व अहमदाबादक कपडा मजदूर मयक सम्यापक मन्म्यामें म ह और आज भी अमक पीछ रही हुजा मच्चा गकिन व ही ह। गांधीजीन अुहें अखिल भारत चरणा मयका पत्ला मया चुना था। अिन पत्ला पत् काम कर्त हुअ अुहें गांधीजीक विचाराका समझन और आत्ममान करनका अद्वितीय अरसर मिला। अिन पुस्तकक अिन्ने प्रस्तावना लिपिकर अन्हान मये अहुत अपकृतन किया है।

नवजीवन टम्क व्यवस्थापक श्री जावण्जीभात्री म्यात्रीने मुय यग अिनिया' और हरिजन'की फाअिगाका अपराण करनकी मुविधा दी अमुक



लिअ म जुनका वृणी हू। मरी पत्नी अिदिरान भूमिकाकी नकड करनमें मथ जा सहायता दी असके लिअ म अस भी धयवाद देता हू।

जा० अ नटेसनअण क न मुझे स्पीचेज जेण्ड राभिअिगड आफ महात्मा गाधी ( चौथा सस्वरण) से जिच्छानमार असके अग जुद्धत करनकी अनुमति दी। जनकी यण सहायता म सधयवाद स्वीकार करता हू। म श्री डी० जी० तेंदुलकरकी अुनकी पुस्तक महात्मा खड १ २ ३ और ४ स असके अग जुद्धत करनकी अनमतिके लिअ श्री जस राघाउणन जीर अतके प्रकागका जाज अलन जण अनविनका मणत्मा गाधी — असेज जण रिफेकगन्स आन हिज लाभिफ अण वक में स असके अग अद्धत करनकी आमतिक लिअे और मि० विन्सेट गीन तथा अतके प्रकागका कसेल जण व० लि का लीन वाजिडगी लाभिअ में स अमक अग अद्धत करनेकी अनमतिके लिअ धयवाद देता हू। म 'मॉन् रिब्यू' का असके अक्टूबर १९३५ के जकसे अब अग जुद्धत करनकी अनमतिके लिअ और अमृतवाजार पत्रिका का असके २ अगस्त १९३४ के अकसे अब अग अद्धत करनकी अनमतिके लिअ आभारी हू।

वम्बओ २७ जून १९५६

श्री० बी० खर

## प्रस्तावना

किसी महापुरुषकी महत्ताका सही माप परवर्ती पोलिया पर अमक जीवन और उसके विचारके प्रभावमें दिखता है। हम गांधीजीको इस कसौती पर परखें तो हमें यही कहना हागा कि वे युग-पुरुष थे अपन युगके निर्माता थे। समयके साथ अउनके विचारके प्रभावका विस्तार ही हआ है। भारतमें और दूसरे देगामें भी आधकाधिक लोग अिन विचारोकी ओर आकृष्ट हो रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय और वदेशिक नीतिका प्रेरणा-स्रोत अउनकी गिधायें ही ह। ेकिन यह भी सच है कि हम अभी भी सर्वोदय समाजकी या सच्चे कल्याण राज्यकी अउनकी कल्पनास बहुत दूर ह। अितिहास बतायेगा कि किम तरह हमें अपना यह अुद्देश्य प्राप्त करनेके पहले प्ररणा और भागदगनकी खोजमें बार बार अिस महान गिधकके ही पाम आना पन्गा। अन्हान अनेक समस्याओं पर गहराअीसे विचार किया था और अउनमें स कभी पर प्रत्यक्ष प्रयोग भी किये थ। अिन परिणामा पर वे पहच अुह अुन्हाने अपन जीवनमें साधनाकीके माथ अुतारा था और अपनी विविध प्रवृत्तियोंके द्वारा प्रभावकारक ढगमे दुनियाके सामने अुह पेश किया था। नाहिर है कि मनुष्यक दुनियाकी सवाला पर अउनके ये विचार हमारे लिये बहुत महत्व रखत ह और अउनका अध्ययन सबके लिये अवश्य लाभकारी सिद्ध होगा।

गांधीजी मलत कम परायण यकिन थे। सावजनिक कायके क्षेत्रमें अन्हाने प्रवण किया तउसे अपन जीवनका प्रत्यक क्षण अुन्होन दरिद्र-नारायणकी सवामें लगाया। समाजके अिस दरिद्र वगके साथ सपूण तात्पम्य साधकर तथा घनिष्ठ सपक और अनवरत प्रयत्नके द्वारा अुन्हाने अुन गोगाकी चेतनाका जगाया तथा अुहें न्याय और जीवनकी सुव-मुविधाआकी प्राप्तिके लिये कोगिण करनेकी ताकत और हिम्मत दी। वे जीवनकी वास्तविकताआमे प्ररणा ग्रहण करते थ लोगाकी गकिन जोर अउनकी कमजारियाका घमके प्रति अउनकी स्वाभाविक रुचिका और सृष्टिके तावत नियमामें अउनकी निष्ठाका विचार करते थे और अिस तरह अुह आचार घमके स्वाभाविक नियम प्राप्त हुअे थे। वे जाअनको अुमक समग्र रूपमें दखने थ सडामें नहा और अिमन्त्रिये अुन्हाने हमें जावनके सारे विविध पहलुआ पर नतत्व

प्रदान किया है। अपन आश्रमवे अन्तेवासियाँके लिये अन्हान जो नियम निर्धारित किये थे उनमें हमें अन्के बुनियाती आदर्शका मम मिलता है।

अन्के आर्थिक और राजनीतिक विषया पर लिखे गये लेखाने अध्ययनस हमें अन्के अन् मामाय विचाराका पता चल जाता है, जो जीवनके विविध प्रश्ना पर अन्के मतमतके मूलमें निहित ह। परिस्थितियाँके अनुसार वे अन् पर कहीं कम और कहीं अधिक जोर देते दिखेंगे लेकिन अन्के अन् आधारभूत विचाराका स्रोत अन् ही है—पीडित मानवताके प्रति अन्का गहरा और सन्धिय प्रेम तथा सत्य और अहिंसाके बुनियादी सिद्धान्तमें अन्की यह अविचल निष्ठा कि अन्के अन्क्याकी प्राप्तिके लिये अन्क्याय विहित साधन य ही ह।

गाधीजी जन्मजात आत्मावादी थे। और अन्का मानव प्रेम पापीका भी बहिष्कार नहीं करता था। कारण वे मानते थे कि कोसी भी मनप्य स्वभावसे दुष्ट नहीं होता वह सिर्फ अपनी परिस्थितियाँका या वातावरणका गिन्कार होता है। अन्हान लोगको मनप्यमें रही हुई बुराई और मनप्यमें भ्रम करना सिखाया। जिसीदिअ अन्हान जहा अन्के और लोगको विदेशी सरकारसे अन्के अत्याचारके खिलाफ उठनेके दिअ अन्क्याहित किया वहा दूरी और गान्ध्याधिकारियाँके प्रति आदर और सन्भाव रखना भी सिखाया। राजाआ जमीनारो और अमीरके प्रति भी अन्का असा ही रुख था। वे अन्के दुरभिमान तथा सत्ता और अधिकारके प्रदर्शनकी कड़ी टीका करते थे लेकिन अन्के माय मित्रताका नाता जोडनमें अन्के कोनी सकाच नहा होता था।

लोग अन्ह मस्यत राजनीतिक नता आध्यात्मिक विचारक और रचनात्मक समाज-सुधारकके रूपमें ही पहचानते ह। यह बात बहुत कम लोग जानते ह कि अन्कोगा और भजदूरसे सम्बन्धित समसमाजसे भी अन्का गहरा सम्बन्ध रहा था। अन्के अन्में गाधीजीके योगदानका विदेशोंमें लोगको बहुत ही कम पान है। यह पुस्तक अन्के अन्क्याको दूर करारमें बहुत अन्योगी सिद्ध हागा।

सपादकन अन्के पुस्तकके तीन खंडोंमें सामाजिक-आर्थिक और औद्योगिक सवाल पर गाधीजीके विचाराका सवलन करके जनताकी और खासकर गाधीजीकी गिलाआके अन्क्याताकी अन्क्यात बीमनी सेवा की है। अन्हान पुस्तककी रचना अन्के विषयसे सम्बन्धित गाधीजीके लेखके विवेकपूर्ण अध्ययनक दान की है और वह अन्के सव लोगके लिये बहुत अन्योगी मार्गदर्शिकाका काम दगी जो अन्के सवालके हन्के लिये गाधीजीके प्ररणा ग्रहण करना चाहते ह।

जसा कि सपादकन अपनी भूमिकामें कहा है, ' गाधीजीके विचारोंने साय अन्तानक कारण प्राय बहुत अयाय किया जाता है। यहा गाधीजीके अिन लखाको व्यवस्थित रूपमें अिस तरह पेश करनेका प्रयत्न किया गया है, जिससे कि अिस विषयक विविध पहलुआ पर अुनके विचार स्पष्ट रूपसे सामन आ जायें थीर पाठक अुहें आसानीसे समझ सकें। गाधीजी अत्यत गतिशील पुष्ट प। अुनके जीवनमें हम निरन्तर विकास करते रहनेका गुण दसत ह। अुनके विचारामें समय समय पर परिवतन हुआ दिखता है, यद्यपि जीवनके अुनियादी मिद्धान्तामें अुनकी निष्ठामें न तो कभी कोअी परिवतन हुआ और न अुसमें कभी कषा आयी। अिस सकलनमें लेखाका अिम क्रमस सजाया गया है अुसके कारण अपने जीवन कालमें विविध प्रवृत्तियाने दरमियान गाधीजीके विचारोंमें होनवाले अिम विकासका पाठक आसानीसे देख सकेंगे।

श्री खेरन अयन परिश्रमपूवक पाठकाक लिअ गाधीजीक विचाराका यह व्यवस्थित मकलन सुलभ कर दिया अिस बात पर म अुह बधाअी देता ह। अनक बर्षोंके लेखा और भाषणोंके रूपमें फनी हुआ विपुल सामग्रीमें स अुन्हाने आवश्यक अगाका विवकपूवक चनाव किया और फिर अुह पढतिपूवक अिम तरह सजाया है कि पाठकाका अुह समझनमें बहुत सहायता मिलती है। अिमके सिवा श्री खरके अिस परिश्रमक फलस्वरूप हमें अपन जीवनके अनक महत्वपूण पहलुआ पर गाधीजीके विचाराका अुनके अपन ही गल्पामें अक अमा कामती सकलन मिल गया है, जिसका हम अपना जाव शकताक अनुसार जव चाह तब आसानीसे अुपयोग कर सकत ह। अन मव लोगके लिअ, जा गाधीजीके विचारा और अुनकी शिक्षाआत्रा अध्ययन करना चाहते ह और खाम कर अुन सामाजिक कायकनाअाक लिअे जो सब हितकारी यावपूण समाजकी स्थापनामें अनुराग रखत ह म अिस पुस्तककी सिफारिश करता ह।

२२	पुस्तक-बन्धी मेरी कल्पना	६३
२३	काग्रती मन्त्री और अहिंसा	६६
२४	सत्य और अहिंसाको न छाड़ें	६८
२५	म अहिंसक साम्प्रवादमें विश्वास रखता हूँ	७०
२६	हृदय-परिवर्तन बनाम वैज्ञानिक समाजवाद	७२
२७	क्या आप वगयद्धको टाल सकते हैं ?	७५
२८	वग विग्रह अनिवाय नहीं है	७६
२९	क्या समाजवादी क्रांति रामरायकी ओर उ जायगी ?	७८
३०	सेवा और स्वावलम्बनका सिद्धांत	७९
३१	बोशविम	७९
३२	बोशविमका अर्थ	८०
३३	यवा साम्प्रवादियाके साथ प्रश्नोत्तर	८७
३४	अपनी बुद्धि पर ताला न लगाजिय	९१
३५	साम्प्रवादियाका मकाबला कस कर ?	९४

### दूसरा विभाग शरीर-धर्म

३६	शरीर-धर्म क्या है ?	९५
३७	शरीर-धर्म के कानूनकी सृज	९६
३८	सर्वोदय की शिक्षायें	९८
३९	शरीर-धर्मका सुनहला नियम	९९
४०	धर्मयज्ञ	१
४१	शरीर-धर्मकी आवश्यकता	१२
४२	शरीर-धर्मका कर्तव्य	१०४
४३	अमन्त्री शरीर-धर्म	१६
४४	मेरा शरीर-धर्म	१७
४५	आधर्म-जीवनमें शरीर-धर्मका स्थान	१०८
४६	धर्म और बुद्धिके बीच अन्तगाव	११२
४७	बुद्धि विकास या बुद्धि विलास ?	११३
४८	बुद्धिपूर्वक किया हुआ शरीर-धर्म — समाज-सेवाका जुच्चतम प्रकार	११५
४९	बौद्धिक और शारीरिक धर्म	१२०
५०	बौद्धिक विषय बनाम अज्ञान	१२०
५१	अहिंसक अद्योग	१२२

५२	यत्न	१२४
५३	श्रमका गौरव	१२८
५४	श्रमकी प्रतिष्ठाकी पहचानें	१३०
५५	कर्मयोगका सिद्धान्त	१३१
५६	महनत नहीं तो खाना भी नहीं	१३२
५७	गमनाक	१३३
५८	पूण प्रायश्चित्त	१३४
५९	रोटीकी समस्या	१३५
६०	शरीर-श्रम ही अकामान हल	१३५
६१	काम ही गरीबीका जेकमान जिलाज है	१३६
६२	जेक महान समता-म्यापक	१३७
६३	स्वावलम्बन और परावलम्बन	१३८
६४	नौकरा पर अवलम्बन	१३९
६५	काम और फुरसतका दशन	१४०
६६	फरसतका मोह	१४२
६७	फुरसतका कीमत	१४५

### सोसरा विभाग आधिक समानता

६८	आर्थिक समानताका अर्थ	१४७
६९	आर्थिक समानताके लिज प्रयत्न	१४८
७०	आर्थिक समानता प्राप्ति करनकी पद्धतिया — गाधीजाका और साम्यवादियाकी	१५०
७१	आर्थिक समानताकी प्राप्ति	१५१
७२	समान वितरण	१५१
७३	भजदूरीकी समानता	१५४
७४	समान वेतन	१५५
७५	मन्त्रिपरिषद वेतन	१५६

### चौथा विभाग सरक्षकता

७६	सरक्षकताका सिद्धान्त	१५९
७७	ट्रस्ट क्या है ?	१६०
७८	सरक्षकताके बारेमें कुछ प्रश्न	१६१
७९	म क्या सरक्षकताके सिद्धान्तका तरजीह देना हू ?	१६२

१	साओवी पाटनके लिअ पुल	१६६
८१	धानूनी ट्रस्टीशिप	१६६
८२	सरक्षकताका व्यावहारिक फामूग	१६७
८३	अहिसक समाजमें सरक्षकका स्थान	१६८
८४	जपन घनका सरक्षक	१६९
८५	अस्तेय और अपरिग्रह	१७०
८६	अस्तेय-व्रत	१७१
८७	अच्छिक् गरीबी	१७२
८८	आशीर्वाहूप गरीबी	१७६
८९	घनिकाका प्रश्न	१७७
९	घनी सरक्षक ह	१८१
९१	अच्छिक् गरीबी यनाम घनवानाकी सरक्षकता	१८१
९२	गरीबाक सरक्षक और सबक वमें	१८३
९३	अपनी शौतका त्याग करके तू असे भोग	१८४
९४	ककी चिन्ता न करे	१८७
९५	अपरिग्रहकी ओर	१८७
९६	पूजीपतिषाका कतव्य	१८८
९७	विगप प्रतिनिधित्व	१८९
९८	वध परिग्रह	१९
९९	वध परिग्रहका बचाव	१९२
१०	अयायपूवक कमाय हुजे घनका त्याग	१९४
१०१	अगर घनवान सरक्षक न वनें ता	१९४
१२	विपत्तिम बचे	१९५
	सूची	१९७

## भूमिका

अब अत्यन्त कारणस भी, महात्मा गांधी — व्यक्तिगत मध्य जिस बातका पूरा विश्वास है — जब महान् इतिहासिक विभूतिक रूपमें पूज पायेंगे। वह कारण यह है वे तो अत्यन्त विभिन्न युगाकी ठीक मधिरेश्वर पर सटे हुए हैं। जेव आर ता वे भारतकी सत-सम्बन्धी परम्परागत धारणाको प्रतिमान करते हैं जो दूसरा आर अन्तमें हमें जननका भी अत्यन्त आधुनिक और अदृष्ट नमूना मिलता है। जिस हूँ तब अन्तकी इतिहासिक स्थितिकी तुम्हा जान दि ब्रिटिस्टस की जा सकती है। बहुत संभव है कि मनुष्य भविष्यमें असा अननवाग है, असकी असा भावो स्थितिमें पुरान विस्मये अवागी सनवा घटनाके निर्माणमें या इतिहासका रचनामें विश्वास स्थान रहा होगा। भावी मनुष्य सपूर्ण मनुष्य होगा, जिसमें आत्मतत्त्व और जड तत्त्वका सन्तुलन आगा। लकिन जिस नव मनुष्यके लिए अभीष्ट परिस्थितियाँ निर्माण करना युगाने संधिस्थिति पर आमान गांधी जितना कर रहे हैं, अतना कभी अत्यन्त नहा। \*

— वाञ्छित हरमान वसर्तिय

गांधीजी एक जटिल और अनवरत पहली वे। वे सत भी वे अन्त जनता भी थे। किसी अन्त व्यक्तिमें सत और जननका यह सम्मिश्रण अविश्वसनीय मालूम होता है लेकिन गांधीजी तो जन्मभूत थे और यह अविश्वसनीय सम्मिश्रण वे सचमुच सिद्ध कर सके थे। विविध धर्मोंके सम्बन्ध इतिहासमें सामान्यतः यही माना जाता रहा है कि आध्यात्मिक मूल्य साधुजा और सत्याभिप्राय ही चित्तका विषय हैं, और लोकाका जनता खास परवाह नहा करनी है। लोकाका परम्परागत विश्वास यही रहा है कि धर्मका अन्त जन्म है और व्यवहारका अन्त है लानामें कभी पारम्परिक सम्बन्ध नहा है। गांधीजी गांधी पहले इतिहासिक व्यक्ति थे जिन्होंने जावनक अन्त दो महत्त्वपूर्ण धर्मोंके जिस इतिहास विभाजनका जननी था। अन्त सामान्य दुनियात्कारीक जीवामें आध्यात्मिक मूल्यका संचार दिया और अन्तकी

\* अम० राधाकृष्णन् द्वारा सम्पादित 'महान्मा गांधी — अत्यन्त अन्त रिप्रेकास आन दिव्य गार्थिक जेण वर' (जात्र जन्म अन्त अनन्त), पृ० १६९।



स्थापनाका प्रयत्न किया। राम्माय तिरक जसे महान विज्ञान और चाटीक नता भी धम और व्यवहारका अग अग मानवांगी असी पुरानी दृष्टिके समथक थ। अिनसे मिद्व हाता है कि परम्परागत विदवागाकी ज कितनी मजबूत होती है और व कितनी, मुश्किलसे मिटने ह। जाहिर है समामें यह बुराजी बहुत गहरी पठी हुजी है। लोकमाय तिरकके जिस वयन पर कि राजनीति दुनियागरीक व्यवहारमें निपुण नृतियादार लोगका विषय है साधकाका नहा लोकमायकी आशचना करते हुअ गाधीजीन लिखा था

लोकमायक प्रति पूण जातरका भाव रखते हुअ म यह कहतका साहस करता हू कि यह विचार कि दुनिया साधजाके त्रि नहा है वीद्विक जास्यका द्योनक है। सब धर्माकी सारभूत गिणा यही रही है कि पुण्यायना विकास करा और पुण्यायका जवमात्र अथ है— साधु बननके त्रिअे गलके पूरे जयमें सज्जन बननके लिअ तात्र प्रयत्न। और अन्तमें जब मन वह वाक्य लिखा जिसमें यह कहा गया था कि लोकमायकी मायताके अनसार ता राजनीतिमें जो भी किया जाय मत्र अचित ही है जुन समय मेरे मनमें अुनके द्वारा जक्सर व्यवहृत यह अक्ति थी— गठ प्रति गाठधम । म मानता हू कि यह अक्ति अक अनिष्ट नियमका विधान करती है। और म ता यह जागा करता हू कि अपनी विचक्षण बढिके बठ पर लोकमाय स्वय ही जक दागानिक प्रबध लिखकर अस नियमकी असत्यता सिद्ध कर दिलायेंग और अिम तरह अपन देगवासियाको चकित तथा प्रसन्न कर देंग। जो भो हो गठ प्रति गाठधम् क नियमके विरुध म अपना तिहाजी सदीना परखा हुआ अनुभव रखता हू और कहता हू कि सच्चा नियम गठ प्रति गाठधम नही गठ प्रत्यपि सत्यम् है। \*

\* यग अिटिया २८-१-२० गठ प्रति गाठधम का जय है— गठके प्रति गठनाका ही व्यवहार होना चाहिय। अिसके विरुध गाधीजी गठ प्रत्यपि सत्यम् यानी गठके प्रति भी सत्यके हा व्यवहारकी हिमायत करते ह। धम्मपत्की नीच दा जा रही गायाआमें भगवान बुद्धन भी यही विचार प्रगट किया है

न हि वरेन वेरानि सम्मतीथ कुत्तचन ।  
जरेरेन च सम्मन्ति अम धम्मा सन्नतता ॥  
अक्काधन जिन कोध असाधु साधुना जिन ।  
जिन क्करिय दानन सच्चेनात्रिकवादिन ॥

व्यावहारिक आदर्शवादी ऊपर दिए गए बुद्धरणसे पाठकों के मन पर अभी छाप नहा पढ़नी चाहिये कि गांधीजी स्वप्नमत्वा यथा कि आदर्शकी कल्पनाओंमें विहार किया करते थे। असा मान लेना बिल्कुल गलत होगा। गांधीजी स्वप्नसेरी कल्पना नहीं थे। उनका दावा था कि वे व्यावहारिक आदर्शवादी हैं।\*

गांधीजीके विचारोंके बारेमें अज्ञान गांधीजीके विचारोंके साथ अज्ञानक कारण प्रायः बहुत अज्ञान किया जाता है। विविध विषयों पर गांधीजीके मतानुसार धारोंमें अधिकांश लोगोंकी धारणाएँ बहुत अस्पष्ट हैं। यह अज्ञान सामान्य भाग तक ही सीमित हो, सो बात नहीं बल्कि विज्ञान मान जागे बालोंमें भी पाया जाता है। अिस स्थितिका कारण गांधीजीकी शिक्षाआज वैज्ञानिक अध्ययनका अभाव है।

गांधीजीके विचारोंके अध्ययनका सही पद्धति गांधीजीका शिक्षाआजके वैज्ञानिक अध्ययनका सही पद्धति यह होगी कि उनके बचनों या लेखकोंके समयानुक्रमके अनुसार अिकट्टण किया जाय और अुन परिस्थितियोंके साथ जाडा जाय जिसमें वे बड़े गये अथवा लिखे गये थे। अिस तरह हम हरअर बचनको अुसके अुचित सदर्भमें देख सकेंगे। अिस पद्धतिका अनुगमन किया जाय, तो हम जान सकेंगे कि किकमा विषय पर अुनके विचारोंमें समयके साथ कसा और कितना परिवर्तन हुआ है। अनेक अुदाहरणोंमें हम देखेंगे कि अुनके विचारोंमें कोअी विगण परिवर्तन नहीं हुआ है। दूसरी अर हम यह भी देखेंगे कि अमुक शब्दके आगम्यता तो अुनके योग्य-अहुत फरक किया है किन्तु अुनके बुनियादी विश्वास ज्याके त्यापाम रहे हैं।

गांधीजी जैसे किभी भी महापुरुषकी शिक्षाओंमें हूँ अक विगणता और भी दीखती है। अुनका अक हिस्सा तो असा हाता है जा सारी मानव-जातिस सम्बन्ध रखता है और स्थायी होता है और दूसरा हिस्सा अुनके समय विगणकी परिस्थितियोंके सबधित होता है और अस्थायी हाता है। हमें चाहिये कि हम अुनकी शिक्षाओंके अिन स्थायी और अस्थायी हिस्सोंका अलग-अलग रखें, ताकि अुनके तुलनात्मक महत्त्वकी नीमत हम सही सही जान सकें। गांधीजीकी शिक्षाओंके अिन दो पहलुओंके फरक हम बालोंमें और ज्योत विचार करेग तासवर अुनके आर्थिक विचारोंके अिसिमें जो कि भारतकी बीसवीं सदीकी परिस्थितियोंके विगण तौर पर सम्बधित हैं।

## गांधीजीके आदर्शवादकी विशिष्टता

अनके आदर्शवादके मुख्य स्रोत यहा हम गांधीजीके आदर्शवादकी विशिष्टताका विश्लेषण करेगे। उनके धार्मिक विचारामें अथवा सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रोंसे सम्बन्धित उनके आदर्शवादमें सबत्र हम कुछ सामान्य सिद्धांत पाते ह। सक्षपमें ये सिद्धांत अत्र प्रकार ह।

आदर्श अपन अंतिम रूपमें तो यूनिकडके बिंदुकी तरह—जिसे कोअी मनुष्य अकित ही नहीं कर सकता—अक कल्पनाकी वस्तु है। अर्थात् यूनिकडके अस बिंदुकी तरह असे भी मूल रूपमें पाया नहीं जा सकता। यही विचार किसी जप्रजी कविकी जिस पत्रिकामें प्रगट हुआ है

‘A man's reach should exceed his grasp  
Else what is heaven for? \*

आदर्शका निश्चय करनेके बाद हमारा कर्तव्य है कि हम असे अपनी शक्तिके अनुसार आचरणमें अुतारे। आदर्श अप्राप्य होता है अिसलिये असा नहीं होना चाहिय कि हम असे पानकी कोशिश ही नहीं कर। रास्ता कठि नाअियोंसे घिरा हुआ हो तो भी हमें अपन मनुष्यत्वकी रक्षाके अिये अस पर चरनकी कोशिश तो करनी ही चाहिय। यही पुरुषार्थ है। आनंद प्राप्तिमें नहीं प्रयत्नमें है। आशा और अुत्साहके साथ यात्रा करते रहना लक्ष्य पर पहुंच जानसे कहा ज्यादा अच्छा है। हमें अपन साधनाकी और उनके अधिकाधिक अपयोगकी चिंता करनी है। लक्ष्यकी ओर हमारी प्रगति ठीक अतनी होगी जितनी हमारे साधनाकी शक्ति होगी। यह रास्ता अम्बा मालूम होता है परंतु वस्तुतः वह सबसे छोटा सिद्ध होता है।

अपनी अनंतताके कारण आदर्श ज्यो ज्यो हम अुसकी ओर बन्न ह रया त्यो हमसे दूर हटता हुआ मान्य होता है। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिये कि रात ठीक अरुणोदयके पूर्व सबसे ज्यादा अंधरी होती है। यदि हम सही प्रयत्न कर तो हम अपन आदर्शकी दिशामें काफी दूर तक बन्न सकेंगे और यह प्रगति ही वास्तविक प्रगति होगी।

मनुष्यके स्वभावकी मर्यादायें जब गांधीजी हमें आदर्शसे चिपट रहनकी सलाह देने हैं तब क्या वे मनुष्यके स्वभावकी मर्यादाका पूरा खयाल करते ह? या वे मनुष्यके स्वभावके विषयमें अपनी कल्पित और झूठी आशाओंको

\* मनुष्यके हाथकी पहुंच अुसकी मुटठीकी पकडमें कही ज्यादा बड़ी होनी ही चाहिय। अथवा स्वर्गका क्या अपयोग है?

ही पकड़ रहे ह। जिस सबाल पर अनुवा मतय उनके ही गन्धामें जिस प्रकार है

“यह बात सच है कि बहुत बार लगाने मेरे साथ दगामाजी की है। बहुताने मुझ घोषा लिया है और कितने ही कच्चे साजित हुए ह। लेकिन अनुक ससग पर मुझ पछतावा नहा है। क्योंकि जिस तरह म सहयोग करना जानता था, अुसा तरह असहयाग करना भी जानता था। जिस दुनियामें रहने और बरतनका सबसे “याग अमली और गौरवपूण तरीका यहा है कि लोग जो मुहमे कहे उस पर विश्वास कर—जब तन कि अुसक खिलाफ पक्के कारण आपके पास न हा। \*

व्यक्ति और प्रणालीमें भेद मनुष्यके स्वभावमें गाधीजीको सच्चा विश्वास था। अत्यंत बसौटीकी घडियामें भी अनुका यह विश्वास कभी विचलित नहीं हुआ। मनुष्यकी बुनियादी अच्छाईमें अनुकी पूरा निष्ठा था और जिस निश्चय किसी भी मनुष्यका अड्डारक परे नहीं मानते थे। अनुका कहना था कि अयाय करनवाला अकसर किसी दूषित प्रणालाना पुर्जा या परिस्थितिमाका गिहार-मात्र हाता है। जिसलिअ हमें मनुष्य और प्रणालीमें भेद करना चाहिये। अयायीका शत्रु मानना अुचित नहा है। अुस न सिफ समझा-बुझाकर बल्कि जरूरत हा ता अहिंसक असहयागक द्वारा सही रास्ते पर लाया जा सकता है। अयायीके हृदयमें अपना दाप देखने और अुस पश्चात्तापके आसुआ द्वारा था डालनेकी बुद्धि जगानके जिस प्रयत्नमें यह जरूर समभव है कि हमें अुस काफी कष्ट सहना पड। लेकिन यदि हम कष्ट सहनेके लिअ तयार हो तो निश्चय है कि अहिंसक असहयाग ब्यय नहा जायगा। जिसलिअ जरूरत दूषित प्रणालीका नाग करनका है व्यक्तिका नाग करनकी नहीं। अमा किमा जाय तो विपत्ती हमारा शत्रु नहीं बनता और जिस बातनी काफी गुजाअिग रहती है कि हम र केवल अुसका हृदय जात रें, बल्कि वह सामाय लदयकी प्राप्तिव लिअ हमारे साथ काम करनेक लिअ भी राजा हा जाय।

मनुष्यके स्वभावमें थडा गाधीजीने श्री जयप्रकाश नारायणका जित्दाने गाधीजीक सामने भारतीय आजागीनी अपनी तसवीर विचाराय पेग का थी जो जवाय लिया था अुसमें मनुष्यकी बुनियात अच्छाई और अहिंसक साधनाकी अभाव क्षमामें अनुका अमित थडा बहुत अच्छी तरह प्रगट हुआ है। गाधीजीने लिया था

शायद श्री जयप्रकाशको यह विश्वास नहीं है कि राजा गेग स्वेच्छासे अपनी निरकुशताका त्याग कर दें। मुझ यह विश्वास है। अक तो असलिअे कि वे भी हमारी ही तरह भठ आदमी ह और दूसरे असलिअे कि मेरा गुढ अहिंसाकी अमोघ गक्तिमें सम्पूर्ण विश्वास है। \*

मनुष्यके स्वभावमें हमारी श्रद्धा उत्पन्न हो उसके पहले हमारी श्रद्धा अपन-आपमें और अपन ध्ययमें हानी चाहिय। गाधीजीको अपन-आपमें और अपन ध्ययमें पूरी श्रद्धा थी जिसमें किसे सदेह हो सकता है? परवर्ती घटाआन सिद्ध कर दिया है कि उनकी यह श्रद्धा कितनी सही थी। हमन अपनी जाखाके सामन ही यह देखा कि राजाआन स्वेच्छापूवक अपनी सत्ता जनताक चुन हुआ प्रतिनिधियोका सौंप दी। जब विदेशी प्रवासीने उनसे अपनी भेंदके दरमियान जब उनस पूछा कि वे क्या असा मानते ह कि उनके अहिंसक आदोलनके फलस्वरूप अग्रज भारतको शांतिपूवक छाडकर चले जायेंगे तो अनुहान दृत्तापूवक उत्तर दिया कि हा म असा मानता ह। प्रश्नरतान फिर पूछा आपके अस विश्वासका आधार क्या है? गाधीजीन जवाब दिया जीश्वर और उसके पायमें मेरी तिष्ठा ही मेरे अस विश्वासका आधार है। x गाधीजीने अपन जीवन-कालमें ही हथियारको छअ बिना भारतकी आजागी प्राप्त कर ली। अग्रज गसक भारतीयके हायमें गसन-सत्ता शांतिपूवक सौंपकर भारतसे विना हो गय। य तो केवल दो ही जुदाहरण हं। लेकिन गाधीजीका जीवन असे अमख्य जुदाहरणसे भरा पडा है, जिनमें हिसाबी वृत्तिके दुनियादार आदमीको अनका यवहार मूखताकी ह् तक दुस्साहसपूर्ण मालूम होगा। लेकिन सत्य यह है कि क्वचित ही काशी प्रसंग जसा हो जिसमें गाधीजीको अपन प्रयत्नमें मफत्ता न मित्री हो। जो भी आदमी भारतके हालके अितिहासके पृष्ठ अठगा अस अस कथनको सचाओके चाहे जितन प्रमाण मिल जायेंगे।

गाधीजी अहिंमामें मानते य लेकिन वे अस तप्यको स्वीकार करके चन्ते थ कि मनुष्य अपूण है। यदि कोअी कमजोर आदमी हमारे साथ कदम मिगकर न चल सकता हो और पीठ रह जाता हो तो यह जरूरी हो जाता है कि उसके कमजोरीका खयाल किया जाय। लेकिन सिद्धान्ता पर कोअी समझौता कसे हा सकता है? सिद्धान्ता पर तो चट्टानकी तरह द् ही रहना होगा। उसके सिवा वुराजीके साथ भी कोअी समझौता नहीं हो सकता। किन मनुष्यकी कमजोरियाका खयाल करके किंचित विवेक जवय

\* हरिजनसवक २ -४-४

x हरिजन १३-२-३७

रखना चाहिये। सिद्धान्तके बारेमें किसी तरहकी गिथिलनाकी सलाह नहा दी जा सकता और न अमुके प्रोत्साहन ही लिया जा सकता है किन्तु साथ ही हमें यह भी दखना होगा कि जिसा भी छोटी बातका निम्नातका दजा न दे दिया जाय। समझौतेके त्रिअ गाधीजी जिन गतोंका हाना आवश्यक मानन थे अउन पर निम्नलिखित धुद्धरणसे काफी प्रमादा पडना है

‘सच तो यह है कि जीवन असे समझौतेसे ही बना हुआ हाता है। चूकि अहिंसा अत्यत विगुद्ध और नि स्वाथ प्रम ही है, जिसलिजे अुसमें अकसर अस समझौते आवश्यक भी होने ह। अकसरता अुसकी कुछ गतें ह जिनका पागन अवश्य होना चाहिये। हम जो कुछ भी कर रहे हा असमें काआ स्वाथ भय मा असत्य नहा होना चाहिय और अुसमें हमारा लक्ष्य अहिंसाकी आर अधिकाधिक बदनका ही हाना चाहिये। यह समझौता स्वाभाविक पानी स्वच्छा प्ररित होना चाहिये बाहरस लाग हाता नही। \*

गाधीजीका राजनीतिक आदेशवाद हम गाधीजीकी स्वराज्यता कसनाका विरलेपण कर असके पहले अुनके राजनानिक आगवात्का मुख्य स्रोत समझ लना अुपयोगी होगा। गाधीजीक राजनीतिक गुर गापाल वृष्ण गोखलेने भारत-भक्त-भमाजक सविधानका प्रस्तावनामें जा कि अुन्हान १९०५ में लिखा थी सावजनिक जीवनमें आध्यात्मिक मून्याका दाखिल करनकी आवश्यकता प्रगट की था। अुन्हान अस बात पर जार दिया था कि दगकी सेवा अुसी निष्ठासे की जाना चाहिये जिम निष्ठासे धमकी सेवा की जाती है। गोखलेकी यह परम्परा अनेके शिष्यन जारी रखी। गाधीजी राज नीतिमें क्या पड --- जिस प्रनका अुत्तर गाधाजाक अपन गलामें जिम प्रकार है

अने सबव्यापा सत्यनारायणका माक्षाकार कर्नेक त्रिअे मनुष्यन मनमें छात्रम छाते प्राणीके प्रति अपने ही जसा प्रम हाना चाहिये। और जा मनुष्य असकी आवाशा रखता है यह जीवनक रिमी धर्म बाहर नही रह सकता। जिमा कारणम भर सत्यप्रमन मुप राजनीतिक धर्ममें धमोत् लिया है और म बिना किसी सवाचक किन्तु पूरा नम्रताक साथ यह सबता ह कि ना गप यह कहने ह कि धमका राजनातिसे साथ बाधा समप नहा है व नही जानत कि धमका क्या अय है। x

\* हरिजन १७-१०-३६

x आमकथा (अग्रजी), पृ० १५ १९४८।

धम और राजनीति धम और राजनीतिको अलग-दूसरेमें अलग नहीं किया जा सकता। उनमें जट्ट सम्बन्ध है। धमके बिना राजनीति निर्जीव हो जायगी। धमके अभावमें राजनीति खोखली और निरर्थक होगी

मुझ अिस नागवान अहिक रायकी काशी अभिलाषा नहीं है। म ता जीवरीय रायका पानका प्रयत्न कर रहा हू। वह है मोक्ष। मेरे लिअ तो मुक्किका माग है अपने देगकी और जुमके द्वारा मनुष्य जातिकी सवा करनके लिअे सतत परिश्रम करना। म ससारके भूत मात्रसे अपना तात्काम्य कर लेना चाहता हू। म गीताकी भाषामें — सम गत्री च मित्रे च हो जाना चाहता हू। अिस प्रकार मेरी देगभक्ति और कुछ नहीं अपनी धिर मुक्ति और गतिके देगकी मजिलका एक विश्राम-स्थान है। अिससे यह मालूम हो जाता है कि मेरे नजदीक धमशून्य राजनीति कोशी चीज नहा। राजनीति धमकी अनुचरी है। धमहीन राजनीतिको एक फासी ही समणिय। वह आत्माना नाग कर देती है।\*

एक विदेगी भीसात्री नतान जो दिसम्बर १९३८ में गाधीजीसे चचा करनके लिअे यहा आया था अउसे पूछा था कि भारतके लिअे आपन जो काम किया है अउसमें आपका मुख्य प्ररक हतु क्या था? वह राजनीतिक था या सामाजिक या धार्मिक? गाधीजीन जवाब दिया — विगुद्ध धार्मिक। यही प्रश्न जनसे स्व श्री माटम्यून किया था जब वे एक राजनीतिक प्रतिनिधि मन्त्रके साथ जुनसे मिले थ। जुन्हान आरचय यक्त करते हुअ पूछा आप तो समाज-सुधारक ह आप राजनीतिकी जिस भीड भाडमें बसे आ पहुचे? गाधीजीन जवाब दिया कि अनका राजनीतिमें आ पडना अुनके समाज-सुधार कायका ही विस्तार है। अहान कहा कि जब तक म सारी मानव जातिके साथ एकात्मता सिद्ध न करू तब तक म धार्मिक जीवन नहीं विता सकता और मानव-जातिके साथ एकात्मता स्थापित करनके लिअे यह जरूरा है कि म राजनीतिमें भाग लू। आज मनुष्यकी सारी प्रवृत्तिया मिश्रकर अविभाय हो गयी ह। सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और धार्मिक कार्योंको अलग-दूसरेमें विभक्तु अलग नहीं किया जा सकता। म मानव-सेवासे भिन्न किसी धमको नहीं जानता। मानव-सवा ही दूसरी सारी प्रवृत्तियाना नतिक आधार प्रदान करती है। मानव-सेवाका लक्ष्य न रहने पर य सारी प्रवृत्तिया निराधार हो जायेंगी और जीवन अथहीन गोरगुल्का रूप ले ल्या।x

\* हिन्दी नवजीवन ६-४-३४

x हरिजन २४-१२-८

धमका अर्थ यहाँ धर्म शब्दका अप्रयोग आदरवत् मूल्यवत् अर्थमें किया गया है विविध धर्मोंका एक मापतायाक अर्थमें नहीं। धार्मिक मामलामें गांधीजीकी दृष्टिकोणी नुसारता और मनकी परममहिष्णुताकी बात सुप्रसिद्ध है। व अश्वरका मत्स्य रूपमें ही पहिचानत थे। धमका अर्थ है मनुष्यक द्वारा अतिमानयी नियामिका शक्ति या अश्वरका स्वीकार। जीश्वरस गांधीजीका क्या नात्पय था ?

अगर मानव-व्याणाक त्रिअ आश्वरका मपूर्ण वणन करना सम्रव ही ता म अिम निश्चय पर पहुँचा हू कि अश्वर सत्य है — सत्य शब्द ही असुका सर्वोत्तम वाचक है। परन्तु दो वष पूर्व म अेक वक्त्र और आग बढ़ा मन कहा कि न क्व अश्वर सत्यरूप है बल्कि सत्य ही अश्वर है। अश्वर सत्य है और मय ही जीश्वर है अिम दाना वचनाक सूक्ष्म भदका आप समम लग। अिस नतीजे पर म सत्यकी पचास वषकी दाप अनवरत और वठिन खोजने बाद पहुँचा हू। अिमक बाद मझे पता चला कि सत्य तक पहुँचनका निकलनम माग प्रम है। परन्तु मन यह भी पाया कि कमम कम अग्रजी भाषामें 'श्व (प्रेम) शब्द अनेक अर्थ ह और विचारक अर्थमें मानव प्रम ता अक मलिन चाज है जो मनष्यका पतन करती है। मन यह भी देखा कि अहिंसाके अर्थमें प्रमके पुजारियाकी सभ्या दुनियामें अिनीशिला ही है। परन्तु सत्यके वारमें दा अर्थ नहीं ह जोर नास्तिका तकने सत्यकी आवश्यकता या शक्ति स्वीकार की है। परन्तु सत्यका दूड निरालनेकी अपनी लगनमें नास्तिकान अश्वरक अमि-अमे भी अिनवार करनमें सवाच नहीं किया है और अपन दृष्टिकोणस अुन्हाने ठीक ही किया है। अिम तरह माचत हूअे मरी समझमें आया कि अश्वर सत्यरूप है यह कहनन वजाय मुन यह कहना चाहिये कि मय ही आदर है। \*

जीश्वरकी अपनी वचना अुन्हान अपयुक्त शब्दोंमें समनायी है। अुनकी धार्मिक भावनाका मौलिकता और प्रगमता अिस अुद्धरणक प्रत्येक शब्दम टपकती है।

### स्वराज्य

अुनकी बल्पनाका स्वराज्य गांधीजी त्रिणि माध्यायक अक राजभक्त नागरिकम अक राजद्राही — और असा राश्वरही जा अिम बातका प्रचार करता या त्रिणि शासन ही भारतक राजनीतिक धार्मिक मामाजिक और मासृतिक नागक लिजे अुत्तरनायी है — कम दन गम अिम बातकी वकनी

\* सत्य ही अश्वर है ५० १३ १९५९।



जिस देशका हालका इतिहास जाननवाले जानते ही ह। जिस स्वराज्यका लाने और जिसका निर्माण करनके लिये अुहान अपना सारा जीवन गगाया वह नकारात्मक नहा था। स्वराज्यकी अनकी कल्पना महज यह नही थी कि सत्ता विदेशियाके हाथसे भारतीयाके हाथमें आ जाय। यह तो अुनके कल्पनाके स्वराज्यकी मात्र पहली मजिल थी। सब लोग जानते ह कि १५ अगस्त १९४७ को जब ब्रिटिश सम्राटके आखिरी प्रतिनिधिन गायनकी वागधोर भारतकी राष्ट्रीय सरकारको सौंपी अुस समय सारा राष्ट्र तो जाजादीका अुत्सव मना रहा था और खुशीस नाच रहा था पर वधाका सत दुखी मनसे किन्तु अत्यंत वारतापूर्वक अपनी सारी शक्ति देशभरमें फरी हुई साम्प्रदायिक द्वेषाग्निको बुझानमें लगा रहा था।

स्वराज्यका अथ स्वराज्य समाजकी अुस स्थितिका नाम है जिसमें जनता अपना शासन स्वयं करना सीख लेती है। अिस स्वराज्यका अनभव हरअक यक्तिको होना चाहिय

स्वराज्यका असली मतत्व आत्म-सयम है। आत्म-सयम वही रख सकता है जो सदाचारके नियमाका पालन करता है किसीको धाखा नहा देता सत्यका त्याग नही करता और अपन माता पिता पत्नी बच्चा नौकरा और पडासियाके प्रति अपना फज अदा करता है। असा आत्मो भङे कहा भी रहे स्वराज्यका सुख भोगता है। जो राज्य बडी सख्यामें अिस तरहके भङे नागरिकाके होनका गव कर सकता है वह स्वराज्यका अुपभोग करता है। \*

गाधीजीके स्वराज्यकी नींवका पत्थर—ध्यक्ति गाधीजीके स्वराज्य एपा भवनकी नावका पत्थर यक्ति है। अुसे चाहिये कि वह अपनको अच्छा नागरिक बननकी तानीम द और अुसके लिये आवश्यक योग्यताओका अपनमें विकास करे तभी वह स्वराज्यका लाभ अुठा सकता है। समाज यक्तियोंका समूह है। समाज शासनके लिये और कानूनका पालन करवानके लिये राज्यकी स्थापना करता है। जिस राज्यमें अच्छे नागरिक बडी सख्याम मौजूद ह। वही स्वराज्य भोगनका दावा कर सकता है। स्वराज्य तभी कायम रखा जा सकता है जब कि राज्यमें असे देशभक्त नागरिकाकी बहुसख्या मौजूद हो जो अपन हितकी तथा और दूसरी सारी चीजाकी तुलनामें देशके हितका ही सर्वोपरि महत्त्व प्रदान करते ह। \* असी स्थिति न हो तो राजनीतिक स्वतन्त्रताके होन अुअ भी अुन लगाको स्वतंत्र नही कहा जा सकता।

\* गाधीजी अ परामुञ्ज आफ रस्किन्स अटु दिस लास्ट के ककणन नामक अध्यायसे पृ० ६५।

x यग अिन्या २८-७-२१

राजनीतिक स्वतन्त्रताका महत्त्व कम है, असी बात नहीं है। गांधीजी जिस बातको खूब समझते थे कि राजनीतिक आजादी तो होनी ही चाहिये। किन्ती अेक देगका दूसरे देग पर राज्य करना गलत है और किन्ती गसन अक असह्य बुराभा है। जिसलिअ व भारतक लिअे राजनीतिक आजादी अवश्य चाहते थे। लेकिन वे यह भी समझत थे कि अग्रजके भारत छोड देने मात्रमे जादूकी तरह यहा सुखकी वर्षा नहीं होन ग्यगी। यूरोपकी हागतन अुहें सावधान कर दिया था। अुन्हाने समझ गिया था कि केवल राजनीतिक आजादी मिउ जानसे असी परिस्थितिया पदा नहा हा जाती जिनमें जनता अपना गसन आप करन लगे। राजनीतिक आजादी मिन्नके बाद भी वह चद लोगके द्वारा पासी जाती रहता है। जिसलिअ बुन्हाने लिखा था

केवल राजनीतिक सत्ताके अक हाथसे निबल कर दूसरे हाथमें चल जानस भरी महत्त्वाकांक्षाको सत्ताप न होगा ह्यलकि म भारतके राष्ट्रीय जीवनके लिअे सत्ताया जिस प्रकार हस्तांतरित होना परम आवश्यक मानता हू। यूरोपके लोग निम्नरुह राजनीतिक सत्ता ता रखत ह पर स्वराज्य नहीं। अगिया और अफ्रीकाके गणाको व अपन आणिक लाभके लिअे टूटते ह और अुनके गसन-बग अुह प्रजा सत्ताके पवित्र नाम पर टूटते ह। तो यदि गडको देखें तो रोग बहा गियाभी देता है जा कि भारतवर्षको है। जिसलिअ अिलाज भी वही काम दे सकेगा। \*

जिसस प्रगट हा जाता है कि सरकार जनताकी ही हो जिस बातका व काफा नहीं भागत थे, व चाहते थे कि वह जनताकी तो हानी ही चाहिये लेकिन जनताप लिअ और जनताके द्वारा चलायी जानवाली भी हानी चाहिये।

स्वराज्यमें विगिष्ट धग और सामाज्य जनता स्वराज्यमें सामाज्य जनताक हितका चर गेगा या वर्गोंके हित पर तरजोट मिलना चाहिये। स्वराज्य पर निहित स्वायत्ताका जेवाधिकार हा मा व गेग ही असना मारा लाभ मुठायें अना नहीं हाना चाहिये। स्वराज्यकी योजनामें सामाज्य जनताका नित हा सर्वोपरि होना चाहिये। असा प्रत्येक हित जा बजवान फराइरे हितरे विरुद्ध हो मा ता बरग जाना चाहिये मा यदि वह बरग न जा सकता हा ता युसमें बमी बी जानी चाहिये। x जिसका यह अम

\* हिन्दी नवजीवन ३-९-२५

x गग अिदिया, १७-९-'३१

नहीं कि गेप बगोंको—मध्यम यग पूजीपतिया जमीनारा आणिको—  
मिटा दिया जाय। अदृश्य अितना ही है कि अिन सत्र बगोंको गरीबाने  
हितको मुख्य मानकर अमकी सेवा करनी चाहिय। \*

सरकार जनताके द्वारा चलायी जाय अब हम अिस सवाल पर  
आते ह कि सरकार जनताके द्वारा चलायी जाय —अिस बातका गही  
आगय क्या है। गाधीजीका अुत्तर अिस प्रकार है

स्वरायसे मेरा अभिप्राय है लोक-सम्मतिके अनुसार होनवाग्रा  
भारतवपका गासन। लोक-सम्मतिका निश्चय देगके वाग्निकाकी  
बडीसे बडी तादादके मतके जरिये हो वे चाह स्त्री हा या पुरय  
अिसी देगके हो या अिस देगमें आकर बस गये हा। वे लोग जसे हा  
जिन्हान अपा गारीरिक श्रमके द्वारा रायकी सेवा की हो और  
जिन्होन मतदाताआकी सूचीमें अपना नाम लिखवाया हो। म  
यह सिद्ध करनकी आगा रखता ह कि सच्चा स्वराय थोड लोगके  
द्वारा सत्ता छीन लेनसे नहीं बल्कि जब सत्ताका दुर्लपयाग होता हो  
तब सब लोगके द्वारा असके प्रतिकार करनकी क्षमताको प्राप्त करके  
हासिठ किया जा सकता है। दूसरे गणोंमें स्वराय जनतामें अिस  
बातका ज्ञान पदा करावे प्राप्त किया जा सकता है कि सत्ता पर  
काजा करन और अुसका नियमन करनकी क्षमता अुनमें है। x

नागरिकाकी सजगता जहा नागरिक अपनी आजादीकी रक्षाके विषयमें  
सजग हाग वहा गगाकी सारी आवश्यकतायें पूरी करनका काम राय नहीं  
करेगा और न वह जनतासे सत्ताको हथियानकी अनधिकार चेष्टा ही करेगा।  
सत्ता पर स्वामित्व जनताका ही है और होना चाहिय। स्वरायका अय  
यह है कि जनता सरकारके नियत्रणसे —सरकार विदेगी ही या स्वदेगी —  
मुक्त हानके त्रिअ लगातार प्रयत्न करती रहेगा। अिस स्वरायमें गग अपने  
जीवनके छोट छोट कामाके लिअ भी सरकारका मुह ताका करे वह स्वराय  
किमी कामका नहीं होगा।—

क्षमसे कम गासन करनेवात्री सरकार ही अत्तम सरकार है जहा  
राजनीतिक सत्ता जाग्रत गिनित और अनगासनकी तात्रीम पायी हुआ असी  
जनताके हाथमें होनी है जिसन सत्ताका नियमन और नियत्रण सीख लिया  
है वहा फिर अिस बातका डर नहीं रह जाता कि राय निरकुग बन जायगा

\* यग अिनिया १६-४-३१

x हिन्दी नवजीवन २९-१-२५

— यग अिडिया ६-८-२५

वह अपनी जड़ें जितनी मजबूत कर लेगा कि कपहीन समाजकी खुस धलिवी ओर जिसमें राज्यका विलम हो जाता है जनताकी प्रगतिमें वह धा अपुस्थित कर सके। निम्नलिखित शब्द बताते हैं कि गांधीजी खुस प्रत लोकनद्रके हिमायती थे, जिसमें सामान्य मनुष्यको खुमकी पूरी प्रतिष्ठा प्त हागी

मरी दष्टिमें राजनीतिक सत्ता कोजी साध्य नहीं है परन्तु जीवनक प्रथम विभागमें लागके लिखे अपनी हालत सुधार मकनेका अक साधन है। राजनीतिक सत्ताका अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधिया द्वारा राष्ट्रीय जीवनका नियमन करनकी शक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन जितना पूण हो जाता है कि वह स्वयं आत्म नियमन कर ता किमा प्रतिनिधिकी आवश्यकता नहीं रह जाती। खुस समय पानपूण अराज कताकी स्थिति हा जाती है। असी स्थितिमें हरअक अपना राजा हाता है। यह अिम ळगम अपन पर शासन करता है कि अपने पडोसियाके लिख कभी बाधा नहीं बनता। अिमरिख आदम यवस्थामें काआ राजनीतिक सत्ता नहीं हाती क्याकि काओ राज्य नहीं हाता। परन्तु जीवनमें आत्मका पूरा मिद्धि कभी नहीं होती। अिसीलिखे धारान कहा है कि जो सबसे कम शासन करे वही खुसम सरकार है। \*

असबा मतलब यह है कि जब राजनीतिक सत्ता जनताक हाथमें हाती है, तब जनताकी आजादीमें रायका हस्तक्षप कमसे कम हा जाता है। दूसरे शब्दोंमें, जो राष्ट्र अपना कामकाज शापने ज्यादा हस्तक्षपके बिना हा अच्छी तरह और सफलतापूर्वक चला लेता है वही सही अर्थमें लोकतांत्रिक है। जहा मह गत पूरी नहीं हाती हा वहा शासनका स्वरूप नाममें लोकतांत्रिक मरे हा वस्तुत यह लोकतांत्रिक नहीं हाता। x

सच्चा लोकतंत्र गांधीजीकी कल्पनाका सच्चा लोकतंत्र अनगिनत ग्राम पचायतका बना हुआ गणराय हागा। शासनकी अिषाओक रूपमें गांधीजी गावका आयह क्या करत ह? जिस प्रश्नका खुनर खुनक अपन ही शब्दोंमें अिस प्रकार है, 7211)

आजादी नीचेसे शुरू होनी चाहिय। हरअक गावमें जमहूरी मल्लगत या पचायत राज हागा। खुमके पाम पूरी सत्ता और ताकत हागा। असबा मतलब यह है कि हरअक गावकी अपने पाक पर

\* सर्वान्य पृ० ८२ १९५८।

x हरिजन, ११-१-६

खड़ा होना होगा — अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेनी होंगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार खुद चला सके। यहाँ तक कि वह सारी दुनियाके खिलाफ अपनी हिफाजत खुद कर सके। उसे तालीम दकर जिस हद तक तयार करना होगा कि वह बाहरी हमलेके मुकाबलेमें अपनी रक्षा करते हुए भर मिटनक शायक बन जाय। जिस तरह जाखिर हमारी बुनियाद व्यक्ति पर होगी। जिसका यह मतलब नहीं कि पड़ोसिया पर या दुनिया पर भरोसा न रखा जाय या जुनकी राजी-खुशीस दी हुआ मदद न गी जाय। खयाल यह है कि सब आजाद होंगे और सब एक-दूसरे पर अपना जसर डाल सकेंगे। जिस समाजका हरअक आदमी यह जानता है कि उसे क्या चाहिय और जिससे भी बचकर जिसमें यह माना जाता है कि बराबरीकी महानत करने भी दूसरोको जो चीज नहीं मित्ता है वह खुद भी किसीको नहीं गी चाहिय वह समाज जटर ही बहुत अचे दर्जेकी सम्म्यतावाला होना चाहिय।

**स्वायत्त्यागकी आवश्यकता** असो समाज जनगिनत गावाका बना होगा। असका फलाव अकके अपूर अकके ढगका गही बल्कि लहराकी तरह अकके बाद अककी गकाममें होगा। जीवन मीनारकी गकाममें नहीं होगा जहा अपूरकी तग चोगीको नीचेके चौड पाये पर खडा रहना पडता है। वहा तो जीवन समुद्रकी लहराकी तरह अकके बाद अक घरेकी गकाममें होगा जिसका केंद्र व्यक्ति होगा। व्यक्ति गावके लिअ और गाव ग्राम-समूहके लिअ भर मिटनको हमेगा तयार रहगा। जिस तरह अतमें सारा समाज जसे व्यक्तिपाका बन जायगा जा अहकारमें आकर कभी किसी पर हमंग नहा करण बरिक् सदा विनीत रहेग और जुस समद्रके गौरवके हिस्सेदार बनेंग जिसके वे अविभाय जग ह। \*

**आत्म गौर** आत्म भारतीय गावकी रचना जिस तरह की जायगी कि वहा सपूण स्वच्छता रखी जा सके। अकके घरोंमें पर्याप्त हवा और प्रकाशकी व्यवस्था होगी और अकके निर्माणमें जसी चीजाका अपयोग होगा जो अस गावके आसपासके पाच मीलके क्षत्रमें मिल जायें। जिन घरामें आगन हाथ जहा घर-मात्रिक घरके अपयोगके लिअ आवश्यक प्रमाणमें साग-सानी पदा कर सकेगा और वहा वह अपने गाव-बल आदिका भी रखगा। गावकी गलिया और रास्ते धूल और कचरेसे मुक्त हाग। अकमें अककी जरूरतके अनुसार काफी कुअें हाग

\* हरिजनसवक २८-७-४६

और ये कुर्से सबके लिख खुले हाग। जसमें वहा बसनेवाले सब लागाके पूजास्थान हाग, सब लागाका अब मानाय सभास्थान हागा गावके पंगुआके लिख गावके भूमि हागी सहकारी डेरी लगी और प्राथमिक तथा अच्च पाठशाखायें हागी। जिन पाठशालाआमें दी जानवाली शिक्षाका वे द्रविन्दु औद्योगिक शिक्षण हागा। गावमें ग्रामवाचस्पति आपसां जगताका निपटारा करनके लिख ग्राम-पंचायत हागी। गाव अपना अनाज सांग भाजी फल-फूल और अपनी ग्वादा खुद पदा र्या। \*

पंचायतराजमें समानता अब पंचायतराजमें देगक बडम बड और छात्र छात्र आत्मीक वाचमें भी सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और धार्मिक — यानी हर तरहकी समानता हागी। शरीर श्रमकी कामत का जानगा और बुद्ध प्रतिष्ठा प्राप्त हागी। नागरिक अपनी जीविका प्रामाणिक परिश्रमके द्वारा कमायेंगे। अफीम और गराब जसे नशीले द्रव्य पर पूरी रोक रहेगी। स्वदेशी जीवितका अब अनिवाय नियम बन जायगा। स्त्रिया अपनी पराधीनताकी स्थितिसे मुक्त हागी और अब समाजमें सम्मानका स्थान प्राप्त हागी। और नागरिक अहिंसाके द्वारा मत्स्यकी रक्षा करनके लिख तथा अिस प्रयत्नमें आव समरता हात पर अपन प्राणाकी बाजा लगानक लिखे तयार रहेंगे। ये व आधार-स्तम्भ ह जिन पर कि गावके गणराज्यका भवन खडा हागा।

क्या असा गणराज्य सेना रखगा? क्या सना रखना नतिक आजादीके साथ सुसंगत माना जा सकता है? नतिक आजादीकी गावराजीकी कल्पनामें शम्भ्राज्यासे सुसज्जित सेनाआके लिखे काभी स्थान नहीं है। अतः नतिक आजादीकी व्याख्या यह है

रामराजकी मेरी कल्पनामें ब्रिटिश फौजी हुकूमतकी जगह राष्ट्रीय फौजी हुकूमतकी बडा दानकी कोठी गुजाअिष्ठ नहा। जिस मुल्कमें फौजा हुकूमत होती है फिर व फौज मुल्ककी अपनी ही क्या न हो वह मुल्क नतिक दृष्टिसे कभी आजाद नहीं हो सकता और अिर्मालजे अुसक सबम कमजोर कहे जानेवाले वाणिज्य कभी पूरा तरह नतिक अुन्नति नहीं कर सकते। x

भाषी भारतकी सेना यह याद रखना चाहिय कि गावराजी देगके चलखूबक अधिदृत करनक काममें आयी जानेवाली सनाक विनाफ ह फिर वह सना दगी ही क्यों न हो। लेकिन वे स्वयसेवकाकी असी सना मजूर करनक लिख तयार ह, जिनका धुपयोग दसमें जान मालकी सुरक्षा बनाये

\* डॉ० जी० तेन्दुलकर महात्मा सह ४, पृ० १४४।

x हरिजनसेवन ५-५-'४६

रखनके लिख किया जाय। नीचे दिय जा रहे बुद्धरणसे यह बात स्पष्ट हो जायगी

जल-सेनाके विषयमें म नहीं कह सकता लेकिन स्पल-सेनाके विषयमें म कह सकता हू कि भावी भारतकी स्पल-सेना किरायके असे सनिकाकी नहीं होगी जिनका जुपयोग भारतको गुलामीमें रखनके लिख या दूसरे राष्ट्रसे अउनकी आजागी छीननके लिख किया जाता है। बल्कि वह बहुत हद तक कम कर दी जायगी अधिकांशत स्वयं-सेवकासे बनी हुआ होगी और अुसका अुपयोग देशमें सुरक्षाकी व्यवस्था बनाये रखनके लिख ही होगा। \*

सन १९४६ में केबिनेट मिशन भारत आया अुसके ठीक पहले गांधीजीने देशको चेतावनी दी थी कि यदि स्वतंत्रताकी प्राप्तिके बाद भारतन सनिक दृष्टिसे शक्तिशाली बननकी योजना की ता आजकी दुनियामें वह बहुत हुआ तो पाचवे दर्जेका सनिक राष्ट्र बन सकेगा और वह दुनियाकी कोअी सदेश देन योग्य भी नहीं रह जायगा। लेकिन यदि वह अपनी अहिंसाकी ही नीति पर कायम रहे और अुसे अधिकाधिक परिशुद्ध करता जाय तो वह अपनी कीमती जानादीका अुपयोग दुनियाका अुस बोधसे मुक्त करनमें कर सकेगा जिसमें आज वह दबी जा रही है और दूसरे देशके सामने एक अुच्च अुदाहरण भी पेश कर सकेगा। x

### गांधीवादी आदर्श और समाजवादी तथा साम्यवादी आदर्शमें फरक

समाजवादी अाशोपनिषदमें अंतर्हित है गांधीवादी आदर्श समाजवादी तथा साम्यवादी आदर्शसे किन बानोंमें भिन्न है? दोनोंके बीचमें रहे हुए फरकको समझनके लिखे हमें पहले यह जानना चाहिय कि समाजवादीके सम्बन्धमें गांधीजीके विचार क्या ह। गांधीजीका दावा था कि पश्चिमसे समाजवादी भारतमें आया अुसके बहुत पहलेसे ही वे समाजवादी रहे ह। समाजवादीके सिद्धांतको वे दक्षिण अफ्रीकामें रहते हुए ही अपना चुके थ। लेकिन अुनका समाजवादी किसी पुस्तकसे नहीं लिया गया था वह अुनके अनभव और अवलोकनकी अपज था और जिस तरह अुह स्वाभाविक तौर पर प्राप्त हुआ था। वह अहिंसामें अुनके अविचल विश्वाससे पदा हुआ था। पश्चिमी समाजवादियासे अपना भद स्पष्ट करते हुए गांधीजी लिखते ह

\* यंग इंडिया ९-३-२२

x हरिजन ५-५-४६

समाजवादा का जन्म जुस वक्त नहीं हुआ था जब यह पता गया कि पूँजीपति पूँजी का दुर्ूपयोग करने ह। जसा कि मने कहा है समाजवादा ही नहीं साम्यवादा भी औगोपनिपदके पहले मन्में स्पष्ट है। सच बात ता यह है कि जब कुछ सुधारकाका विचार-परिवर्तनकी पद्धतिमें विश्वास नहा रहा तब जिसे धनानिक समाजवाद कहत ह अुमका जन्म हुआ। म अुमी ममस्याको हल करनेमें गया हुआ ह जो धनानिक समाजवादान्तिके सामने है। किन यह सहा है कि मरी दष्टि मन्में अकमात्र गुद्ध अहिंसाकी रही है। \*

अदृश्यकी जकता साम्यवादिका तरह गाधीजीका भी अुदृश्य जस बगविहीन समाजकी स्थापनाका ही है जिममें राजाकित क्रमग धाण हाकर प्राय निशप हो गयी होग। लेकिन अिम अुदृश्य तक पहुचनेक अुनके रास्तामें बुनियादी पक है। जिसन्जि यात्राके आरभमें ही वे अेक दूमरेमे अलग हो जाने ह। पन्चमी समाजवादा और साम्यवादाक खिगफ गाधीजीके विरोधको हम समन ।

साधन क कहते ह हिंसाके द्वारा कोअी स्थायी सुधार किया जा सकता है जिस बातको म अस्वीकार करता ह। समाजवादान्तिका और अुसी अणीके दूमरे गणसे मेरा विराध अिमी बातमें है। x

न्मका समाजवादा याना जनता पर जबरदस्ती लागू जानेवाला साम्यवादा भारतको रुचगा नहीं भारतकी प्रकृतिक साथ जुसका मल नहीं बठ सकता। म अहिंसाक साम्यवादामें विश्वास करता ह। यदि साम्यवादा त्रिना किमी हिसात आय ता हम अुसना स्वागत करग। +

गाधीजी समाजवादान्तिके आत्मत्याग और अुनकी बलिदानकी भावनाका बहुत आदर करत थे लेकिन अुनकी और अपनी काय-पद्धतिमें रहे हूअ तीव्र विभेत्का अुन्हाने कभी छिपाया नहा। समाजवादा हिंसामें और हिसाक मारे फन्तिनाथोंमें चलकर विश्वास करत ह जब कि गाधीजी पूरी तरह अहिंसामें मानत ह।— वे कहते थे भारतको स्वराज्य अक्य मिन्ना चाहिये किन यह स्वराज्य अुस गुद्ध साधनके द्वारा प्राप्त करना चाहिये। क्याकि मन्चा स्वराज्य हिंसाक द्वारा प्राप्त किया ही नहा जा सकता। † भारत हिंसाके

\* हरिजन २०-२-२७

x हरिजन १-६-४७

+ हरिजन १३-२-३७

- हरिजन ४-८-४६

† गाधीजी अे पराफेड ऑफ रन्विम अट्टन्स लास्ट क 'बक' अुन नामक अध्यायत।



द्वारा अपनी आजादी प्राप्त कर सकता है इस बातका अहं यकीन दिलाया जाता तो भी वे अुस आजादीका ऐनस जिनकार कर दते। कारण वह सच्चा आजादी होती ही न्हा। \* हिंसा और अ्नाभीसे भारतको अप्रजाके शासनकी जगह कोत्री दूसरा शासन मित्र सकता है पर जनताकी दृष्टिसे निते स्व शासनका नाम निया जा सके अमा स्वशासन कदापि नहीं मिल सकता। † अुनका दुष्ट विन्वाय था कि हिंसाकी वनिपात् पर किसी स्थायी वस्तुका निर्माण नहीं हा सकता। ‡ शरीरका तरह शारीरिक शक्ति भी क्षणस्थायी ही है।

जब स्वराज्य हिंसाक द्वारा प्राप्त किया जाता है तब सत्ता अुन जिन गिन लोगोके हाथमें चनी जाती है जिन्हांन अम नातिवा नस्तुत्व किया हो। हिंसाके अुपयोगका यन् अफ अनिवाय परिणाम है। जा तलवार अठायेगा अुसका विनाश भी तद्वारके द्वारा ही होगा। — जीसाका यह वाक्य अत्यंत अथपूण है। अब अिटलीका ही अ्नाहरण लीजिय। अिटलीके स्वानभ्य-यद्धके पश्चात् वहा क्या हुआ ?

अिटलीमें अिटालिया राज करने ह अिसल्लिअ अिटलीकी प्रजा सुन्नी है असा अगर आप मानत हा तो म आपसे कहूंगा कि आप अधरेमें भटकते ह। मजिनीन साफ साफ बाया है कि अिटली आजाद नहीं हुआ है। विक्टर अिमेयअन्ने अिटलीका अब अथ किया मजिनीन दूसरा। अिमेयअन् कावूर और गरीवालडीके विचारसे अिटलीका अथ था अिमेयअल या अिटलीका राजा और असके हुजुरी। मजिनाके विचारस अिटलीका अय या अिटलीके लोग — अुसके विमान। अिमेयअल वगरा तो उनके (प्रजाके) नीकर थ। मजिनीवा अिटली अब भी गुलाम है। नो राजाअके बीच शतरजकी बाजी लगी था। अिटलीकी प्रजा तो सिफ प्यात्ता थी और है। अिटलीके मजदूर अब भी दुखी ह। अिटलीक मजदूरकी दाद फरियाद नहा सुनी जाती अिमजिअ वे लोग खन करते ह विरोध करने ह सिर फोडने ह और वहा बलवा हानका डर आज भी बा हुआ है। आस्ट्रियाके जानस अिटलीको क्या ठाम हुआ ? अिन सुधारके अिअ जग मचा वे सुधार हुआ नहा प्रजाकी हालत सुधरी नहीं।

हिंदुस्तानकी असी दगा करनेका तो आपका अिरान्त नहीं ही हागा। म मानता हू कि आपका विचार हिंदुस्तानके करोडा लोगोको सुनी करनेका होगा यह नहा हागा कि आप या म राजसत्ता ले

\* हरिन्त १२-२-७

† यग अिटलिया २१-५-२५

‡ यग अिटलिया १५-११-२८

ए। अगर अमा है तो हमें अक हा विचार करना चाहिये। वह यह कि प्रजा स्वतंत्र कस हो? \*

साम्यवादियोंका सिद्धान्त साम्यवादी दलील करते हैं कि वे लागू व्यवहारवादी हैं काल्पनिक आदर्शवादी विचारोंका अनुकूल लिये कोआ उपयोग नहीं है। वे समाजवादी शक्तियों द्वारा मनुष्यके वतमान स्वभावक बदलनेका अिच्छा और आगा रखत हैं। मनुष्य अपनी विवेक-बुद्धिक बजाय अपनी आत्मासे अधिक परिचायित हाता है। और अिमलिज अुसका वतमान भाव ताको बदलनेके लिये शक्तिका उपयोग करना जरूरी है। समय पाकर लागूका नय मयाजा पावन करनकी अुनके अतमार चलनेकी आगा पह जायगी। पूजीवादी समाजमें लोग दूसराके शोषण और अपने स्वार्थकी सिद्धिकी वृत्ति रखते हैं, अुसक बजाय अुस समय वे समाजक लाभक लिय काम करनेकी वृत्ति अपनावेंगे। अिस स्थितिक निर्माणकी लियामें पहला कदम यह है कि समाजका सबहारा वग अयान् मजदूर कल हिसाब द्वारा राय पर अिम्तार करे। साम्यवादियोंकी मायनाक अनुसार पूजावादी राज्यका जगह मजदूर वगके राज्यकी स्थापना हिसब विद्रोहके बिना नहीं हो सकती। मजदूर वगक शोषका स्थापना पहली मजिल है अुसक बाद रास्ता आसान हा जाता है। फिर अुसका अुपयोग समाजका शोषणकी बुगझीस मुक्त करनेके लिये हाता चाहिये। पूजीवादी शोषण जब तक विलकुल अतम न हो जाय तब तक हिसाबका अुपयोग करत रह सकत हैं। मजदूर वगका राय सग कायम रखनकी बात नहा है अुसकी बल्पना पहली मजिलक तौर पर की गयी है। आखिरी मजिल राज्यके विलयकी होगी। अिस आगा की जानी है कि शोषणकी बुगझीस निमूलत और लोगोंके मनमें नय मय्याकी प्रतिष्ठापनाक परिणाम-स्वरूप रायक विलयकी यह आखिरी मजिल का जायगी।

तानाशाही — अत्याचारका साधन शारीरी साम्यवादीयिकि अिय सिद्धान्तका अदल करत हैं। वे अुनका अिस प्रापतानों अम्बीकार करत हैं कि हिया हमें राजनीतिक अराजकताकी लियामें उ जा सकता है। अह तानाशाहामें वह मजदूर वगका हा या किमी और वगकी अिच्छा भी अिदरस नहीं है। अमा राय तानाशाहक हाथमें अयायका ही साधन बन रहेगा। अिमलिज शोषणका तानाशाहका अयवा रायको अने अपरिमित अिम्तार अुनके अणमें नहीं है। दूसरे अणामें वे किमी भी तरहका सभमता धारा शान्त-अयवस्थाकी वग पर जनताका बलिदान नहा करना चाहत। वे यह तो मानत हैं कि मनुष्य अ्याअंतर अपनी पडी हुयी आत्मासे परिचायित

होता है किन्तु साथ ही वे यह भी महसूस करते हैं कि मनुष्य अपनी बुद्धि और सकल शक्तिका असा विकास कर सकता है कि गोपणकी बुराओकी अहिंसाके द्वारा ही बहुत दूर तक कम करना संभव हो जाय। यह प्रक्रिया गायद धीमी सिद्ध हो किन्तु अंतिम सफलता निश्चित है — अतनी ही निश्चित जितनीकी कहानीके खरपोशकी। और अंतमें गांधीजीका स्वराज्य देवात्मिकि किसी जेक या अेकाधिक वर्गोंके लिये नहीं है वह सबके लिये है। गत जितनी हा है कि सब वर्गोंको सामान्य जनताके हितोंको सर्वोपरि स्वीकार करना होगा।

अब हम साम्यवादिका विविध मायताअकि विषयमें गांधीजीके विचार अन्हीके शब्दोंमें सुनें

### साम्यवादी सिद्धांत पर गांधीजीके विचार

#### (अ) साधनोंकी शुद्धिका महत्त्व

१ समाजवाज् जेक गुदर शब्द है और जहा तक मुय मात्रम है, समाजवादमें समाजके सब सदस्य बराबर होने हैं — न कोओ नीचा होना है न कोओ अूचा। किसी व्यक्तिके शरीरमें सिर सबसे अूपर होनेके कारण अूचा नहीं हाता और न परके तखे जमीनको छूनेके कारण नीचे हाते ह। जैसे यवितके शरीरके सब अंग बराबर होने ह वैसे ही समाजरूपी शरीरके सारे अंग भी बराबर होते ह। यही समाजवाज् है।

यह समाजवाद स्पष्टिककी तरह गढ़ है। अिसलिये असे सिद्ध करनक साधन भी गुद ही होने चाहिये। अशब्द साधनोंसे प्राप्त होन वात्रा साथ भी अगुद ही होना है। अिसलिये राजाका सिर काट डालनेसे राजा और प्रजा बराबर नहीं हा जायेंगे। और न मालिकका सिर काटनेसे मालिक और मजदूर बराबर हो जायेंगे। हम असत्यसे सत्यको प्राप्त ननी कर सकते। सत्यमय आचरण द्वारा ही सत्यको प्राप्त किया जा सकता है। क्या अहिंसा और सत्य दो चीजें ह ? हरगिज नहीं। अहिंसा सत्यमें और सत्य अहिंसामें लिपा हुआ है। अिसलिये मन कहा है कि वे जेक ही सिक्केके दो पहलू ह। वे अक दूसरेसे अभिन्न हैं। सिक्केको किसी भी तरफसे पल लीजिये। केवल पडनमें ही फक है — अेक तरफ अहिंसा है दूसरी तरफ सत्य। दोनाका मूल्य अक ही है। सम्पूर्ण गुदताके बिना यह दिय स्थिति अश्राप्य है। मन या शरीरकी शक्ति रखा और आपमें असत्य और शिमा आजी।

‘अस्मिन्निष्ठ सत्य-मरायण अहिंसक और शुद्ध हृदय समाजवादी ही भारत और सभारमें समाजवादी समाज स्थापित कर सकेंगे। जहाँ तक म जानता हूँ सभारमें काशी भी देग असा नहीं है जो शुद्ध समाजवादी हो। अपराक्त साधनाके बिना जस समाजवादका अस्तित्वमें आना असंभव है। \*

२ ‘अपने जुद्धेयकी हम अत्यन्त स्पष्ट चारया कर ले और अुमे अच्छी तरह समझ ले फिर नी यदि हम अुस प्राप्त करनक साधनाकी जानत न हा या जानत हूअ भी अुनका अुपयोग न करते हा, तो हम अुगकी आर नहीं बन सकत। अिम्बलिअ मने अपना प्रयत्न मुख्यत माधना पर व अुनक क्रमिक अुपयोग पर ही कन्द्रित किया है। म जानता हूँ कि यदि हम अपन साधनाका ठीक परचाह कर, ता अुद्देश्यकी प्राप्ति अुनिश्चित है। म यह भी महसूस करता हूँ कि अुद्देश्यकी प्राप्तिमें हमारी प्रगति टाक अुभी अुनपातमें हागी जितन कि हमारे साधन शुद्ध हागे। , हम जानते हूँ कि राजा जमीन्दार और वे सभी जा अपन अस्तित्वक लिअ जनताके पाषण पर निर्भर करते हैं हमारा अविश्वास करना या हममे डरना छोड देंग, यदि हम अह अपने साधनाका पवित्रताका विश्वास दिला दें। हम किसीके माय जोर जबरदस्ती नहीं करना चाहत। हम तो अुनका हृदय-परिवर्तन करना चाहते ह। यह काय-पद्धति पायद लम्बी मालूम हो, और सभव है बहुत ज्यादा लम्बी मालूम हो लेकिन मेरा निश्चित विश्वास है कि वही सबसे छोटी है। †

३ ‘हम काय-पद्धति या साधनाकी शुद्धता पर जोर दते ह। साधनोंको म अुद्देश्यक जितना ही बन्वि अुससे भी च्यादा महत्त्व देता हू। कारण साधना पर तो हमारा कुछ काबू हाता है किन्तु यदि साधना परमे हमारा काबू अुठ जाय तो अुद्देश्य पर बिल्कुल ही नगा होता। ‡

४ अब छिपकर गुप्त रूपस काम करनेका सवाल उ। मेरा हमारा मट दृढ मत रहा है — और आज भी वह अुत्तना ही दृढ है — कि गुप्त रूपस काम करनेका पद्धतियाका संपूण बहिष्कार हाता चाहिये। अिस सिद्धान्तमें म कोशी अपबाध नहीं कर सकता। गुप्तताके कारण हयें बहुत कठिनायी अुठाना पडी है और यदि दृत्ताफ साय

\* हरिजन १३-७-४७

† डी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा म० ३ पृ० ३७६।

‡ वही, पृ० ३८४।

असुखा विरोध करके हमने असुख बढ़ नहीं दिया तो हमारा आन्दोलन नष्ट भ्रष्ट हो जायगा। जसी विनाश परिस्थितियोंकी कल्पना का जा सकती है जिनमें गन्त काय-पद्धतियाँ आमप्रण मान्य हैं और अस्वीकार्य जरूरतें जान पड़ें। लेकिन म जाताके हितके लिये जितने हम निडर होना सिखाना चाहते हैं असुख गमना त्याग कर दूँगा। मैं अहं असा साचनका अवसर देकर कि विनाश परिस्थितियोंमें वं गुप्त काय-पद्धतियोंका आश्रय ले सकते हैं उनके मनमें भ्रम पनपना नहीं करूँगा। गन्तता सविनय प्रतिरोधकी भावनाके विनाशमें बाधक है। \*

५ मैं छिपकर किये जानवाले किसी कामको सराहना नहीं करता। मैं जानता हूँ कि देगके कराडो स्त्री-मुख्य छिपकर काम नहीं कर सकते। कुछ मुट्ठीभर लोग यह सोच सकते हैं कि पापीदा हरूचलाके जरिये वं करोड़के लिये स्वराज्य आ सकेंगे। लेकिन क्या वह बच्चाका चम्मचसे दूध पिलान जसो बात आ होगी? आम जनता तो खरी चुनौती और छेके कामका रास्ता ही अपना सकती है। जसली स्वराज्यकी भाँकी तो स्त्रियों पुरुषों और बच्चों सभीको होनी चाहिए। अस मकसदके लिये मेहनत करना ही सच्ची शक्ति होगी। हिन्दुस्तान दुनियाकी सभी शापित जानियाके लिये जब नमूना बन गया है क्याकि हिन्दुस्तानकी लडाओ खुली है और बिना हथियारके लडाओ जा रही है। जिस लडाओमें आजादीको हडप कर वठ हुआको चोट पन्चामें बिना मभीसे कुरखानी चाही जाती है। अगर यह लडाओ खुली और निरन्तर न होनी तो करोडो हिन्दुस्तानियोंमें आजादी जागति न आया होती। जब जब जिस सीधे रास्तेको छोटा गया तब तब षोडी दरके लिये विकासशील शक्तियोंमें रकावट पडी है। †

६ मझ स्वीकार करना चाहिये कि बोलशिविज्म शब्दका अर्थ मैं अभी तक पूरा पूरा नहीं समझा हूँ। मैं जितना ही जानता हूँ कि असुखा अर्थ्य निजी सम्पत्तिकी मस्याको मिटाना है। यह तो अपरिग्रहके नतिक आदर्शको अर्थके क्षेत्रमें प्रयुक्त करना हुआ और यदि लोग जिस आदर्शको स्वेच्छासे स्वीकार कर लें या जुद्धें गति पूर्वक समझाया जाय और अमके पन्स्वरूप वं जैसे स्वीकार कर लें तो जिनसे अच्छा कुछ हो ही नहीं सकता। लेकिन बोलशिविज्मक बारेमें मझ जो कुछ जाननको मित्त है असुसे असा प्रतीत होता है कि वह न केवल हिसाके प्रयोगका बहिष्कार नहीं करता बल्कि निजी

\* डी० जी० तन्दुकर महात्मा पृ० ३ पृ० ३७७।

† हरिजनमवक ३-३-४६

सम्पत्तिके अपहरणके लिये और बुरे राज्यके म्यामिन्वके अरीन बनाय रगनर लिये हिमाके प्रयोगकी खुली छत्र दता है। और यदि जना है तो मुझे यह कहनेमें कोयी मकोच नहीं कि मालगविन पासन अपने मीजुदा रूपमें ज्यादा दिन तक नहा दिख सकता। कारण मेरा यह विश्वास है कि हिमाकी नीच पर किमी भी स्थायी रचनाका निर्माण नहीं हो सकता। \*

(आ) तानाशाही और राज्य नियंत्रित समाजवादी बुगडिया

७ म जुदार अथवा किमी तरहका तानाशाहीको मजूर नहीं कर सकता। उसमें धनियाका तोप नहीं हागा और न गरीबाकी हिफाजत हागी। निश्चय हा कुछ धनी मारे जायेंगे और गरीब माहताज असहाय हो जायेंगे। अब कपके रूपमें धनिक रह जायेंगे और अदार विपणक वाकजद गरीबाका बय भी बना रहेगा। असंग दवा जहिंसा तक लोकतन्त्र है जिस दूमरे रूपमें सबका सच्चा शिक्षण कह सकते ह। धनियाको गरीबाकी सेवाक और गरीबाको स्वाव्यवस्थाक मिद्वानकी शिक्षा दा जानी चाहिये। †

८ मरे समाजवादका जय है सर्वोप्य। म गूग बहरे और जथाको पिटाकर अठना नहा चाहता। अनुके समाजवात्ममें अिन लोगके ठिग कोयी जगह नहीं है। भौतिक अुपति हा अनुका अेवमात्र मरसक है। मसलन अमरिकाका मकसद है कि अुमके हर सहरीक पास जेक माटर हा। मेरा यह मकसद नहीं। म अपन व्यक्तिगतके पूण विकासक लिये आजादी चाहता ह। अगर म चाह तो आसमानमें टिमटिमाने तारा तक पहुचनेकी निसनी बनालकी आजादी मुये मिलनी चाहिये। जिनका मतअब यह नहा कि मैं अभी कोयी बात कहगा ही। दूसरी तरहक समाजवात्ममें व्यक्तिगत आजादी नहीं है। जुसमें आपका कुछ नहा होना आपका अपना गरीर भी आपका नहा होता। ‡

(अि) आदतके बजाय विधिक ब्रह्मिके अनुसार जावा जोना

९ यह स्वीकार करत हुआ भा कि मनुष्य वास्तवमें आदतोंके बल पर जीवित रहता है मेरा विचार है कि अुमकर अपनी सक्त्प गतिनका आचरणमें अतारकर पीना अधिक अच्छा है। म यह भी विश्वास रखता हू कि मनुष्यमें अपनी सत्त्प गतिनको थिम हू तब

\* मग जिडिया, १५-११-२८

† हरिजनसेवक ८-६-४०

‡ हरिजनसेवक ६-८-४६

विकसित करनेकी क्षमता है जो गायणको घटाकर कमस कम कर दे। म रायकी सत्ताकी वृद्धिका बड़मे बड़ भयकी दृष्टिस दलता ह। क्याकि जाहिरा तौर पर ता वह गायणको कमस कम करके गम पहुचाती है परतु 'यक्तिरवका नष्ट करव' जा सब प्रकारकी अप्रतिकी जड है यह मानव-जातिका बडीस बडी हानि पहुचाती है। \*

१ जिस वाद तक पहुचनके अिअ हम जक-दूसरेकी तरफ तानत न बठें। जब तक सारे लोग समाजवादी न बन जाय तब तक हम कोभी हलचल न कर अपन जीवनमें काजी फरफार न करके हम भाषण त्ते रह पाटिया बनान रह और बाज पन्थीकी तरह जहा गिनार मिठ जाय वहा अम पर टट पडें — यह समाजवाद् हरगिज नहा है। समाजवाद जसा गानार बाज झडप मारनेसे हमसे दूर ही जानवाली है।

समाजवादकी गुरुआन पहल समाजवादीस हाती है। अगर अक भी जसा समाजवादा हो ता अस पर सिफर ब्णाय जा सजने ह। पहले सिफरस असकी कीमत दसगनी बानी जायगी। लेकिन अगर पहला सिफर ही हो दूसरे गाममें अगर कोभी आरभ ही न करे तो असक आग बितन ही सिफर क्यो न ब्णाय जाय जुनकी कीमत सिफर ही रहेगी। सिफरोका अिअनमें महनत और कागजकी बरवादी ही हागी। †

११ यह प्रश्न हा सकता है कि जिस प्रकार मनुष्य-स्वभावमें परिवतन होनका अुल्लेख इतिहासमें कहा देखा गया है? 'यक्तियामें तो असा ह्था ही है।' किन बड पमाने पर समाजमें परिवतन हुआ है, यह गायद सिद्ध न किया जा सके। जिसका जय अितना ही है कि 'यापक अिअसाका प्रयोग आज तक नही किया गया। हम 'गेगाके हृदयमें अिस झूठी मायनान धर कर लिया है कि अिअसा 'यक्तिगत रूपसे ही विकसित की जा सकती है और बहू 'यक्ति तक ही मर्यादिन है। दरअसत् बात असो नही है। अिअसा सामाजिक धम है। सामाजिक धमके तौर पर जसे विकसित किया जा सकता है यह मनवानना मेरा प्रयन और प्रयोग चठ रहा है। †

(आ) गाधीजीका भाग — शिक्षा और सयाप्रह

१२ स्वरायकी तीययात्रा बडी बठिन और बनी कष्टप्रद चगाया है। अुमके मानी ह दहातियाकी सेवा करनके ही अद्दयसे

\* अि माडन रिन््यू अक्तूबर १९३५।

‡ हरिजन १३-७-४७

† हरिजन २५-८-४

देहातमें प्रवेश करना — दूसरे नामों जिसका अर्थ है राष्ट्रीय शिक्षा — जनताकी शिक्षा। जिसका अर्थ है जनताके उत्तर राष्ट्राय बनय और जागृति उत्पन्न करना। वह काभी जादूक आमकी तरह अचानक नहीं टपक पड़ेगा। वह तो बटवृषका तरह प्रायः बड़े मालूम — अनात रूपसे बढ़ेगा। खूना प्राति कभी चमत्कार नहीं दिखा सकती। \*

१३ लेकिन यह याद रखना चाहिये कि जिस तरहके सुधार तुरन्त नहीं क्रिय जा सकते। अगर ये सुधार अहिंसात्मक तरिकासे करे ह, तो जमीन्दारों और गर-जमीन्दारों दोनोंको सुरक्षित बनाना आजिमी हो जाता है। जमीन्दारोंका यह विश्वास दिलाना होगा कि अजुने साथ कभी जोर-जबरदस्ती नहीं की जायगी और गर-जमीन्दारोंकी यह मिथ्याना और समयाना होगा कि अजुने अजुनकी भरोसेके खिलाफ अजुनको कौड़ी काम नहीं ले सकता और काट-सहन या अहिंसानी बलाकी सीखकर वे अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सके ह। अगर जिस उद्देश्यकी हमें प्राप्त करना है तो अजर मने जिस शिक्षाका जिस क्रिया है उसका आरम्भ अभीसे हो जाता चाहिये। जिसके लिये पहला जहरत असा वातावरण तयार करनेका है जिसमें पारस्परिक आर और सम्भावका सुमल हो। अजुने अवस्थामें वगैरे और आम जनताके बीच किसी प्रकारका अहिंसात्मक सम्बन्ध हो ही नहीं सकता। †

१४ अहिंसक कार्यक्रमोंका अजुद्देश्य हमें अजु हृदय-परिवर्तन करना होना चाहिये। लेकिन अजुने अजुने तक प्रतीक्षा करते रहनेकी आवश्यकता नहीं है। जिसलिअ जब अजुने असा महसूस हो कि प्रतीक्षाकी सीमा आ गयी है तब वह खतरा उठता है और सक्रिय मत्वाग्रहकी योजना बनाता है, जिसका रूप सक्रिय आजातवादी या असी ही किसी दूसरी चीजका हो सकता है। अजुनेका धीरज कभी भी अजुने हरे तक सतम नहीं होना कि वह अजुने विवामना त्याग कर दे। †

१५ काआ आदमा सक्रिय रूपसे अहिंसक हो और फिर भी सामाजिक अजायबके खिलाफ — भले वह कहां भी घटित हुआ हो — पडा न हो, असा उही हो सजना, व अजुनेका विरोध अवश्य करेगा। दुर्भाग्यवश जहां तक म जानता हूँ पश्चिमी समाजवादी समाजवादी मिदान्ताका मूल रूप दत्तके लिअ हिंसाका आवश्यकतामें विवाम बनने हैं

\* हिन्दी नवजीवन २१-५-२५

† हरिजनमन्थन २०-४-४०

‡ यम अहिंसा, ६-२-३०



म सत्रासे यह मानता आया हू कि नीचेस नीचे और कमजोरसे कमजोरसे प्रति हम जोर-जबर-स्तीसे सामाजिक न्यायका पालन नहीं कर सकते। म यह भी मानता आया हू कि पतितसे पतित गणाको भी मुनासिब तालीम दी जाय ता अहिंसक साधना द्वारा सत्र प्रचारके अत्याचाराका प्रतिकार किया जा सकता है। अहिंसक असहयोग ही असत्रा मुख्य साधन है। कभी कभी असहयोग भी अतना ही कतव्यरूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी विपत्रता या गुणामीमें सत्र सहायक होनेके त्रिअ काजी बधा हुआ नहीं है। जो स्वतत्रता दूसराके प्रयत्ना द्वारा — फिर वे कितन ही अदार क्या न हा — मित्रती है वह अत्र प्रयत्नाके न रहने पर कायम नहीं रखी जा सकती। दूसरे गत्रामें असी स्वतत्रता सच्ची स्वतत्रता नहा है। केकिन जब पतितसे पतित भी अहिंसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतत्रता प्राप्त करनकी कत्रा सीस लेते ह तो वे असत्रे प्रकाशका अनभव किय बिना नहीं रह सकते। \*

१६ यह म बिना किसी भयके जोर दूत्रतापूर्वक कहता हू कि हरअक योग्य अहेश्य मत्याग्रहके द्वारा सिद्ध किया जा सत्रता है। वह अच्चतम जोर अमोध जपाय है और सबसे बडा बत्र है। समाज वादको हम किसी अय साधनसे नहा पा सकते। सत्याग्रह समाजको राजनीतिक आर्थिक और ननिक सारी बराज्रियोसे मुक्त कर सत्रता है। †

समाजवादके नय युगका आरभ करनके त्रिअ गाधीजी दुहरा हल सुत्राते ह (१) जनताकी शिक्षा और (२) सत्याग्रह। शिक्षा अक लम्बी दीधकालीन प्रक्रिया है जब कि सत्याग्रह शिक्षामताके निराकरणका तीघ्र कत्रदायी और अचूक अुपाय है।

सत्याग्रहका सच्चा स्वरूप सत्याग्रहक सच्चे स्वरूपका बणन करते हुआ वर्षों पूव श्री गोपात्र दृषण गाखलेने कहा था कि वह मलत रक्षाका साधन है और नतिक तथा आध्यात्मिक हथियारोसे लडता है। सत्याग्रही अयायके खिलाफ लडता है और अस प्रसगमें असे जो भी कष्ट सहना पड खुगास सत्रता है। वह पणुबत्रके मुकाबलेमें आत्मबलको रखता है वह मनुष्यमें रहे पात्रत्वके खिलाफ असके देवत्वको खडा करता है अत्याचारके खिलाफ कष्ट-सहन गत्रिकके खिलाफ अपनी अत्ररात्मा अयायके खिलाफ अपनी उदा और असयके खिलाफ मत्याका मित्रता है। सत्याग्रहमें सत्यकी

\* हरिजन २०-४-४

† हरिजन २०-७-४

स्थापनाके लिये आवश्यक अहिंसक प्रतिरोधके सब सम्भव अपायाका अन्तर्भाव होता है। अमहत्याग सविनय अवज्ञा या सविनय प्रतिरोध — व्यक्तिगत या सामुदायिक — ये सब सत्याग्रहकी शाखाएँ हैं। अहिंसके अर्थानुसार पनपनवाले ये सब पीछे सत्याग्रहका हाँ सतान हैं। महात्माजीके लक्षणा और प्रयोगकी चर्चाके लिये स्थान नहीं है। लेकिन अतना बहू देना आवश्यक है कि ये सब निर्दोष हैं। उनमें से कुछ दूरराकी तुलनामें अधिन शक्तिगामी हैं लेकिन अतके प्रयोगमें विवेक और चतुराजीकी अपेक्षा अवश्य है। आवश्यकता होने पर अत सबका प्रयोग अज्ञसाय भी किया जा सकता है। यह तो स्पष्ट है कि सत्याग्रहकी कल्पना कमजोराके हथियारके रूपमें नहीं की गयी है। सत्याग्रहीक कोणमें हारके लिये कोशी स्थान नहीं है।

व्यावहारिक राजनीतिके क्षेत्रमें मतभेद व्यावहारिक राजनीतिमें भारतीय समाजवादिया और साम्यवादियाकी नीतियाके खिलाफ गांधीजीका विरोध वास्तविकताआकी सुदृढ़ और सही नाव पर आधारित था। मई १९३४ में कांग्रेसके अंदर समाजवादी पक्षके अंतर्गत अन्धान स्वागत तो किया था, किंतु अतके कार्यक्रमसे अन्धान अपनी असहमति प्रकट की थी। अतकी असहमतिके कारण अत प्रचार थे (१) अतमें भारतीय परिस्थितियाकी अवगणना की गयी थी। (२) कार्यक्रममें बताये गये अतके विधान यह मानकर किये गये थे कि विनिष्ट क्यों और सामान्य जनतामें तथा मजदूरों और पूँजीपतियोंमें काशी जल्दी विरोध है और वे पारम्परिक लाभके लिये कभी मिल्कर काम नहीं कर सकते। (३) मजदूरोंके अधिकार पर अतके ज्यादा जोर दिया गया था जब कि अतके कर्तव्योंके बारेमें कोशी निर्दोष नहीं किया गया था। (४) अतके रूपमें समाजवादी ज्यादा जल्द कर रहे थे। (५) समाजवादी परिणामों पर ज्यादा जोर देने थे, जब कि गांधीजी साधना पर जोर देने थे।

ये सब कारण भारतीय साम्यवादियोंके बारेमें और भी ज्यादा सही थे। साम्यवादी अचित और अनुचित अज्ञा सत्य और अमत्यमें 'कोशी फल नहीं करत थे। दूसरी महत्वकी बात यह थी कि भारतके बजाय अतकी भक्ति अत विद्या या अत विद्या की पार्टीके प्रति थी जिससे वे अपनी विचारधारा ग्रहण करते थे। अतकी यह बात गांधीजीका स्वाभिमानकी कल्पनामें अतके अर्थानुसार थी और वे अत अत्यंत अपमानजनक मानते थे। गांधीजीका मत था कि जो दंग स्वतंत्र होने हूँ भी विद्याके दानना माहताज हाँ अत जीवनका हल नहीं है। यही बात विद्याके विचारधाराओंके लिये भाँगा है। ये अतके असी हद तक ग्राह्य मानने थे जिस हद तक वे भारतीय परिस्थितियोंके अनुकूल बनाओ जा सकें और हजम की जा सकें।

## शारीर श्रम

हमारे जीवनका बनियादी नियम गांधीजीके बलानाके पचायत राजमें हरअक नागरिकमे यह आगा की जायगी कि वह शरीर-श्रमके अट दिम लास्ट पुस्तक शरीरसे अपनी जीविका कमाय। रस्किनकी सिद्धान्तका आदर करना गुर कर दिया पन्के बाद गांधीजीन शरीर-श्रमके रचनाओसे परिचित होन पर अुसन अनेके श्रिअ जक था। और टाल्स्टायकी रचनाओसे परिचित होन पर अुसन अनेके श्रिअ जक बनियादी कानूनका रूप के लिया। प्रत्यक पुरुष और स्त्रीको अपन हाथामे परिश्रम करके और काम करके ही अपनी जीविका कमाना चाहिय अिस सिद्धातका प्रतिपादन पहली बार टी जम० वादरेह नामक अक रूमी लेखकन किया था। टाल्स्टायन असे अपनाया और असे 'यापक' प्रसिद्धि दी। अिस सिद्धातक पीछ विचार यह है कि प्रत्यक स्वम्य 'यक्तिका अतना शारीरिक परिश्रम अवश्य करना चाहिये जितना भाजनत्री प्राप्तिके लिअ आवश्यक है और अपनी बौद्धिक क्षमताआका अुपयोग असे अपनी जीविकाके अुपाजन अथवा धन-संग्रहक लिअ नही बल्कि सिफ मनुष्य-समाजकी सदाके लिअ ही करना चाहिये। \* यह हमारे जीवनका बनियादी नियम है।

रस्किनकी पुस्तक 'अट दिम लास्ट' को शिक्षायें रोटीके श्रिअ किय जानवाये अिस शरीर-श्रमके कबी रूप हो सकते ह। अिस विषयमें गांधीजीका मागदान अट दिम लास्ट की शिक्षाअन किया था और अुन शिक्षाआका गांधीजीन अिस प्रकार समया था

- (अ) सबकी भलाजीमें हमारी भगभी निहित है।  
 (ब) बकीउ और नाओ दोनोके कामकी कीमत अकसी होनी चाहिय कयाकि आजीविकाका अधिकार सबको अक समान है।  
 (स) सादा मेहनत मजदूरीका किसानका जीवन ही सचा जीवन है। x

आदग अयोग — खती सच कहा जाय तो रोटीके लिअ किय जानवाले शरीर-श्रमका सही रूप केवउ खती ही है। परतु चूकि हरअक आदमीका खती करना समव नही है अिसलिअ खतीके बदले वह कात सकता है बन सकता है बन्धीना काम कर सकता है या लहारका काम कर सकता है। लकिन आदग अयोग तो खती ही है। अिसके सिवा हरअकको अपना भगी भी खन् ही होना चाहिय याना अपना मला स्वय साफ करना चाहिय। दूसरे शानमें मानवीय

\* हरिजन १४-११-४८

जीवनकी अनिवाय आवश्यकताआकी पूर्ति जिन चीजसे हानी है उनका निमाण या अनिवाय अद्यागामें किया जानेवाला परिश्रम राटीका श्रम माना जा सकता है।

जल्दरी गतें गरीर-श्रममें अपन-आपमें कोथी लवा नहीं है। कामका कष्ट मानकर लाचारीसे अरुचिपूर्वक भी किया जा सकता है। यह ता गुलामीका हा हालत हागी। अिसलिअ राटीक लिअे किय जानवाल अिम गरीर श्रमकी पहली गत यह है कि वह स्वच्छापूर्वक किया जाता चाहिय। अधिकांश गणाको काममें आनन्द नहा जाता और महज कामक लिअ काम व नहा करते। अगर अपना रागी कमानक लिअे काम करनेकी अुन्हें जल्दरत न हा ता अुन्हें काम करनेकी प्रेरणा ही नहा हाता। गायाजाका तरह हमें परिस्थि तियाकी लाचारीक कारण नत् वलि स्वच्छापूर्वक श्रमिज बनना चाहिय।

गाधीजी कहते ह कि लाचारीम मालिकका आना मानना गुलामीका स्थिति है जब कि स्वच्छापूर्वक अपन पिताकी आपाक पालनमें पुत्रत्वकी गोमा है। जिमी तरह गरीर-श्रमक नियमक लाचारीपूर्ण पालनस गरीबी, बीमारी और अमनाप पत्ता हाते ह। वह गुलामीकी ही स्थिति है। किन्तु अुसका पालन स्वच्छापूर्वक किया जाय ता वह सताप और स्वास्थ्यका जन्म दता है। \*

रागीक लिअ श्रमका दूसरी विगपता यह है कि वह बुद्धिपूर्वक किया हुआ होना चाहिय। बुद्धि और परिश्रममें काजी विच्छेद नहा है। जिन सिद्धान्तका अवनक कारण ही भारताय गावारी भयकर अपक्षा हुआ है।

श्रमक माय जा बुद्धिपूर्वक किया हुआ विगेषण ग्याया है वह यह बतगानक लिअ लगाया है कि समाज-सवामें श्रम तथा लप सकता है जब अुमक पीछे मवाका काथी निश्चित हतु हा तहा ता यह कहा जा सकता है कि हरअेक मजदूर समाजकी सेवा करता है। अब प्रकारम तो वह समाजकी सेवा करता हा है पर जिन मवाकी महा बात हा रही है वह बहुत अूच प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितक लिअे सेवा करता है वह समाजका सेवा करता है और जितनेम अुमका पत् भर गाय अुतना मजदूरी पानेका अुस हव है। जिनलिअ जिन प्रकारका अड-अवर समाज-सवास भिन्न नहा है। †

यह ना स्पष्ट हा है कि गरीर-श्रमक अिस सिद्धान्तका समाज-सवामे काआ विराध नहीं है। माच-भमपकर किया हुआ रागीका परिश्रम किया भी समय समाज-सवाका अुच्चतम रूप है। ‡ अुमसे ग्याकी सपत्ति बडता है।

\* हरिजन २०-६-३५

† हरिजनमवक १४-६-३५

‡ हरिजन १-६-३५

खातावापसे संवधित सारी सस्याजामें स्वावलम्ब्या खादाको पहला स्थान दिया गया।\*

जब जार स्वावलम्बी खाती पर दिया जन्म मगा तब व्यापारिक अत्याप्त गहरी लीगाका वास्तविक आवश्यकताआ तब सामित हा गया।+ स्वावलम्बी खाती और विक्रीवाली खाताका उत्पादन दाना माय माय चलते रह। विक्रीवाली खादीका उत्पादन स्वावलम्बी खातीके उत्पादनका गौण परिणाम हा गया।x

प्रारंभिक वर्षोंमें गरावाका राहत पहुंचाने पर जोर था। प्रसंगत वह अमीरा और गरीबाका जोड़नेवाली सजाव कड़ी बन गया और खुसे राजनीतिक महत्त्व प्राप्त हा गया। अभी तक सूत बनाने और बुननका काम सामान्य जनता करती थी। नयी योजनामें भी सामान्य जनता ही करती रही, किंतु बुनना बुद्धय बदल गया अब वह मुख्यत अपन ही बुपयोगक त्रिअ कानन-बुनन लगी। गाधाजान खादीके विकासमें जा योग त्वे बुनके कारण त्रिअ परिवर्तनकी आवश्यकता हुआ। गाबाके जा योग सूत कातने और बुनते थ, वे बुसका अपुपयोग खु नही करत थ। वे खाताक अपुपयोगकी कामतका न ता समझत थे और न बुमकी कद्र करत थ। बिसलित्र अखिल भारत चरखा-मधने अपने सारे साधन गाववालाका खाताधारी बनानके प्रयत्नमें लगा दिया।-

खादीका अद्देश्य आरंभ ही मौजूदा अस्वाभाविक रचनाका अन्त्यना था यद्यपि बुममें गहरा लागका बरबाद करनका विचार कल्पि नही था। मौजूदा रचनाको बुटनेका अय था गावा और गहराके स्वाभाविक सम्बंधका पुन स्थापित करना।† खाताका यह बुद्धय लगभग बसा ही था जसा कि असुरयना निवारणका। तथाकथित बुच्च वर्गोंने वर्षों तक निचले वर्गोंकी अपेक्षा का थी। खातीन बुच्च वर्गवालाका निचल वर्गोंके हितमें प्रायश्चित्त करनका मोता नेकर अिस दुहरी पुराजीका निमूल करनका काम दिया।‡

खादीके फलिनाय "खातीमें जा चाजें समाया हुआ ह बुन सबक साथ खातीका अपनाना चाहिय। खादाका अेक मतलब यह है कि

\* हरिजन २६-१०-२५

+ हरिजन ६-७-३५

x हरिजन ०६-१०-३५

- हरिजन २१-७-४६

† वही

‡ हरिजन ६-७-३५

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

हममें से हरअर्थको सम्पूर्ण स्वतंत्रताकी भावना बढ़ानी और टिकानी चाहिये यानी हमें जिस बातका दुष्ट सवत्स करना चाहिये कि हम अपन जीवनकी सभी जहरतोको हिन्दुस्तानकी बनी चीजास और अुनमें भी हमारे गावमें रहनवाली आम जनताकी मेहनत और अक्लसे बनी चीजाके जरिये पूरा करेंगे। जिस बारेमें आजकल हमारा जो खयाल है, उसे बिलकुल बदल डालनकी यह बात है। मतलब यह कि आज हिन्दुस्तानके सात लाख गावोंको चूसकर और बरबाद करके हिन्दुस्तानके जो दस-पाच शहर मालामाल हो रहे ह अुनके बदले हमारे सात लाख गाव स्वावम्बी और स्वयंपूण बनें और अपनी राजी खुशीसे हिन्दुस्तानके शहरा और बाहरकी दुनियाके लिअ जिस तरह अुपयोगी बनें कि दोना पशोको फायदा पहुंचे। \*

खानी देशमें रहनवाले सब लोगकी आर्थिक आजादी और समानताका आरम्भ बतलाती है। वह भारतीय मानव-समुदायकी अकता और समानताकी प्रतीक है और जिसलिअ पंडित नहरूके शब्दोंमें अुसे भारतीय आजादीकी पोशाक कहा जा सकता है। †

अडम स्मिथन अपन प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेल्थ आफ नेशन्स' में आर्थिक प्रक्रियाका नियंत्रण करनेवाले सिद्धान्ताका निरूपण किया है। अुसमें असन अन बातोका भी बणन किया है जो अिन आर्थिक सिद्धान्ताके व्यापारमें बाधा अुपस्थित करती ह। वह अिन बातोंमें मानवीय अपादान को मुख्य मानता है। दूसरी ओर खानीका सारा अयगास्त्र जिस मानवीय अपादान पर ही आश्रित है। खानीके अयगास्त्रके अनुसार बाधा अुपस्थित करनेवाड़ी बात मनष्यका स्वाध है जिसे अडम स्मिथ शुद्ध आर्थिक हेतु बताता है। इस तरह खानीके अयगास्त्रकी दृष्टि अडम स्मिथकी अयवा प्रचलित अय गास्त्रकी दृष्टिसे ठीक अलटी है। जिसलिअ मिलके कपडके अुत्पादनमें जो आर्थिक नियम अगू होने ह वे खानीके अुत्पादनमें लागू नहीं होते। यापारिक दृष्टिसे किय जानवाले अुत्पादनमें मालकी गुणवत्ताको कम करना असमें पटिया किस्मके मालका मिश्रण करना और लोगकी कुरचिकी अभाडन और तप्त करनेवाले मालका निर्माण करना आदि अुपायोका खत्र प्रयोग होता है। खानीमें मालकी खपतके लिअ अिन अुपायोके अवलम्बनका अुपयोग अकदम बजित है। इसी तरह असमें कारीगरोंको कमसे कम मजदूरी देन और ज्याासे ज्यादा मुनाफा कमानके नियमका भी कोअी स्थान नहीं है। खानीमें बित्रीसे होनेवाली सारी आय मूल अुत्पादकाको पहुंचा दी जाती है

\* रचनात्मक कायत्रम १९५९।

† वही

बीचवाल लागाको अनुका मेहनताना भर मिलता है भूमिमें अधिक कुछ नहीं। \*  
' खादी यापारिक यद्धकी नहीं 'यापारिक शक्तिकी निर्गामी है। '+

सबसे बड़ी सहकारी मडली कताओके अुद्योगकी सफलताके लिअे सहकारकी अनिवाय आवश्यकता है। हाथ-कताजीना प्रचार करके गाधीजी अपने गन्गामें दुनियाकी सबसे बड़ी सहकारी मडलाकी स्थापना कर रहे थे। उनका यह दावा बहुत बड़ा जरूर था, किन्तु वह गलत नहीं था। वह गलत नहीं था क्योंकि हाथ-कताओ अपना माना हुआ मकसद तब तक पूरा नहीं कर सकती जब तक कि उनमें उगे हुअे लागा लोग सचमुच सहयोगस काम न कर। अिस अुद्योगमें सहयोग आरम्भसे ही जरूरी है। हाथ-कताओ आत्मीको आत्म निर्भर बनाती है पर साथ ही वह असे अिस बातको समझनेकी सुविधा और प्रेरणा भी देती है कि अिस अुद्योगमें हर काम पर परस्परवलम्बनकी और मालके उत्पादन तथा वितरणकी प्रक्रियामें अत्यंत विनाश पमान पर लाषा लोगोंके सहयोगकी आवश्यकता है। x

सामाय खादी केन्द्रका चित्र सामाय खादी-केन्द्र कसा होना चाहिये अिसका वर्णन गाधीजीन अिस तरह किया है

खादी-केन्द्रको गन्गके प्रत्यक अयमें स्वच्छ होना चाहिये तभी वह अुपयोगी हा सकता है। अुसके और अिस विनाश मघटनके दूसरे घटकामें जो सम्बन्ध है वह मवया आध्यात्मिक और नतिक है। अिमन्निअे प्रत्यक खादी-केन्द्र अेक सहकारी मडली है। ओटनेवाले धुनन वाल काननेवाले बुननेवाले और खरादनवा अिस मडलीके सम्म ह और व सर सेवा तथा पारस्परिक सम्भावनाके बंधनसे अक-दूसरेके साथ बंधे हुअ ह। †

खादी मघटन अक सेवा सस्या है खानी स्वराज्य प्राप्तिका सरल साधन है ती भी हमें अपनी खानी सस्याअको सिफ आर्थिक प्रवृत्तिके रूपमें ही चलाना है। असी सस्याअामें लोकगाहीका तस्व अर अमुक अशमें ही दाविल किया जा सकता है। लोकगाहीमें सधप और प्रतिस्पर्धाके लिअे भी स्थान होता है किन्तु आर्थिक सस्यामें यह बात कहा चल सकती है? 'यापारक क्षेत्रमें क्या हम अलग अलग दगा या परस्पर विराधी पणोंकी कल्पना कर सकते ह? अगर अमा हो ता सारा 'यापार ही अस्तव्यस्त हा जाय। फिर खानीकी सस्यामें

\* हरिजन २१-९-'३४

+ यग अिडिया ८-१२-'२१

x यग अिडिया, १०-६-२६

† वही

तो महज आर्थिक सस्यायें नहीं ह अिससे बढतर वे पारमाथिक सस्यायें भी ह। अुनका अुद्देश्य किसी भी प्रकारक स्वाय-साधनता नहीं किन्तु लोकहित-साधनता है। हमारं खाणी सस्याआका ध्यय ता जनताके प्रय साधनका नहीं किन्तु अुमके श्रय-साधन का है। असलिअ राज रोज बढतर हुअ लोकमतस स्वतंत्र रहकर भा अुस किन्ना ही बार अपना काम चलाना पडगा। जिन सस्याआका व्यक्तिगतकी महत्त्वाकांक्षा पासनका साधन ता बनना ही नहीं चाहिय। \*

खादी और राजनीतिक सघटन खाणी और राजनीतिक सघटन दो अलग अलग वस्तुयें ह और विन्कुल अलग अलग रती जानी चाहिय। अस बातमें गन्तफहमीके लिअ कोनी स्थान नहीं है। खादीका अुद्देश्य मानव-सेवा है लेकिन जहा तक भारतका सम्बन्ध है असका राजनीतिक असर नी जरूर होगा और बहुत ज्यादा होगा। +

खादीकी अक आनपगिक विशेषता यह थी कि वह जन सम्पकका साधन थी। असलिअ यदि खाणीके द्वारा लोगका आत्स्य दूर किया जा सके तो यह आगा रती जा सकती थी कि वे अुनकी बात ध्यानसे सुर्गेज जो अुनके पास अुनकी जीविकाका साधन ँकर पहुचते ह। खादीके प्रचारका कार्यक्रम कार्याचित करत हुअ ता यही ठीक था कि अुद्देश्य शब्द मानव सेवाका हा हो यानी आर्थिक हा और अुसमें किसी तरहका राजनीतिक हतु न हो। खादीके द्वारा लोगोको जिस सस्याका अुन्होन खुद ही निर्माण किया हो आवश्यकता होन पर असके खिलाफ सविनय भगकी कला सिखायी जा सकती थी। यह कला सीखनके बाद ही वे अस चीजको सफलतापूर्वक अमाय कर सकते थ जिसका वे अहिंसक रीतिसे नाग करना चाहते हो। x

अहिंसाका प्रतीक चरखा हमें सारी जनताको भलाभी करनेवाला राय दिलापगा। वह गावाको राष्ट्रकी अय रचनामें अुनका अुपयुक्त स्थान देता है और अुच नीचका भदभाव मिटाता है। सन १९१९ में भारतकी स्वतंत्रताके प्रमियोको अहिंसा और चरखका सदेश मिले और अह यह बताया गया कि अहिंसा ही स्वराज्यका अकमात्र साधन है और चरखा अहिंसाका प्रतीक है। अहिंसाका चरखके सिवा कोअी दूसरा साधन नहीं है। चरखके सावत्रिक प्रचारके बिना अहिंसाकी मत अभियक्ति सम्भव नहीं है।-

\* हरिजनसेवक २६-१०-३४

+ मॉन्टन रिपू अक्तूबर १९३५।

x वही

- हरिजन १३-४-४०



अहिंसा पर आधारित समाज अस समुदायाका ही बना हुआ हा मन्ता है जो गावामें रहत हा और जा स्वच्छापूण सहायके द्वारा मनष्यका गामा दनवाला गतिपूण जावन बितात हा। \*

स्वातन्त्र्यात्तर यगमें खादाका स्थान स्वानश्यात्तर युगमें खानाका काशी स्थान है या नही, यह येन अपयुक्त मवाठ है। अिम मवात्का गाधीजीन निम्नलिखित जवाब लिया था

‘खानी अहिंसाक आधार पर खडी जेव जीवन-मद्धतिका प्रगट करती थी और करती है। सही हा या गन्त मरी यह राय है कि खाना और अहिंसाक कराव कराव गप हा जानस यह मानित हाता है कि अित तमाम वर्षोंमें हमन खानाके मुख्य गूनायको अच्छी तरह नहा समया था। अिमलिअ कभी लिगाआमें हम भाजी भाजाकी उदायी और अराजकनाका दुखद दृश्य देख रह ह। मुझ काजा गका नहा कि कातना और खानीका बुनना पहलेसे कनी अधिक महत्त्वपूण है यदि हमें जमा आजादी मनी है जिस भारतका सामाण जनता अत स्फुर्तिसे महमूम कर ले। महा अिस धरता पर आन्वरका राय या रामराय कहा जायगा। खाना गारा हम मनुष्य पर गकिन द्वारा सचाहित यत्राका आधिपत्य स्थापित करनक बजाय यत्रा पर मानवकी प्रभुता स्थापित करनका कागिग कर रहे ह। खानाके द्वारा हम श्रम पर पूजीकी घृष्ट विजयके स्थान पर पूजीका श्रमक अधीन बनानसा प्रयत्न कर रह ह। अिमलिअे यदि भारतमें पिछल तीम सालमें की गयी कागिग प्रतिगामी कर्म नहा था ता हाय-बतायी और अमक साथ लगी इयी मत्र धानाकी पहलमे कही ज्यादा जारम और गाना बुद्धिक साथ आगे धाना चाहिये। x

खादी सामोद्योगोंका मध्यबिन्दु है खाना कन्द्रीय मूय है और दूसरे सामोद्योग ग्रहाका तरह अुसके चारु आर घमत ह। अुनका स्वतन्त्र अस्तित्व नहा है। अिमनी तरह खानी भी दूसर अद्यागाके जिना नही जी सकती। व पूरी तरह परस्परावलम्बी ह। सच ना यट है कि हमें गावावाला भारत या गहरावाग भारत — अित गोंमें म अबका चुनाव कर लना है। गाव तयस ह जवम भारत ग है गहराका विन्गी आधिपत्यन पग किया है। आज ता गहरारा वात्काग है और व गावानो अिम तरह चूग रह ह कि गाव जरर होकर नष्ट हात जा रहे ह। मरी खानी मनोवृत्ति मुझ बनानी है कि जत्र यह आधिपय

\* हरिजन १३-१-४०

x हरिजन २१-१०-४७

नहीं रहेगा तब दाहराको गावारी मातहत करनी होगी। गावाका सापण स्वयं अब सागठित हिमा है। अगर हम चाहते हैं कि स्वराज्यका निर्माण अहिंसाके आधार पर ही हो तो हमें गावाका अनका अचित स्थान देना पडगा। यह हम कभी नहीं कर सकेंगे यदि हम देगी या विन्नेगी गहरी कारखानामें तयार हुअी चीजाके बजाय ग्रामोद्योगकी वस्तुआका अपुयाग करवे ग्रामोद्योगका पुनरुद्धार नहीं करेग। \*

अज यह बात स्पष्ट हो जायगा कि गाधीजी खादी और अहिंसाको अभिन्न कयो मानत थ। खादी मरुय ग्रामोद्योग है। खादीका नाश हो जाय तो उसके साथ गावोका और अहिंसाका नाग अनिवाय हो जायगा। यह बात भाकडासे सिद्ध नहीं की जा सकनी। जिसका प्रमाण तो हमारी आखोके सामन मौजूद है।x

### अथ ग्रामोद्योग

रचनात्मक कार्याकी आवश्यकता सन् १९३३ क अतिम और १९३४ के प्रारम्भिक दिनमें गाधाजीका चलाया हुआ सविनय अवज्ञा आन्दोलन अपन सर्वोच्च बिन्दुको पार कर चका था और देशभरमें काग्रस-जन यह सोच रहे थ कि अब क्या होगा। असा माझूम होता था कि जउसे बाहर जो लोग रह गय थ वे सब किंकनब्य विमूढ हो गय थ। या तो गाधीजी रचनात्मक काय पर हमेगा जोर देते ही थ किन्तु अिस समय अुहे जुसकी आवश्यकताका जमा भान हुआ बसा पहले कभी नहीं हुआ था। वाक रचनात्मक काय सन १९२ में काग्रसका जो कायनम तयार हुआ था अुमका अभिन्न जग बन गय थ। लेकिन चकि अनमें बाहरी तडक भडकका अभाव था जिसलिअ वे जुपेसाके गिकार हो गय थ। लेकिन सविनय अवज्ञा आन्ानको सफउ बनाना हो तो राष्ट्रका काम रचनात्मक काय किय बिना नहीं चउ सकता था। अगर प्रत्यक नागरिक स्वराज्यकी अिमारतके निर्माणमें रचनात्मक प्रवृत्तिके शारा अपना अपना हिस्सा देना सीख के और असका महत्त्व समचन गय ता क्षितिज पर फिन्हाउ प्रवागका कोअी चिह्न न होते हुअ भी निराग हातका कोअी कारण नहीं रहेगा। जिसलिअ सन १९३४ में गाधीजीन अतिउ भारत ग्रामोद्योग सघकी स्थापना की। अखिल भारत ग्रामोद्योग-सघका अरुय भारतके मरते हुअ ग्रामाद्यागोको पुन जीवित करना था।

ग्रामोद्योग सागीके पूरक ग्रामाद्योगका दर्जा खादीसे अग्य है। अनमें स्वे-छापूक किय जानवाले कामक िज ज्यादा स्थान नहीं है। अुनमें स

\* हरिजन २०-१-४०

x वही

प्रत्येकमें काम बरनवालाकी अक सीमित मर्यादा ही समा सक्ती है। अनुका महत्त्व सान्नीके लक्ष्यमें सहायक पूरक बुद्योग होनमें है। व सान्नीके बिना नष्टा टहर सक्ते और अनुक अभावमें खान्नी अपनी गान खा देगी। गावकी अथ रचना हाथ पिमाओ, हाथ कुय्यओ, सावुन-साजी, कागज, दियासल्लाजी चमडेका काम तेलधानी जाति आवश्यक प्रामोद्योगके बिना सम्पूर्ण नहीं हो सक्ती। यदि माग हो ता असमें एक नहा कि हमारे गाव हमारी अधिकाग जरूरतोंकी पूर्ति कर सक्ते ह।\*

### बुद्योग और सेतो

सच्चा सामाजिक अर्थशास्त्र सच्चा सामाजिक अर्थशास्त्र हमें यह सिपाता है कि मालिक और मजदूर अक ही अवड गरीरक दो हिस्स ह। अनुमें स बोआ भी अक दूसरेग बडा या छोटा नहीं है। अनुके हित अक दूसरेक विरोधी नहा बल्कि समान और अयोयान्त्रित ह।x

मालिकक कनध्य मालिकसे क्या अपेक्षा है? पहली अपेक्षा तो यह है कि वह अपने सब कार्योंमें पूरा जामानदारीका पालन करे। व्यापार पूरा जामानदारीके साथ चलना कर्त्तव्य तो है पर असम्भव नहीं है। हा, यह बात सही है जामानदाराक द्वारा बहुत ज्यादा पसा कमाना सम्भव नहीं है।+

व्यापारमें बओमानी क्षम्य नहीं मानी जानी चाहिय। विगुद्ध ओमान दारीका सिद्धान्त जमा जीवनके दूसरे क्षत्राको लागू है वसा ही अस क्षत्रके लिय भी वह आवश्यक है और व्यापारीको चाहिय कि अस कितना हा नुकमान क्या न हो रहा हो वह अपने सिद्धान्तकी हत्या न करे।-

अस बातम दो मन नहीं हो सकने कि दूसरे व्यापारियाकी तरह मित्र मालिकानों भी अपने मजदूरों और दूसरे कमचारियाक कल्याणमें माता पिता जसी निश्चली रत्ना चाहिये। अनुके सम्बन्ध मात्र मालिक और सबकाक नहीं जाने चाहिये।†

उओ मालिक असा समझत ह कि अपने कामगाराक प्रति अनुका कन्य अनुकी भौतिक आवश्यकतायें पूरा कर देना है, असस अधिक कुछ नहा। असा तरहक विचार रचनवाक बिना बाय-बायानाके मालिकने अक बार गार्पीजाका बिन-मागा मलाह रत हुआ यह लिया था कि व असहयोग

\* कस्ट्रक्टिव्ह प्रोग्राम (१९४१), पृ० ११।

x पग जिनिया ३-५-२८

+ हरिजन २१-५-४६

- हरिजन १३-३-३७

† पग जिनिया, ३-५-२८

आन्दोलन स्थगित कर दें और मजदूरोंकी दगा गुपारनक लिअ वानूनका आश्रय न। जराके बारेमें गांधीजीन यह किया था

लेखक जिस स्वभावका प्रतिनिधित्व करता है उससे नमून मन नटारमें और यहा चम्पारनमें दोना जगत् देवे ह। उसका हेतु गम है लेकिन जैसे नही भाउम कि वह अर सहृदय या दयाळु पगुपात्र मात्र है, असस अधिक कुछ नही। जब बार यह स्वीकार कर लिया जाय कि मनष्याके साथ पगुआ जसा व्यवहार किया जा सकता है तो कितन ही यरोपीय व्यवस्थापकोंको पगुआके साथ किया जानवाला नित्यताका व्यवहार रोकनका ध्यय रखनेवाली सस्याभाकी ओरसे याग्यताका प्रमाणपत्र दिया जा सकता है। म अपन अनुभवसे जानता ह कि निगुल्क दवा निगुल्क डाक्टरी सेवा निगुल्क आवास आदि मव जसी यकिनया मात्र ह जिनका अदृश्य कुली को हमेगा गुलाम बनाय रखना है। मेरी रायमें अगर असे अपन कामका पूरा पारिश्रमिक दिया जाय और घर तथा दवा आदिवा मय असेसे बसूल किया जाय तो वह आजकी अपेक्षा कही ज्यादा स्वतंत्र होगा। \*

गांधीजीकी रायमें डाक्टरी सहायता आदिकी सुविधायें मुफ्त नही दी जानी चाहिय। अठवत्ता जसी व्यवस्था जरूर होनी चाहिय कि सुविधायें अहें तत्काज और सस्ते दामोंमें मिल सकें। मुफ्त दी जानवाली सहायता जिहे यह सहायता दी जाती है अुनके स्वाभिमानको नष्ट कर देती है। अिसके सिवा जसी सहायता कभी ता भावना शय मनसे दी जाती है और कभा लेनवाठे असका दुष्प्रयोग करते ह। तो यह जरूरी है कि जिन दोना बुराभियाना निराकरण हो और लोगोको अुनसे बचाया जाय। x

मजदूरोंके अधिकार और कृतय मजदूरोंके अधिकार और कृतय क्या ह? मह समझनमें कोयी कठिनाजी नही होना चाहिय कि अुहें अतना अूचीसे अूची मजदूरी पानवा अधिकार है जितनी कि जद्योग अपनी शक्तिअ अनुसार दे सकता हो। और अुनका कृतय यह है कि वे अपनी मजदूरीअ अवजमें अपनी पूरा योग्यताके अनुसार काम करे। +

मजदूर जो चीज चाहते ह और जो जुहे मिशनी चाहिये वह मात्र रोटिया नही ह। असअमें वे समान दरजके स्वमानी नागरिकोरी हैसियतस सम्बोधित जीवन चाहते ह मनष्यकी हैसियतसे याय चाहते ह अरन्नाअ भयसे प्राण चाहते ह। अिसके सिवा अह स्वच्छ और आरोग्यकी दष्टिस

\* यग अिडिया २९-६-२१

x यग अिडिया ३-५-२८

+ स्पीचेज अंड राइटिंग्स आफ महात्मा गांधी पृ० १०४५।

अपयोगी आदर्श सीखनेकी मिनव्ययिता और ब्रुयोगपरायणता आदि गुणाका विकास करनेकी तथा गिन्याप्राप्तिकी आवश्यकता है।\* अुह सस्कारवान बनना चाहिये और अपन आचरणमें आत्म पवित्रता और श्रीमान्तारी प्रगट करना चाहिये। और जिनके लिये अुनमें अतड बुघाग आत्मत्याग और धयक साथ तथा वुद्धिपूर्वक श्रम करनेका गकित हानी चाहिये।

कामकी परिस्थितिया गाधीजीन मजदूररके हितहित पर प्रभाव डालन वाट दूमर कजी सवालाला — जम मजदूररके चुनावमें भ्रष्टाचारकी वुराजा कामक घट, अुनका सुरक्षितता स्वास्थ्य आवासकी ध्ववस्था आदि — पर भी विचार किया है, अुनके सम्बधमें लेग लिखे ह। अन्हान सरगारा क जरिय मजदूररके चुनावकी प्रयाकी नित्य का। अुन्हान क्हा कि मजदूररका चुनाव सरगाराके यानी अस दलालोक जरिय हो जिनका अुद्दय मजदूररका किमी भी तरह मर दना होता है ता मजदूररका अिकरार (काट्रेक्ट) का स्वतंत्रता नहा रहनी। दलाल नौकरका जिच्छा रखनवाग आत्मोके मामने कारणानकी नौकरीकी बहुत वढिया तसवीर पंग करना है और अिम तरह अुम अपना गाव छाडनेक लिअ गभाता है लकिन अतमें जब नौकरी स्वीकार करनेक वाग अुस आत्मोको वस्तुस्थितिवा पता चगता है तो वह वहुत निरागा अनुभव करता है। जब तक आमपाम वहा अमे गराव गोग हा जा वकार ह और काम चाहते ह तब तक बाहरस मजदूर राना गग्त है।x

अुहोंने कामके घटे — जो अुम ममय बहुत ज्यादा थे — कम करनेके लिअ भी क्हा। दुनियाका अनुभव बताता है कि कामके घट ज्यादा होनेसे काम ग्याग नही होता बस्कि कम ही हाता है।+ जिह ज्यादा घटे काम करना पडता है अुहें बौद्धिक और नतिक विकामके लिअ काभी समय नहा मिलता। अिममें बोधा आदचय नही कि अुनरी दगा पगुकी जसी हो जानी है।— अिम अत्यन्त जरूरी सुधारको स्वअापुवक कर डालनक लिअ कवल थोडम साहम और आरम्भ गकितका ही जरूरत है। मागिक लोग अमे अुनरता पूवक गुद न कगेगे तो वह आग-भीछे हानवाला है हा। लकिन अगर वह दरावके परिणामस्वरूप होगा तो अुसमें गोभा नही होगी। मजदूररके कामक पर कम होने चाहिये यह अेक जगद्-व्यापी आन्दगन है जिस काभी राक नही सवता।† सन् २० क अपने अरु भाषणमें गाधीजीने अहमतावागक मिल

\* हरिजन २९-९-४६

x यग अिडिया २-९-२६

+ यग अिडिया २२-१०-२५

- यग अिडिया २८-४-२०

† यग अिडिया २२-१०-२५

मालिकोंसे कामके घट १२ से १० करनेके लिये और मजदूरोंसे १० घण्टे ही १२ घण्टे जितना काम कर देनेका आग्रह किया था।\*

एक दूसरी घुराभी जिसके कारण अमुक बगने मजदूरोंका बहुत बुरा भोगना पड़ता है हृदयसे ज्यादा महत्त्ववाला काम करनेकी है। रिक्का खोजनेका काम करनेवालाके बारेमें यह बात सास तौर पर सही है। अतः मर्यादा बाहर अतनी सख्त मेहनत करनी पड़ती है कि वे चार छह सालमें ही हृदय अथवा फफुडके रोगके शिकार हो जाते हैं और मर जाते हैं। यह बात अन्धान एक पावतीय नगरमें रिक्का खोजनेवाले मजदूरोंकी दशाका अध्ययन करनेके बाद कही थी। अन्धान कहा था मुझे आश्चर्य होना है कि रिक्काका उपयोग करनेवाले जितने निष्पुरुष बने जाते हैं कि अतः यही दस्तावेज नही देता कि रिक्का बाउकोको हृदयसे ज्यादा बुरा परिश्रम करना पड़ता है।<sup>x</sup>

बालकों द्वारा मजदूरों अन्धाने जिस बातकी हिमायत की कि कारखानामें मजदूरोंके तौर पर लिये जानेवाले बाउकाकी अन्न बना दी जाय।+

छोट छोट बाउक स्वयंसे अन्न लिये जायें और अतः पसा कामानक लिये मजदूरोंके काममें रूका दिया जाय — यह वस्तु राष्ट्रीय पतनकी निशानी है। कोआ भी राष्ट्र अपने बालकोंका असा दुरुपयोग नहीं कर सकता। यदि वह असा करे तो अपने राष्ट्र-पक्षके अयोग्य ठहरेगा। कमसे कम सोलह बपकी अन्न तक तो बालकोंको स्कूलमें रहनेका अवसर मिलना ही चाहिये। -

सुरक्षितता अपने एक लक्षमें अन्धान अंग्लडकी सरकार कारखानामें काम करनेवाले मजदूरोंकी सुरक्षितताका जसा ध्यान रखती है असाकी प्रशंसा की थी। न केवल गंदे अथवा हानिकर घघामें रूका हुआ मजदूरोंकी सुरक्षाकी बल्कि जनताकी सुरक्षाकी योग्य व्यवस्थाके लिये भी जो जुपाय किये जाने चाहिये अतः इन निकायनमें खूब सावधानी रखी गयी है। भारतमें हरिजनको साथ किये जानेवाले व्यवहारके साथ जिस बातकी तुलना करते हुए अन्धान जिस नेवमें कहा था कि भारतकी आवश्यकतामें भले और गंदे कामोंमें लग हुआ तयारुचित अन्नकी सुरक्षाके लिये और जसा काम करनेवालाकी छतसे जनताकी सुरक्षाके लिये अंग्लडमें जितना ध्यान दिया जाता है असा भी ज्यादा ध्यान देनेकी जरूरत है। जैसे ध्यानके अभावमें य मजदूर घूल और

\* यंग अडिया २८-४-२०

x हरिजन १६-६-४६

+ यंग अडिया २५-७-२९

- यंग अडिया २८-४-२० और ५-५-२० -

गन्नाक नीचित वाहन बन जायेंगे। \* महतरारी मुविधा जीर गुरगावे लिअ अन्धान अस निपम बनानका कहा कि अुह अमुक प्राररक जम बतन और झाा आदि लिय जायें जिसस अुह गन्गीका हायसे स्पग करनकी जरूरत न रहे। जिनके मिवा अुह अमी सानी पोगाक भी दी जानी चाहिय जिस के कामक समय पहिनें। चाा पद्धतिका नताजा यह होता है कि काम कमस कम होना है, अम्ब-उता ज्याास ज्याा हाती है और माय ही रिक्कन चलता है भष्गाचार फलता है और सम्बद्ध योग अगिण्ता सीखत ह। जिनलिअ निरीशका या अविदगाका (जिस्पकटरा या जावरमिबराको) स्व-उताके असि मानबोपयागी कामका दूसरास किसी भी तरह करा लेनके बजाम खर करनका तालीम मिाना चाहिय। x

निर्धारित अल्पतम श्रणीक घराको व्यवस्था औद्यांगक प्रतिष्ठान ३० से लगाकर ४०% तकका मनाफा घोषित करने ह उकिन अपन सबसे कम वेतन पानेवाा कमचारियाक लिअ व घराका बाजी मुविधा नहा दते। क्या जगह तो ये योग जो मालिकाको अनका मनाफा कमाकर दत ह बिलकुल अथरी और गनी कारियामें रहते ह। बाजी म्युनिमिपलितिया भी अपन कम वेतन पानेवाले कमचारियाकी आवास-सम्बधी जरूरताक बारमें जरदम अगेगाका व्यवहार करती ह। असि सम्बधमें अुहाने असि बानवा आग्रह किया कि अविवाहित, विवाहित और बाल-वच्चवाा लागेके लिअे अमुक अल्पतम गणावे घराकी व्यवस्था होनी ही चाहिय। मालिकाका कमचारियाकी यह प्राथमिक जरूरत अवश्य हा पूरा करनी चाहिय। +

वेतन वेतनके मवाा पर लिअ गय गाधीजाके लेखामें बहुत धाड ही असे ह जिनमें अहमगबादके कपग जुद्योग जम किमी बड अुद्यागमें प्रचलित वेतन ग्राक बारेमें विचार किया गया हो। जिन विपमस सम्बद्ध बाकाके लेखामें हाय-कताअी तथा अय गूह अुद्योगामें अल्पतम वेतन या वेतनके मानीकरणकी चर्चा है।

अहमदाबादके कपडा-अुद्यागमें वेतनके सगड पर अपना निणय दत हूअ निर्णायकने यह सिद्धान्त पग किया था कि 'हा मजदूरकी अितना वेतन नही मिलता जिससे बट समुचित जीवन-मानका निवाह कर सक वहा अुमे अपन मालिकस वेतनको अुम ह' तक बगानके लिअे कहनका अधिभार है। - गाधीजीने निर्णायकक असि साहमपूण निणयना स्वागत किया था। मजदूरी

\* हरिजन १-४-३२

x हरिजन ६-१०-४६

+ हरिजन ११-७-२६

- यग अिधिया १२-१२-२९

करके अपना पत्र पाठनवाले और लावा-नरोडाक गाय याय करने के क्रिय हमें बुद्धे असा वेतन देना ही चाहिये जिममे अुवा निर्वान हा जाये। हमें अुनकी अमहायताका लाभ नही अुठाना चाहिये। \* सच ता यह है कि यदि कोअी अुद्योग यह अल्पतम जीवन-वेतन न दे सनना ही तो अुस अपनी दुकान अठा नेनी चाहिये। x

यह अल्पतम वेतन अितना अवश्य होना चाहिये कि (१) मजदूरको असा सतुलित पर्याप्त और पोषक आहार मिठ जाय + जिससे आत्मी रोज आठ घटा अठ्ठा तरफ काम कर सकन जितना साक्न बना रह (२) असे पर्याप्त कपडा मिठता रहे और (३) ज्यान अछा घर और दूमरी सामाय सुविधायें मिठती रहें। -

हाय-वताअीवाकके लिअ अल्पतम मजदूरी तय करनेका विरोध कुछ रोगा अिस आसार पर किया था कि कतवय खुद कम मजदूरीके पत्रमें अपना मत रेंग और किनी भी हाअनमें कतवयकी मजदूरी किसानकी मजदूरीस अधिक नहा होना चाहिये। † जिममें से पहली दलील तो वही है जा सब शोषक और अत्याचारी दिया करते ह। दूमरी दलीलके जवाबमें गाधोजीका यह कहना था कि किसानकी मजदूरी जसी काअी चीज नही है और किसानकी हालतको दूसरोकी हाअत कसी होना चाहिये जिमका मानण्ड (स्टण्ड) नही माना जा सकता। किसानको ता अपनी जमीनसे अितना भी नही मिठता कि वह भरपट खा सके या अपनी जमीनका पूरा अगान भी चुका सके। ‡ अखिल भारत चरखा-सभ और अखिल भारत ग्रामोद्योग-सभ जसी जन हितकारी सत्वायें सस्ता खरीअन और महंगा बचनकी व्यापारिक नीतिका अनुसरण नहा कर सकती। कारण अनका अुश्व ग्रामोद्योगकी वस्तुआका सस्ता अत्या दन ननी बल्कि बरोजगारीस पीडित गाववालोको जीवन-वेतन दे सकनवाला काम देना है। § अिसलिजे मानण्ड तो अमी वेतनको माना जा सकता है जिमसे किसानको अपनी रोजी रोटी मिठ जाय। अिससे कुछ भी कम देनकी कोणिक गुनाह जसी ही है। ॐ

\* हरिजन १३-७-३५

x हरिजन ३१-८-३५

+ हरिजन १६-१-३७

- यम अिडिया १२-१२-२९

† हरिजन १४-९-३५

‡ वही

§ हरिजन १५-७-३५

ॐ हरिजन १४-९-३५



गांधीजीके सामने सबम कठिन सवाल हाथ-कताजी और दूसर ग्रामाधी गके लिअ अल्पतम राष्ट्रीय बतन निर्धारित करनेका था। और अुहान अन्तमें यह निणय किया कि आठ घटे डटकर काम करनेका मेहनताना आठ आना होना चाहिये। आठ घटेक कामका जय अच्छी योग्यतानाले कारीगरके द्वारा अुतन समयमें तयार किया गया मात्र माना गया। \*

अिसके सिवा अुहान यह भी तय किया कि बिहारके बतवयका गुजरातक बतवयसे कम मजदूरी देनका कोअी कारण नहा है। अिसमें सतेह नही कि जीवन मानमें अन्तर हानके कारण अलग-अलग प्रान्तामें चाजकि दामामें अतर है। लकिन अखिन भारत चरखा-मघ परिस्थितियाको अतके मौजूदा रूपमें स्वीकार करनके लिअे बाध्य नही है। यदि वे अबायमूलक ह तो सघको चाहिये कि वह अड बन्ते। x

यह याद रहे कि मन ३० और ४० क दरमियान गावके कारीगरके लिअ आठ आन राजका मजदूरी नगण्य नही था। अुम समय कारखानामें काम करनवाते मजदूरको जो अल्पतम बतन मिलता था अुससे यह अधिक ही था कम नहा। अिस निश्चयक अनुसार अखिल भारत चरखा-मघने तीन चार सालके अदर कताधीकी मजदूरा क्रमश बढाकर आठ आना प्रतिदिन करनका कोणिग की। लेकिन सघ अपने अिस प्रयत्नमें सफर नही हुआ। गांधीजीन अिस विषय पर लिखते हअ निम्नलिखित विचार प्रगट किय थे

सामान्यत गावामें वहा भी ग्रामीण मजदूरों अथवा कारीगरको आठ घटेके कामके लिअ आठ आन नहा मिगने। कतवयका तब तक आठ आन प्रतिदिन देना सम्भव नही हागा जब तक कि हमरे वर्गके मजदूरोंको अितना ही नहा मिगन लगना। और जब तक परिस्थितिया बिल्कुल बढल नहा जाता, तब तक खरीदनेवाले बगकि पास अितना पमा ही नही है कि वे सब किस्मके मजदूरोंको आठ आना राज द सकें। सेना पर हानवाला अत्यत भारी और अनुत्पात्क खच देनका अेकत्रम तबाह कर रहा है। अिसक सिवा बड अधिकारियोंको लिअे जानवाले और देगके बाहर सच होनेवाले बडे बेनना और असी अनुशातमें बडी पैंगता पर होनेवाला व्यय भी अक कारण है। अिस बन्ती हुनी गरावीके कभी हमरे आन्तरिक कारण भी ह। -

ये सघ कारण अपने-आपमें महत्त्वपूर्ण तो हं लेकिन आठ आना प्रति दिनकी मजदूरीका लक्ष्य क्या असफर हा गया अिस बातको वे पूरी तरह

\* हरिजन १३-७-३५

x हरिजन ६-७-३५

- हरिजन २६-८-३९

गहा समझाते। पहलू त्रिज गय जब लेखमें अहान अथ दूगरी महत्वपूर्ण घातका जुल्लेख किया था जो कि अिस लक्ष्यकी असफलताका मुख्य कारण थी। यह बात थी—खातीके शास्त्रज्ञ अज्ञान। गावामें जो चरपा चल रहा था वह उत्पादनका सक्षम (efficient) साधन नहो था और जिसलिअ वह सातनवालाका सतोपप्रद नमात्री नहा दे सनता था। यह स्थिति आज भा वायम है। यही कारण है कि अस्ति भारत सादी बाइका गम्भीर विचारके बा अिस निणय पर जाना पडा कि चरखकी कायगमना बडाना चाहिय। अमने चरखका जब सुधरा हुआ रूप चढाया है जिसरी आजकल दगभरमें फले हुआ दो सौ पचाससे भी ज्यादा केद्रामें जाच हा रहा है। यत्ति यह प्रयाग सफल हा जाता है तो हाय-कताभी भविष्यमें टिकगा और बढगी तथा गाव वालोके त्रिज अभी भी आगा और आबामन देती रह सवगी।

हरअक मजदूरका निश्चित अल्पमत मजदूरी देनके बा मजदूरकी कुगताके अनसार अनकी मजदूरीमें फक होना चाहिय या नहा हाना चाहिय ? हम पहले ही देख चके ह ति गाधीजी कुगता कारीगरका ज्यादा मजदूरा दनके विलाफ नही थ। लेकिन वे जसे विचारहीन पर्वोका जरूर मिटा देना चाहते थ जिनका मूल मात्र अतिहासिक कारणामें है और जिनका मौजूग परिस्थितियामें काओ औचित्य नहा रह गया है। कताओके अक घटके परिश्रमका मूल्य बुनाओके अक घटके परिश्रमके मूल्यस कम क्या हाना चाहिय ? सादी बुनाओके बनिस्वत अतन ही समयकी कताओकी मजदूरी कम होनका कोओ कारण नही है। सादी बुनाओ अक यात्रिक प्रक्रिया है जब कि सादीसे सादी कताओमें हायकी चतुराओकी जरूरत होती है। फिर भी कतवयको प्रतिघटा अक पाओ मिलती है तब कि दुनकरको छट पाओ मिलती ह। धनकरका भी कतवयसे ज्यादा मिलता है—लगभग अतना ही जितना बुनकरका। अिस परिस्थितिके अतिहासिक कारण ह। लेकिन कारण अतिहासिक हा जिसलिअ वे याय्य नही हो जाते। जिसलिअे चरखा सध पर यह कतय आ पगा कि वह अपन सभी मजदूरो कारीगरो आदिकी मजदूरी समान कर दे। अिसका अय यह हुआ कि यदि बुनकर स्वेच्छापूवक समान वेतन लेना स्वीकार न कर तो बुनसे अपना बान मान कम करनका अनुरोज किया जाय। यत्ति हरअक प्रकारके उत्पादक परिश्रमकी मजदूरी समान ही होना चाहिय यह सिद्धात सही है तो अिस आदाके जितना सभव हो अतन पास पहुचनकी कोशिश होनी ही चाहिय।\*

कानूनकी मर्यागमें मजदूराकी स्थिति सुधारनके विविध जुपायामें कानून भी अक है लेकिन कानूनकी अपनी मर्यागयें ह। जनमतसे आग बकर

जा वानन बनाया जाना है वह अक्सर निक्कमा सावित होता है। जब तक मालिक मजदूरोंको अपन परिवारका सम्पन्न मानना नहीं सोच लेते या जब तक मजदूरोंको अपन अधिकार समझने और उन्हें हासिल करनेके अुपाय जाननेकी तालीम नहीं दी जाती, तब तक मजदूरोंके लिये अपनी स्थिति सुधारना मभव नहीं होगा।\*

मजदूरोंमें जागृत्तिकी आवश्यकता आज पूजा श्रमका नियन्त्रण करती है, क्योंकि पूजावालोंको अेकताकी कल्पना आता है।+ मजदूरोंको अपनी स्थिति सुधारनेके लिये कोशिश करना साखना चाहिये। अहे जिस सत्यको समझ लेना है कि मल्यवान धातुओंकी तरह श्रम भी पूजा ही है। यह खयाल गलत है कि धातुके टुकड या अल्पत मालकी अमुक मात्रा ही पूजा है। धातुके सिक्का तरह श्रम भा धन है। यदि पूजामें शक्ति है तो श्रममें भी शक्ति है। दोनोंमें मे प्रत्येकका अुपयोग निर्माणके लिये भी किया जा सकता है और नाशक श्चि भी। दोनों अक-दूसरे पर निर्भर ह। ज्या ही मजदूरको अपनी शक्तिका भान हो जायगा त्या ही वह पूजापतिकी गुलाम हानके बजाय अुसका सहकारी और सहभागी बन जायगा। अपनी शक्तिका यह भान अुस अहिंसाके जरिये ही हो सकता है। मजदूरोंके बडे ममुदायका अंसी तालीम देना बेगके अेक धीमी श्रक्तिमा है। लेकिन चूकि अुसका सफलता निश्चित है अिसलिये वहा सबसे जल्दीवाली भी है।x

क्या मजदूर अग असहाय है? मजदूरोंका यह खयाल कि मालिकोंके सामने वे विलकुल असहाय ह अके असा भ्रम है जिसका कोअी आधार नहीं है।— अगर मजदूरोंको यह मानू हो जाय कि विचारपूण सघटन और तालीमके जरिये वे अपने लिये क्या कर सकते ह तो अुह समझमें आ जायगा कि जिस तरह मनेजर और शेयर-होल्डर आदि कारखानके मालिक ह अुमी तरह वे भी अुसके मालिक ह।† मजदूरान अपना बुद्धिका विकास नहीं किया, सोचना-समझना नहीं सीखा अिसलिये वे मालिकोंसे डरकर गुलामीका जीवन जीते ह या फिर चिन्कर पूजापतिकी सम्पत्तिका— मनीनरीका और मालकी— नुकसान पहुचाते ह यहां तक कि अुहे मार डालनेमें विद्यमान करन लगते ह। लेकिन हिंसाका रास्ता अुह नहीं बचा सकता। मजदूरोंमें जब आपसमें सहयोग करनकी बुद्धि आ जायगी, तब वे पूजाको सम्मानपूण

\* मग अिडिया, २९-६-२१

+ हरिजन ७-९-४७

x मग अिडिया २६-३-३१ और हरिजन २५-६-३८

- हरिजन, ३-७-३७

† हरिजन १३-६-३६

सहायताके आधार पर अपना सहयोग प्रदान करे। ज्या ही मजदूर शिक्षित और सघटित हाथ और अपनी गतिनको समझ गे त्या ही पूजी — अमुका प्रमाण कुछ भी ब्यो न हा — अह दवानमें असमय हो जायगी। सघटित और शिक्षित मजदूर मालिकको अपनी मांगें माननेके लिये बाध्य कर सकते हैं।

मजदूर अपना अधिकतम दर्जा कैसे पा सकते हैं? मजदूर अपना अधिकतम दर्जा कैसे पा सकते हैं? निस्सन्देह जिस दिनामें पही आवश्यकता अपने सघ घनाकर आपसकी अकता साधनकी है। किन्तु अनुभव बतलाता है कि यदि उसके साथ साथ कुछ दूसरी गतें पूरी न की जायें तो सघ घननाका कारण बन सकता है। य गतें जिस प्रकार ह

(अ) हरअक आदमीको असा समझना चाहिय कि वह अपने साथी मजदूरोंके कल्याणका दूस्टी है। उसे अपना स्वाय नहीं देतना चाहिये। परि स्थितिया कितनी भी गभीर और अकसानवाली क्या न हा उसे हमेशा अहिंसक रहना चाहिये।

(ब) अगर उसे सचे जयमें मनष्य बनना है और अपना मध्योचित गौरव प्राप्त करना है, तो अम गराब जुआ और अिसी तरहके दूसरे दुयसन छाड दना चाहिये। गराबका यसन हमारी आत्माको कपित कर देता है। उसे समयका जीवन जीना चाहिये और विवाहकी पवित्रताकी रक्षा करना चाहिये। असी कम मजदूरी पर जिसस नीतिके प्राथमिक नियमाका पालन करना भी अमभव हो जाय काम करना स्वीकार करनेके वजाय यह बहतर होगा कि वह भूखा मरना पसन्द करे।\*

मजदूरोंको अपने मधाका अपयोग जितना बाहरसे होनवाले आक्रमणसे अपनी रक्षा करनेके लिये करना चाहिये जतना ही अपने आतरिक सुधारके लिये भी करना चाहिये। अपने घर अपना गरीर मन और आत्माको स्वच्छ और पवित्र रखनेके लिये जिस हद तक ज्यादा बतन और कामके कम घट सहायक हो सकते हैं उस हद तक अह ज्यादा वेतन मिलना चाहिये और कामके घट कम होना चाहिये। किन्तु यदि ज्यादा वेतन पान और कामके घट कम करवानमें यह अुद्देश्य न हो तब तो जिस तरहकी कोणिग पापपूर्ण होगी।

अपने अधिकार और प्राप्य सुविधाओंके लिये आग्रह करना बिल्कुल अधिकतम है किन्तु उसके साथ ही यह भी अतना ही जरूरी है कि हम हरअक अधिकारके साथ जुड हुअ कतयकी समझें। दुनियामें असा कौमी अधिकार नहीं है जिसके साथ कौमी कतय्य सलग्न न हो। पर्याप्त मजदूरी मजदूरोंके साथ मालिकके सव्यवहार स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद आवास आदि पर जोर दना

\* डी० जी० तेदुकर महात्मा खड २ पृ ३९३।

× यग अिडिया ५-८-२०

ठीक है लेकिन यह भा समझ लेना चाहिय कि मजदूर मालिकोंके कामको अपना काम मानें और अमे पूरा ध्यान देकर आमानदाराक साथ कर।\*

अहिंसक लडाओकी तालीम दुर्भाग्यवश हमारे किसानों और मजदूरोंमें स अधिकांशको अहिंसक लडाओकी तालीम नहीं मिली है। अुहे उगातार अुत्तेजनाकी स्थितिमें रखा जाता है और दूसराक बहवावेमें आकर जुहान असी आगामें पालना गुरु कर दिया है जा अहिंसक लडाओ हान पर ही पूरी हा सक्ता ह। समुचित तालीमके द्वारा किमाना और मजदूर दोनाको ही प्रभावपूर्ण अहिंसक लडाओके लिअ तयार किया जा सकता है। अुह अितना ही समझानकी जरूरत है कि यदि वे सही ढंगस सपटित हो जाय तो अपनी श्रम शक्तिके रूपमें अुनके पास पूजीपतियाकी अपक्षा कही ज्यादा धन और साधन सम्पत्ति है। बात यह है कि पसक बाजार पर पूजीपतियाका नियंत्रण है। किन्तु श्रमके बाजार पर मजदूरोंका कोअी नियंत्रण नहीं है। अगर मजदूर बगक चुने हुअे नताअान मजदूरोंका समुचित सेवा की हाती ता अुह अभा तक अहिंसाका तालीमस प्राप्त हानवागी अनिवाय शक्तिका भान हो गया होता। अिसके बजाय होता यह है कि अकसर मजदूरोंको मालिकस अपनी मागें बरबस स्वीकार करानक लिअ हिंसक अुपायाका आश्रय लेना सिखाया जाता है। सामान्यत मजदूरोंको आजकल जो तालीम मिलता है वह अनका अज्ञान दूर नहीं करती। अिसका परिणाम यह होता है कि वे अपन अधिकारोंकी प्राप्तिके लिअ हिंसाको ही अंतिम साधन मानना सीगत ह।x

आग मजदूर चय गाधीजीन अहमदाबादके मजदूरोंका सघटन किया था। अुनकी रायमें अहमदाबादक कपडा मिल-मजदूरोंका मघ अपन प्रकारकी असी आग सस्था है जिसका भारत भरमें अनुकरण किया जा सरता है।

वह गुड अहिंसाकी बुनिमाद पर खडा किया गया है। अपन अर तकके कायबालमें अुम कभी पीछ हटनका मौवा नहा आमा। बिना किसा तरहका गारगुल धायली या दिग्गावा किये ही अुसकी तागत बराबर बचती गजी है। अुमका अपना अस्पताल है। मिल मजदूरोंके बच्चोंके लिअ अुमक अपन मन्सरस ह बडी अमरके मजदूरोंको पणनक कशम ह अुमका अपना छापागाना और गाना भंडार ह और मज दूरोंके रदनके लिअ अुसत धर नी बनवाये ह। अहमदाबादक कराव करीर सभी मजदूरोंके नाम मतलानाअ्राकी सूचीमें दज ह और चुनावमें वे पुरअगर तराबम हाम बटान ह। काग्रेसकी स्थानीय प्रग कमेटीके

\* डी० जी० तलुअकर महात्मा खड २ पृ० ३९३-९४।

x हरिजन २९-७-'२९

कहनसे अहमदाबादके मजदूरान मतानताक नाते अपन नाम दज करवाय थे। यह मजदूर सघ काप्रसकी दम्बनीवागी राजनीतिमें बनी गरीब रही हुआ। गहरकी म्युनिसिपलिटिकी नीति पर सघवाताका अगर पडता है। सघ अब तक अनर हडताका अछी सफलताक माय बन चुका है और य सब हडताक पूरी तरह अहिमन रही ह। महावे मजदूरा और मालिकान अपन आपसी झगड मिटानक लिअ "यागतर अपनी राजी-खानीसे पचकी नीतिको स्वीकार किया है। \*

गाधीजी कहने थ कि यन्ि मेरी च्छे तो भारतमें जितनी मजदूर-मस्यायें ह उनका नियमन जहमदाबादके मजदूर-सघको आग्य मानकर असके अनु सार ही करू। अिस मजदूर-सघके द्वारा वे पूजी और श्रमन बीचमें जठन वाले सवागोको अहिंसाके द्वारा हठ करनका प्रयत्न कर रहे थ।x

चम्पारनका किसान आन्दोलन जो लोग गाधीजाकी किसानका सघटन करनकी पद्धति जानना चाहते ह थु-हैं चम्पारनके किसान-आन्दोलनका अध्ययन करना चाहिय। भारतमें सत्याग्रहका पहला प्रयोग जिती आन्दोलनमें किया गया था। चम्पारनका आन्दोलन आम जनताका आन्दोलन बन गया था और यह गुरुस ठेकर आखिर तक पूरी तरह अहिंसक रहा था। अिसमें कुल मिटाकर कोअी बोस लाखसे भी ज्यादा किसानका सम्बन्ध था। सौ साल पुरानी एक खास तकरीफको मिटानके लिजे यह लडाओ छडी गयी थी। अिसी गिकायतको दूर करनके लिअ पहले कओी खूनी बगावतें हो चुकी थी। किसान बिल्कुल दबा दिय गय थ। मगर अहिंसक अुपाय बहा छह महीनाके अदर पूरी तरह सफल हुआ। +

दूसरे किसान आन्दोलन जिनके सिवा लडा वारडोली और वारसदमें किसानान जो लडाजिया लडा अुनके अध्ययनसे भी पाठकाको लाभ होगा। किसान-सघटनकी सफलताका रहस्य अिस बातमें है कि किसानका अपनी जा तकरीफें ह जिह वे समझते ह और बुरी तरह महसूस करते ह अुह दूर करनके सिवा दूसरे किसी भी राज नीतिक हेतुसे अुनके सघटनका दुुरुपयोग न किया जाय। किसी अक निश्चित अयायको या गिकायतके कारणको दूर करनके लिअ सगठित होनकी बात वे झट समय लेते ह। अुनको अहिंसाका अप्पेन करना नहा पडता। अपना तकलीफके अक कारगर अिलाजके रूपमें व अहिंसाको समझकर थुस आजमा ल और फिर अुनसे बहा जाय कि

\* रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९) पृ० ४६।

x यग अिडिया १४-१-३२

+ रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९) प ४३।

बुन्हान जिस आजमाया है वही अहिंसक पद्धति है ता वे फौरन ही अहिंसाका पहचान करत ह और अनुभव रहस्यका समझ जात ह। \*

मजदूर सघकी नातिका आधार-स्तम्भ अहिंसामें विश्वास रखनवाली प्रत्येक मजदूर-मस्याका अपनी नीतिक निश्चयमें अपनी सत्य और यायका भावनाका अनुसरण करना चाहिय सस्ती प्रमिद्धि पानक आकषणका नहा। यदि असे जिस बातका पूरा विश्वास है कि वह सहा रास्ते पर चल रही है ता वह असे छाडगी नही दूसरे लोग चार जो कर या न कर। अनुसरणक क्रिय, वह हडतालाकी योजना राजनातिक हेतु या प्रयाजनका मिद्धिक लिखे नहा करेगा, अपने समस्याकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिखे ही करेगी।

### हडतालें

सन १९१८ की स्मरणोप हडताल गांधीजी सघदित हडतालके विने-पन थ। जिस क्षत्रमें बुहान पहला प्रयत्न दक्षिण अफाकामें अत्यन्त विपरीत परिस्थितियामें किया था और यह प्रयत्न सफल हुआ था। सन १९१८ की अहमदाबादकी हडतालमें बुहाने हडतालकी अपनी काय प्रणायामें और सुधार किया। अपन अनभवक आधार पर व कह सकत थ कि हडताल जिस तरह सघदित की जा सकती ह कि अनकी सफलता किमा प्रकार टाली ही न जा सके। x

यह हडताल अिकवास दिन तक चली थी। जिस बाबमें गांधीजीन हडतालियके पथ प्रणयनके लिखे अनक पत्रिकायें निकाली था। य पत्रिकायें मजदूरका साम्य भागके लिख लडी पानवाली लडाओकी अहिंसक काय प्रणालीकी सवागपूण हाय-भाषी बही जा सकती ह। यह हाय-भाषी अन्त घटनाका निरूपण करती है जिनक परिणामस्वरूप आगे चलकर मिल मालिकान तांगबली घापित कर ली और मजदूरान यह प्रतिना था कि व तब तक काम पर वापिस नही जायेंग, जब तक कि अनुकी मायें मजर नहा कर ली जाना। अपना प्रतिनाका पालन करनक लिखे हडतालियाका कमा व्यवहार करना चाहिये अपनी बेकारीने वनका लुपमाग अह कि स तरह करना चाहिये सघक नना मजदूरका अनुकी प्रतिनादे पाठनमें क्या महायता दे सकन ह — जिन सब गवालाके वारमें जिन पत्रिकायामें विस्तृत सूचनायें ह। अनुमें अिम प्रदनकी चर्चा है कि याय क्या है अनुमें दक्षिण अफ्रीकाक मत्यायहियाकी वारताकी बहानियां ह और अनमें हडतालियाका यह बतया गया है कि बडिनाजिया

\* रचनात्मक कायक्रम (१९०९) पृ० ४४।

x हरिजन २०-४-४०

और प्रलोभनासे लगते हुए व अपनी निष्ठा और अपन मनासलकी रक्षा बस कर सकते ह। अतमें अनुमें मयाग्रहकी भुम अद्भुत विजयका बणन है जिसमें दोना पक्षाकी जीत हुजी।

सकल हडतालकी गतें अहान सफल हडतालकी सात गतें बताओ ह

१ हडतालका कारण 'यायपूण होना चाहिय और वाजिव गिवायतक बिना कोओ हडताल नहा होनी चाहिय।\*

२ हडतालियामें व्यावहारिक सहमति होना चाहिय।x

हडतालियाकी मागें और मागाको स्वीकार करनके अिअ काममें लिय गय अुपाय दोना 'यायपूण और स्पष्ट हान चाहिय। यदि मागक पाछ पूजीपतियाकी स्थितिसे गभ अुठानना हेतु है तो वह माग अनुचित है। + हडतालियाका हडताउ छानसे पहले जब अपरिवतनाय 'यूनतम माग निश्चित कर लेना चाहिय और अुमकी धायणा कर दना चाहिय।— सन १९१८की अपनी हडतालमें अहमदाबादके मजदूरान जो प्रतिना ली थी असकी पहली धारामें ही यह स्पष्ट कर दिया गया था कि व अपन काम पर तब तक वापिस नहा जायेंगे जब तक अुनके वेतनमें ३५/ वद्धि न हो जाय। ३५/ वृद्धिकी माग मजदूरों और अुनके नेताअान आपसमें काफी चचाके बाद अचित ठहरायी थी।

३ हडतालिया और अनके नेताओमें पूरी पूरी सहमति होनी चाहिय।†

भारतके मजदूरानके नेता दो प्रकारके ह—अक वे जो मजदूरामें से ही अुपर आय ह दूसरे बाहरवाले जो मजदूरामें से आय हुअ नेताआको सलाह देते ह और अुनका मागदान करते ह। नेताआकी अिन दोना श्रणिया और मजदूरामें जब तक पूरी पूरी सहमति नही होगी तब तक मजदूरानकी अडालिया विकल ही हानी रहगी।‡

४ हिंसा नही हानी चाहिय।⊕

५ हडतालमें शामिल न होनवाले या हडतालका द्रोह करनवाले मजदूरानके साथ कोओ दुश्बहार नहा होना चाहिय।⊖

\* यग अिअिया २२-९-२१

x यग अिडिया १६-२-२१

+ यग अिअिया २८-४-२

- यग अिडिया २२-९-२१

† स्पीचर अण राअिटिअ अॉक मगत्मा गाधी प १ ४५।

‡ वहा

⊕ यग अिडिया १६-२-२१

⊖ वही



हडताल मजदूरोकी अपनी प्ररणासे हानी चाहिये जुमक विच किमा प्रकारके अनुचित अपायाका जाथय न लिया जाय । यदि अुसकी याजना गगा पर निनी तरहका दवाव डाले बिना की जाय, तो अुसमें गुडागाही या ल्ग माग्क लिज कात्री अवकाश नहा हागा । जमी हडतालमें हडतालियामें परस्पर पूरा पूरा सत्वार हागा । हडताल गातिपूण हाना चाहिय और अुसमें कहा भी गनिनका प्रग्गन नही होना चाहिय । \* जिह हडताल-द्राही माना गया हो अुन पर निमा तरहका दवाव नही डाला जाना चाहिय । साथी मजदूरो पर जमा कोत्री दवाव डाला जायगा तो अससे अलटा हत्तालियाका हा नकमान हागा । x

परन्तु आप पूछ सकते ह कि दगावाजाका क्या किया जाय ? दुर्भाग्यमे वैवका मजदूर तो हमेशा ही रहेंगे । परन्तु म आपन अनराध करता ह कि आप अुनस उडाजी न कर बल्कि जुह समझायें और अुनमे कह कि अनकी नीति सकुचित है जब कि आपकी नीतिमें सारे मजदूरका हित ममाया हुआ है । मभव है वे आपकी रात न मुनें । अुम मूर्तमें आपको अ्ग वरणास्त करना चाहिय न कि अुनस लडना चाहिय । + जहमदावादमें मन् १९१८ की हडतालके समय मजदूरान जो प्रतिना ली थी असका जक गत यह था कि वे किसी प्रकारका काअं अुपद्रव नही करग । मार-पीट, चारी माग्ककी सम्पत्तिको नुससान पहुचाना, गान्धी-गल्पन करना जादि दुहृत्यामे दूर रहग और अुनका यवहार गातिपूण हागा । यदि हडताल जुचित है ता जिम सस्याके खिलाफ अुसका सघटन किया गया हा अस सस्याके हडतालक द्राहियाका प्रश्रय देने अयवा हडतालियाका दवानके विअ दूसरे आ गपाह अपायाका अवलवन करन पर सम्पाकी निदा का जानी चाहिये ।—

६ हत्तालियाका हत्तालके निामें अपन पालन-मोपणके विअ जनताके च्ने पर गान † पर भीव ‡ पर या अपन सघक काप पर निभर नहा हाना चाहिये । §

अगर हडतात्री मजदूर जनताक च्दसे या अपने मघके काप आग्सि आग्क महायतारी जुम्मीद वरत हा तो व अपनी हडतालको अनिचिन

\* हरिजन २-६-४६

x स्वावेज अेण्ड राबिर्टिग्ज आफ महात्मा गाधी पृ० १०४५ ।

+ हरिजन ७-११-३६

- हरिजन ३१-३-४६

† पग अिडिया २२-९-२१

‡ आत्मकथा (अग्रजी) भाग पाच प्र० २० १९४८ ।

§ पग अिडिया, १६-२-२१

काल तकके लिख नहीं उम्मा सकने। और जा हडताल अनिश्चित काल तक न लम्बायी जा सकती हो। इसकी सफलता अनिवाय नहा हो सकती।\*

७ हडताल कितनी भी लंबी चले हडतालियाको दण्ड रहना चाहिये। जिसके लिख हडतालियामें या तो अपन बचाकर रख पससे या किसी भुपयोगी जीव अत्यान्व अस्थायी धधमें अगकर अपना निर्वाह करनकी शक्ति होनी चाहिये। x

मिन् मजदूरोंके जीवनमें सन्त जतार चलाव आते ही रहते ह। क्फायत और मितव्यय बगक अमका जब जुपाय है और अमकी अवहेलना करना अपराध होगा। परन्तु इस प्रकार की गभी बचतसे बहुत मदद नहीं मिलती क्यकि हमारे मिल-मजदूरामें स अधिकांकी मुश्किलस गुजर चगनके लिख भी सतत मश्राम करना पडता है। अमके अतिरिक्त किमी मादूरका हडताउ या बकारीके दिनमें घर पर बवार बठ रहनेमे कभी काम नहा चलेगा। मजबूरन् बवार रहनेस अधिक जसके साहस और स्वाभिमानकी हानि पढुवानवात्री कोशी और वस्तु नहीं हानी। मजदूर-बगको तब तक कभी सुरक्षितता अनुभव नहीं हागी और अममें आम विश्वास जीव बगकी भावनाका तब तक विकास नहीं होगा जब तक कि उसके सदस्याके पास जीविभाके अक्से अरिब अचूक माधन नहीं हाग। +

हडतालियोंको अपन समयका उपयोग किस तरह करना चाहिये गाधीजीन जितनी भी हडताल चगयी उन सबमें अन्हान एक नियमक पालनका आग्रह जवय रखा। नियम य था कि हडतालियोंको अपन निर्वाहके लिख अपन ही जपर निर्भर रहना चाहिये जीव अलग अलग जथवा सहकारपूर्वक मिन् लंकर कुठ न कुछ काम जरूर करना चाहिये। हडतालकी सफलताका रहस्य जिना बातमें है जीव जिसमे हडतालियोंको आवश्यक लागिम भी मिलती है। अुह समय सकना चाहिये कि यदि अनमें किसी एक माशिककी नौदरी करन और अमक वेतन कमानकी योग्यता है तो अनका श्रम जिम गयव हाता ही चाहिये कि अुह वही वतन जयत्र भी मित्र सके। अिमलि हडताली अपना समय उबार ब्रितामें जीव सफउ हानकी जुम्मीन भी रनें जा नहीं हो सकता।-

\* स्पीचउ जग् राशिदिग्ग आफ महात्मा गाधी पृ १०४५।

x यग जिन्द्या १६-२-२१ और २२-९-२१ आत्मकथा (अध्या) भाग पाव प्र २ १९४८।

+ हरिन -७-७

- हरिन २-६-४६ और स्पाचउ अँड राशिदिग्ग आफ महात्मा गो पृ १०४९।

अहमदाबादके बपडा मिल मजदूर मघने सन् १९३७ में गांधीजीकी सूचनात अक प्रयाग गुरु लिया था। अउसन अपन सदस्याका मिलामें ब लाग जा काम करत ये अउसक अतिरिक्त अक पूरव अुद्यागकी तालाम दना शुरू की थी। अुद्देश्य यह था कि तागाबन्ना, हडताल या नौकरी छूटनेकी स्थितिमें अुद्द भूखा मरनका नावत नहा आयगी अुनक पास हमंगा अिस नय अुद्यागका सहारा रहेगा। \* अिस प्रयागक कभी लाभप्र परिणाम निकले ह।

जब हडतालका अिलाज बकार होता है जब हडतालियाका जगह एतक लिअ दूसर मजदूर काफी हा तब हडतालका अिलाज बकार हाता है। अुम सूरतमें अयायपूण व्यवहार हो या नाकाफी मजदूरी मिअ या अमा ही और काअा कारण हो तो त्यागपत्र ही असका अुपाय है।” +

बम्बयीमें सन् १९४६ में अलसेनाक सिपाहियाके विद्राह और महतराकी हताक सिअसिअमें हम अिस अिलाजकी अुपयुक्तता पर विचार करये।

सफलताके लिअे गतीका पालन जरूरी अुपराक्त सारा गती पूरी न होन पर भी सफा हताक हुअी ह। पर अिमन ता अितना ही सिद्ध हाता है कि माअिअ कमजार थ और अुनका अत वरण अपराधी था। हम अगर वरे अाहरणाका अनुकरण करक भयकर भूअ करत ह। नवन सुरक्षित बात यह है कि हम अस अाहरणाका नकल न कर अिनका हमें बअचित ही पूण पान हाता है परतु असो गतीका अनुकरण कर जिह हम सफाताके लिअ अत्यावयन जानत और मानत ह।-

सहानुभूतिअप हडताकेे बभा कभी मजदूर लोग किनी दूसरे अुद्यागक मजदूराकी हडतालमें अुनक कष्टक माय अपनी मगानुभूति प्रगट करनक लिअे गअ भी हडताल पर चल जाते ह। गांधीजीका मत था कि भारतक मजदूर और बारीगरामें राष्ट्रीय चतनाका बिकास अमी अस ह तब नहा हुआ है जा सहानुभूतिमें की जानेवाली सफा हडताकके लिअे जरूरी होता है। अिममें दोष राजनीतिा नताअका है। अुन्हान अिन बगौंकी आगाआ और आगाआआता अधयन नही किया है और न अुद्द राजनीतिा स्थितिका जानकारी करानका कष्ट अगया है। अुन्हान यह माना है कि जो हाअीस्वअ और बालअमि गिअ ह थ ही राष्ट्रीय कायमें भाग लनक याय्य ह। अिसलिअ मजदूरों और बारीगरामे अजस्मात यह आगा करना अुचित नहा है कि

\* हरिजन ३-५-३७

+ यग अिअिया १६-२-२१

- यद्वा

वे अपने अलावा दूसराक हिताका वद करण और जनक लिजे त्याग करणे । असलिअ राजनीतिक या किन्ही दूसर सुद्मवि लिजे अनका दुस्पयाग नहा हाता चाहिय ।\* य गल गाधीजीन कोआ ३५ बरस पहूठ लिअ थ जब कि राजनीति अबकाग भागी वर्गके मनोविनोत्का साधन थी । गाधीजीन देगके राजनीतिक आन्वोलनका रण ही बल दिया है और मजदूर अपनी गहरी नीन्ते जाग गये ह । केकिन अभा भी यह नही कहा जा सकता कि वे विजासकी अम स्थितिमें पहुच गय ह, जहा वे अपन वार्योक सार कलिनाय और परिणाम समचन लग हा ।

जल्दीमें सहानुभूतिजय हडताल समयमे पहल करानका फल यह हागा कि हमारे कामको असीम हानि पहचेगी ।x सहानुभूतिजन्य हडताल तब तक नही होनी चाहिय जब तक यह अंतिम रूपमें साबित न हा जाय कि सबधित लागान दुस्प्रहा और सहानुभूतिगुम अधिकारियास याय प्राप्त करनक लिअ सब अचित थायय आजमा त्रिय ह ।+ असा हन्तालाका बुद्देश्य आत्मगुडि होना चाहिय । सगनभूतिजय हन्तालकी विशपता सहानुभूति रखनवाग द्वारा अठायी गया असुविधा और कष्टमें है ।-

गानिपूण हडताठ अन्ही लोगा तक सामित रहती चाहिये जिहू वह कष्ट हो जो दूर कराना है । अदाहरणके त्रिअ मान आजिय कि टिम्बकटूक दियामगाआ बनानवागेको अपनी स्थितिसे तो पूरा सतोप है परंतु बटाके मिल मजदूरको भूला मारनवाला मजदूरी मिलनी है असलिअ अनकी हमदर्दीमें वे गेग हडताल करने ह तो दियामगाआ बनानेवागेकी हडताल एक किस्मकी हिंसा हागी । व टिम्बकटूके मिल मालिकाका माल खरीदना बल करक जत्यन वारणर उगसे मदद दे सकन ह और अह नेनी चाहिय । तब अन पर हिंसाका आरोप नहा लग सकंगा । परंतु असे अवसराकी कल्पना की जा सकता है जब सीध कष्ट न भागनवालाका काम बल कर नेना बनव्य हो जाय । अदाहरणके त्रिअ यनि अपरोक्त दृष्टान्तमें दियामगाआके कारखानके मात्रिक टिम्बकटूक मित्र-मात्रिकासे मित्र जाय ता मिल-मजदूरकास मित्र गाता दियामगाआके कारखानक मजदूरका स्पष्ट कतव्य ही जापगा । परंतु मन य बात जो देनका सुयाव कबठ दृष्टान्तके तीर पर लिआ है । आतिर तो हरअक मामका असक अपन ही गुण-ग्रायस जाचना

\* दग अिडिया २२-९-२१

x वहा

+ हरिजन ११-८-४६

- दग अिडिया २२-९-२१

पन्ना। हिंसा जब सूक्ष्म बल है। जिस सत्य ही देख सकता आसान  
नहा होता भले ही आप जिस मटसूस करते रहे। \*

मजदूरोंकी सबसे अच्छी सेवा मजदूरोंकी सबसे अच्छी सेवा यह  
हागी कि अहे स्वावक्रमन सिखाया जाय अन्हें अनक वतव्या और अधिकारोंका  
कल्पना करा दी जाय जुहें जसा तयार कर दिया जाय कि वे अपनी  
प्राप्तता गिनापताको सुद दूर करा सकें। उसके बाद व धीरे धीरे राजनीतिक  
राष्ट्रीय या मानवीय सेवा करनेकी क्षमता सु प्राप्त कर लें। x

राजनीतिक अह्येयके लिए मजदूरोंका दुरुपयोग और  
पन्नाकी तरह भारतमें भी मजदूर-जगत बुन लागोंकी दया पर निर्भर  
है जो सत्कार और पथप्रशव बन जात है। य लाग सदा  
मिद्वान्तपालक नहा होते और सिद्धान्तपालक हाने भी ह तो हमें  
बुद्धिमान नहा हाने। मजदूरोंको अपनी हालत पर असतोष है। अस  
नापके लिए अनक पास पूर कारण है। अहें यह सिखाया जा रहा  
है और ठीक सिखाया जा रहा है कि अपन मास्कोंको धनवान  
बनानेका मुख्य माधन वे ही है। राजनीतिक स्थिति भा भारतके मज  
दूरोंकी प्रभावित करन लगी है। और अस मजदूर-नेताओंका अभाव  
नही है जो समझते ह कि राजनीतिक हेतुओंके लिए हडताल करा-नी  
ज सकती है। +

गांधीजीका मत था कि अस अह्येयके लिए मजदूर-हडतालका अुपयोग  
करना गम्भीर भल होगी। व जिस बातस अिनकार नही करते थे कि अमी  
हन्ताओंस राजनीतिक हेतु सिद्ध किय जा सकते ह। पर अन्सक असहयागकी  
शाजनामें अनका समावण नही हो सकता। यह समझनके लिए बुद्धि पर बहुत  
जोर आनेकी जरूरत नही है कि जब तक मजदूर देशका राजनीतिक  
स्थितिका समझ न ल और संपत्ती भलाओंके लिए काम करनेको तयार न  
हा तब तक मजदूरोंका राजनीतिक अुपयोग करना बहुत हा सतरनाप बात  
हागा। अिमकी अनुस अचानक आगा रचना बठिन है। यह आगा अस  
यकन तक नही रती जा सकती जब तक वे अपनी सुकी हालत अिननी  
अच्छी न बना ल कि सम्य तरीके पर जीवन व्यतीत कर सकें। अिमलिए  
गवग बड़ी सहायता मजदूर पढ़ कर सबने ह कि वे अपना स्थिति  
गुधार ल अधिक जानसार हा जाय अपन अधिकारोंका आग्रह रसें और  
जिम मास्क तयार करनेमें अनका जितना महत्वपूर्ण हाथ हाता है अुसक

\* पग अिदिया १८-११-२६

x पग अिदिया २२-९-२१

+ पग अिदिया १६-२-२१

युचित्त जुपयोगकी भी मालिकसि माग कर। मजदूर लोग ज्या ज्या ज्याग्न सपटित हाग और देशके हितका तथा अपन हितका विचार करना मावेंग त्या त्यो जिस मालके निर्माणमें वे अपन परिश्रमके द्वारा अितना ज्याग्न हिस्सा लेते ह जुसकी कीमतामें अचित फरफार करनके सिज आग्रह करग और जरूरत हुआ तो उसके लिअ ाडेंग। जसा समय आना चाहिय — और वह जिनकी जल्दी आय जुतना अछा — जब कि मालिकके मनाफ मजदूरके बतना और मालकी कीमतोंमें अचित अनपात रहेगा। असलिअ विकासकी ठीक दिना यह होगी कि मजदूर लोग अपना दर्जा बढ़ायें और आर्थिक मालिकोंका दर्जा प्राप्त करे। अत हडताल मजदूरोंकी हान्तके सुधारके सिज ही होनी चाहिय और जब अनमें देशभक्तिकी वृत्ति पदा हो जाय तब अपने तयार किये हुआ मालकी कीमतान नियंत्रणके सिज भी हडताल हो सकती है।\*

आर्थिक बहतरोंके सिज होनवाली हडतालाका कोभी राजनीतिक अदृश्य हरगिज नही होना चाहिय। अस तरहकी मिश्रवटसे राजनीतिक अदृश्य कभी सफर नही होना और आम तौर पर हडताला विपत्तिमें पन जाने ह। असी हडताले तभी होनी चाहिय जब दूसरे सारे बध अपाय आजमा सिज गय हा और अनमें सफलता न मिली हो।\*

आर्थिक बहतरोंमें राजनीतिक हडतालोंका स्थान राजनीतिक हडताला पर उनके ही गुण-दोषोंकी दृष्टिसे विचार होना चाहिय। आर्थिक हडतालाके साथ अुहे न कभी मिश्रना चाहिये और न अनसे जिनका सम्बन्ध जोडना चाहिय। आर्थिक बहतरोंमें राजनीतिक हडतालोंका अक निश्चित स्थान होता है। वे गहरे सोच विचारके बाद ही की जाती ह यो ही नही। असी हडताला खुली होनी चाहिय और अुसमें गडगानी नही होनी चाहिय। अुनका परिणाम सिज हरगिज नही होना चाहिय।+ असी राजनीतिक हडताल जिसका अदृश्य सरकारको ठप कर देना हो अक अत्यत अग्र राजनीतिक कर्म है और यह कर्म अुठानका अधिकार अुसी सस्थाको हो सकता है जो सारी जनताका प्रतिनिधित्व करती हो। मजदूरोंके सघानो वे कितन ही बलवाली क्या न हा यह अधिकार नहा हो सकता।†

बम्बईमें जल-सेनाके सनिकोंका विरोह सन १९४६ में बम्बईमें जल-सेनाके सनिकान सरकारको ठप करनकी कोशिश की थी। अुनका

\* पग सिजिया १६-२-२१ और ११-८-२१

× हरिजन ११-८-४६

+ वही

† वही

अप्रत्यक्ष अर्थ में द्वितीय अधिकारी भारतीय कमचारियों के माय निम्न भन्नायकी नीतिका व्यवहार करते थे उसके खिलाफ अपना असताप व्यक्त करना था किन्तु जाका प्रगट घावणा यह थी कि वे स्वतंत्रतावा लड़ाई कर रहे हैं। गांधीजीन त्रिम विद्योत्सवो जव अविचारपूर्ण हिमक वाय कहा था जार अमरी मत्सना की थी। व नही चाहत थे कि काग्रस जिस भारतना प्रति निधित्त करता है अमक बारमें लाग यह कह कि जेक आर ता वह मारा दुनियास सररायकी लडाई अहिमादे जरिय जीवनकी घात करता है और दूसरा आर अमन जपत राजनीतिन जीवनक जेक नाजक मौक पर अपने मिस वचनन विचारक वाय किया। अन्हाने जल-सागक भारतीय सन्स्थास अहितक प्रतिराधका रास्ता अपनातका सिफारिश की और बताया कि यह रास्ता ज्याना गौरव युक्त और धीरतापूर्ण है और यदि जव मगठित समूहक द्वारा अपनाया जाय ता पूणत प्रभावकारा सिद्ध हाता है। मत्रि विदेशियाना नौरा अुतके त्रिजे या भारतक लिज अपमानजनक है ता व जसो नौररी करत हा क्या b ? अुहात जह नौररी छाडनकी मगह दा और बताया कि गठमन अमन्तारक अनुमार अह जरा ही करना चाहिय।\*

लाग लाजपतरायका अध्यक्षतामें हुजी १९२० का काग्रमक वाक्ताव त्रिजेव अधिकानमें जा प्रस्ताव पास किया गया था अुतमें अहिमक वारवा अीका पन्ना सिद्धान्त यह प्रतिपात्त किया गया था कि हत्यक अपमान जनक वस्तुम अमहर्षीय किया जाय। यह याद रखना चाहिय कि गांधी भाग्यीय जलमेता गानितारके लाभके त्रिअ स्थापित नहा की गया था। अुतमें लोग आर्वे सात्कर गय थे। बहा तुला भन्भाव नजर आता है। जा नौररी साफ तौर पर भारतको गुलाम बनाय रखनक त्रिज मगठित की गयी है अुतमें जानवाला त्रिम भन्भावम वच नही मरता। वह त्रिस म्यिनमें मुधारवे त्रिअ प्रयत्न कर मरता है अुसे करता भी चाहिय। पर यत् अेन हत् तत्र ही मुमकिन है और यह विदाह तारा तहा किया जा मरना। मन्नक है किन्तु तफ्फ हा जाय परतु यह सफल्ता विदाहियाको और अुतक मरति याको ही लाभ पहुचा मरती है भारे भारतना नहा। और यह मयक बुरी विरासत होगी। अनुगामन सररायमें भी अतना ही जम्री होगा जिनना दात्र है। सफ्फ विदाहियाके अधीन भारत त्रिनवात् दगमें विभक्त हा जायगा और आपसी लडाईमक एक जायगा। x त्रिमत्रिजे गांधीजीन अहें यह मगह दा कि थ बहादुराकी तरफ अपनी नौररिया छाड दें। अना करव थ वमम वप अतन मम्मान और गौरवका रणा अवय्य कर मरें।

\* हरिजन ३-३-४६

x हरिजन १०-३-४६

मेहतराकी हडताल मेहतराको भी अन्हान जसी ही सलाह दी थी।

भगी जब दिनक लिअ भी अपना काम नहा छोड सकता। \* कुछ मामले जैसे ह जिनमें हडताल बजा होती ह। मेहतराकी गिवायते अिस सूचीमें शामिल ह। मेहतराकी हडतालक विरुद्ध मेरी राय लगभग १८९७ से है जब म डरबनमें था। उस समय वहा आम हडतालका विचार किया गया और यह प्रश्न अठा कि मेहतराको अुसमें गरीब होना चाहिय या नही। मेरा मत अिस प्रस्तावके विरुद्ध रहा। जैसे मनप्य हवाके बिना नही रह सकता, वैसे ही अुसका घर और आसपासकी जगह साफ न हो तो वह बहुत दिन तक जिंदा नहा रह सकता। काओ न कोभी सन्कामक रोग अवश्य फट निकलता है बिनापत जब नालियाकी आधुनिक यवस्था काम नहा करती। x

तो क्या भगी गन्गी और कचरेम सडते हुअ अुनी तनस्वाह पर काम करते रह जिससे आका पट भी नहीं भरता? असी स्थितिमें अचित्त अपाय हन्ताल करना नही है, बल्कि आम जनताको और खास तौर पर नौकर खावागी सस्याको यह सूचना देना है कि अुहें अपना काम छोड देना पन्गा क्योंकि अिस कामके करनवाओको जिंदगीमें भूखा मरनक सिवा कुछ नहीं मिन्ता। हडताल करनमें और नौकरी बिल्कुल छोड दनमें बडा अन्तर है। हडताल कष्ट निवारणकी आगामें जब अस्थायी अपाय होता है। नौकरा छोड देना जब खास घाघका अिसलिय बन् कर देना है कि अुसमें राहत मिन्तकी कोजी आगा नही है। काम बंद कर देना ठीक तग यह है कि अक तरफ नौटिस काफी दिन पहले दिया जाय और दूसरी तरफ यह सभावना हो कि किसी दूसरे काममें अधिक मजदूरी और गदगी तथा कचरेसे मुक्ति मिन्गी। अिसमे समाज अपनी बहयाओकी नौदसे जाग अुठगा और परिणाम यह होगा कि जनताकी विवक-बद्धि पर आज जा काओ नमी हुओी है वह साफ ह। तायगी। अिस कदमस जब ही घटकमें भगिपादे कामका अक सुंदर बन्सा दर्जा मिन् जायगा और अुस वह प्रतिष्ठा भी मिन् जायगी जा बहुत पहले मिन् जाा चाहिय थी। +

लोकोपयोगी सवाके महकमामें हडताले गाधीजीकी यह राय था कि लोकापयोगी सवाके महकमामें हडताल नही हानी चाहिय क्याकि अिनमें अध्यवस्था अन्तज हानसे सारा सावजनिक जीवन ही जयवस्थित हो जाना है। जवत्ता व जमा नही बन्त थ कि अिन महकमामें नौकरी करनवाओको किन्हा भी हागामें गन्गाकी तरह सेवा करते रहना चाहिय। वे कहत थ

\* हरिजन २१-६-४६

x वही

+ हरिजन २६- -४६



किं अस मामलामें अपने कष्टके निवारणके लिये दूसरे उस जुपाय मौजूद ह जिनके खिलाफ काजी आपत्ति नहीं जुठायी जा सकता।\*

अहिंसक हडताल हडतालानें आजकल एक सावत्रिक बीमारीका रूप ल लिया है। भारतमें उनका एक विशाप जय है। हम एक अस्वाभाविक अवस्थामें रह रहे ह। ज्या ही ढक्कन खुलेगा और जगट पाकर स्वतन्त्रताकी ताजी हवा अदर आयगी त्या ही हडतालकी सख्यामें और वद्धि हागी। हडतालके जिस फले हुअे ज्वरका मऱ कारण यह है कि यहा और सभी जगह — जीवन अपन आधारसे विचलित हो गया है। यह आधार था — धर्म। अब जिस धर्मका स्थान जसा कि अब अग्रज लेखकने कहा है नवऱ नारायण ने ल िया है। लेकिन एक आदमीको दूसरेम बाध रखनके लिये यह आधार बहुत कमजोर है। परन्तु धार्मिक आधारक रहते हुअ भी हडताल तो हागी क्याकि यह कल्पना नहीं की जा सकती कि धर्म सबके लिये जीव नका आधार बन जायगा। इसलिये एक जोर गोपणक प्रयत्न होण जोर दूसरी ओर हडताले हागी। परन्तु उस समय य हडताल गुद्ध अहिंसक ढगकी होगी। जमी हडतालसे कभी किसीकी हानि नहा हागी।x

हडतालका दुष्पयोग हडताल ायकी प्राप्तिके िअे मजदूराना स्वत निम्न अधिकार है। + हडताल बहुत बढिया अुपाय है, लेकिन जुसका दुष्पयोग कटिन नहा है। मजदूराना मजबूत मजदूर सघाके रूपमें अपना सघटन करना चाहिये और जिन सघाकी अनुमतिके बिना हडताल कऱापि न करना चाहिये। हडताल करनसे पहले मालिकके साथ समझौतेकी कोणिंग अवश्य करना चाहिय। समझौतेकी शर्चा किये बिना हडतालकी जाकिम जुठाना अुचित नहीं है।— समझौते पर पहुंचनेक ितने जुपाय हा सकते ह वे सब समाप्त हा जाय तमा हडताल करना अचित हागा। † बाक यदि मालिक ाग पक्ष फसला करवानकी माग नामजूर कर दें ता मजदूर हडतालका आशय ल सकने ह।‡

यब हडतालें अपराधरूप होना ह ज्या ही पूजोपति पक्ष फसलका सिद्धांत स्वीकार कर ऱ त्या ही हडताल अपराधरूप मानी जानी चाहिये। § क्षत्रानाकी निपटानके िअ निष्पक्ष ायाल्यका प्रस्ताव हमना स्वीकार कर लिया जाना

\* हरिजन १०-८-४७

x हरिजन २२-९-४६

+ यग अिडिया २८-४-२०

- यग अिडिया ११-२-२०

† हरिजन ७-११-३६

‡ वही

§ यग अिडिया २८-४-२०

मामलेमें मजदूराना प्रतिराध जिस हद तक जुसे जरूरी समझा गया अतः हद तक पूरी तरह सफा रहा।\*

मजदूराना का मुमकिन है मिल-भाङ्गिसे लडना पड। केकिन अुह अपनी यह ळडाओ प्रम सम्मान जोर अनिच्छाकी असी भावनासे लडना चाहिय जो कि वे अपन सग-सम्बन्धियासे लडनमें रखेंग। लडाओकी अहिंसक पद्धति पूजीपतिका नाग नही करना चाहती क्याकि पूजीको वह श्रमका दुश्मन नही मानती। अहिंसक पद्धति पूजीपतिका हृदय-परिवर्तन करना चाहती है। जिसमें शक नही कि पूजीवाद और अुसकी सारी बुराअियाका नाग होना चाहिये। मजदूराना चाहिय कि वे अिस प्रयत्नमें पूजीपतियोका सहयोग मागें और अिस विश्वासके साथ मागें कि पूजी और श्रमका सहयोग पूरी तरह सभव है।

### अुपसहार

पिछले पष्ठामें मन गाधीजीकी अक असे समाजको दी हुओ शिक्षाओका जिसके जीवनमें विनाशके आविष्कारा और नय नय यन्नोत त्रातिकारी परिवर्तन कर दिअ ह साराग देनका प्रयत्न किया है। जहा तक हो सका है मन विचारके वाहनक तौर पर गाधीजीके अपन गाना ही अरयोग किया है। अन्के य विचार रत्न यहा बहा बिलखे पड थ मन अह चनकर अक मूत्रमें पिरा लिया है।

गाधीजी राष्ट्रको अक अत्यन्त मूयवान विरासत दे गय ह। अन्हान भारतक लिअे और सारी मानव-जातिके लिअे अद्वारका माग दिखाया है। अिस माग पर गाधीजीन खद उम्बी यात्रा की जोर कुछ दूरी तक हमें भी ब अपन साथ ल गय। जब वे हमारे बीचमें नही ह। हमें उनका निश्चित जोर हमेगा मित्रनवाश सहारा अब प्राप्त नहा है। हम असका अभाव महसूस करते ह जोर अधरेमें अपना रास्ता टगोलते चगने ह। केकिन अिस अधरेके बावजूद हमें हिम्मत नहा हारना चाहिय। हिम्मत हार जायें तो हम बरबाद हो जायेंग। साथ ही हम अघाकी तरह अपना माग टगान रह यह भी ठीक नही है।

असी स्थितिमें आवश्यक्ता अिस बातकी है कि हम अपन परिश्रमको पानके अुजागसे आगेबित करे। प्रश्न खातीका हो या बिजनीक अपयागका हा या काजा दूसरा हमें हमेगा अपन प्रयत्नका गनिमान और तेजस्वी बनाना चाहिय। गाधीजा जा कुछ कह गय ह अस मान दूराते रहना काफी नहा है।

जो आदमी हर बातका गास्त्रीय दृष्टिसे ऐखनका आगी है, यह किमी बस्तुको श्रद्धासे गास्त्रीय मानकर सनुष्ट नहा हागा। वह

अधुने बुद्धि की कमीना पर कसनका जाग्रह रखगा। श्रद्धा जब बुद्धिस  
समर्थ रखनवाले मामलामें दखल देती है तब वह पगु हा जाना है।  
असका क्षेत्र वहा गुरु होता है जहा बुद्धिका शत्रु खतम होना है।  
श्रद्धाके आधार पर किय गय निणय अटल हान ह जब कि बुद्धिके  
आधार पर किय गय निणय अस्थिर जार श्रेष्ठ तबक सामन मात खा  
जानवाल हान ह। शास्त्रकी मर्यादा बताना खुसकी बीमन घटाना  
नही है। हमारा दोनाने बिना काम नही चल सकना — दोना अपना  
अपना जगह अपुयोगा ह। \*

अिमलिजे शास्त्राय पान और श्रद्धा दोनाका अपना मागणाक मानकर  
हमें गाधीजी द्वारा जगयी गयी प्रगतिकी मणालको आगे ल जाना चाहिये।

गाधीजी अिम बातमे अनभिन्न नहा थ कि अुनका गिनायें अुनक  
अनुयायियाके हाथमें पडकर जन्मतवाका रूप ल मक्ती ह। अिमलिजे  
अहान अुन गणाका आगाह कर दिया था कि व अुह बुद्धिपूर्वक मममें  
दखाना न पक्डें। अुन्हान कहा था

जब दूसरा और जगना गभार खतरा भी है। ततरा यदु है  
कि आपका मध + क्ला सम्प्रदायका रूप न थ ल। जब कभी काजी  
कठिकाजी पेन हागी आप लग यग अिडिया और हरिजन क मरे  
लगायें अुमगा ह् टूडेग जार अुनका प्रमाण-वाक्याका तरह अपुपाण  
करग। मव ता य है कि मेरे गराक साथ मरे लय भी जग दिया  
जान चाहिये। जीवन तो वही रहेगा जा मने किया है न कि जा  
मन बना है या गिता है। पिछ् कुछ दिनमें मन अकमर यह कहा  
है कि हमार मम धमत्रय नल् हा जायें ता भी अीगापनिपदका वह  
अव मय हिंदू धमका रहस्य धापित करनक लिअ काफी हागा।  
यकिन यकि वाअा अना यकिन हा न हा जा अुमे अपन जीवनमें  
अतारार अुन मिड कर गिताय ता अुग धनम भी वाअा लग  
न हागा। अिगी तरह मन जा कुछ कहा है या गिता है वह  
जगी ह् तब अपुपागी है अिम ह्द तब अुमन आपकी साथ और  
अहिमक गहान मिडालास आत्मसात् करनमें मन् दा हा। यकि  
आपन अिन गिडालास आत्मसात् न् किया है ता मरे लगान  
आपकी काअी मन् नहा मि गनना। यह वान म आपन अव  
गयाप्रहीस हैसियतग कह रहा ह् और म अुममें म अज भी गन्  
छोहनक लिअ तयार नहा ह्। म अिम बातनी परवाह नहा

\* हरिजनमन्त्र ३१-३-४६

+ गाथा-नवा-मध।

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

करता कि मेरे मरनवे बाद क्या हागा लेकिन म यह जरूर चाहता हू कि आपका सध वध हुअ पानी जसा नहा बल्कि हमेगा बन्ते रहनवाले वध जसा हो । अिमन्त्रि आप मुण भूठ जाजिय । सधवे नामके साथ मेरे नामका याग अनावयक चीज है । आप मरे नामको मस पकडिय सिद्धान्ताको पकडिय । आप अपन प्रत्यक् कायकी जाच जसी कसौती पर कीजिय और जो भी समस्यायें खडी हा बुनका बीरतापूर्वक मुकाबला कर । \*

गाधीजीकी अस चतावनीके होत हुअ भी यदि हम अनके गन्नाको ही पकडते रहे तो यह अन गन्नाके अयकी हत्या होगी । अपनी विरासतको भूलना अक पाप कृत्य है ।

खुशीकी बात है कि आजकी हमारी ज्वलत समस्याआका हल हम अिसी वृत्तिसे ढढ रहे ह । अदाहरणके लिअ मुघरे हुअ और ज्याग सक्षम चरखकी जथास्थीय परीक्षा की जा रनी है और अमक सम्बधमें राष्ट्रीय पमान पर यापक प्रयोग किय जा रहे ह । निकट भविष्यमें हमारी जल् विघत योजनाआके पूरा होनकी सभावना दिस रही है । अस समय गह-अद्योगामें विजलीका अपयोग मात्र बौद्धिक विवेचनका विषय नहीं रह जायगा । अखिल भारत खादी-ग्रामोद्योग बोड अस प्रश्नके मारे पहलआकी छानबीन कर रहा है । खादी-ग्रामोद्योग पत्रिकान दिसम्बर १९५४में अखिल भारत खादी-ग्रामोद्योग कायन्तआकी पूनामें नवम्बर १९५४में हुअी परिपदके कामकाजका विवरण देते हुअ अक विशपाक निकाला था । अिम जकमें अिस और असे दूसरे प्रश्ना पर बहुसन्धी अपयोगी जानकारी दा गयी है ।

राजनीतिक आजादी प्राप्त करनक वाग जब हम अपन आर्थिक अदारक कायमें जर गय ह । कुठ लाग आर्थिक आजागीका जय यन विमान सम्बधी प्रगति करत ह । लेकिन आर्थिक प्रगतिकी कसौती मानव-कल्याणकी वृद्धि है । हम अपनी आर्थिक नीतियाको जिस ह तक अिस देगकी जनताकी सुख समुद्धिक ह्पनें कार्यान्वित कर सकेंग अमा हद तक हमारी प्रगति वास्तविक होगी । गाधीजीकी निशाआकी तुरुना हम निशामुचक तारेम कर सकते ह । अुसकी अपेक्षा करना गन्त हागा । हम अमकी अप्ना करग तो निश्चित है कि हम नकसान अन्वयेग । और हम भूठ न जायें अिसलिअ यह याद रखना अाउ है कि नस्तिन आजागीके विना राजनीतिक और आर्थिक

बम्बयी २७ जून १९५६

व्ही० बी० सर

\* डी० जी० तेन्टरकर महात्मा खण्ड ४ प० १८८ ।

आर्थिक और औद्योगिक जीवन  
मुसकी समस्याएँ और हल

भाग - १



## हिन्द स्वराज्य

[सन् १९०९ में गान्धीजीन अय० अस० किल्लडानन नामक जहाज पर जिन्डम दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए 'हिन्द स्वराज्य' नामक पुस्तक लिखी थी। जिस पुस्तकमें आधुनिक सम्यता का जारदार खडन है। यह मवाक रूपमें लिखा गयी है और गांधाजीका अपने सहयोगियोंके साथ इसी चर्चाका विश्वस्त विवरण है। यह बीस अध्यायोंमें विभाजित है जिनमें स्वराज्य सम्यता वकील डाक्टर मसीनरी गिना अहिंसक प्रतिरोध आदि विषय ह। भारतमें अपन अक मित्रका लिए गय पत्रमें गांधाजीन अिन पुस्तकका विषय-वस्तुका साराण दिमा था। वह साराण नीचे दिया जाता है।]

१ पूव और पश्चिमक बीच काजी अगम्य खाजी नही है।

२ पश्चिमो या यूरोपीय सम्यता उसी कोजी चाज नहा है यह नाम धामक है। उसे आधुनिक सम्यता कहना चाहिय और अमकी विनोयता यह है कि वह अकर्म भौतिक है।

आधुनिक सम्यताक सपकमें आनसे पहल यूरोपक लाग पूवक लागान या कमस कम हिन्दुस्तानियासे बहुतमा समानता रखत थ और आज भी व यूरोप निवामी जा आधुनिक सम्यताक प्रभावमें नही आय ह थुन गान्धी अपधा जा अिन सम्यताकी अपज ह हिन्दुस्तानियामे ज्यादा अच्छी तरह मिल सकत ह।

४ हिन्द पर गामन अग्रज लाग नही कर रह है गामन कर रही है आधुनिक सम्यता — अपनी रंग टेलीग्राफ टेलीफोन और प्राय अून सब आधिष्कारके जरिये जिह आधुनिक सम्यताका विजय माना गया है।

५ अम्बअ कलकत्ता और हिन्दू दूसर मून्ज गहर जिस आधुनिक सम्यता-म्पी मन्गामारीक अहे ह।

६ आर अग्रजी रायका क आधुनिक तरीका पर आधारित हिन्दु म्नाना गायमें बदल दिया जाये, ता भा हिन्दुस्तानका ज्यादा मला जहा हागा

\* नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४ द्वारा प्रकाशित।

अलवृत्ता जो दौलत अँग्लड चली जाती है अुसका कुछ हिस्सा राकनकी योग्यता जिसमें आ जायगी लेकिन तब हिंद यूरोप या अमेरिकाके दूसरी या पाचवां श्रेणीके राष्ट्र-जसा हा जायगा।

७ पूव और पश्चिम वास्तवमें तब ही मिल सकते ह जब पश्चिम आधुनिक सम्यताको लगभग पूरी तरह फेंक दे या छोड दे। पूव आधुनिक सम्यताको अपना के तब भी वे मिलते हुआ-से दिखायी पड सकते ह किन्तु वह मिलाप सगुन समझीते जसा होगा जसा कि अदाहरणके लिज जमना और अँग्लडके बीच है। य दाना राष्ट्र दोनामें स कोअी दूसरेका निगठ न जाय जिस आपत्तिसे बचनके लिज मानो मृत्युके निरतर रहनवाले खतरेके बीच जी रहे हैं।

८ किसी व्यक्ति या समूहके लिज सारी दुनियाके सुधारकी गरुआत करना या असकी बात सोचना निरी घष्टता है। आवागमनके बहुत ज्यागा वृत्ति तथा तेज साधनासे असा करनकी कोशिस करना अमभवका सभव बनानका प्रयत्न करन जसा होगा।

९ सामान्य तौर पर यह कहा जा सकता है कि भौतिक सुविधाआकी वृद्धि किसी भी तरह नतिक विकासमें कोअी मदद नही करती।

१० आधुनिक चिकित्सा विज्ञान जाद-टोनका केगीभूत सार है। तथा कथित अच्च कोटिके डॉक्टरों की कोशलकी अपेक्षा नीम-हकीमी कही अधिक अजी चीज है।

११ अस्पताल के हियार ह जिहे गतान अपन स्वाथके लिज यानी अपन राय पर अपनी प्रभता कायम रखनके लिज काममें लेता आ रहा है। वे दुव्यसन पीडा नतिक पतन और सच्ची गुलामीको कायम रखते ह। अब समय था जब म डाक्टरों की तारीफ केना चाहता था। अब म समथ गया ह कि मेरा बसा साधना बिल्कुल गलत था। अस्पतालोंमें चलनवाले घृणित व्यापारोंमें किसी भी रूपमें कोअी हिस्सा केना म पाप समझता ह। अगर यौन रोगके लिज महा तक कि क्षय जादि रोगके लिज भी अस्पताल न होते तो हमारे बीचमें क्षयकी बीमारी और यौन-दुव्यसन आजकी अपेक्षा कम होते।

१२ हिंसा मुक्ति जा कुछ असन पिछले पचास सालोंमें सीखा है अुस भूल जानमें है। रेलव टेलीग्राफ अस्पताल बकीठ डॉक्टर आदिका खतम हाना पडेगा और तथाकथित अच्च वर्गोंको सजगतास धार्मिक श्रद्धाके साथ तथा विचारपूर्वक किमानका मोघा-मान्य जीवन जीना सीखना होगा — यह जानन हुआ कि महा जीवन सचा आनंद देनवाला है।



१३ हिन्दूको मशीनक बने कपड नहीं पहनना चाहिये चाहे वह यूरोपीय मिलास आन हा या हिन्दुस्तानी मित्रसे।

१४ अँगड हिन्दका जसा करनेमें मन्द कर सकता है और तब वह हिन्द पर अपन अधिकारक औचित्यका सिद्ध कर लिखायगा। असा प्रतीत हाता है कि आज अँगडमें बड़ी लाग अस ह जा अस प्रकार मोचने ह।

१५ समाजका असा व्यवस्था करनेमें जिनम लागानी भौतिक स्थिति पर राक लगी रह् प्राचीन कालके जपियाका सच्चा बुद्धिमानी थी। पाच हजार साल पुराका धनगत हल जाज भी हमारे किमानाका हउ है। हमारी मुक्ति—हमारी समस्याका हउ जित्तीमें है। लोग असी परिस्थितियामें लम्बा आय पान ह यूरोपन आधुनिक मम्मताकी अपनाकर जा गाति भागी है अमुका तुम्हामें बड़ी अधिक गातिका जावन जीते ह और म महमूस करता ह कि हरअक विचारवान मनुष्य—प्रयक अँगडवासा ता जहर ही— यदि वह चाहे तो अस सत्यका साख सकता है और असक अनुसार काय कर सकता है।

अहिंसक प्रतिकारकी सच्ची भावना ही मुझे उपराक्त लगभग निश्चित निष्कर्षों तक लयी है। अक अहिंसक सत्याग्रहीके रूपमें, म जिन बातका परवाह नहीं करता कि असा महान सुधार अउन लोगक मध्य हो सकगा या नहा जो अपना सताप वतमान अुमत्त दौडमें पाल ह। अगर म असका सच्चात्रीकी महमूस करता ह, तो म मानता ह कि मुझ अिसी मागका अनुगमन करना चाहिय और अुसमें खुग हाना चाहिय और असलिअ म अुम समय तक अितजार नहीं कर सकता जब तक सारे गग जिन चीजका शुरु न कर ह। हम सब जा जिन प्रकार साचते ह अुह यह जरूरी कर्म अुठाना है और यदि हम सच्चात्री पर हउ तो म मानता ह कि बाकीक लाग हमारा अनुसरण अवश्य करये। सिद्धांत हमारे सामने मौजूद है, हमारे व्यवहारका यथागमव वहा तक पहुचना होगा। भाग-गौडक बीच रहत हउ मभव है कि हम अपनाक अुमकी यूराभीस पूरी तरह मुक्त करनेमें समय न हो सक। हर समय जब म रलमें बठना ह या माटर-बसका अपयोग करता ह, तब अनुभव करता ह कि मैं अपनी विवक-बुद्धिकी हिंसा कर रहा ह। म अस आधारक तांत्रिक नतीजस नहीं डरता ह। अँगडकी यात्रा अनुचित है और दक्षिण अफ्रीका तथा हिन्दक बीच समद्री जहाजाके जरिय जाना आना भा अनुचित है। आप और म जिन चीजाका अपयोग अपन जिना जीवनमें छोड सकते ह और गायन छोड दें। लकिन मुख्य बात ता यह है कि हम अपन सिद्धांतको स्पष्टता समझ ल। आप वहा जनक तरहके मनुष्याका अनेक अवस्थाआमें दस रह हाग, जिनलिअ म अनुभव करता

हूँ कि मन मानसिक रूपसे (अपन मतानुसार) जो प्रगतिशील कदम अठायी है वह मुझ आपको बता देना चाहिये। अगर आप मझसे सहमत ह तो आपका कतव्य हो जायगा कि आप प्रातिकारियासे जीर दूसरे सब ङगासे कहें कि जो आजादी वे चाहते हैं—या बसा मानते ह—वह ङोगाका हत्या करन या हिंसा करनसे नही प्राप्त हाती लेकिन अपना सुधार करनसे और सच्चे रूपमें हिंदुस्तानी होन और रहनसे प्राप्त होती है। तब अग्रज गामक सबक होग वे स्वामी नही रहग। वे सरक्षक (ट्रस्टी) हाग न कि अत्याचारी और वे हिन्दके सारे निवासियोंके साथ पूरी तरहसे गातिपूवक रहेग। अस्मिन्त्रिज हमारा भविष्य अग्रज जातिके हाथमें आत्मत्याग तथा आत्म-सयम है ता व अिसी है और अगर अनमें पर्याप्त मात्रामें आत्मत्याग तथा आत्म-सयम है ता व अिसी क्षण अपनको आजाद बना सकते ह। जीर जब हम भारतमें साङ्गीकी अस स्थितिका प्राप्त कर लग जो आज भी हममें काफी मात्रामें है तथा कुछ साङ्ग पूव तक ता जो हमारे बीच अपनी परिपूर्णवस्थामें थी तब ङष्ठ भारतीय और ङष्ठ यूरोपियके लिअ भारतमें कही भी किसी भी स्थान पर अक-दूसरेस प्रमपूवक मित्रता सम्भव होगा। साङ्गीके अस वातावरणमें अक-दूसरेकी मित्रताका सम्पादन करनवाले य भारतीय और यूरोपीय दूसराअ लिअ प्रणारूप सिद्ध हाग। जब बगवान वाहन नही थ तब भी अुपदेशक और प्रचारक देगवे अक कोनसे दूसरे कोन तक सारे खतरोका सामना करते हुअ पदल चङ्ते थ—अपन स्वास्थ्यको फिरसे प्राप्त करनके लिअ नही यद्यपि अुनकी पङ्गात्राआसे अुह यह लाभ मिल ही जाता था बल्कि मानव जातिके कल्याणक खातिर। तब बनारस और तीर्थयात्राक अय स्थान पवित्र नगर थ जब कि आज व दूषित ह।

महात्मा जी डी तेन्दुलकर खड १ पृ १२९

## स्वराज्यमें भारतकी क्या दशा होगी ?

पाठकान मरे पास डेरा पचें भेज ह जा बस्टन अिडिया नेशनल लिबरल अमानियसतका प्रचार-भूमिति खूब बटवा रही है। पर्चा न० ६ में यह लिखा है

गांधाराज्यका स्थापना हाने पर भारतका क्या स्वरूप होगा ?  
रेन नहा हागी। अस्पता नही हाग। मशीनें नही हागी।

किसी जल या स्थल सनावा जरूरत नही हांगे कथाकि गांधीजी दूमरे राष्ट्राकी बचन दे दग कि भारत अनके कामकाजमें हस्तगप नही करेगा और अिसीलिजे वे भारतके कामामें हस्तक्षप नहा करग।

न कानूनकी जरूरत हागी न अपालनाकी, कथाकि प्रत्यक व्यक्ति अपना कानून हागा। हरअकको अपनी मरजीका काम करनेकी जाजानी हागी। बडे आरामका जीवन हागा कथाकि हर आदमा खट्टरकी लंगोटीमें घूमगा और खुलेमें सायगा।

म यह नही कह सकता कि अिसमें काजी अनुचित है। यह बुगाल ताम बनाया गया ध्यगचित्र है जो पाश्चात्य युद्धनीतिमें जायज माना जाता है। केवल अिमक भीतरका मूढ आगध हा मूठा है। भरर अभिप्राय म यहा स्पष्ट कर दू। पहली बान ता यह है कि भारतकय 'गांधाराय' स्थापित करेका प्रयन नही कर रहा है। वह स्वरायकी स्थापनाके लिअ जीताड परिश्रम कर रहा है। और स्वराय प्राप्तिक खातिर बह खुीस और औचित्यक साथ गांधीका बलिदान कर दगा। गांधीराय अक आन्श स्थिति है आर अस स्थितिमें पाचो नकारात्मक बाने सच्चा चित्र अुपस्थित करेगी। परन्तु काजी स्वप्नमें भी मह खयाल नही करता मरा तो बगव नही है कि स्वरायमें रेने नहा हागी अस्पता नही हाग यत्र नही हाग जल और स्थल सना नही हागी कानून तथा कानूनी अपालने नही हागी। अिसक विपरीत रले हागी किन्तु अूनका अुद्देशम भारतका मनिन या आधिक गायण नही हागा बल्कि अुनका अपयोग भीतरी व्यापार बढान और तीसरे दरजेक मसाफिराके जीवनको काफी आरामदह बनानमें किया जायगा। तीसरे दरजेकी मुसाफिरी करनवाली जनता जा किराया लनी है अुसका कुछ बन्ला अस मिलगा। कोजी यह आगा नगी करता कि स्वरायमें रागाका सबपा अभाव हागा। अिमलिजे स्वराज्यमें अस्पताल ता अकय हाग परन्तु यह आगा रयी जाती है कि तब अस्पतालाका

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

बुद्धय भोग विलासके रोगियोंकी अपेक्षा दुःखटनाआके गिकार होनवालाकी सक्क करना अधिक होगा। बगक चरखके रूपमें यत्र भी हाग। आखिर ता चरखा भी अक नाजुक यत्र ही है। अिसमें मुझ कीअी गका नही कि स्वतत्र भारतमें कअी कारखान खड हाग जिनका अह्म्य लागाको लाभ पहुचाना होगा न कि आजकलकी तरह जनसाधारणका खन चुसना। जलसेनाका तो मुझ कुछ पता नही है अेकिन अितना म जवश्य जानता हू कि भावी भारतकी स्थलसेनाके सैनिक भारतको गुलाम बनाय रखन और दूसरे राष्ट्राकी आजागी छीननके लिअ रख गय भाडके टटट नही हाग। तब स्थलसेना बहुत कुछ घटा दी जायगी अिसमें अधिकाग स्वयसेवक हाग और असका अपयोग आतरिक यवस्था रखनक लिअ पुलिस गकिनकी तरह किया जायगा। स्वरायमें कानून हाग और कानूनी अदालत भी हागी परतु व गोगाकी स्वतत्रताके रक्षक होग न कि आजकी तरह अक नौकरगाहीके हयियार हाग जिसन अक सपूण राष्ट्रको गकितहीन बना दिया है तथा जो असे और भी गकितहीन बनान पर तुत्री हुअी है। अतमें स्वराज्यमें जो चाहे असे लगाटी पहनन और खउमें सोनकी स्वतनता होगी। लकिन मझ आगा है कि आजकलकी तरह लाखो आदमियाके लिअ अक मला-सा चिपडा पहनकर धूमना जरूरी नही होगा जो आवश्यक कपडा खरीदनका सापन न होनस आज लगाटीका काम दता है। न स्वरायम लाखा लोगाको मकानोके अभावमें अपन थके हुआ और भूख गरीराको खुलेमें आराम देना पडगा। अिसलिअ हिन्द स्वराय में प्रकट किय गय कुछ विचाराको सन्दभसे अलग करके अह्ने व्यगात्मक रूपमें जनताके सामन अिस तरह रखना मानो म हर आत्मीके अपनानक लिअ अन विचाराका प्रचार कर रहा होअू अुचित नही है।

यग अिडिया ९-३-२२ पृ १४५

## स्वराज्यकी व्यावहारिक परिभाषा

स्वतंत्रता अर्क जसा गल है जा गतालियाके प्रयागसे पुनीत हो गया है और जिमलिअ अिसके आसपास बहुतरे लागाकी रायाका अक्त्र कर लेना कोजी बडी बात नही है। परंतु अुसकी असी व्याख्या करनका साहस काओ नही करगा जो अन सबका पमल हा सक। अिसलिअ म मुझाता हू कि स्वराज्यकी जगह उनवाला दूसरा कोजी अठा गल प्राप्त नही है और अुनकी अक् ही मात्रिक व्याख्या हा सकता है भारतका वह पद जिसकी अभिलाषा किमा दिय हूअ अवसर पर भारतीय लोग कर।

यदि मुझसे कोओ यह पूछ कि अिस घडा हिंदुस्तान क्या चाहता है तो म कहूंगा कि मुझ पता नहा। म सिफ अितना कह सकूंगा कि म तो असेसे यही चाहता हू कि वह अिस बातकी अभिलाषा रख कि हिंदुआ और मुसलमानामें सच सम्बध रहे जनसाधारणको रोटी मिल जोर छआछूत दूर हा। अिस घडी ता म स्वराज्यकी यही व्याख्या करूंगा। यह व्याख्या म अिसलिअ पग कर रहा हू कि म अक व्यावहारिक आदमी होनका दावा करता हू। म जानता हू कि हम अिमलण्डस अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता चाहते ह। वह पूर्वोक्त तीन वाताके बिना कभी नही मिल सकती—यदि हमारे पास हथियार हाते और हमें अुनका प्रयोग भी करना आता तब भी नही मिल सकती।

हिन्दी नवजीवन २०-७-२४ पृ० ३९४

## राष्ट्रीय माग

[ १५ सितम्बर १९३१ को लन्दनकी गालमेज परिषदकी फडरल स्ट्रक्चर मब-कमेटीके सामन दिया गया गाधीजीका भाषण । ]

आरम्भमें ही मुझे स्वीकार करना चाहिये कि आपके सामन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकी स्थिति रखते हुआ मैं काफी कठिनायी महसूस कर रहा हूँ। मैं कहना चाहूँगा कि मैं जिस सब-कमेटीमें और साथ ही जब जुचित समय आयगा तब गोलमेज परिषदमें शुद्ध सहायगवी भावनाके साथ शामिल हानके लिए और अपनी शक्तिभर सहमतिके मुद्द खोजनकी कोशिश करनेके लिए आया हूँ। मैं सम्राटकी सरकारको यह आश्वासन भी देना चाहूँगा कि मेरी अच्छा हुकूमतको किसी भी समय शकटमें डालनकी न तो है न हागी और यहां अनुपस्थित अपन सहयोगियाको भी मैं यही आश्वासन देना चाहूँगा कि हमारे दृष्टिकोणमें चाह कितना ही अंतर हो मैं उनके रास्तमें किसी भी तरह बाधक नहीं बनूँगा। अतएव यहां मेरी स्थिति पूरी तरह आपकी सदभावना और सम्राटकी सरकारकी सदभावना पर निर्भर है। अगर किसी समय मुझ यह मालूम होगा कि मैं परिषदकी कोयी भी सेवा नहीं कर सकता तो मैं खुदको इससे हटा लेनेमें सकाच नहीं करूँगा। मैं अनसे भी जो जिस कमेटी और परिषदके प्रबंधके लिए जिम्मेदार हूँ कह सकता हूँ कि वे केवल मुझ सकेत भर कर दें और फिर हटनमें मुझ कोयी शिक्षक नहीं होगी।

मुझ असा असलिय कहना पड रहा है क्याकि मैं जानता हूँ कि सरकार और कांग्रेसके बीच मौलिक मतभद हूँ और यह भी सम्भव है कि मेरे और मेरे सहयोगियाके बीचमें महत्वपूर्ण मतभद हूँ। अिसके सिवा मुझ अपना काम अक मर्यादाके भीतर रहत हुज करना होगा। मैं कांग्रेसका भारतीय राष्ट्रीय महासभाका अक गरीब और विनम्र प्रतिनिधि-मात्र हूँ और असलिय यह बता देना जुचित ही है कि कांग्रेस वास्तवमें क्या है और असका अुद्देश्य क्या है। तब आप मेरे साथ सहानभूति रखेंग क्याकि मैं जानता हूँ कि मेरे कथा पर जिम्मेदारीका जो बोझ है वह बहुत भारी है।

कांग्रेस क्या है ?

अगर मैं गलता नहीं करता हूँ तो भारतमें कांग्रेस सबसे पुराना राजनीतिक संगठन है। जिसकी अवस्था लगभग ५० सालकी है और अिम अरसमें

वह बिना किसी रुकावटक बराबर अपने वाषिष्ठ अधिवेशन करती रही है। वह सच्चे अर्थोंमें राष्ट्रीय है। वह किसी खास जाति किसी खास वर्ग किसी विधायक हितकी प्रतिनिधि नहीं है। वह सब भारतीय हिता और सब वर्गोंका प्रतिनिधि हानकी रक्षा करती है। मुझ यह यनात हुआ बहुत आनन्द जाता है कि जिसकी अखण्ड आरम्भमें एक अग्रज मन्त्रिपरिषद्में हुआ। अन्त आकाशचिन्म हृद्यमका हम कायमक पिताक रूपम जानत ह। दो महान पारसिया फिराज गान्ध भक्तान श्रीर गान्धभाभी नौराजाने — जिहू सारा भारत बृद्ध पितामह कहनमें प्रसन्नता अनुभव करता है जिसका पापण किया। आरम्भस ही कायममें मुसलमान जीमाभी अँग्रेज अिडियन गार आदि शामिल थ, बल्कि मुये या बहना चान्दिय कि अिममें मय घम, पय और मन्त्रदायाका धाडा-बहुत पूणताक साथ प्रतिनिधित्व हाना रहा। स्वर्गीय बन्दरहीन तयवजीन अपन आपका कायमक माय मिला दिया था। मुसलमान और पारसी भी कायसब सभापति रह ह। अिस समय बमस बम जेब भारतीय जीमाभी अध्यक्षका नाम मुझ माद आता है य थ था अुमगचन्द्र बनर्जी। श्री वालीचरण बनर्जीन जिनम ज्यान्त विगुड चरित्रवाक किमा भारतीयका म जानता नहा अपनका कायमक साथ जन कर लिया था। म और निम्नन्ट आप भा अपन बाच था ५० टा० पाका अभाव अनुभव कर रह हाय। यद्यपि व कभा कायसयें विधिवत शामिल नहा हुआ फिर भी व पूर राष्ट्रवाक्य थ और कायमम महामूर्ति ररत थ।

जना कि आप जानत ह स्वर्गीय मौलाना मुहम्मदअल जिनका अुपस्थितिका भी आज यहा अभाव है कायमक सभापति थ और अिस समय कायसका कायसमिति १५ सन्ध्यामें ४ सन्धस्य मुसलमान ह। स्त्रिया भा हमारी कायसकी सभापति रह चुकी ह — पहली डॉ० अनी बमेट थी और दूसरी श्रीमता मरोजिनी नायडू। श्रीमता नायडू आजकल कायममितिका सन्धस्य भी है और अिम प्रकार जहा हमारे यहा वर्ग या पयका अभाव नहा है यहा विगी प्रवारका स्त्री-मुरप अ भी नहीं है।

कायमन अगन आरम्भस ही अछूत कहलानवालाके अुद्धार-कायका अपन हापामें ल रना है। एक समय था जब कि कायम अपने प्रत्येक वाषिष्ठ अधिवेशनक समय अपना सत्यागा सस्थाकी तरह सामाजिक परिपक्वा भी अधिवेशन किया करती थी जिम स्वर्गीय रानडन अपन अन्क कामामें एक काम बना लिया था और जिम अहान अपनी गतिवया समर्पित का था। आप दंगे कि अुनक ननृत्वमें सामाजिक परिपक्व कायममें अछूताके सुधारक कायको एक खास स्थान लिया गया था। किन्तु सन् १९२० में कायसने एक वर्ग अन्त अुठाया और अन्धधनता निवारणक सवालका राजनातिक मचका एक आधार-भूम बनाकर राजनातिक कायमका एक महत्वपूर्ण अग बना

दिया। जिस प्रकार काग्रस हिंदू मस्लिम-अवताक। और जिसलिअ सब सम्प्रदायाके पारस्परिक अक्षयके स्वराज्य प्राप्तिके लिअ अनिवाय समझती थी, असी प्रकार पूण स्वराज्य प्राप्तिके लिअ अस्पृश्यताक निवारणको भा वह अनिवाय समझन लगी।

सन १९२ में काग्रसन जा स्थिति ग्रहण की थी वह आज भी बनी हुअी है और जिस प्रकार काग्रसन अपन आरम्भस ही अपनका सच्चे जयोंमें राष्ट्रीय सिद्ध करनका प्रयत्न किया है।

अगर यहा अपस्थित महाराजागण मन्न जाणा दें ता म यह बतलाना चाहता ह कि अपन आरम्भमें ही काग्रसन अतकी सवाका काय भी अठा गिया था। म जिस कमेटाका याद दिलाता चाहता हू कि क्वेबिन भारतक बड पितामह ही थ जिन्हान कारमार और मसूरके प्रदनको हावम अकर सफलताको पहुचाया था और म अत्यंत कितम्रतापूर्वक कहना चाहता हू कि ये मोना राजवश श्री दादाभाजी नौरोजीके और काग्रसके प्रयत्नाक लिअ कम अणी नहा ह। अब तन भी राजाआके घरेडू और आतरिक मामलाम हस्तगत न करके काग्रस जनकी सवाका प्रयत्न करनी रही है।

म आशा करता हू कि जिस सक्षिप्त परिचयस जिसका लिया जाना मन आवश्यक समझा यह सब-कमेटी और जा काग्रसके दावेम दिखचस्पी रखत हू वे यह जान सकेंग कि असन जो दावा किया है असका वह याय्य अधि कारा है। म जानता हू कि कभा-कभी वह अपन जिस दावेको कायम रखनमें असफल भी हुअी ह अकिन म यह कहनका साहस करता हू कि अगर जाप काग्रसका अतिहास देखग तो आपका मालूम होगा कि असफल होनकी अपेक्षा वह सफल ही अधिक हुअी है और समयके साथ असकी सफलता लगातार बढ़ती गयी है। सबसे अधिक काग्रस अपन मूल रूपम देगेके एक कोनस दूसरे कान तक ७ ००० गावामें बिखरे हुअ करोडों मूक अध-नग्न और भूख मानवाकी प्रतिनिधि है फिर चाहे य लोग ब्रिटिश भारतके नामस पुकारे जानवाल प्रदेशके हा अथवा भारतीय भारत अर्थात् दगी राज्याके। जिसलिअ असा प्रत्यक् हित जो काग्रसके मतस रणाके योग्य है अिन लाग्ना मूक लाग्नाके हितका साधन होना चाहिये। आप समय समय पर अिन विभिन्न हिताम प्रत्यस विराध देखत ह। परंतु यदि वस्तुत कोअी वास्तविक विरोध हो तो म काग्रसकी आरस बिना किसी मकाबके यह बतना दना चाहता हू कि अिन लाखा मूक मानवारे हितकी रणाक लिअ काग्रस प्रत्यक् हितका बलिदान कर दगी। जिसलिअ काग्रस मूउन अरु किसानाका संगठन है या असा कहिय कि वह अधिकाधिक बसी बनती जा रहा है। आपकी और कदाचित्त जिस ममितिके भारतीय सदस्याको भी यह जानकर आश्चय होगा कि काग्रसन आज अखिल



भारताम खरसा मध जायक अपने सगटन द्वाग करीब दो हजार गावाकी लगभग ५० हजार स्त्रियाका राजगारमें लगा रता है और जिनमें सभवत ५० प्रतिशत मुसलमान स्त्रिया ह । अनमें हजारो अछूत कहानवाग जातिमाका भा ह । अिम प्रकार हम अिम रचनात्मक बापक द्वारा रचनात्मक रीतिस अिन गावामें प्रवग कर चुक ह और ७००००० गावामें स प्रत्येक गावमें प्रवग करनका वागिंग की जा रता है । यह काम यद्यपि मनुष्यकी गकितक बाहरबा है फिर भा यदि मनुष्यक प्रयत्नस हा सक्ता हो ता आप गौघ्न ही बाग्रमका अिन सब गावामें फगी हुमी और बुह चरखका नदेग मुनानी हुआ दवेंग ।

### बाग्रसकी माग

बाग्रसके प्रतिनिधिक स्वरूपका अिन विगपताना समय तक वा जब म आपको बाग्रसका आग पत्कर मुनाशुगा सब आपका आचय न हागा । म आगा वगता हू कि यह आपका अमधिकर नही गगा । आप मान सक्ते ह कि बाग्रस अब असा दावा कर रती है जा बिलकुल असमयनाय है । जसा भी वट है मुझ पहा बाग्रसका थोरस अुम पयागभव अत्मत विनम्रतापूर्वक गकिन मयामभव अधिकम अधिक दृढतास पग करना है । म यहा अुम दावको अपना सम्पुण श्रद्धा नया गकितक साथ प्रतिपात करनक लिश्रे थाया ह । अगर आप मुन जा बुड म मानता आ रहा हू असम अग्य बातका विवाम करा सब और बता सब कि यह दावा अिन गवा मूक गगाकि अिाके प्रतिकूल है ता म अपना रायमें सगोधन करूगा । मरे मनमें बाजा पूर्वग्रह नही है और आपकी ज्ञान मुनन और स्वीकार करनक लिश्र म नया ह । गकिन फिर भी मुझ अग सगाधनका स्वीकार करनक पूव अपने प्रधानाकी महमति गता पडगा जिमस कि म बाग्रसक प्रतिनिधिक रूपमें अपुपवन ढगन पाव कर सकू । अउ म आपन सामन जम आगता पत्कर मुनाता हू जिमस आप अन मयागजाना स्पष्ट रूपमें समय सब जिहें मय पर लाग गया है ।

यह आगे भारतीय राष्ट्रीय बाग्रसक कराचा अधिवगतमें स्वीकृत प्रस्तावमें लिखि है । प्रस्ताव अिम प्रकार है

' भारत-सरकार और बाग्रसकी बाग्रसमिति के बीच जा अम्याया सधि हुआ है उस पर विचार करके बाग्रस अुमरा समयन करती है और यह स्पष्ट कर देना चाहती है कि बाग्रसका पूण स्वगय प्राप्त करनका अुद्ध्य ज्या-ना-रया बना हुआ है । यदि ब्रिटिश सरकारक प्रतिनिधियाके बिगा सम्मेलनमें बाग्रसके प्रतिनिधियाके जालब मागमें

दूसरे प्रकारकी स्वावटें न रह जायें (और काग्रसब प्रतिनिधि अुस सम्मेलनमें गरीब हा) तो काग्रसब प्रतिनिधि अपन अुसी अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअ प्रयत्न करेग — तासकर असलिअ कि हमारे देगकी सना विदेशी मामला राष्ट्रीय जाय-व्यय तथा आर्थिक नीतिक सबबमें अधिकार प्राप्त हो जाय और भारतकी ब्रिटिश सरकारन जो लेन-देन किये ह अनकी जाच हाकर जिस बातका निपटारा हा जाय कि भारत और जिलण्ड अिन दानामें स काआ भी जब चाहे तब अक-दूसरस अलग हा जाय । काग्रसके प्रतिनिधियाका जिस बातकी स्वतंत्रता रहेगी कि जिसमें असी घट-अट कर जो भारतके हितके लिअ प्रत्यक्ष रूपस जावश्यक सिद्ध हा ।

जिस प्रस्तावके प्रकागम मन गोलमेज परिषद द्वारा नियुक्त अनक सब कमटिया जिन अस्थायी निणया पर पट्टची ह अुनका यथाग्विन सावधानी पूवक अध्ययन करनकी कोगिा की है । मन प्रधानमन्त्रीके अुस वक्तव्यका भी सावधानासे अध्ययन किया है जिसमें सम्राटकी सरकारकी सुविचारित नीति दा गयी है । सभव है कि मरा खयाल गलत हा लेकिन जहा तक म समझ पाया हू यह दस्तावेज काग्रसन जा लक्ष्य रख ह और दावे किय ह अुह पूरा नहीं करता । यह सही है कि मुझ असे परिवतनाकी स्वीकार करनकी स्वतंत्रता है जो प्रत्यक्ष रूपस भारतके हितमें हा किन वे असि प्रस्तावमें अलिखित बनियाती सिद्धान्तोसे सगत होन चाहिय । यहां मुझ अस पवित्र समझौतेकी गतीकी याद हा आती है जा दिल्लीमें भारत-सरकार तथा काग्रसके बीच हुआ था । अुस समझौतेमें काग्रसन सषक सिद्धान्तको बेद्रमों जिम्मेदार सरकारके सिद्धान्तका और जिस सिद्धान्तको भी स्वीकार कर लिया है कि भारतके हितकी दृष्टिम जहा तक आवश्यक हा सरक्षण जरूर होन चाहिय ।

### समान भागीदारी

कठ अक महावरका अपयाग किया गया था । म अन प्रतिनिधिका भूट रहा हू लेकिन मझ अनका वह महावरा बहुत अयपूण मात्रूम हुआ । अहान कहा था हम क्व राजनीतिक सविधान नहीं चाहते ह । म नही जानता अन्हान जिस अक्निको वही अय दिया था या नही जो कि मुअ अकदम सूझा परतु मन गीघ्र हा अपन-आपसे कहा असि महावरेन मुअ अक मुल्तर गट प्रयोग लिया है । यह गही है कि काग्रम और ब्यक्तिग म तो कभी भी केवल राजनीतिक सविधानसे सतुष्ट नहीं हा सकेंग — अस राजनातिक सविधानस जिमे पडनस असा लगे कि वह भारतको वह सब दता है जिसकी कि राज

नीतिक दृष्टिसे वह अच्छा कर सकता है लेकिन मयाथमें कुछ भा नहीं देता। अगर हम पूरा स्वरायका आप्रह करत ह ता जिसका कारण हमारी अहकार भावना नही है अमुका कारण यह नही है कि हम दुनियाका यह दिखाना चाहत ह कि हमन ब्रिटिश जनतास सारा सबध ताड लिया है।

जिस प्रकारकी काजी बात नहीं है। जिसने विपरात आप जिस आदामें पायेंगे कि काग्रस ब्रिटनक साथ अब भागीदारीका विचार रखती है काग्रस ब्रिटिश जनतास सबध रखनका विचार करता है लेकिन वह सबध असा हाना चाहिये जो गो पूरी तरह समानाके ग्रीच रह सकता हो। अब समय था जब म ब्रिटिश प्रजाजन हान और कहलानमें गौरव महसूस करता था। कजी वर्गसे मन खुदना ब्रिटिश प्रजाजन कइना धंद कर दिया है म प्रजाजन कहलानक वजाय यह ज्याग पसन्द करूगा कि मुझे बागी कहा जाय। अब तो मेरी आशाया यह है कि म साम्राज्यका नहीं बल्कि सम्व हो तो राष्ट्र मडलका — भागागारी पर आधारित राष्ट्र-मडलका — नागरिक बनू। अगर आइवरन चाहा ता वह अब अटूट भागीगारी होगी अब राष्ट्र द्वारा दूसरे पर अपरसे थापी हुजी भागीगारी नहीं हागी। अतअब आप यहां दलेंगे कि काग्रस चाहती है कि किता भा पक्षका जिस सबधका अन्न कग्ने और भागी दारीका तोडने या अलग होनेका अधिवार हाना चाहिये। जिसलिअ यह भागागारी जसी हाना चाहिये कि अुसस दोनाका लाभ हो। क्या म कू — मेरा यह कथन प्रस्तुत प्रश्नकी दृष्टिसे अप्रासंगिक हा सकता है पर मेरे लिअ वह अप्रासंगिक नहीं है — कि जसा मन अयत्र कहा है म अच्छी तरहसे समझता ह कि आज जिम्मेदार ब्रिटिश राजनीतिग घरेलू मामागके मकटको दूर करनक प्रयत्नमें पूरी तरह डूब हुअे ह। हम अुनसे जिससे कमची आगा भी नहीं कर सकते और जब म लन्दनकी आर आ रहा था तभी मुझ यह ग्याल आया था कि क्या हम लोग जो अभी जिस सब-कमटीमें अपुस्तियत ह ब्रिटिश मंत्रिवोक लिअ वाधक नहीं हाग क्या हमारी स्थिति यहां अुनके बीचमें अनुचित हस्तक्षप करनेवागकी जसी न होगी? तो भी मैंने अपन आपस कहा, यह सम्व है कि हमारी स्थिति अनुचित ह्मनभप करनवालापी जसा न हा, यह भी सम्व है कि ब्रिटिश मंत्री खुद गोलमज परिपत्रकी धारवाजीका अपने घरेलू मामलाके लिअ प्राथमिक महत्वका समझें। हा भारतका तलवारके जारस दबाकर ग्या जा सकता है। लेकिन प्र ब्रिटनकी गमुडिके लिअ ग्रेट ब्रिटनकी आर्थिक आजागीक लिअे याग लाभदायक क्या हागा गुलाम परतु बागी भागन या असा भारत जा ब्रिटनका सम्मानित भागागार होगा और जो ब्रिटनक साथ अुसक दुग वग्याग और अुमका विपत्तिक समयमें भी हिस्सा लगा?

## मेरा सपना

हा और आवश्यकता होने पर परतु अपनी जिंदा जे जिटनके साथ कथसे कथा लगाकर लडगा भी— किमी भी जाति या ब्यक्तिके दापणक लिअे नही बल्कि सारी दुनियाकी भलाआक लिअ। यदि म अपन देगक लिअ आजदीकी माग करता हू तो आप विश्वास कीजिय कि म यह आजानी जितलिअ नही चाहता कि मरा बडा दग जिसकी आवाणी सम्पूर्ण मानव जातिका पाचवा हिस्सा है दुनियाका किसी भा दूसरा जातिका या किमी भा ब्यक्तिका पोषण करे। आप विश्वास कीजिय कि म अपनी गकितभर अपने नेगको असा अनय नही करन दूगा। यदि म अपन देगके जिअ आजानी चाहता हू तो मझ यह मानना हा चाहिम कि प्रत्यक दूसरी सबल या निबल जातिको खुस आजादावा बसा ही अधिकार है। यदि म असा नही मानता हू और जमी जिंदा नही करता हू तो असका यह अय है कि म खुस आजानीका पात्र नही हू। और जिमीलिअ मन आपजे सुत्तर पीपके तट पर पढचन पर अपन-आपस कहा कि सयागवग जिटिंग भविषाका यह महमूस कराना मर लिअ सभव हागा कि भारत अेक मत्ववान भागीदारके रूपम — जिसे आप ताकनके जोरसे नही बल्कि प्रमरूपी रेशमकी डारीस अपन गाय बाध कर रखग — आपका गायन सच्चा सगायन सिद्ध होगा। असा भारत जिटण्डके महज अक सालक बजटका ही नही कजा सालाके बजटका सतुलित करनमें सहायक सिद्ध हागा। य दा राष्ट्र मिलकर क्या नही कर सकते? आपका राष्ट्र मध्यमें छाटा है पर वह बहादुर है। अमका बहादुरीका जितिगस गायन बमिमाल है। वह गलामीकी प्रयाके खिलाफ लडा है और असन असख्य बार कमजोराकी रक्षा करनका दावा किमा है। दूसरी ओर हमारा राष्ट्र अत्यंत प्रावान और विगाल है। असकी जनसख्या करोडा तक पहुचती है। असका जीत अतिगय अजबल है। अिन समय वह दा महान मसूतियाका — मस्िम और हिंदू मसूतिका प्रतिनिधित्व करता है। असमें रनबा आमजियाका सख्या भी कुछ कम नही है। जिसक सिवा अनेक गणासे सम्पन्न दुनियाका मारीका सारा पारसा जाति भी कन बमी हुआ है। असकी सख्या बन्त कम है लकिन दानगालता और व्यापारिक सात्मके गणामें यह जाति बजो है अग्रगण्य तो निश्चय ही है। भारतमें य मारी मसूतिया अकन हुआ हू और यदि यहा प्रतिनिधियाके रूपमें आय हुआ हिंदुआ और ममनमानाको अीदवर असा नही प्ररणा दे कि वे आपनमें मिल जायें और दानाके लिअ सम्माय किमी सभझाने पर पढच जायें ता फिर य दाना राष्ट्र मिगकर क्या नही कर सकन? मैं अपन-आपस और आप लागसे पूछता हू कि भारत स्वतंत्र हा या जिटन जितना ही स्वतंत्र हा तो अिन दोना राष्ट्रके बीचमें होनवाणी सम्मानपूर्ण

भागादारी क्या जिस महान राष्ट्रकी घरकी स्थिनिका दृष्टिस भी परस्पर लाभकारी नहीं होगा? और जिसलिअ यह स्वप्निल आगा लेकर ही म यहा आया हू और अभी भी म जिस सपनको पाल रहा हू।

अितना कहकर गापद मन मुच जा-कुछ कहना चाहिये था यह मव कह लिया है। बाकी सब आप खुल पूरा कर लेंग। म मानता हू कि आप मुझसे क्या आगा नहीं रखेंग कि म जिस मिलमिलमें आपका हर चानका पूरा व्यौरा दू और यह यताऊ कि सना पर नियंत्रणसे और विन्धी माफला पर तथा वित्तीय गजस्व-भम्बघा और आर्थिक नाति पर या वित्तीय गन-गन पर नियंत्रणसे मरा क्या अय है। वित्तीय गन-गनक मामलाका अल्लव करत हुअे कल वेक मित्रने अुह पवित्र और परिवतनक पर कहा था। म क्या नहा मानता। मनि नये आनवाल और पुरान जानेवाले भागादारीके बीचमें हिमाव हो ता अुनर किय हू-न गन-गनकी जाच की जाती है और अुसमें आव-यक्तानुमार घट-बढ भी का जाता है। अिमन्त्रे अगर कायम यह कहती है कि राष्ट्र जा बाज स्वीकार कर रहा है अुममें स वित्तना अस अुठाना चाहिये और वित्तना अस नहीं अगना चाहिय अितना जानने-ममयनेका अम अधिकार है तो वह बात्री अपराध नहा करता। अिम हिमाव और जाचकी माग कवल भारतक ही हितमें नहा दाना देगाव हितमें का जा रहा है। मुझे निश्चय है कि ब्रिटिश जनता भारत पर असा बात्री भी बोम नही लगना चाहता जा कि अुसे पायकी दृष्टिस अुठाना नहा चाहिय। और म यहा कायसका आरम यह पायणा करता हू कि कायस जम जेक भा अुणका त्याग करनका विचार भा नहीं करेगी जो अुम पायका दृष्टिस चुवाना हा चाहिय। यदि इमें अम गम्माय राष्ट्रक रूपमें रहना है जिसकी सारी दुनियामें माव हा, तो इम अपन पायक बजकी पाआ-गानी, जम्मत हो ता अपन रकनम भा भरा और चुवायेंग।

मुझे लगता है कि जिस आगाकी धाराधारा अिसस पायक ममजानकी और कायसक लाग अुनका जा अय करत हू अुम अयका आपक सनग जीर अधिच पूषककरण करनेकी कात्री जरूरत नही है। अगर बी-वस्की अभी अिच्छा हागी कि म अिन चचाजामें भाग लवा रहू ता आगे अिन चर्चाअावे दरमियान में अिन धाराअावे आगयका सविस्तार ममजाअुगा। आगे अिन चचाअावे दरमियान मुझे मररणा (Safeguards) क धारेमें जा कुछ कता है वह भी कहूगा। किन्तु कायउर महाअय मरा लयात है कि आपकी मेहरबानीमें अिन सनाका मयय लकर विचित् विस्तारक माव मन जा कुछ कहा है वह किल्लात बारी है। जिस सनाका अितना

ज्यादा समय नैनका मेरा काजी विचार नहीं था लेकिन मुझ लगा कि यदि इस अवसर पर भी मने अपनी प्रिय आकांक्षा अपन हृदयकी सारी भावना जुड़लकर आपके सामन नहीं रखी तो म अस मामलके प्रति पाय नहीं करुगा जिसे आपको इस अुप-समितिका और ब्रिटिश राष्ट्रका—जिसके कि हम भारतीय प्रतिनिधि इस समय मेहमान ह—समयानके लिअ म यहा आया हू। मेरी बड़ी अिच्छा है कि जब म यहास जाअू तो यह विश्वास लेकर जाअू कि प्रट ब्रिटन और भारतके बीच सम्मानास्पद और समानतामूलक भागीदारीका सम्बन्ध बननवाला है।

अन्तमें म यह कहूगा कि जितन दिन म आप लोगाके बीचमें हू सदक म यह प्रायना करता रहूगा कि भगवान अुपयुक्त शुभ परिणाम लाय। इससे अधिक तो म क्या कहू? चासलर महोदय म लगभग ४५ मिनट रें चका हू फिर भी आपन मुझ बीचमें टोका नहा। अिम तरह आपन मरे प्रति जा मेहरबानी दिखाअी है अुसके लिअ म आपको धन्यवाद देता हू। म इस अुदारताका अधिकारी नहीं था। इसलिअ आपका फिर अक वार धन्यवाद देता हू।

स्पाचेज अण्ड राअिटिअ आक महात्मा गाधी (चौथा सस्करण) जी अ० नटसन अेण्ट क पू ७८७।

## ५

### मेरे सपनोकी आजादी

दोस्ताने बार-बार मुझ पर जोर डाला है कि म यह बताअू कि आजादी क्या है? बातके दोहराय जानका डर होते हुअ भी मुझ कहना चाहिय कि मेरे सपनाका आजादीका अय ता रामराय यानी दुनियामें अीवरका राय है। स्वगमें यह राय कसा होगा सो म नहीं जानता। बहुत दूरकी चीज जाननकी मुझ अिच्छा भी नहीं है। अगर वनमान मनको काफी अच्छा लगता हो ता भविष्य अुसम बहुत अग्य नहीं हो सकता।

अिमलिअ राजनीतिक आर्थिक और नतिक तीना तरहकी आजादी ही सच्चा अजादी है।

राजनीतिक आजादीका मतलब ही यह है कि दग पर ब्रिटिश फौजाका किसी भी प्रकारका काजी हुकूमत न रहे।

आर्थिक आजादीका मतलब ब्रिटिश पूजीपतिया और ब्रिटिश पूजीक साथ ही अनक प्रतिरूप हिन्दुस्तानी पूजीपतिया और अनका पूजास पूरी

तर्ह छुटकारा पाना है। दूसरे गण्टामें छोटस छोट आत्माका भी यह महसूस हाना चाहिय कि वह बडस बड आत्माक बराबर है। यह तना हा मक्ता है जब पूजीपति अपनी कुशलता और अपनी पूजामें छान्म छोट आर गराबने गरीबका अपना चिन्मन्तर बना ॐ।

नतिक आजादीका मनलब दगा रखाक लिअ रवा हुअी हयियार बन् पाजास छुटकारा पाना है। रामरायकी मरी कल्पनामें ब्रिटिश फौजा हुकूमतका जगह राष्ट्रीय फौजी हुकूमतका बठा देनेकी काआ गुजाबिग नहा है। जिम गण्टामें फौजा हुकूमत हाना है फिर वह फौज दगाकी अपनी ही क्या न हा वह दग नतिक दृष्टिम कमी आजाद नहा हा सबता और अिमलिअ अमक मकस कमजार कह जानवान नागरिक कभा पूरी तर्हम नतिक अग्रनि नही कर सकने।

यद्यपि यह दावा किया जाता है कि श्री चर्चिलन ब्रिटनक लिअ लडाजी जाना है ता भी जब मच्च अहिमावाग सुधारकक दृष्टिकाणम अन्तान अबडौनक अपन भाषणमें बुद्धिमत्ताकी बातें कही ह। किना हयियारमि लस मिपाहीवा तरह हा था चर्चिल भा जानत ह कि हमारे जमानेकी पिछला दाना लडाजियामि किनी तबाही और बरवाना हुअी है। अन्वारामें अन्क नापणका जा मार छपा है अम म अिसा अकमें दूसरी जगह द रहा हू। अन्के भाषणस निगागावाक जा गूज अुछी है अुमक तिलाफ मुझ जनताका मावधान कर रना चाहिय। अगर मनुष्यममाज लडाजीस मुह माड ७ ता अुमका कुछ भा नुकमान नही हागा। गगान आतिरा बूद तक अपना जा खून बहाया है वह बजार गया नहा कहा जायगा अगर अमम हम यह सीस ७त ह कि अन्का या बुरा क्या भा कारण क्या न हा हमें दूसराका खून ७नन बजाय खुद अपना ही खून गुनीम रना चान्पि।

अगर ब्रिटिश मत्रियावा मिगन हिटुस्तातका स्वराय दे दता है ना चिन्मन्तानका यत् करना पडगा कि अक फौजी राष्ट्र बननकी बाणिगामें बट कमस कम कुछ सालाके लिअ दुनियामें पाचवें दरजकी ताकत बना रहना चाहगा जीर अिम तरह अुपर जिम निरागावाक जिफ हुवा है अुसक जयामें वह दुनियाका आगावा काजा गन्ग नही दगा, या अपना अहिमाका और भी मवारकर वह अपनका दुनियाका अमा सबस पहला राष्ट्र बननक लापप गाबिन करगा जा बडा मुक्तिमि प्राण की हुआ अपना आजादीका अपयाग दुनियाक मिरम अुग भाषका अुताग्नमें करगा जा लडाजीमें प्राण की गर्नी पिजयक बारजू अुस पाग रना है।

### श्री धर्मिलक भाषणका अक्षरबारी सारांश

दुनियाकी हालत आज बहुत नाजुक है। वह नफरतस भरी पडा है। मानव-परिवारका बड़ी-बड़ी गालाबें — जीती हुई या हारी हुई, निर्णय या गनहगार — आज घबराहट दुःख और तबाहीमें डूबा पडा है। हमारे जीवनमें दा भयानक लडाअियान मानव हृदयकी असकी भयता और सम्यतास अलग कर दिया है।

जिनका १९वीं सदी श्रीमाजी सम्यता कहती है उसे अपार हानि पहुची है। क्याकि सब बड़ी-बड़ी काम कम तनावामें स गजर रही है कि अनकी भावनाय कुन्द हो गयी है और सामाजिक "यवहारक" सुन्दर ढंग सवाह हो गय है।

सिफ विनाश घातक यद्धकी जबरदस्त हवाजाका मार खाता हुआ जाग बग है। अमन आदमियोके हाथमें सहारक अस माधन दिम है जो मनुष्य गरा सामाज्य ज्ञान या सद्गणमें की हुई अुत्तिस कहा "मादा गकिनशाली है।

अब असी दुनियामें जहा कि पहेले जहरतसे ज्माल खराबकी मृपज समय-समय पर अब समस्या बन जाती थी आज कही देगाके लोग पर जकारन अपना सूखा और डरावना पजा फला दिया है और खुराककी कमी तो सभी देगामें पदा कर दी है।

मनुष्य-जातिकी आर्थिक शक्तियाका अन सब तक-नीफान रतम कर दिया है जिनमें से वह गुजर चुकी है और आज भी गजर रही है। सिफ खूरजान ही हमें कमजोर और निबठ नहीं बनाया है।

मानव प्ररणाक मल सात फिलहा तो सूख चके है। मानव जातिके जसा समय मिलना हा चालिय जिसमें वह अपनी पुरानी शक्तिया फिरसे प्राण कर सकें। अपना आजकी हातमें मध्य-जाति नय जाघात और नओ लडाअिया बिल्कुल बरदान नहीं कर सकती। नहीं तो वह बिल्कुल गुल्फी और भई देगामें पहुच जायगी।

फिर भी हम नहीं जानते कि जा घृणा और अनिश्चितताका भावनाय आज सब देगामें फला हुआ है व अन कसौटियासे अरिब कडी कमीलिया हमारे सामन पैग नहीं करगी जिनमें स अरपत कप्टस निबल कर हम बाल-बाल बच ह।

बहुतस मुल्कामें जग कि सबका सगठित और मित्र-मुला प्रयत्न भी पूरा नहीं पडता पार्टियाके थगड और आपसी फरको भडकाया जाता है और कम्पुनलिया-जस मताय लागाका सटा किया जाता है, जो अपनी विरोधा शिरपाराआको बिल्ला बिल्लाकर अब-दुमर पर धापनका प्रयत्न करत है।



फिर भी हर मुल्कके आम लोग अपनी दयालुतावा बहादुरीको और अपने माथियाकी नेवाकी भावनाको प्रकट करत ह। लेकिन पार्टिया सस्याओं और मिद्वान्त बुनका अक-दूसरक खिलाफ बिना कारण और बददीसे अिस तरह मिडा रहे ह जसे बिलकुल निरकुल राजाआ और धादसाहाने जमानमें व भिडाय जात थ।

हरिजनसंवाक ५-५-४६ प० ११६

६

## हिंदुस्तानकी आजादीकी मेरी कल्पना

प्र० — आपन १५ जुलाजीव हरिजन में सच्चा खतरा नामक लेखमें कहा है कि आम तौर पर कांग्रेसवाले जानते ही नहीं ह कि अुह किस विस्मकी आजाती चाहिये। क्या आप अपनी कल्पनाके आजात हिंदुस्तानका 'यापक' चित्र देंगे ?

अु० — हिंदुस्तानकी आजादाक वारमें अपने विचार म समय-समय पर बता चुका ह। मगर चूकि यह सवाल कुछ सिलसिलवार पूछे गये सवालामें स अक है अिसलिअ कहा गभी बाताको दाहराकर भी अिसका जवाब दना बहतर हागा।

हिंदुस्तानका आजागास मतलब है सारे हिंदुस्तानकी आजाती। अुसमें हिंदुस्तानका रियासते भी आ जाती ह और दूसरी विदगी हुकूमतें भी। अुदाहरणक लिअ फामामा और पुतगाती हुकूमत। म समझता हू कि य परगती हुकूमतें ता अिअनगी सरकारक सहार ही मटा निभ रही ह। आजातीका अय हिंदुस्तानके आम लोगकी आजाती हाता चाहिये अुन पर आज हुकूमत करतवागवा आजाती नहीं। हाकिम आज जिहें अपने पाब-सते रीत रहे ह, आजात हिंदुस्तानमें अुन्ही आगाका मेहरबानी पर हाकिमाका रहना हागा। अुह लागति सयक बनना हागा और अुनकी मरजीके मुताबिक काम करना हागा।

आजाती नीचेग दुरू हाती चानिय। हरअक गावमें जमहूरी सल्तनत या पंचायत राज हागा। असके पास पूरी सत्ता और ताकत हागी। अिसका मतलब यह है कि हरअक गावको अपन पाब पर गढा हाता हागा — अपना जफरतें गुद पूरी कर लनी हागी ताकि वह अपना सारा बारीवार गुन चला सके। यहां तक कि यह सारी दुनियाक खिलाफ अपनी हिफाजत गुन कर सक। अुस तालीम दकर अिन हत तक तमार करना हागा कि वह

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

बाहरी हमलेके मकाब्रामें अपनी रक्षा करत हुआ मर मिटनेके लायक बन जाय। अस तरह जातिर हमारी बनियाण व्यक्ति पर हागी। जिनका यह मतलब नही कि पडोसिया पर या दुनिया पर भरामा न रखा जाय या जनकी राजी-खुगीस दी हुअी मदद न ली जाय। सयाल यह है कि सब आजाद होग और सब अक-दुमरे पर अपना अमर डाण सरेंग। जिस ममा जका हरअक आदमी यह जानता है कि उस क्या चाहिय और जिस भी बणकर जिसमें यह जाना जाता है कि बराबरीकी महनत करके भी दूसराका जो चीज नही मिलती है वह खद भी किसीको नही ँनी चाहिय वह समाज जरूर ही बहुत अूचे दरजकी सम्यतावाला होना चाहिय।

असे समाजकी रचना स्वभावत सत्य और अहिंसा पर ही हा सकती है। मेरी राय है कि जब तक औरवर पर जीता जागता विश्वास न हा सत्य और अहिंसा पर चलना नामुमकिन है। औरवर या खण वह जिण ताकत है जिसम दुनियाकी तमाम ताकतें समा जानी ह। वह किसीका सहारा नही लेती और दुनियाकी दूसरा सब ताकताक ततम हा जान पर भी कायम रहती है। अस जीनी-जागना रोगीनी पर जिमन अपन दामनम सब कुछ लपेट रखा है म विश्वास न रख ता म समझ न सकूगा कि म आज किस तरह जिण ह।

असा समाज अनगिनत गावाका बना हागा। असका फलाव अकक अपर अकके ढग पर नही बलिक उहराकी तरह अकक वाण अककी गकलम हागा। जिन्दगी मानारकी गकलमें नही होगी जहा अपरकी तग चोटीका ताचक चौड पाय पर खडा होना पडता है। वटा ता समुणकी लहराका तरह जिणगी अकके बाद अक घरेकी गकलमें हागी और यकित असका मध्यबिण्डु हागा। यह यकित हमेगा अपन गावक खातिर मिटनका तयार रहेगा। गाव अपन अजिगिदक गावाक लिअ मिटनको तयार होगा। अिम तरह आखिर सारा समाज अस लागाका बन जायगा जो अद्वत बनकर कभी किसी पर हमला नही करते बलिक हमेगा नम्र रहते ह और अपनमें समणकी अस गानका मटमूस करत ह जिसके व अक जरूरी जग ह।

अिसअिअ सबसे बाहरका घरा या दायरा अपना ताकतका अिममाल भीतरवालाका कुचलनमें नहा करेगा बलिक अन सबका ताकत दगा और जनस ताकत पायगा। मुस ताना ँिया जा सकता है कि यह सब ता खपानी तसवार है अिमक वारेमें सोचकर बकन क्या बिगाण जाय? यकिलणकी परि मापावाला बिण्डु काआ अिमन खाच नहा सनता फिर भी असका कामत हमेगा रही है और रहेगी। अिमी तरह मेरी जिस तसवीरकी भी कीमत है। अिमक लिअ अिमन जिण रह सकता है। अगरच अिम तसवारका पूरी

तरह बनाना या पाना मुमकिन नहा है ता भी जिस सही तसवीरका पाना या जिस तक पहुचना हिंदुस्तानकी चिन्तनीका मकसद हाना चाहिये। जिस चाजका हम चाहत ह उसकी सही-सही तमवार हमार सामन हानी चाहिये। तभी हम अससे मिलती-जलती कोअी चाज पानकी अुम्मीद रख सकते ह। अगर हिंदुस्तानक हरअक गावमें कनी पचायती राज कायम हुआ तो म अपनी जिस तमवीरकी सचाजी साबिन कर सकूगा जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दाना बराबर हाग या या कहिय कि न काजी पहला होगा न आखिरी।

जिस तसवीरमें हरअक घमकी अपनी पूरी और बराबरीका जगह होगी। हम सब अक ही जालीगान पेढवे पत्त ह। जिस पढकी जड हिलायी नहीं जा सकनी क्याकि वह पाताल तक पहुची हुआ है। जवरदस्तसे जवरदस्त आधी भी अस हिला नहीं सकती।

जिस तसवीरमें अन मनीनाके लिअ काअी जगह न हागा जा अिसानकी मेहनतकी जगह उअर चन्द लागाके हायामें सारी ताकत जिकटका कर दती ह। सुधरे हुआ लागाकी दुनियामें मेहनतकी अपनी अनाखी जगह है। अुसमें अनी मनीनाकी गुजाअिग होगा जा हर जाअमीवो अुसक काममें मन्द पहुचायें। अेकिन मुअ बकूल करना चाहिय कि मन कभी बठकर यह साचा नहीं कि जिम तरहकी मगान कसा हा सकता है। सिलाआका मिगर मनीनका खयाल मुअ आया था। लकिन अुसका जिन भी मन या ही कर दिया था। अपनी जिस तमवीरका पूण बनानक लिअ मुअ अुसकी जररत नहीं।

हरिजनमेवक २८-७-४६ पृ० २५६

## पचायत राज

अगर हम पचायत राज चाहते हूँ तो छोटे से छोटे हिन्दुस्तानी बडस बड हिन्दुस्तानीके बराबर ही हिन्दुस्तानका राजा है। जिसके लिये उसे गुद्द होना चाहिये। न हो तो अुमे असा बनना चाहिये। जसा वह गुद्द हो वसा ही समझदार भी हो। अिससे बट् जातिभद वणभदको नहीं मानगा। सबको अपन समान समझगा। दूमराका अपन प्रमपागमें बाधगा। अुसके लिये कोअी अछत नहीं होगा। अुसी तरह मजदूर और महाजन दोना अुसके लिये बराबर हांग। अिससे वह करोडा मजदूराकी तरह पत्तीनकी राटी कमायगा और कठम तथा कुदात्रीको अकसा समझगा। अिस गभ अबसरको नजनीक लानके लिये वह खुद भगी बन जायगा। वह समझदार हागा अिसलिये अफीम मा गराबको छुअगा ही कयो? स्वभावसे ही वह स्वदेशी व्रतका पालन करेगा। अपनी पत्नीको छोडकर वह सभी स्त्रियोको अुम्हके मुताबिक अपनी मा बहन या लडकी मानगा। किसी पर बुरी नजर नहीं डालगा। मनमें भी दूसरी भावना नहीं रखगा। जो हक असका है वही अपनी स्त्रीका समझगा। समय जान पर खद मरेगा दूसरेको कभी नहीं मारेगा। और बहादुर असा होगा कि सिक्खाके गुरुआकी तरह अकेला सवा लाखके सामन अडा रहेगा और अक कठम भी पीछे नहा हटगा। जसा हिन्दुस्तानी यह नहीं पूछगा कि आजकी परिस्थितियामें अुसका क्या कनव्य है।

हरिजनसेवक १८-१-४८ प० ४५७

## ग्राम-स्वराज्य

प्र० — हिंदुस्तानमें किसी भी क्षण जा परिस्थिति पता हा सकती है । ध्यानमें रखकर क्या आप ग्राम-स्वराज्य-समितिका बाजी असा एपरना करण जो देगव गावामें किमी अपुग मत्ता या मस्याक अभावमें और अुम पर किमा तरहका काभी आरार न रखते हुअ भी अपना काम कर सक ? खास तौर पर आप असा क्या प्रबध करण कि जिमसे समितिको गावना पूरा-पूरा प्रतिनिधित्व प्राप्त रहे और वह निष्पक्ष भावस क्षमता व बुगटनापूवक किमीका राजा-नाराजाका परवाह किय बिना अपना काम कर सक । अुमक अधिकार कत्रकी क्या मर्यादा होगी और अुमक आल्गाका पालन करानक लिअ कौनसा तत्र काम करेगा ? और वह कौनमा तरीका हागा, जिमसे समुची समिति या अुमके व्यक्तिगत सत्स्य अपनी भूमखोरी, अक्षमता अयवा दूसरी अयोग्यताके कारण हटाय जा सकेंग ?

अु० — ग्राम-स्वराज्यकी भरी बल्तना यह है कि वह अक असा पूण प्रजातत्र होगा जो अपनी अहम जरूरताक लिअ अपन पडामिया पर भी निभग नहीं करेगा और फिर नो बट्टरी दूसरी जरूरताके लिअ — जिममें दूसराका मह्याग अनिबाध होगा — व परस्पर सहयागम काम लेगा । अिम तरह हरअक गावका पहला काम यह हागा कि वह अपना जरूरतका तमाम अनाज और कपक लिअ पूरा कपाम खु पदा कर ल । अुमक पास जितनी फाजिअ जमान हाना चाहिये, जिममें डोर चर सरे और गावके बटा व बचके लिअ मन-बन्लावक साधन और खेल्कूक मगान बगराना बन्नेवमन हो सक । अिसक वा भा जमीन बचे ता अुममें वह असी अुपयोगी फसल बायगा जिन्हें बचकर वह आशिय गम अटा सक या व गाजा तम्बाक अपाम बगगकी खतान बचगा । हरअक गावमें गावकी अपना अेक नाटकगाला, पाटगाला और गभा भवन रहेगा । पानीके लिअ अुमका अपना जिल्लजाम हागा — बाटरककम हाग — जितना गावक सर्भी लागाको गुद्ध पानी मिला करेगा । कुआ और नालारा पर गावका पूरा नियत्रण रखकर यह काम किमा जा सकता है । बुनियाती नालीमके आगिरी दरज तक गिसा सबक लिअ लाजिमी हागा । जना तत्र हो सकगा गावके सार काम मह्यागक आधार पर किय जायगे । जान-पान और त्रमाणत अस्पृश्यताद जस भग आज हमार समाजमें पाये जान है वग अिम ग्राम-गमाजमें विलबुल न रहेंग । सजाग्रह और अमह्यागक

गास्त्रवे साथ अहिंसाकी सत्ता ही ग्रामीण गमाजका शासन-बल हागी। गावकी रक्षाक लिअ ग्राम-सन्तिकोका अक असा दल रहगा जिस लाजिमी तौर पर वारी-वारीसे गावके चौकी-पहरेका काम करना होगा। असके लिअ गावमें अस ठोगाका रजिस्टर रखा जायगा। गावका शासन चलानके लिअ हर सा- गावके पाच जाग्मियावरी अक पचायत चुनी जायगी। असके लिअ नियमानुमार अक खास निर्धारित योग्यतावाले गावके वालिग स्त्री-पुरुषाको अधिकार हागा कि वे अपन पच चन च। अिन पचायताको सब प्रकारकी आवश्यक सत्ता और अधिकार रह्य। चूकि अिन ग्राम-स्वराज्यमें आजक प्रचलित जयोंमें सजा या दडका कोअी रिवाज नहीं रहेगा अिनलिअ यह पचायत अपन जेक सालक कायकालमें स्वम ही घारासभा गायसभा और कारोबाग सभाका सारा काम सयक्त रूपस करेगी। आज भी अगर काअी गाव चाह ता अपन यहां अस तरहका प्रजातंत्र कायम कर सकता है। असक जिस काममें मौजूदा सरकार भी ज्यादा दस्तदाजी नहीं करेगी। क्योकि असका गावस जो भी कारगर सबध है वह सिफ मालगजारी वसूल करन तक ही सीमित है। यहां मन अस बातका विचार नहीं किया है कि जिस तरहके गावका अपन पास पन्सके गावाके साथ या केनीय सरकारके साथ अगर बसी कोअा सरकार हुअी तो क्या सम्बन्ध रहेगा। मरा हेतु तो ग्राम शासनकी अक रूपरखा पग करनका हां है। अस ग्राम शासनमें यकितगत स्वतंत्रता पर आधार रखनवाग सपूण प्रजातंत्र काम करेगा। यकित हा अपनी अस सरकारका निर्माता भी हागा। असकी सरकार और वह दोनो अहिंसाक नियमके बग हाकर चल्य। अपन गावके साथ वह सारी दुनियाकी शक्तिका मुकाबला कर सकेगा क्योकि हरअक ष्ट्रातीके जीवनका सबसे बडा नियम यह हागा कि वह अपनी और अपन गावकी अिज्जतकी रक्षाक लिअ मर मिट।

अिन पकितयाको लिखते हुआ मरे मनमें जा मवाल अठ रहा है वही सवाल सभव है कि पाठक भी भुज्ज पूछें। सवाल यह है कि अपनी जिस तसवीरक अनसार म सेवाग्रामको असा ही रूप क्या नहा द पाया हू? मरा जवाब यह है कि म कोणिग कर रहा हू। म सपन्ताके धुधे-स चिह्न दल रहा हू अकिन म प्रत्यक्षम कुछ भी नहा दिख सकता। किन्तु जो चित्र यहां अुपस्थित निया गया है अपन-आपमें असभव जसी कोअा चीज असमें नहीं है। अस गावका तयार करनमें अक आत्मीकी पूगी जिन्दगी भी सतम हो सकती है। सचे प्रजातंत्रवा और ग्राम-जीवनका कोअी भी प्रमी अक गावका ष्ट्रक बठ सकता है और असाका अपनी सारी दुनिया मानकर असके काममें भागल रह सकता है। निश्चय ही अस अिमका अच्छा फल मिग्गा। वह गावमें बठन ही अक माय गावक भगा कतवय चौकीदार बघ और

गिरफ्तार का काम शुरू कर देगा। अगर गांवका बांधा जल्दमा जुमक पाम न फलक ता भी क मलापक साथ अपन मफाआ और कतात्रीक काममें जुटा रहगा।

हरिजनसंवाद २-८-१२ पृ० २४-८४

९

## हिंदू सचमुच कैसे आजाद होगा ?

[नाचक दाना अद्वरण हिन्दू स्वराय न लिय गय ह। पाठकक श्रिम प्रश्न पर कि मन्साक (गांधीजी) हिन्दूमानका आजाद करनक लिअ क्या मुयात ह यह निम्नलिखित बानालाप मम्पाक और पाठकक बाव हुआ था।]

१

पाठक मुधारक वार्में आपक विचार म ममझ गया। आपन जो वहा अम पर मुय ध्यान दना हागा। तुरंत मव मजूर कर लिया जाय जमा ता आप नहा मानत हाग जमा आगा भी नहा रखत हाग। आपक अम विचारके मताबिक जाय हिन्दूक जागा हानका क्या अपाय बतायेंग ?

मपाक मर विचार सब लाग तुरंत मानें जमा म आगा नहा रखता। मरा फत्र श्रिनता हा है कि आपक जम जो जाग मर विचार जानना चाहत ह अनक मामन म अपन विचार रख दू। व विचार जह पमक आपेंग या नहा आपेंग यत् ता समय बातन पर हा मानू म हागा।

हिन्दूका आजादक अुपायाका हम विचार कर सक। फिर भा हमन दूमर रूपमें आ पर विचार किया। जब हम अन पर अनक स्वरूपमें विचार कर।

जिम कारणम रागा रामार हुआ हा व कारण अगर दूर कर लिया जाय ता रागा अच्छा हा जायगा, यह जग-मगदूर बात है। बिया तगह जिम कारणम हिन्दू गुलाम बना बहु कारण अगर दूर कर लिया जाय ता वह सधनम मुक्त हा जायगा।

पाक आगा माननाक मताबिक हिन्दूका मुधार (मन्थना) अगर मबम अच्छा है ता फिर व गगम बना यता ?

मपाक मुधार ता मत बना वमा हा है जकिन दरनमें आया है कि मव मुधार पर आपने आया करता ह। जो मुधार अच्छा है वह

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

आखिरकार आफतको दूर कर देता है। हिंदक बालकामें वाजी न काजी कमी थी अिसलिअ वह मुघार आफनासे घिर गया। किन अिस घेरेमें स छटनकी असमें ताकत है यह असका गौरव दिसाता है।

जोर फिर सारा हिदुस्तान असमें (गुलामीमें) घिरा हुआ नहीं है। जिन्हान पश्चिमकी गिष्ठा पाजी है और जा असक पागमें फस गय ह व ही गलामीम घिरे हुआ ह। हम जगतका अपनी दमडीक मापस नापते ह। अगर हम गलाम ह ता जगतको भी गुलाम मान लेते ह। हम कगाउ दगामें ह अिसलिअ मान तेते ह कि सारा हिदुस्तान अमी दगामें है। दरअसल असा कुछ नहीं है। फिर भी हमारी गुलामी सारे देगकी गुलामी है असा मानना ठीक है। केकिन अपरकी बात हम घ्यानमें रखें तो समझ सर्वेग कि हमारी अपना गुलामी मिट जाय तो हिदुस्तानकी गलामी मिट गजी मान लेना चाहिये। अिसमें अब आपको स्वराज्यकी व्याख्या भी मिल जाती है। हम अपन अपूर राज कर वही स्वराय है और वह स्वराय हमारी हयलीमें है।

अिस स्वराज्यको आप सपन जसा न मानें। मनसे मानकर बठ रहनका यह स्वराय नहीं है। यह तो असा स्वराय है कि आपन अगर असका स्वा चख लिया हो तो दूसराको असका स्वा चखानके लिअ आप जिन्दगी भर बोगिंग करेग। लेकिन मुख्य बात तो हर गस्मके स्वराय भोगनकी है। डूबता आदमी दूसरेको नहीं तारेगा लेकिन तरता आदमी दूसरेको तारेगा। हम खुद गुलाम होग और दूसरोको आजान करनकी बात करेग तो वह बननवाली नहीं है।

केकिन अितना काफी नहा है। हमें और भी आग सोचना होगा। अब आपकी समझमें अितना ता जाया होगा कि अग्रजाको देगसे निवानका मक्सा सामन रखनकी जरूरत नहीं है। अगर अग्रज हिन्दी हाकर रहे ता हम अनका समावेग यहा कर सकते ह। अग्रज अगर अपन सुमार (सम्पता) के साथ रहना चाह तो उनके लिअ हिदुस्तानमें जगह नहीं है। असी हालत पना करना हमारे हायमें है।

पाठक अग्रज हिन्दी बनें यह आपकी बात नामुमकिन है। सपाक हमारा असा बहना यह कहनके बराबर है कि अग्रज मनुष्य नहा ह। व हमार जसे बनें या न बनें अिसकी हमें परवाह भी नग है। हम अपना घर साफ कर। फिर रहन लायक योग ही अुममें रह्य दूमरे अपन आप च जायेग। असा अनभव ता हरअक आदमीको हुआ हागा।

पाठक असा हानकी बात अितिहासमें तो नहीं देखी।



सपादक जा चीज अतिहाममें नहीं देखी वह नहीं होगी असा माननमें ता हमारी ही कमी (न्यूनता) है। जा बात हमारी अकलमें आ सक अस आगिर हमें आजमाना तो चाहिये ही।

हर दगाकी हालत अकसा नहीं हानी। हिन्दुस्तानकी हालत विचित्र है। हिन्दुस्तानका बस असापारण है। जिसलिज दूसर अतिहाससे हमारा कम सबध है। मन आपका बताया कि जब और मुधार (सम्मतार्ये) मिट्टीमें मिल गये तब हिन्दक मुधारका आच नहीं आयी है।

पाठक मुस य सब बातें ठीक नहीं लगता। हमें लडकर अग्रजाको निनालना ही होगा जिसमें काशी तक नहीं। जब तक न हमारे मुल्कमें ट तब तक हमें चन नहा पड सकता। पराधीन सपनहु सुख नाही असा लवनमें आता है। अग्रज यहा ह जिसलिज हम कमजार हात जा रह ह। हमारा तज चरा गया है और हमारा तग घबरावसे दीपत ह। य हमारा तग लिज यम (काल) जम ह। अमु यमका हमें विन्ती भी प्रमत्नस नमाना ही हागा।

सपादक आप अपन आवेगमें मरा सारा बहता भूल गय ह। अग्रजाको यग लनवाल हम ह और व हमारी बगौलत यहा रहते ह। आप यह कम भल जाने ह कि हमन बुनका मुधार अपनाया है जिसलिज व यहा रह सकत ह? आप बुनस जा नफरत करते ह वह नफरत आपका बुनके मुधारस करनी चाहिये। फिर भी यह मान ल कि हम लडकर बुह निवातना चाहते ह। ता यह कम हा सकगा?

पाठक जम अिस्तान किया वस। मजिनी और गरीवाल्डीन जा किया वह ता हम भी कर मनन ह। य महावीर थ जिस बातस क्या आप अिनकार कर सकेंग?

हिय स्वराय प्र० १४ पृ० ४८-५०

२

सपादक आपन अिटलीका अुत्तरण ठीक लिया। मजिनी महात्मा था। गरीवाल्डी बडा यादा था। वे दाता पूजनाय थ। बुनस हम बहुत नीय सकत ह। फिर भी अिटलीकी दगा और हिन्दुस्तानका दगामें करक है।

पहल ता मजिनी और गरीवाल्डीक बीचका भद जानन लायक है। मजिनीक अरमान अलग थे। मजिनी जमा साचता था वसा अिटलीमें नहीं हुआ। मजिनीन मनुष्य-जानिक फरक बारमें लिखत हूज यह बताया है कि हरअकका स्वराय भागना चाहिये। यह बात ता अुमके लिज सपन जमा

रही। गरीबालदी और मजिनीके बीच मतभेद हा गया था यह हमें याद रखना चाहिये। अिसके सिवा गरीबालदीन हर जिगलियनक हायमें हथियार दिय और हर जिगलियनन हथियार लिय।

अिटली और आस्ट्रियाके बीच सुधार (सम्यता) का भन् नहीं था। व तो चचरे भाभी मान जायग। जसका तमा वाणी बात अिटलीकी थी। अिटलीको परदेगी (आस्ट्रियाके) जअस छडानवा माह गरीबालदीका था। अिसक लिअ असन कावूरके मारफत जो साजिग की वे असकी गूर ताको बट्टा लगानवाली ह।

और जतमें नतीजा क्या निकला ? अिटलीम अिटालियन राज करते ह अिसलिअ अिटलीकी प्रजा सुखी है असा अगर आप मानते हा तो म आपसे कहूंगा कि आप अधरेमें भटकते ह। मजिनीन साफ साफ बताया है कि अिटली आजाद नहीं हुआ है। विक्टर अिमेयअलन अिटलीका अय अय किया मजिनीन दूसरा। अिमेयअल कावूर और गरीबालदीके विचारस अिटलीका अय था अिमेयअल या अिटलीका राजा और असके हुजरा। मजिनीके विचारस अिटलीका अय था अिटलीके लाग — जुसके किसान। अिमेयअल बगरा तो अन्के (प्रजाके) नौकर थ। मजिनीका अिटली अय भी गुलाम है। दो राजाआके बीच शतरजकी बाजी लगी थी अिटलीकी प्रजा ता सिफ प्यादा थी और है। जिटलीके मजदूर अब भी दुखी ह। अिटलीके मजदूरका दाद फरियाद नहीं सुनी जाती अिसलिअ वे लोग खन करत ह विरोध करते ह सिर फोन्ते ह और वहा बलवा होनका डर आज भी बना हुआ है। आस्ट्रियाके जानसे अिटलीको क्या लाभ हुआ ? जिन मुधारोंके लिअ जग मचा व सुधार हुआ नहीं प्रजाकी हाजत सुधरी नहीं।

हिंदुस्तानकी असी दंगा करनका तो आपका अिरादा नहीं ही होगा। म जानता हू कि आपका विचार हिंदुस्तानक करोडा उगाको सुखी करनका होगा यह नहा हांगा कि जाप या म राजसत्ता ले ल। अगर असा है तो हमें अब ही विचार करना चाहिये। वह यह कि प्रजा स्वतंत्र कस हा। आप कबूल करग कि कुछ देगी रियासतामें प्रजा कुचली जाता है। बहाके गानक नीचतासे लोगको कुचलते ह। जनका जल्म अग्रजाके जल्मक ही ज्यादा है। असा जल्म अगर आप हिंदुस्तानमें चाहते हा तो हमारी पटरी कभी नहीं बठगी।

मरा स्वप्नेगभिमान मुअ यह नहा सिखाता कि देगी राजाआक मात हत जिस तरह प्रजा कुचली जाती है असी तरह अस कुचलन दिया जाय। मुअमें बल हांगा ता म देगी राजाआके जल्मक खिलाफ और अग्रजी जल्मक खिलाफ जूझूगा।

स्वयंभूभिमानका अय म दगाका हिन समझता हूँ। अगर देगका हित अग्रजकि हाया हाता हा तो म आज अग्रजाका चुक्कर नमस्कार करुगा। अगर कात्री अग्रज कह कि दगाका आजाव करना चाहिय जुल्मक विलाफ हाता चाहिय और लोगाकी सेवा करनी चाहिय तो अुस अग्रजको म हिंदी मानकर अुसका स्वागत करुगा।

फिर अिटगाकी तरह हिल्की हथियार मित्रें तव वह लड सवता है पर अस महाभारत (बहुत बड) कामका तो मालूम होता है आपन विचार ही नही किया है। अग्रज गोला-बाल्लसे पूरी तरह लस ह असस कुछ डर नही लगता। लेकिन असा ता दीवता है कि अुनक हथियारसि अुन्हीक खिलाफ लडना हा ता हिल्को हथियारस करना ही हागा। अगर असा हो मक्ता हो तो असमें कितन साल लगेंगे ? और तमाम हिल्कियाका हथियारबद करना ता हिल्का यूरोप-सा बनान जसा हागा। असा अगर हुआ ता आज यूरोपके जा बहाल ह वसे ही हिंदके भी हाग। थोडमें हिल्का यूरोपका सुधार अपनाता हागा। असा ही हानवाला हा ता अच्छा बात यह हागी कि जो अग्रज अुस सुधारमें कुशल ह अहीका हम यहां रहने दें। अुनस थोडा-बहुत झगडकर हम कुछ हक पायेंगे कुछ नही पायेंगे और आपन तिन गुजाराग।

अेकिन बात ता यह है कि हिन्दकी प्रजा कभी हथियार नही बुठापगी न बुठाय यह ठीक ही है।

पाठक आप ता बहुत आग बड गय। मक्के हथियारबद होनकी जरूरत नही। हम पहले ता कुछ सून करके आतक फलायेंगे। फिर जा घाड लाग हथियारस तयार हाग व सुल्मसुल्म लडेंगे। अुनमें पहले तो वाम पचीग लाग हिल्की मरग सहा। लकिन आगिर हम देगको अग्रजामि जीत लग। हम गुरीला (गकुआ जमी) लडात्री लडकर अग्रजाका हरा देंग। मयाक आपका मया हिल्की पवित्र भूमिका राक्षसा बनानका लगता है। सून करके हिल्की छुडायेंगे असा विचार करत हुआ आपका प्राग क्या नही होता ? सून ता हमें अपना करना चाहिय। क्याकि हम नाम बन गय ह अिगलिअ हम सूनका विचार करत ह। असा करके आप किसका आजाव करग ? हिल्की प्रजा असा कभी नही चाहता। हम जम लाग ही जिन्हान अयम सुधाररूपी भाग पी है नामें असा विचार करत हें। सून करके जा गग राग करग व प्रजाका सुधी नही बना सकय। धीगरान जो सून किया जा वून हिन्दुस्तानमें हून ह अुनम दगाका

१ पजावा युवक मन्नागल धागरान जुलाई १९०९ में लदनमें बनल मर बनन बाअिनीको गोत्रका निगाना बनाया था। अम फामीकी राजा मिली था।

फायदा हुआ है असा अगर बोझी मानता हो तो बट बड़ी भूल करता है। धीगराको म देगाभिमानी मानता हूँ लेकिन उसका वेगप्रम पागल था। उसन अपन शरीरका बलिदान गलत तरीकेसे दिया। उसस अतमें तो दगा नवसान ही होनवाला है।

पाठक लेकिन आपको अितना तो बनूल करना ही होगा कि अप्रज असि खूनस डर गय ह और लॉड मॉल्लेन जा कुछ दिया है वह अस डरस ही दिया है।

सपादक अप्रज डरपोक प्रजा हँ और बहादुर भी हँ। गोला-बारूदका असर अन पर नुरत होता है यह म मानता हूँ। सभव है लाड मॉल्लेन जो दिया वह डरसे दिया हों। लेकिन डरसे मिली हुअी चीज जब तक डर बना रहता है तभी तक टिक सक्ती है।

हिन्द स्वराज्य प्रक १५ पृ ५१-५४

## १०

## हिंसा या बुद्योगीकरणसे स्वराज्य प्राप्त नहीं होगा

[गाधीजी द्वारा रस्किनके अटु दिस लास्ट के आचार पर त्रिवित सर्वोत्प \* के अतिम प्रकरण साराग स।]

रस्किनन अपन वषजा—अप्रजो—के लिअ जो लिखा वह अगर अप्रजाको अक दरजा लागू होता हा ता हिंदियाका हजार दरजा लागू होता है। हिन्दुस्तानमें नय विचार फउ रहे ह। जाजकउके पच्छिमी निशा पाय हूअ जवानामें जोग आया है वह ता ठीक है। लेकिन जोगका अगर अच्छा भुपयाग किया जाय तो अच्छा परिणाम आता है और गलत जपयोग किया जाय तो बुरा परिणाम ही आनवाला है। स्वराज्य पाना चाहिय असी अक ओरसे आवाज अठती है। विलायतकी तरह कारखान खोलकर शटपट पसा जमा करना चाहिय असी आवाज दूसरी ओरसे अठती है।

स्वराज्यका अथ हम गायद ही समजत हाग। नातालमें स्वराज्य है। फिर भी हम कहना चाहते हँ कि अगर नातालके जसा हम करना चाहत हा ता वह स्वराज्य नरक रायके बराबर हागा। वे (गोरे) काफिरा'का बुचलत ह हिन्दियाका मिटाते ह। स्वायमें अथ होकर स्वाय राय भोगत

\* नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद-१४ द्वारा प्रकाशित।  
१ अकीवाने आन्विसी हवगी।

है। अगर काफिर और हिंदी नानालमें से बल जायें तो वे आपसमें लड़कर खतम हो जायेंगे।

ता क्या ट्रांसवालके जसा स्वराज्य हम लोग ? जनरल स्मट्स बुसके अगुआश्रमों से अक है। वे अपन लिखित या जवानी दिमें हुअे बचन निभात नहीं है। कहते ह कुठ करत हैं कुछ। अग्रज बुनसे परेगान हा गये ह। पसा बवानेके बहान अग्रज सिपायियाकी राजा छीन ला जाती है और बुनका जगह बचाको रखते ह। हम नहीं मानते कि अिममें से अतमें डब भा सुखी हाग। जिनकी निगाह स्वाय पर ही है व परायी प्रजाका लूकर अपनी प्रजाको लूनेके लिअे भा आसानसे तयार हा जायेंगे।

दुनियाके चारा आर नजर डालनेम हम देख सनेग कि स्वराज्यके नामसे पहचाना जानेवाला राय प्रजाकी खुल्लाता या मुक्त लिअे काफी ननी है। अर आसान मिमाल लेनेमे यह बात झट समझमें आ जायगी। लूराकी टाकामें अगर स्वराय हो तो बुसका क्या परिणाम आयगा यह मय समझ सकते ह। बुन पर ता जो लुटरे न हा बुन्हीका अगर काबू हो ता व अतमें सुखी हागे। अमरीका फ्राम जिल्लड य सब बड राज्य ह। किन व मचमुच मुसा ह असा माननेका कोअी कारण नहीं है।

स्वराज्य का मन्ना अय है अपनका काबूमें रखना जानना। असा ता बह आभी कर सक्ता है जो रा नीतिका पालन करता है विसीको ठगता गही है मत्यका छाडता नहीं है अपने मा-बाप अपनी पत्नी अपन बच्चे अपने नौकर अपने पदोमी सबक प्रति अपना फज अदा करता है। असा आदमी किमा भी देगमें अपना स्वराज्य भागता है। जिस प्रजामें अस बडतमे लोग हा बहा सहज रूपमें ही स्वराय है।

अर प्रजा दूसरी पर राय करे यह आम तौर पर गलत है। अग्रज हम पर राय करत ह यह विपरीत बात है लकिन अगर अग्रज हिंदुस्तान छाड जायें तो हिंदियान कुछ बचाया असा माननका कारण नहीं है।

व (मनु) राय करत ह अिमका कारण हम ही ह वह कारण है हमारा आपना बमेल—हमारे घरकी फू हमारी अनीति और हमारा अज्ञान। य तीन घाजें अगर दूर हा जायें तो अब पता भी हिलाय बिना अग्रज हिंदुस्तान छाडकर बल जायेंगे, अित्रना ही नहीं हम मन्ना स्वराय भोगने लयेंगे।

'बमगाना' छाडनेमें बहुताका मजा आता है। यह निर अज्ञान और नागमतीका निगानी है। अगर सब अग्रजाका माग डालना मुमकिन हा ता आ मारनेवाले ह व ही हिंदुस्तानक मानिक बन जायेंगे। अिसलिअे हिंदुस्तान तो अनाय सिपका ही रहगा। अग्रजा पर बराये जानवाल बमगान अग्रजाके

चक्र जान पर हिन्दिमा पर गिरण । फामके प्रजातयक प्रसिडेटका मारनवाला फेंच ही था । जमरीका प्रनिडेंट क्रीयण्डको मारनवाला अमेरिखन था । अिमलिअ जलीमें बिना सोचे-नामय पश्चिमकी प्रजाकी अधी नक न करना ही हमारे अिअ ठीक है ।

जसे पापकमसे — अग्नेजाको मारकर — सच्चा स्वराय्य नहीं मिग्गा वस हिन्दुस्तानमें बडे कारखान खोलनस भी नहीं मिग्गा । साना चाग जमा हानस कुछ स्वराय्य नहा मिल जायगा । यह बात रस्किनन अउठा तरह साबित कर दा है । याद रखना चाहिय कि पश्चिमी सम्मताका अभी सौ ही साल हुआ ह । सवमुच तो पचास ही साल मानन चाहिय । अितन समयमें तो पश्चिमकी प्रजा बगमकर सी भागूम हाना है । हमारी पाथना है कि जमा यूरोपका दशा है वसा हिन्दुस्तानका कभा न हो । यूरोपका प्रजायें अक दूसरेकी ताबमें बडी ह । मान अपन गाला-शाहकी तयारीस ही सब चुप बठ ह । जब किसी समय जबरस्त आग नडकेगी तब यूरोप नरक नजर आयेगा । यूरोपका हरअक राय काउ आत्मोका अपना भय्य समज लेना है । जहा सिफ पसका ही ताम हो वहा दूसरा कुछ हा ही नहीं सकता । अुह एक भी मुल्क अगर नजर आय ता जसे कौअ मासक टुकड पर टट पडते ह वसे अुस मुल्क पर वे टूट पते ह । यह जुनके कारखानोक कारण हाना है असा माननक कुछ कारण ह ।

अनमें हिन्दुस्तानको स्वराय्य मिगे जसी सब हिन्दिमाकी पुकार ह और वह सही है । अेकिन स्वराय्य नीतिके रास्ते पर पाना है । वह सच्चा स्वराज्य हाना चाहिय । और वह नाग करनवाले तरीकोसे या बड कारखानाम नहीं मिलेगा । अद्योग चाहिय अेकिन सही रास्तेमे चाहिय । हिन्दुस्तानकी भूमि अक समय सुवण भूमि मानी जानी थी वपाकि हिन्दी उोग सुवण-रूपस थ । आज भूमि तो वहा है लकिन ताय बदर गय ह । अिमलिअ वह भूमि बीरान-सी हो गयी है । असको फिरसे सुवण भमि बनानक अिअ हम सत् सत्यणास सुवण बनना हागा । अुसका पारम (जिस हूनसे गेहा साना बन जाता है वह) तो दो अग्यरामें रहा है और वह है सत्य । जिसअिअ अगर हरअक हिन्दी सत्य का ही आग्रह रखगा तो हिन्दुस्तानको घर बठ स्वराय्य मिलगा ।

## स्वराज्य पर कुछ विचार

[ गांधीजी का आजादी की लड़ाई में हिमांक जपयाग का विरोध किया था। निम्नलिखित बुद्धरण हमें बतगत है कि लड़ाई के जरिये प्राप्त हानि का स्वराज्य का बुद्धान क्या विरोध किया था ]

१ यदि समस्या का समाधान तलवार से बल द्वारा है तो वह मित्र या गुरमा की तलवार से नहीं वह तो अक्रिय भाग्य तलवार से होना चाहिए। यदि पाप का शासन चलना है तो भारत के लोग गंगा का पदकला साधनी चाहिये वना अहं हमारा अक्रिय जमी की गर्ण में रहना होगा जो तलवार से शासन करता है चाहे वह परलगा हो या स्वशा। लाग लाग मूक पशुओं की तरह रहना है। असहयोग आन्दोलन जनता में आत्म-गौरव और गति का भाव जाग्रत करने का प्रयत्न है। यह तभी हो सकता है जो अहं यह महशुस करा लिया जाय कि अहं पाप का दरना जगत् नही है। यम अक्रिया १-१२-२० पृ० ३

२ म कहता है कि प्रातिवारी तरीका भारत में मफ्त नही हो सकता। यदि गल्लमत्तला लड़ाई समझ होना तो म शाप मानेता कि हम हिमांक के पक्ष पर चले जिग पर दूसरे दंग च ह और कम कम अनु गुणा का हो विचार कर जिनका अल्प रणभय में लियायी गयी वीरताम होता है। पर युद्धवाक्य द्वारा भारत के स्वराज्य की प्राप्ति का तो म जहा तक नार पढुचना है वहा तक किगी भी समय में अवभव माता है। युद्ध के पारा हमें चाह अग्रजी शासन का जगह दूसरा शासन मित्र जाय पर जिग जनता की दृष्टि से शासन करा जा मक जमा शासन नही मिल सकता। स्वराज्य की तापयाता बना कतिन बना कच्छत्र चनाभी है। बुधन मानी है त्रैतिवारा तका करनक ही अल्पम त्रैता में प्रका करना। दूसरे शासन में अिमका अर्थ है राष्ट्रीय शिक्षा — जनता का शिक्षा। अिमका अर्थ है जनता के अन्तर राष्ट्रीय चेतन और शक्ति अल्पन करना। वह काशी जादूगक आमका तरह अचानक नया रूप पडगा। वह ता कच्छत्रा तरह प्राय ब-मालूम बडगा। गृनी प्राति वभी यह चमत्कार नही लिया सकता।

हिंदी नवजावन २१-१-२१ पृ० २२७

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

चूँकि जान पर हिन्दिया पर गिरेग। फ्रांसके प्रजातन्त्रक प्रसिद्धेकाल मारनवाला फ्रांस ही था। अमरीकाके प्रसिद्धेकाल मारनवाला अमेरिकन था। अिसलिय जलनीमें बिना सोचे गमस पश्चिमका प्रजाकी अधी नवल न करना ही हमारे लिअ ठीक है।

जसे पापकमसे — अफ्रेजाको मारकर — सच्चा स्वराज्य नहीं मिल्या वसे हिन्दुस्तानमें बड कारखान खोलनसे भी नहा मिन्गेगा। साना चानी जमा होनसे कुछ स्वराय नहीं मिल जायगा। यह बात रस्किन अछा तरह साबित कर दी है। या रस्किन चाहिय कि पश्चिमी सभ्यताको अभी सौ ही साल हुअ ह। सबमुच तो पचास हा साल मानन चाहिय। अितन समयमें तो पश्चिमकी प्रजा वणनकर सी मालूम हाती है। हमारी प्राथना है कि जनी यूरोपकी दगा है वसी हिन्दुस्तानकी कमी न हो। यूरोपकी प्रजायें अक दूसरेकी ताकमें बठी ह। मात्र अपन गाला-वास्दकी तयारीसे ही सब चुप बठ ह। जब किसी समय जबरस्त आय भडकेगी तब यूरोप नरक नजर आयगा। यूरोपका हरअक राय काल आत्मिको अपना भदय समझ लेता है। जहा सिफ पसेवा ही काम हो वहा दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता। कुट्ट अक भी मुल्क अगर नजर आय ता जसे कौअ मासके टकड पर टट पडते ह वसे अुस मुल्क पर वे टूट पन्ने ह। यह अन्के कारखानोक कारण होता है असा माननके कुछ कारण ह।

अतमें हिन्दुस्तानको स्वराय मिउ असी सब हिन्दियाकी पुकार है और वह सही है। त्रेकिन स्वराज्य नीतिके रास्ते पर पाना है। वह सच्चा स्वराय होना चाहिय। और वह नाग करनवाले तरीकासे या बड कारखानास नहीं मिलेगा। अयोग चाहिय त्रेकिन सही रास्तेसे चाहिय। हिन्दुस्तानकी भूमि अक समय सुवण भूमि मानी जानी थी कपोकि हिंदी जोग सुवण रूपसे थ। आज भूमि तो बही है त्रेकिन लाग वदल गय ह। अिसलिय वह भूमि बीरान-सी हो गयी है। असको फिरसे सुवण भूमि बनानक लिअ हमें सत् सद्गणासे सुवण बनना होगा। असका पारस (जिसे छूनसे लोहा साना बन जाता है वह) तो दो अशरामें रहा है और वह है सत्य। अिसलिय अगर हरअक हिन्दी सत्य का ही आग्रह रखगा ता हिन्दुस्तानका घर बठ स्वराय मिन्गा।



## स्वराज्य पर कुछ विचार

[ गांधीजी का आजादी की लड़ाई हीम हिंसा का अपयोग का विरोध किया था । निम्नलिखित उद्धरण हमें बतलाते हैं कि लड़ाई हीम जरूर प्राप्त होगी ]

१ यदि समस्या का समाधान तलवार से बल द्वारा है तो वह मित्रता या गुरबाकी तलवार से नहीं वह तो अशुभ भारतीय तलवार से होना चाहिए । यदि पगबलवा शासन चलना हो तो भारत का गंगा गंगा का मुद्दकला सीखना चाहिए वरना अह हमें गंगा के लिये अशुभकी गरगमें रहना होगा जो तलवार से शासन करता है चाहे वह परलौकी हो या स्वदेशी । लाला लाला मूक पगआकी तरह रहने वाले हैं । असहयोग आन्दोलन जनताम आम-भारत और शक्ति का भान प्राप्त करने का प्रयत्न है । यह तभी हो सकता है जब अह यह महसूस करा दिया जाय कि अह पगबलम डरने का जरूरत नहीं है ।

मास अक्टूबर १-१०-२० पृ० ३

२ मैं कहता हूँ कि आतिवारी तरीका भारत में सफल नहीं हो सकता । यदि मुन्सिफल्ला लड़ाई सभव होता तो मैं गामद मानता कि हम हिंसा से अशुभ पर चला जिस पर दूसरे देग चला हूँ तो कम से कम अशुभ गुणावा ही विकास कर जिनका अदय रणभेद में टिकायी गयी वारताम हाता है । पर मुद्दका के द्वारा भारत का स्वराज्य का प्राप्ति को तो मैं जल्द तक नार पढ़वता है वहा तक कि गंगा भी समय में अशुभव मानता हूँ । मुद्दके गारा हमें चाहे अशुभकी गामनकी जगत् दूसरा गामन मिल जाय पर जिन जनता की दृष्टि से स्वागतन कहा जा सके जना स्वगामन नहा मिल गवता । स्वराज्य की नीपयात्रा वही कश्चि वगैरे अशुभ चलायी है । अशुभ माना है अशुभकी गवा करने ही अशुभ देहता में प्रवृत्त करता । दूसरे शब्दों में अशुभ अथ है राष्ट्रीय गिता, — जनता की गिता । अशुभ अथ है जनता के अशुभ राष्ट्रीय चतय जीर गिता अशुभ करता । यह शशी जादूगरक आमता तग अचानक नहा गिर पडगा । यह तो वद-वृत्ता का तरह शाय व भातूम बडगा । गुनी अशुभ वभी यह अशुभ नहा दिया मवनी ।

हिंदी नवनीयन २१-१-२५, पृ० ३२०

[ यद्यपि गांधीजी भारतके लिए राजनीतिक सत्ताका हस्तांतरण अत्यंत आवश्यक मानते थे लेकिन वे जमे निरे हस्तान्तरणसे ही सतुष्ट नहीं होत चाहे थे। अपन स्वरायकी योजनामें वे जनताके सभी प्रकारके शोषणका अंत चाहते थे। ]

३ फिर भी मेरा मन कहता है कि जसलमें देखा जाय ता क्या यूरोप — यद्यपि यूरोपको राजनीतिक स्वराय प्राप्त है — और क्या भारत दोनोंको अक हा रोग है। बेचल राजनीतिक सत्ताके अक हायस निकर दूतरे हायमें चले जानसे मेरा महत्त्वाकांक्षाको सतोष न होगा हालाकि म भारतके राष्ट्रीय जीवनके लिए सत्ताका जिस प्रकार हस्तातरित होना परम आवश्यक मानता हू। यूरोपके रोग नि सदेह राजनीतिक सत्ता तो रखते ह पर स्वराय नहू। अंगिया और अफीकाके लोगोको वे अपन आंगिक लाभके लिए छूटते ह और बुनका पासक वग बुह प्रजासत्ताके पवित्र नाम पर छूटता है। सो यदि जडको देखें तो रोग वही दिखायी देता है जो कि भारतवपको है। अिसलिय अिलाज भी वही काम दे सक्या।

हिला नवजीवन ३-१-२५ प० २०

४ वह आम जनता है जिस स्वराय प्राप्त करना है। यह न तो धनवानाका अकमात्र काय है और न शिक्षित वर्गोका। दोनोंको अपन स्वार्थोको स्वरायका जिसे भी योजनामें विलीन कर देना चाहिये।

यग अिडिया २०-४-२१ प० १२४

५ म आपस कह सकता हू कि काप्रस लोगोके किसी खास दलकी नहीं है। वह ता सबकी है लेकिन अुसका मुख्य रम अत गरीब किसानोकी रक्षा करनेमें होना चाहिये जो हमारी जनसख्याका बहुत बडा भाग ह। अिसलिय काप्रसके वास्तवमें गरीबाका प्रतिनिधित्व करना चाहिय। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि और सब वर्गो — मध्यम वर्गो पूजीपतियो या जमानाराके हिलाकी ह अपेक्षा करेगी। काप्रसका अकमात्र लक्ष्य यह है कि भारतक अय सब वग गरीब जनताके हिलाकी रक्षा करे और अुह बनायें।

यग अिडिया १६-१-३१, प० ७९

६ अिसलिय म हमारा ध्यय आपक समझ रखूगा। यह ध्यय है बिन्नी जुअसे अगरे सपूण अर्धोंमें मुकम्मिल आजागी। और यह आजादी लाखो मुक रोगोके लिए हागा। अिसलिये प्रत्यक अमे स्वाध पर जो कि अुनके

स्वायत्त विपरीत है फिरसे विचार होना चाहिये और यदि वह मागधनक माध्य न हो तो अन्ततः हो जाना चाहिये।

यग अडिद्या १७-१-३१ पृ० २६३

[जा स्वराज्य मागधी चाहत थे वह कुछ लागाना अन्तःविचार नही हागा। अिसके विपरीत वह अमिक जनताकी स्वच्छापूण अनुमतिक व्यापक आधार पर स्थापित हागा जा जनता मताका नियमन और नियत्रण करनेका समता प्राप्त कयेगी।]

७ स्वराज्यम मरा मतानु भारतक लागाना स्वातृत्तिस हानेना गामनम है। वह स्वातृत्तिस वास्त्रिग आयातीकी बडीम वडा मख्या द्वारा सिदिक्त हाता चाहिये और अुगमें देगमें पदा हुअ या वाहरस आकर वम हुअ क सब स्वा-मुहप गामिल हान चाहिय जिन्हान गरीर-अम द्वारा राज्यकी सेवामें भाग लिया हा और अपना नाम मनगतायाकी सूचीमें लिखवानेका कष्ट बछाया हो। म यह दिख दनकी आगा रसता हू कि स्वराज्य क आत्मियाक सत्ता प्राप्त करनेस नहा आगगा परन्तु मताका दुष्पयाग हान पर सबमें अुगना मुकाबला करनेसी क्षमता अल्प हानम आगगा। दूसर गामें स्वराज्य जनमातरणका सत्ताका नियमन और नियत्रण करनेका अुनसी गक्तिका भाव करानस प्राप्त हागा।

यग अडिद्या २०-१-२५ पृ० ४०-४१

[वास्तवमें गामोजीका अतिम राजनीतिक ध्यम अराज्यताका था।]

८ स्वगामनका अर्थ है सरकारा नियत्रणम स्वतन्त्र हानकी सतत प्रयत्न फिर सरकार विना था गह राष्ट्रीय। स्वराज्य सरकार जब हास्या गल चात्र वन जायगा अगर जावनेसी हर छानी वातक नियमनर लिखे गाम अुगन मुहकी तरफ गान लगे।

यग अडिद्या ६-८-२५ पृ० २७६

९ मरी दृष्टिमें राजनीतिक सत्ता वाभा माध्य गही है परन्तु जीवनक प्रदेक विभागमें लागान लिय अपना हात सुधार सत्रनका अर्थ साधन है। राजनीतिक सत्ताका अर्थ है राष्ट्राय प्रतिनिधिया गरा राष्ट्राय अादनका नियमन करनेका गक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन जितना पूण हा जाता है कि यह स्वय आत्म नियमन पर ग ता किया प्रतिनिधित्वकी आवकता नहा रह जाता। अुग समय पानपूण अराज्यताकी स्थिति हा जानी है। अमी स्थितिम हरअक अपना राजा हाता है। वह अित बगन अपन पर गामन करता है कि अपन पदागियाक लिखे कभी वाधा नही बनता। लिखलिख आगा अवम्यामें

कोभी राजनीतिक सत्ता नहीं होती क्योंकि कोभी राज्य नहीं होता। परंतु जीवनमें आत्माकी पूरी निष्ठा कभी नहीं जाती। अिमलिअ धारान कहा है कि जा सबसे कम गायन कर रही शुद्धत सरवार है।  
 यग जिडिया २-७-२१ पृ० १६२

## मेरी कल्पनाके स्वराज्यमें राजा और रकका स्थान

१२

विन्पारमें (वम्बत्री) कायकतआकी जो समा हुआ थी जसमें यह सवाल पूछा गया था

आप कहा करत ह कि आपकी कल्पनावा स्वराज्य राजा और रक दोनाको याय दगा दोनाकी रक्षा करेगा और दानाके हिनाका ध्यान रखगा। क्या यह बात परस्पर विरोधी नहीं है? आज मजदूर और मालिक धनवान और असक नौकर ब्राह्मण और भगी अमीर और गरीब—जिन दोक बीच जहा दखिय कहा कग सघप चल रहा है। और नहा का अगता अनादि कालस चला आता माऊम हाता है। जसा लगता है कि दूसरेको दुखी बनाय बिना मनुष्य खद आप कुदरतके जिन नियमका बलन पर सुले हुआ ह। यह हवामें तलवार चलान जसा नहीं लगता?

सवाल अच्छा है और बहुतसे लोगके मनमें जठता होगा। अिस पर हम विचार करे।

अगर कभी जिस दुनियाम रामराज्य जमी कोभी चीज थी तो जसकी स्थापना जाज भा सभव हानी चाहिय। मेरा विन्वास है कि रामराज्य था। राम यानी पच पच यानी परमश्वर। पच याना गकमत। जब लोकमत बनावटी नहा हाता तब वह गद्ध हाता है। अकमत पर रचा हआ राज्य किसी जगहक जिअ रामराज्य है। जसा तत्र हम जाज भी कहीं कहीं देखत ह। कुछ जमीदार आज सादेपनमें अपनी रयतसे भा आग बन गय ह और अममें आतप्रात हो जानका वाणिज्य करत ह। यह सच नहीं है कि सब राजा लोग अपनी प्रजाका टूटन और चसनवाग ही हात ह। अपन दौरामें मन अच्छ करे दाना तरहके गग दख ह। सारे मालिक निरप्य और बठार नहीं हात। यह सच है कि गरीबके मित्र या रकक जसा बरताव करनवाल बन्तस धनवान मन नहीं दख। म यह भी

स्वीकार करता हू कि जिहे मने दबा है अतमें मुधारका गुजाशिंग न । म तिमि रागमी तत्र कहता हू अतमें भुय यह अनुभव हुआ है । तब त्रकामें अगर विभीषण ही अक अपवात् हो तो तिममें अचरज कसा ? जहा अक मला है बहा अनकका नागा तत्र रखी जा सकता है । जब अपवात् बढ जात ह तब व नियमका रूप ल लत ह । यह तो मने जो सम्भव है अतकी बात कही । अतनेसे पूछनवाल भाजीका सन्तोष नहा हा सकता ।

सम्बका अस्तित्वम तानकी काशिंग सत्याग्रह है । सत्य यानी पाय । पाया तत्रका मतलब ह सत्ययग या स्वराज्य धमराय रामराय गकराय । अम तत्रमें राजा प्रजाका रगक होता है मित्र हाता ह । जुसक जीवन जोर प्रजाके गरावस गरीब जागमीके जीवनक बीच आजका जमीन आसमानका फक नही होगा । गजाक महूठ और प्रजाकी क्षापडाक वाच अुचित साम्य हागा । दानाकी जरूरताक वाच अगर बाजी फक हागा तो सामूग ही हागा । दानाका गुड हवा और पाना मिलगा । प्रजाका जरूरी सुराक मिलेगा । राजा अपन भोजनम स छप्पन भागका त्याग करक सिफ छह भागम ही गताय मानगा । गरीब लाग अगर त्रकडा या मिट्टीक बरतनासे अपना काम चलाय तो राजा नल ताज-पातरक बरतन अिस्तेमाल करे । मान चाणीक बरतन अिस्तेमाल करनका ताम रक्कनेवाल राजा पजाको टूटनवा ही हाने चाहिये । गरावका पहनन आदनक जरूरी कपड मिलन चाहिय । राजा भू ग्याग कपड रख त्रकिन जुसके कपडा और गरीवाके कपडाके बीचका भेद जीर्णा और द्वप पदा करानवाला नही जाना चाण्प । राजाक और रक्क वाच अक ही प्रायमिक तागमें पण्ग । राजा अपनकी प्रजाका आश्रयदाता नही मानगा । अगर बह प्रजाकी सवा करेगा ता अुस प्रजा पर किया हुआ अुपकार नहा मानगा । कतव्य-पात्रनमें अुपकारको कोजी जगह नही है । प्रजाकी सवा करना राजाका धम है ।

जिम प्रकार राजाका धम प्रजाका रसक और मित्र बनकर रहनका है, अुमी प्रकार रक्का धम राजाका द्वप न करनका है । गरीबको यह जानना चाहिय कि अुमकी गरीबी बहुत ह तब असक अपन दापाके कारण ही है । गरीब अपनी हात मुधारकी काशिंग तो करे लकिन राजाम द्वप न कर अुमका नाग न चाहे । यह राजाका मुधार हा चाह । गरीब राजा बननेकी अिच्छा न रख अपनी जरूरतें पूरी करके मनुष्ट रहे । जिम तरह जिममें दोना अक-दूगरेकी मल्ल करत रहें वही मरी कल्पनाका स्वराय है ।

मरी रायमें जिम स्वरायका पानक अिअ राजा और प्रजा दोनाका शिंगामें महत्त्वका परिचयन करना जरूरी है । आज लटनवाल और लूटनवा दाना अंपरेमें भटक रह ह । व रागता मूल ग्य ह । दानामें स अककी नी

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

हालत सहन करने लायक नहीं है। लेकिन राजाशा और धनिकों के गले यह बात तबदी सुतरेगी नहीं। लेकिन अपने गले सुतर जाय ता दूसरे के गठ अपन आप सुतर जायगी अिस नीतिके मुताबिक मन रख या गरीबकी सवा पसन्द की है। हर बोधी राजा नहीं हो सकता लेकिन हर काशी सवमें तो समा सकता है। अगर गरीब अपन हक और फजोंको समझ ल तो आग हमें स्वराय मिल सकता है। यह भान सत्याग्रहके जरिये जितनी तेजीसे हो सकता है सुतनी तेजीसे दूसरे किसी तरीकेसे नहीं हो सकता। अिसका हमन पिछडे १२ महीनोमें प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया है। अिस सत्याग्रहमें जितनी गदगी घस गयी थी सुस हद तक हमारी स्वराय प्राप्तिके बाधा पडी। सत्याग्रह लोकांगशा और शोक-जागतिका सबसे बडा साधन है।

सत्याग्रहका दूसरा अय आत्मगडि है। राजवगके सामन हम सिफ आत्म गडिकी बात ही कर सकते ह। अस पर अिसका अमर पडनमें बाडा समय लगगा। गरीब वग तो हमेगा रहनुमाजीकी खोजम ही रहता है अस अपन दुखाका पान है पर सुह दूर करनवाके सुपायका नहीं। अिसलिअ जो भी सुह सुपाय बतानवाला मिल जाता है असीका अपाय वे आजमाते ह। असी हालतमें अगर कोजी सके सेवक अहे मिल जाते ह तो वे सुह छाडते नहीं और सुनका अपाय स्वीकार करत ह। अिसलिअ अक दष्टिस गरीब वग जिनासु कहा जायगा। स्वराय भी असीक मारफत मिल सकता है। वट अपनी गतिको पहचान और पहचानते हुआ भी मर्यादामें रहकर ही सुसका अपयोग करे अितना हो जाय तो मेरी कल्पनाका स्वराय आया समनिय। जब जनता असी गतिक पा लेगी तब वह विदेगी या देगा सरकार दोनाका सफलतास मकाबला कर सकेगी।

अिसलिअ कायकतआका धम सिफ शोकसेवा ही है। लोकसेवा सत्य और अहिंसाके रास्तेसे ही हो सकती है। असमें जितनी गदगी घसगी अतनी लोक प्रगति सकेगी।

जिसी बीच अगर राजवग और धनिक-वग जमानके तकाजको पहचान तो वे अपन पास रहे धन और धनापाजनकी गतिकका मालिकाना हक छोडकर सुनके रक्षक या ट्रस्टी बन जायग और चूकि रमकको भी अपनी जीविका कमानका हक है अिसलिअ व अस धनका मर्यादित और जरूरी सुपयोग ही करग। अगर वे असा नहा करग तो राजा और प्रजा तथा अमीर और गरीबके बीचका जहरीला सघप चला हा करेगा। सत्याग्रह अिस जहरको रोक सकेगा असी आगास मेरे जसे लाग अस गसका अपना सब कुछ अपन कर चके ह।

हरिजनसेवक ३०-१ - ४९ पृ ३ ८-९

## मजदूरोका गणराज्य

[ साप्ताहिक पत्र म। ]

लालदुर्तीवालाक थाडस प्रतिनिधियाका एक शिष्ट-मडल गांधाजीस मिला और बुसन बुनसे दिल सालकर लम्बी बातचात की। बुन लोगाने समझाया कि आपका कोजी शारारिक हानि पढुवानका हमारा हरगिज बिराग नही था आपकी जान और तदुहस्ती हमें बुतनी ही प्यारी है जितना और किसोको। और यक्तिगत आतकवाद हमारा घम नही है। हा, अस्यायी सधिक\* अपन विरोध पर वे अटल थ। जुनका बिवास है कि शुसस भारतवपम मजदूरा और किसानका स्वतत्र गणराज्यका अतका धय प्राप्त करनेमें कोजी सहायता नही मिल सकनी। गांधीजीन बुह जुमडते हुअे प्रमस वग, क्तिन मरे प्यारे नौजवाना बिहारमें जाकर देखा ता तुम्ह पता चलगा कि वहा मादूरा और किसानका गणराय काम कर रहा है। जहा दस वग पहल भय और गुलामी थी वहा आज साहस वीरता और अयायका बिराध नजर आ रहा है। यदि तुम पूजीका नस्तनावूद करना चाहते हो या धनवाना या पूजीपतियाको मिटा दना चाहत हो, ता अिमम तुहें कभी सफलता नही भिगी। तुम्ह करना यह चाहिय कि पूजीपतियाका मजदूराकी ताकतका प्रत्यश प्रमाण दिया दा। फिर व बुन लागति अिअे जा बुनके खातिर धार परिश्रम करत ह, सरलक बनता मजूर कर लेंग। मैं मजदूरा और किसानका अिअ अिमस अधिक कुछ नही चाहता कि बुह खान रहन और पहननेका काफी मिल जाय आर व स्वाभिमाना मनुष्याकी तरह साधारण आरामसे रह सक। यह स्थिति पना हो जानके बाद बुनमें स शुमन दिमागवाल जरूर औराकी अपना अधिक धन कमायेंग। परंतु म तुम्ह बना चुका हू कि म क्या चाहता हू। म चाहता हू कि धनवान अपन धनका गरीवाना धरोहर समर्थे या अपनकी बुारी गेवामें अिकत कर दें। क्या तुम्ह मादूम है कि मने टॉल्स्टान फामकी स्थापना की तब अपनी तमाम जायदाद छाड ले थी? रस्किनका 'अट्टिन्ति छास' पुस्तकने मुय प्रेरणा दी थी और मने अमीक डग पर अपन फामकी स्थापना की थी। अब तुम स्वीकार कराग कि त्रेक तरहम म तुम्हार बिरागता और मजदूरकि गणराज्यका मस्थापन मन्स्य' हू। और तुम किन

\* १९३१ में हुआ गांधी जिविन समन्वित।

चाजका अधिव मूल्यवान समझते हो— धनको या श्रमका? मान ला कि तुम संहाराके रेगिस्तानमें फम गय और तुम्हारे पास गान्धिया रूपया-मता है। वह तुम्हारे क्या काम आयेगा? परतु यदि तुम श्रम कर गवन हो ता तुम्ह भल रहनकी जरूरत नही होगी। तो फिर धनको श्रमसे अधिक अच्छा किस समया जाय? जहमन्नावा जाकर वहाक मजदूर-सघका आखाणे देला कि वह क्या काम कर रहा है तब तुम्ह पता चलेगा कि व अपना खुदका गणराज्य स्थापित करनकी कमी कागिग कर रहे ह।

मग अिडिया २-४-३१ पृ० ५८-५९

## १४

## समाजवादी कौन ?

समाजवाद अक सुदर गद है और जहा तक मझ मात्रम है समाज वादमें समाजके सब सदस्य बराबर हाते ह—न कोअी नीचा हाता है न कोअी अूचा। किमी "यकितके गरीरमें सिर सबस अूपर होनके कारण अूचा नही होता और न परने तल्व जमीनकी छूनके कारण नीचे होते ह। जस "यकितके गरीरके सब अग बराबर होते ह वस ही समाजरूपी गरीरके सारे अग भी बराबर होते ह। यही समाजवाद् है।

असमें राजा और प्रजा अमीर और गरीब मालिक और मजदूर सब अक स्तर पर होते ह। धमकी भापामें कहे तो समाजवादमें द्रत या भदभाव नहा होता। सबत्र अकता अतका प्रभुत्व हाता है। ससार भरके समाजको देखें तो द्रत या अनवताके सिवा कुछ नही दिखती देता। अकता या अद्रतका नाम निगान नही दिखती देता। यह आदमी अचा है वह नीचा है यह हिन्दू है वह मुसलमान है तीसरा अिसाअी है चौथा पारसी है पाचवा सिक्ख है और छठा यहूदी है। अिनमें भी बहुतसी अप जातिया ह। मरी कल्पनाकी अकता या अतवादमें सब अक हो जाते ह अकतामें समा जात ह।

अिस अवस्था तक पहुचनके अिअ हम अक-दूसरेकी तरफ दखते नही रह सकत। जब तक सारे त्रोग समाजवादी न बन जायें तब तक हम कोअी हलचल न कर अपन जीवनमें काजी परफार न करव भाषण देते रहे और बाज फ्भाकी तरह जहा गिवार मिल जाय वहा अुस पर क्षापट पडें—यह समाजवाद् नही है। समाजवाद् जसी गानदार चीज कपट्टा मारनस हमस दूर ही जानवाती है।



समाजवादा पहल समाजवादीस गुरु होता है। अगर अमा अक भी समाजवादा हा ता आप अुस पर गय वण सकत ह। पहल गूयम अुसकी तावत दम गुनी हा जायगा। अनक वाट हरअक गूयका अथ पिछली मख्यामे दम गुना हागा। परतु यदि आरभ करनवाला स्वय ही गूय हा दूसरे गूयमें काजी भी आरभ नहा कर ता कितन ही गूयान बढ तान पर ना परिणाम गूय हो हागा। गूयान लिखनमें जितना समय और कागज यच हागा वह भा यच ही जायगा।

यह समाजवादा स्फटिककी तरह शुद्ध है। असलिअ जिस सिद्ध करनके साधन भी गुद्ध हान ही चाहिय। अगुद्ध साधनमे प्राप्त हानवाला साध्य भी जाद्ध हा हाता है। असलिअ राजाका सिग बाट डालनस राजा और प्रजा बराबर नही हा जायेंग। और न मालिकका सिर बाटनम मालिक और मजदूर बराबर हो जायेंग। हम अमत्यम मत्यका प्राप्त नही कर सकते। सत्यमय आचरण द्वारा ही सत्यको प्राप्त किया जा सकता है। क्या अहिमा और सत्य दो चार्जे ह ? हरगिज नहा। अहिमा सत्यमें और सत्य अहिमामें छिपा हुआ है। असोलिअ मन कहा है कि वे अक ही सिक्के दा पहनू ह। व अक-दुमरेस अभिन्न ह। सिक्केको किसी भी तरफम पन लीजिय। कयन पत्रनमें ही फक है—अक तरफ अहिमा है दूसरी तरफ सत्य। दोनाका मूल्य अक हा है। सम्पूर्ण गुद्धताके बिना यह न्णिय स्थिति अप्राप्य है। मन या गारारकी जाद्धि गनी और आपमें असत्य और हिंसा आजी।

त्रिमोलिअ मत्यपरायण अहिमक और गुद्ध हृदय समाजवादा ही भारत और मसारमें समाजवादी समाज स्थापित कर सकग। जहा तक म जानता ह मसारमें काआ भी दग असा नहा है जा गुद्ध समाजवादी हा। अुपराकन साधनाक बिना जसे समाजका अस्तित्वमें जाना अगम्भव है।

हरिजन १५-७-४७ पृ० २३२

## सत्य और अहिंसा — समाजवादके मूल आधार

समाजवादीको सत्य और अहिंसाकी मूर्ति होना चाहिये। और जिसके लिये जीश्वरमें असकी जीती जागती श्रद्धा होनी चाहिये। सत्य और अहिंसाका यत्रकी तरह पालन करना कसौटीके वक्त काम नहीं दता। जिसलिये मन कटा है कि सत्य ही परमेश्वर है।

यह परमेश्वर चेतनामय शक्ति है। जीव भी इसी शक्तिस बनाव हुआ है। यह जीव शरीरमें रहता है मगर वह खल शरीर नहीं है। इस महान शक्तिके अस्तित्वसे जिनकार करनवाला व्यक्ति अपनमें रहनवासी अिस असूट शक्तिसे वचित रहकर अपग बनता है। बपनवारकी नाबकी तरह वह शिघर-अघर टकराता है और आखिरम कही भी पहुच बिना बरवाण हो जाता है। यह हालत हममें से बहुताका होनी है। अस लागोका समाजवाद कहा भी नहीं पहुचता। करोटा मनष्यो तक असके पहुचनकी ता बात ही दूर है।

यह सारी बात जगर सच हो ता क्या जीश्वरमें श्रद्धा रखनवाला कोजी समाजवादी नहा हागा? अगर हो तो असन प्रगति क्या नहीं की? जीश्वर भक्त तो बहुतरस हा गय। जन्धान क्या नहीं समाजवाण कायम किया? अिन दा शकाशका सचोट जवाब देना मशकिल है। फिर भी म मानता हू कि जीश्वरका माननवाण समाजवादीको असा कमी नहीं लगा हागा कि समाजवाणका आस्तिकतासे कोओ सीधा सबध है। शायद जीश्वर भक्ताको समाजवादकी जखरत ही न रही हा। जीश्वर भक्ताके मौजद रहन हुआ भी दुनियामें बढम कटा नहीं देखनमें आत? हिंदू धममें जीश्वर भक्तोके होते हुआ भी छआछत जसे महान कलकन क्या समाज पर राय नहीं किया?

जीश्वर-सत्त्व क्या है असमें कितनी शक्ति छिपी हुनी है यह हमणा खोजका विषय रहा है।

मेरा यह दावा रहा है कि अिया खानमें न सत्याग्रहकी खोज हुनी है। यह नहा कहा जा सकता कि सत्याग्रहस सबध रखनवाण सारे कायण बन गय ह। मैं यह भी नहा कहता कि अिसक सार कायण म जानता हूँ। मगर मैं अितना दृग्वास कह सनता हू कि सत्याग्रहम जा कुछ भी पान जसा है वह सब पाया जा सकता है। सत्याग्रह बढम बडा साधन

है हथियार है। मेरा रायमें समाजवादी तक पहुँचनेका जिसके सिवा दूसरा कौमी रास्ता नहीं है।

समाजवादी जरिये समाजके सारे राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक रोगको मिटाया जा सकता है।

हरिजनसंवा २०-७-४७ पृ० २०४

## १६

### मेरा समाजवादी होनेका दावा तथाकथित समाजवादके बाद भी जिंदा रहेगा

[श्यामलालजी द्वारा लिखित चार साल बाद के महत्वपूर्ण अंग।]

छुडी फिगर\* ने विधान निर्मात्री सभा पर बातचीत शुरू की। मैं विधान निर्मात्री सभामें जाकर अब अलग ही मत रख हूँ वरुणा — बस लडाक्रीका मतान बना दूंगा — और बस सर्वोपरि सत्तावादी सभा जाहिर कर दूंगा। अगले बारमें आपकी क्या राय है ?

गांधीजीने कहा 'दूसरेकी खड़ी की छुडी चीजका सर्वोपरि सत्ता जाहिर कर दनस काजी फायदा नहीं होगा याहिर तो वह अप्रजाता ही बनायी छुडी है। सिर्फ अधिकार जता देनेम काजी सभा सर्वोपरि सत्तावादी नहीं बन जाती। सबसत्ताधारी बननके लिये आपका वसा बरताव भी करना होगा। जाहानिमवगका दूरे स्टूडेंट तीन दजिमाने मिलकर अलग किया पा कि व सबसत्ताधारी है। लेकिन युमम काआ ननाजा नहीं निकला। वह कारा मजाव ही साबित हुआ।

' फिर भी मैं प्रस्तावित विधान निर्मात्री सभाका प्रातिवारी ही गनता हूँ। मन मर कहा है और मैं साल्ह आन अगले बातका मानता हूँ कि प्रस्तावित विधान निर्मात्री सभा बननाभव दगम सविनय आनामयका अब पुर अमर अवज है। हालाकि मैं हमारे समाजवादी मित्राकी पुरवानी और आत्म-संयमका भावनाकी बडास बडा कर करता हूँ फिर भी अूनक और मर तरीकामें जा स्पष्ट पक है बस मन कभी छिपाया नहीं। व जाहिरा तौर पर हिता बोर युमम मन्वप रणनवाला वानामें विवाम रणत है जब कि मेरे लिये अगिता ही सब कुछ है।

\* छुडी फिगर मुसलिम अमरिखन पत्रकार।

असस बात-बातका विषय समाजवादी और मंडा। थी फिरन बीचमें ही कहा जसे आप समाजवादी ह बन ही व भी ह।

गांधीजी सचा समाजवादी ता म हू व नगी। जामें म कजियाक पना हानसे पहल भी म समाजवादी था। जोहानिमवगव जय अय समाजवादीरा मन अपन समाजवादी होनका यकीन करा दिया था। क्विन अिम दानव कहनम महा कोजी मतलब हासिउ नही हागा। मरा यह दावा तो तब भी नायम रहगा जब अनका समाजवादी मिट जायगा।

फिरन आपकें समाजवादीस आपका क्या अय है?

गांधीजी मेरे समाजवादीका अय है सर्वोप्य। म गूग बहर जीर अघाका मिटाकर अठना नही चाहता। अुनके समाजवादमें अिन लोगावे लिअ कोजी जगह नही है। भौतिक अर्थात् हा जुनका अकमात्र मकसद है। मसलन अमेरिकाका मकसद है कि अुसके हर गहराक पास अक मोटर हा। मेरा यह मकसद नही। म अपन व्यक्तित्वके पूण विनासकें लिअ जाजागे चाहता हू। अगर म चाहू ता आसमानमें टिमटिमाते तारा तक पहुचनकी निमारी बनानेकी आजानी मुज मिलनी चाहिय। असका मतलब यह नहा कि म असा कोजी बात करुगा ही। दूसरी तरहके समाजवादीमें व्यक्तिगत आजादी नही है। अमम आपका कुछ नही हाता आपका अपना गरीर भा आपका नही हाता।

फिरन हा लेकिन समाजवादके भी कभी प्रकार ह। सुघरे हुअ रूपमें मेरे समाजवादका जय यह है कि हर बाज पर स्टन्का हक नही है। पर हसमें असा ही है। वना सचनव आपकें गरीर पर भी आपका हक नहा होता। बिना किमी गनाहके आप किमी भी वक्त गिरफ्तार किय जा सकत ह। वे आपको जहा चाह वहा भज सजत ह।

गांधीजी क्या आपकें समाजवादीस रायका आपके वच्चा पर अधि कार नगी होता? और क्या वह अहे मनचाहे तरीकेस तालीम नही देता?

फिरन गभी राय असा कन्त ह। अमेरिका भी असा ही करता है।

गांधीजी तब ता रम और अमेरिकामें कोआ वना पक नही है।

फिरन आप असरमें तानागाहीका विराम करत ह।

गांधीजी क्विन अगर समाजवाद तानागाही नही है ता निकम्मे लागाना गाल्भर है। म अपन आपका साम्यवादी भी कहता हू।

फिरन नगी नहा असा न कटिय। अपनना साम्यवादी कहना आपकें लिअे वगी रातरनाक बात है। म वही चाहता हू जो आप चान्त हैं जो जयप्रवाग और दूसरे समाजवादी चाहत ह — अक आजाद दुनिया।

लेकिन साम्यवादी अमा नहीं चाहत। व जसा कायना चाहत ह जा गरीब और मन दानाका गुलाम बना द।

गांधाजी क्या भावमक वारमें भा आपक यहा खयाल ह ?'

फिगर साम्यवादियाने अपन मनलखक अनुसार भावमवात्का ता मराह किया है।

गांधाजी लिनने वारमें आपकी क्या राय है ?

फिगर लिनने जिनकी गहजात का था। स्टालिनन धुम पुरा कर किया। जब साम्यवाता आपक पाम जान ह ता व काप्रेममें शामिल होना चाहते ह जोर युस पर कजा करक जुन अपना स्वायत्तिका साधन बनाना चाहत ह।

गांधाजी समाजवादी भी अमा हीं करत ह। मरा साम्यवाता समाजवाताम ज्पाता भिन्न नहीं है। वह दोनाका माठा मर है। साम्यवाता जमा दि मने जम समया है, समाजवात्का बुतरता परिणाम है।

फिगर हा आप ठीक कहते ह। जेक समय था जब दानामें फक करना कठिन था। लकिन आज साम्यवात्पिया और समाजवादियामें बडा फर्क है।'

गांधाजी 'ता क्या आपका मनलख यह है कि आप स्टालिन-माना साम्यवाता नहीं चाहत ?

फिगर लकिन हिटुन्नानी साम्यवाता हिटुम्नानमें स्टालिन माका साम्यवाता हा कावम करना चाहत ह। आर धुमक लिन आपक नामका नाजायज फायला अगना चाहत ह।

गांधाजी लिन लिनमें व कामयाब नहीं ह्याग।

हरिजनमख ४-८-'६६ पृ० २५०

## अहिंसक समाजवादी व्यवस्था

नी जयप्रकाश नारायणन मरे पाग अक प्रस्तावका नीच लिखा मतकिन्ना भजा था और मुझ लिखा था कि अगर म अिस प्रस्तावमें दी गयी तसवीरसे महमत हाअू ता अिस रामगणम हानवाली कायम काय-नामितिक सामन पेग कर दू। प्रस्तान अिस प्रकार था

काग्रस और देगके सामन आज अक महान राष्ट्रीय अयल पुयलका अवमर अपस्थित है। आजागीकी जाखिरी लडाआ जल्दी ही लडी जानवाली है और यह सब असे समय हो रहा है जब महान गकित शाली परिवतनोके द्वारा सारा ससार जडस हिलाया जा रहा है। दुनिया भरके विचारक लाग आज अिस बातके लिअ चितित ह कि अिस यूरोपीय यद्वके महानागमें स अक असी नयी दुनियाका जन्म हो जिसकी जड राष्ट्रा राष्ट्रा और मनप्या मनुप्याके बीचके सदभावपूण सहयाग पर कायम की गयी हा। असे समय काग्रस स्वतंत्रताके अपन अन आदगोंको निश्चित रूपसे व्यक्त कर देता आवयक समझती है जिन पर कि वह अडी हुआ है और जिनके लिअ वट जल्दी ही देगकी जनताको अधिकसे अधिक कष्ट सहनका यौता देनवागी है।

स्वतंत्र भारतीय राष्ट्रका काम होगा कि वह राष्ट्रोंके बीच गतिकी स्थापना करे सम्पूण नि गस्त्रीकरणक रिअ यत्नगील रहे और राष्ट्रीय झगडाको किसी स्वतंत्रतापूवक स्थापित आतर राष्ट्रीय सत्ता द्वारा गतिकपूवक निबटानकी कोशिश करे। वह रास तौर पर अपन पडोमी देगक साथ फिर व महान गकितगाली साम्राज्य हा या छोट छोट राष्ट्र मित्र बनकर रहनका यत्न करेगा और किसी भी विदसी राय या प्रदग पर जपना अधिकार जमानका अिच्छा न करेगा।

देगक सभी कायदे कानून सब-साधारण जनता द्वारा स्वतंत्रता पूवक पकन की गयी अिच्छाके अनुसार बनाय जायेंगे और देगमें गतिक और मुन्यवस्था कायम रखनका अतिम आगर जन-साधारणकी स्वीकृति और सम्मति पर ही रहेगा।

स्वतंत्र भारतीय राष्ट्रमें जनताको सम्पूण यकितगत और नागरिक स्वतंत्रता होगी और सांस्कृतिक तथा धार्मिक मामलोंमें पूरी आजादी दी जायगी। पर जिनका यह मतलब नहीं हागा कि हिंदुस्तानकी जनता

अपना सविधान-मन्त्रा द्वारा अपने लिखे जो शासन विधान तयार करणी, अमुना हिमा द्वारा अल्ट दनकी आजादी किमाको रहगा ।

दणकी राष्ट्राय सरकार राष्ट्रक नागरिकाके भाव किमा प्रकारका भेदाभाव न रखेगी । प्रत्येक नागरिकका समान अधिकार रह्य । जम और परस्परक कारण मिटनवाणी मन्त्रा सुविधाने या नभभाव मिटा लिय जायग । न ता सरकार द्वारा किमाका काथा पन् या अुपाधि न जायगा और न परस्परगत सामाजिक दरजक कारण ही काजी किसी अुपाधिक हक्कार माना जायगा ।

राष्ट्रका राजनीतिक और आर्थिक मगठन सामाजिक याय और आर्थिक स्वतंत्रताक सिद्धान्ता पर किया जायगा । जिस मगठनक फलस्वरूप जहा समाजक प्रत्येक व्यक्तिकी राष्ट्रीय आवश्यकताआकी पूर्ति हागा नभ भिमवा अुद्देश्य कवल भौतिक आवश्यकताआकी तृप्ति ही न रहेगा बनि अपणा यह रखी जायगा कि भिसक कारण राष्ट्राका हरअक व्यक्ति स्वाम्यपूर्ण जावन वित्ता सुके और अपना ननिक तथा शौद्धिक विकास कर सक । अिअक लिअ और समाजमें समताकी भावना स्थापित कगनक लिअ राष्ट्र द्वारा छाने पमान पर चलनवाल अम अुद्याग घघाको प्रोत्साहित किया जायगा जो व्यक्तिवा द्वारा या मह्वारी सम्याआ द्वारा समाक समान हितकी तृप्तिस चगम जायेंगे । बह पमान पर सामूहिक रूपस चलनवाले मन्त्री अद्याग घघाका अन्तमें जाकर जिस तरह चलाना होगा कि जिसम जुनका अधिकार और अधिकपय व्यक्ति मने हायस निवृत्त समाजक हायमें आ जाय । अिम रूपका सिद्धिक लिअ राष्ट्र मान्यमानके भास राष्ट्रना, जापारी जहाजा घाना और दूमरे कल-बडे अद्याग घघाना राष्ट्रीयकरण गर कर ग्या । वस्त्र-व्यवसायका प्रबल अिग तरह किया जायगा कि जिसम अुत्तरात्तर अुमका कर्त्रीकरण रक और विक्रानेकरण बह ।

गावसे जीवनका पुन-संगठन किया जायेगा, अुत् स्वतंत्र शासित जिवात्री बनाया जायगा और जहा तफ मभब हागा अधिकम अधिक स्वावलम्बी बनानका यन किया जायगा । दणक जमान-भभ्यधी कानूनानमें जह-भूतन सुधार किया जायगा और य सुधार जिस सिद्धान्त पर हागा कि जमीनका मालिक अुम जाननवाला ही हा गकता है । और हर कानूनारके पास अुतनी ही जमान हाता चाहिय जितनीस वह अपने परिवारका अधिक रीतिय भरण-भाषण कर सक । जिसम जहा अक आर जमानारकी अनक प्रयासे बह हो जायगी, तथा मतामें गुलामीकी प्रथा भी नष्ट हो जायगी ।

राज्य वर्गों ने हिता या स्वार्थीकी रक्षा करेगा। लेकिन जब य स्वार्थ गरीबों या पक्षित्वात् स्वार्थमें बाधक हाग ता राज्य गरीबों और पक्षित्वात्के स्वार्थकी रक्षा करव सामाजिक न्यायकी सुगठने समताल करेगा।

राज्यकी मालिकीवाले और राज्यका व्यवस्थामें चलनवाउ सभी मृद्योग धंधाक प्रबंधमें मजदूरोंका अपन चुन हुआ प्रतिनिधि मानका अधिकार रहेगा और जिस प्रबंधमें जनका हिस्सा सरकारके प्रतिनिधि याके बराबर होगा।

देना राज्यामें सम्पूर्ण प्रजातवात्मक सरकारे स्थापित हागी और नागरिकोंकी समताके तथा सामाजिक भदभावका मिटानके सिद्धान्तक अनुसार राजाभा और नमानाक रूपमें देगी रिपामतामें कोअी नामधारी गतक नही रहेग।

मुझ भी जयप्रकाशका यह प्रस्ताव पसंद आया और मन काय-समितिका बुनका पत्र और प्रस्तावका यह मसविदा पढ़कर सुनाया। लेकिन समितिन यह सोचा कि रामगढ़ काप्रममें अक ही प्रस्ताव पास करनकी बात पर डटे रहना जरूरी है और पटनामें जो मूउ प्रस्ताव पास हुआ था भुसमें किसा प्रकारका परिवर्तन करना जिष्ट नही है। समितिकी यह दलील निरपवाउ थी अिसचिअ प्रस्तुत प्रस्तावके गुण-दोषोंकी चर्चा किय बिना ही असे छाड लिया गया। मन भा जयप्रकाशको अपन प्रयत्नके परिणामसे सूचित कर दिया। अन्हान मझ लिखा कि अिसके बाद जनको सताप देनवाली सबसे अछी बात यह होगी कि में जनके जिस प्रस्तावका अपनी पूरी सहमति या जितनी म दे सकू अतनी सहमतिके साथ प्रकाशित कर दू।

श्री जयप्रकाशकी अिस अिच्छाका पूरा करनमें मुझ कोअी कठिनाअी नही मालम होती। जब असे आत्मके नाने जिसे देगवे स्वनत्र हाने ही हमें बापरूपमें परिणत करना है म भा जयप्रकाशकी जब सूचनाको छाडकर गप सभी सूचनाआवा आम तीर पर समथन करता हू।

मेरा दावा है कि आज हिंदुस्तानमें जो लाग समाजवात्को अपना ध्यय मानते ह उनसे बहुत पहउ म समाजवात्को स्वीकार कर चका था। लेकिन मेरा समाजवात् मेरे लिअ सहज और स्वाभाविक था और पुस्तकासे ग्रहण नग किया गया था। वह अहिंसामें मेरे अटल विन्वासका ही परिणाम था। कोअी भी आत्मी जा सकिम अहिंसामें विन्वास करता है सामाजिक अ्यामका फिर वह कही भी क्या न होता हो बरदान नही कर सकता — वह बुसका विरोध किय बिना रह नहां सकता। जहा तक म जानता हू



दुर्भाग्यवश पश्चिमक समाजवादियाने यह मान लिया है कि अपने समाजवादी सिद्धान्ताको वे हिंसा द्वारा ही अमलमें ला सकते हैं।

म सदासे यह मानना आया है कि नीचेसे नीचे और कमजोरसे कमजोरके प्रति ना हम जोर-जबरदस्तीके जरिये सामाजिक न्यायका पालन नहीं कर सकते। म यह भी मानना आया है कि पतितसे पतित लोगोंको भी नहीं तालीम दी जाय, ता अहिंसक साधना द्वारा सब प्रकारके अत्याचारका प्रतिकार किया जा सकता है। अहिंसक असहयोग ही अुसका मुख्य साधन है। कभी कभी असहयोग भी अुतना ही बतव्य रूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी बरवादी या गुलामांमें खुद सहायक हानक लिख काभी बधा हुआ नहीं है। जो स्वतंत्रता दूसरोंके प्रयत्ना द्वारा — फिर वे बित्तन ही अुदार क्या न हा — मिलता है वह अुन प्रयत्नोक न रहन पर कायम नहीं रणी जा सकनी। दूसरे गलामें, असी स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं है। एकिन जब पतितसे पतित भी अहिंसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करनकी बला सास एत ह ता वे अुसके प्रकाशका अनुभव किये बिना नहीं रह सयने।

अिसलिअे जब मने श्री जयप्रकाशके अिस प्रस्तावको पढा और नेखा कि वे देशमें अिस प्रकारकी शासन-व्यवस्था कायम करना चाहते हैं अुसका आधार अुन्हाने अहिंसाको ही माना है तो मुझे खुशी हुई। मरा यह पक्का विश्वास है कि अिस चीजका हिंसा कभी नहीं कर सकती बहा अहिंसात्मक असहयोग द्वारा मिद्ध की जा सकती है, और अुममें अन्तमें जाकर अत्याचारियाका हृदय-मरिखान भी हा सकता है। हमन हिन्दुस्तानमें अहिंसाको अुसके अनुरूप अवसर अभी तक दिया ही नहीं है। फिर भी आश्चय है कि अपनी अिस मिलायी अहिंसा द्वारा भी हमन अिननी शक्ति प्राप्त कर ली है।

जमीनके बारेमें श्री जयप्रकाशकी सूचनायें भडवानशानी हा सकनी हैं अेकिन वे दरअगल बसी हैं नहीं। सम्भावित जीवनके लिअे जितनी जमीनकी आवश्यकता है अुससे अधिक किमी आत्मीक पास नहीं हानी चाहिये। अगा बोन है जो अिस हकीकतसे अिनकार कर मने कि आम जनताकी घोर गरीबीका मुख्य कारण आज यही है कि अुसके पास अुसकी अपनी कही जानेवाली कोअी जमीन नगी है?

एकिन यह मान रगना चाहिये कि अिस तरहके सुधार ताबडनाड नहीं किय जा सकते। अगर ये सुधार अहिंसात्मक तरीकामे करन ह ता धनिका और निधनाओ सुगिहित बनाना शकनी हो जाता है। धनिकारक यह विश्वास मिलाता हागा कि अुनके साथ कभी जोर-जबरदस्ती नहीं की जायगी, और निधनाओ यह सिझाना और समझाना हागा कि अुनकी भरजीक खिलाफ

अनुसे जबरन कोठी पाम नहीं ले सकता और कष्ट-सहन या अहिंसाकी कलाको सीखपर वे अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। अगर असा लक्ष्यको हमें प्राप्त करना है तो ऊपर मन जिस शिक्षाया जिन किया है असका प्रारम्भ अभीसे हो जाना चाहिये। असके लिअ पहली जल्दत असा वातावरण तयार करन की है जिसमें पारस्परिक आदर और सद्भावना साम्राय हा। अस अवस्थाम वगैरे और आम जनताके बीच किनी प्रचाराया काजी हिंसात्मक मध्य नहीं हो सकता।

जिसलिअ यद्यपि अहिंसाकी दृष्टिस नी जयप्रकाशकी सूचनाआका सामाय समधन करनमें मुक्ष कोठी कठिनायी नहीं मानूम होनी ता भी म राजाआ सम्बन्धी अनुकी सूचनाका समधन नहीं कर सकता। कानूनकी दृष्टिसे वे स्वतंत्र ह। यह सच है कि अनकी स्वतंत्रताका काजी विणय मूल्य नहीं है कयाकि अक प्रबल शक्ति अनुका सरक्षण करती है। लकिन वे अपनी स्वतंत्रताका दावा कर सकते ह जब कि हम नहीं कर सकते। श्री जयप्रकाशकी प्रस्तावित सूचनाओमें जो बातें कही गयी ह उनके अनुसार अगर अहिंसात्मक साधना द्वारा हम स्वतंत्र हो जाय तो अस हालतम म असे किसी समझौतेकी कल्पना नहीं कर सकता जिसमें राजा लोग अपनको खद हा मिटानके लिअ तयार होग। समझौता किसी भी तरहका क्या न हो राष्ट्रका असका पूरा-पूरा पालन करना ही होगा। असलिअ म तो सिफ असे समझौतेकी ही कल्पना कर सकता ह जिसमें बडी-बडी रियासतें अपन दरजको कायम रखेंगी। अक तरहसे वह चीज आजकी स्थितिसे कही बढकर होगी लकिन दूसरी दृष्टिसे राजाआकी सत्ता अितनी सीमित रह जायगी कि जिससे देशी रियासताकी प्रजाको अपनी रियासतोंमें स्वायत्त गसनके व ही अधिकार प्राप्त रह्य जो हिन्दुस्तानके दूसरे हिंसाकी जनताको प्राप्त रह्य। अनुको भाषण लेखन तथा मुण्णकी स्वत प्रता और गढ चाय प्राप्त रहेगा। गायद श्री जयप्रकाशका यह विश्वास नहीं है कि राजा लग स्वच्छासे अपनी निरकुगताका त्याग कर देंग। मझ यह विश्वास है। अक तो जिसलिअ कि वे भी हमारी ही तरह भले आदमी ह और दूसरे असलिअ कि मेरा गढ अहिंसाकी अमोष शक्तिमें सम्पूण विश्वास है। अत अन्तमें म यह कहना चाहता ह कि क्या राजा महाराजा और क्या दूसरे गेग मभी सच्चे और अनुकूल बन जायग जब हम खद अपन प्रति अपनी श्रद्धाव प्रति—यदि हममें श्रद्धा है—और राष्ट्रक प्रति सच्च बनंग। अिम समय ता हममें असा वननकी पूरा नद्धा नहा है। असी अयकचरा श्रद्धासे स्वतंत्रताका माग कभी नहीं प्राप्त किया जा सकता। अहिंसाका प्रारम्भ और अल आत्म निरीक्षणमें होता है— जिन खाना तिन पाअिया गहरे पानी पठ।

## अहिंसा और राज्य

अन्तर्गत वेक भाजीत अहिंसाके अमलके वारम सात सवाल पूछ ह । हालाकि यम अहिंसा या हरिजन में अिम तरहक सवालका जबाब लिये जा चुके ह ता भी अगर अिन जबाबास कुछ मल मिल सकती है ता अक हा लगमें सब सवालके जबाब द दना फायदा होगा ।

प्र० — १ क्या किसी मौजूदा हुकूमतके लिअ जा लाजिमी तौर पर हिंसाके बल चलना है यह मुमकिन है कि वह अपद्रव (बलवा) करनेवाला आन्दोलन और बाहरी ताकतका राक्षसके लिअ अहिंसात्मक लडाआ लड सके ? या जा लाग अहिंसात्मक ढंगस अपद्रवका रानना चाहत ह, क्या अन्तर् लिअ यह जम्हरी है कि व राज्याधिकारका छाडकर बिल्कुल निजी तौर पर विराधियोंके सामन सड हा जाय ?

अ० — हिंसाके बल पर चानवाला हुकूमतके लिअे अल्लरुनी या बाहरी कित्ता भी तरहक अपद्रवको अहिंसात्मक ढंगस शान्त करना मुमकिन नहीं है । आदमा जीवर और धनकी पूजा अकसाथ नहीं कर सकता और न वह अकसाथ शान्त और क्रुद्ध रह सकता है । दावा यह है कि राज्य अहिंसाके बल पर चान सकता है यानी वह दुनियाकी मारी हथियारके द ताकतके बिलकुल अहिंसात्मक लडाआ लड सकता है । असा राज्य अजाबका था । फिरसे वसा राज्य कायम किया जा सकता है । लकिन अगर यह साबित कर लिया जाय कि अजाबका राज्य अहिंसाके बल नहा चलना था ता नी अूमस यह दावा कमजोर नहीं पडता । अिसके गुण-गोप पर ही अिगकी जाच होनी चाहिये ।

प्र० — २ क्या आप समझने ह कि काग्रमी सरकार बाहरी और अल्लरुनी अपद्रवको बिल्कुल अहिंसात्मक ढंगस शान्त कर सकगी ?

अ० — काग्रमी सरकारके लिअे यह मुमकिन है कि वह बाहरी हमला और अल्लरुनी बलवाका अहिंसात्मक ढंगस शान्त कर सक । मुमकिन है कि काग्रमीके अहिंसामें अिनना विश्वास न हा अिनना मुण है । अगर काग्रमी अपना रास्ता बदलता है तो अिससे यही साबित होगा कि अय तककी हमारी अहिंसा कमजोरकी अहिंसा थी और यह कि काग्रमीका अिम चानवा बिश्वास या थडा नगी है कि कोभी 'स्टट' भी अहिंसाके हा सकती है ।



अ० — मौजूदा फौजा दूनिगके गुरुका बहुत थोड़ा हिस्सा अहिंसक सनाका दूनिगमें शामिल हा सकता है। जैसे, अनुगामन कवायत कारस, शडा-बदन, मिगर्लाग और किमी तरहकी दूसरी चीजें। य सब भी बिल्कुल फौजी ढंगस नहीं सिगमाय जायेंग कयोकि जिनकी बुनियाद ही दूसरी है। अेक अहिंसक सेनाके लिअे जिम तालीमकी ठीक-ठीक जरूरत है वह है बीइवरमें अटल थडा (विश्वास) अहिंसक सनाक सनापतिक ह्वमका अपनी मरजीस पूरा पालन और सनाके हिस्सामें बाहरी और अरुनी दोना तरहका पूरा-पूरा मह्याग।

प्र० — ७ क्या आजकी हालतमें यह ज्यादा अच्छा नहा हागा कि हिन्दुस्तान और अंग्लण्ड जस मुल्क किमी भा फौजा कम्कवा अठानस पह्ले — सत्याग्रहका आजमाअिका पूरा मौका देनका अिराग ग्यते हुजे भी — अपनी फौजी कावलीयतको पूरा बनाये रहें ?

अु — अूपर लिम गय जरावासे यट माफ हो जाना चाहिये कि जय तक हिन्दुस्तान और अंग्लण्ड अपना पूरी फौजा कावलीयतको कामम रखत ह, व किमी भी हालतमें सत्याग्रहक साथ साय नहा कर सकने। साथ ही यह बिल्कुल महा है कि फौजी ताबतें अपने आपस-आपसक झगडाका गान्तिके साथ मिटानके लिअे बराबर समझानेकी बातचीत चलानी रहती हैं। एकिन यहा हम लडाआका कारण लनस पहल हानवाला गान्तिका प्रारभिक बानचातकी चर्चा नहीं कर रहे हैं। हम ता यह सोच रहे ह कि लडाआके नामस पहवान जानेवाल हयियाम्बल कगडेकी जगह जिम खुल गलामें कटअाम कहा जा सकता है याविर किम चीजको दी जाय।

हरिजननेवक १२-५-४६ पृ० १२८

## क्या अहिंसक राज्य कभी अस्तित्वमें आ सकेगा ?

अमरिकास आभी हूभी चिट्ठियामें स वनरोपर (केनडा) की अक नमूनतार चिट्ठी नीचे देता हू

म सच्चे दिग्गज जपन लिअ यह ता नहा कह सकता कि म आपरी हि दुस्तान हि दुस्तानियाक लिअ वाली नीतिका हिमायती हू लेकिन लिबर्टी मासिकम मन आपका ग्ल पढा है और समाचार-पत्रामें छपे हुए आपके सुप्रसिद्ध जीवनक वणन भी पढ ह। सुप्रसिद्ध ग्लका प्रयाग मन जम अयमें नहीं किया है जिस अयमें यह यरोपके महान नताजावे लिअ प्रयकन होता है बल्कि अस पुरुषके अयमें किया है जा अपनी निजी कल्पना-तरगाको स्थायी रूप दनक वणन अपन देग यासियाकी स्थितिको सुधारनका सच्चा प्रयत्न करता है। निस्स-देग म यह ता जानता हू कि आपने सिद्धांतम हि दुस्तानको पुन ग्रामाद्योगानी आर ल जान राष्ट्र राष्ट्रके बीच आपना जायिक सट्याग स्थापित करन और मनप्य मनप्यके बीच सदभाव पदा करनका लक्ष्य रहा है। त्रेकिन म यह जानना चाहता हू कि आपका नया प्रजातंत्र सत्तारकी राजनीतिम कौनसा स्थान ग्रहण करेगा ? यरोपक छाट छाट देग मानत थ कि वे अलिप्त रह सकें त्रेकिन आप दख लीजिय कि आज अुनकी हातत क्या है। स्वय हि दुस्तानक आध्यात्मिक नताकी वजमसे म यह जानना चाहता हू कि अनकी सरकारका दख अनक देगमें रहनवाल अग्रजाक प्रति किस तरहका रहगा और अग्रजा व दूसरे देगवालाकी पेलियाका बहा रहन दिया जायगा या नहीं ? सन् १८५३ म अमेरिक्न वडक और अमिरल पराक योकोहामाके बन्दरगाहमें प्रवेश करन तक जा नीति जापानन अस्तियार कर रखी थी असीको हि दुस्तानकी नशी सरवार नी जपनायगा क्या ? अर्थात् क्या देगमें विन्गियाको आन और विश्वी यापारका जमनस राना जायगा ?

मज्ञ आगा है कि आप अक केनशियन नौजवानकी — जो आपक देगा समस्याआका भलाभाति समझना चाहता है — जिस घुष्टताना क्षमा करग।

जिस पत्रक गिप्टाचारवाणे अगरो छाड दन पर लखवका सीधा सवाल यह रह जाता है क्या स्वतंत्र हि दुस्तानमें अग्रजा और विन्गियाक लिअ

स्याम रहना ?' जिस सवालका मरी कल्पित या सच्ची आध्यात्मिकताक साथ काभी सम्बन्ध न होना चाहिए। स्वतंत्र अमेरिका और स्वतंत्र ब्रिटेनक लिये यह सवाल नहीं झुठता। और जब हिन्दुस्तान सबमुच स्वतंत्र हो जायगा, तो युसब लिय भी नहीं झुठता। बयाकि अूम समय हिन्दुस्तानका बिना किसीकी रोक-टोकक अपनी मनचीती करनकी स्वतंत्रता रहगा। किन्तु हिन्दुस्तानक स्वतंत्र हान पर --- और दरमें या जल्दी या स्वतंत्र हागा ही --- वर क्या करगा यह कल्पना करनमें आनल्का अनुभव हाता है। यदि असकी राजनाति पर मेरा काभी प्रभाव रहा तो दामें विद्वान्याका स्वागत किया जायगा बानें कि अुनकी अपस्थिति दाक लिय त्तिनारा हा। जसा कि आज तक अुन्हान किया है अुमका गायण करके अुम कगाल बनानकी सहालियत अुह कभा न दा जायगा।

स्वतंत्र हिन्दुस्तान और वानामें क्या हागा मा ता दक्कनका बात है। जिस अहिंसात्मक नातिका अुमन कुछ-कुछ सम्पूणता और कुछ-कुछ सफलताके माय अब तक व्यवहार किया है यदि आग मा वर अुम पर दड रहा, तो युरापक छाट-छाट राष्ट्राका बबमाक समालस असका भयभात हानकी काथा जरूरत न रहगी। अहिंसक गायको बाहरी हमलाम अपनी रक्षा करनक लिय बड विस्तार मा वरना आवणयता नहा रहता। बाहरा हमगाम बचनक लिय अस रायका थाहा भी सब करना जरूरी नही हाता। हा यह पूछना अुचित हा भवता है कि जिस तरहका राय कभा कायम आगा भा या नही ? तात्त्विक दृष्टिस अस रायकी पल्लनामें बृद्धि काभी भाव नही पाता। दूमरा सवाल यह है कि जिस चीजना, जिसका व्यवहार कठिन बताया जाता है कायरूपमें परिणत करनेक लिय मनुष्य-स्वभाव अुतनी अुच्च क्या तब कभा पडूक सक्ता या नही ? हम जानत ह कि व्यक्तिगत रूपस मनुष्यान अगन स्वभावका अवर्धित अच्यताया परिचय किया है। धयक माय यल करनस जिनकी सरयाका वरना अतभव नही। मा कुछ ना हा मिक अिमलिय कि म हिन्दुस्तानका आरग अम प्रत्य सगका काथा प्रकट चिह्न लिला नही गवता, म अपना श्रद्धा नाकर प्रमन करना न छाडगा। तब ता मअ हिन्दुस्तानक लिये गड स्वतंत्रताका आगा भा हमगाके लिय छाड दना पडगी जमी कि कुछ लागानु छाल दी है। अुनका कहना यह है कि हिन्दुस्तान अब अडूत क्या और विलकुल निहया दा है अुम सतिव राष्ट्र बननमें सबडा बरग आ जायग। म अगा निराशाका गिकार बननम अिनसार करता ह। लाकमायक चलन्त गगामें बड ता स्वराय हिन्दुस्तानका जमगिड अधिकार है और अुम बड हर तरह कर हा रहगा। या ध्येयप्राप्तिने प्रपत्नमें है ध्ययका प्राप्त करनेमें नही। यह या अहिंसात्मक प्रतिपाशाना सम्पूणता द्वारा प्राप्त आ सक्ता अिम विषयमें मरी श्रद्धा और मरा अुगाड अणू है। अहिंसाका अिम गूड शक्तिया पना बिनीन अना तब

लगाया नहीं है। हमें सिर्फ पर रखना जगह भर मिली है। लगनके साथ जुट रहना शांति आनन्दके दनवाल रत्न मडार रत्न सपते ह। अगर महनत ज्यादा है तो फल भी खुसका अतना ही बडा है।  
हरिजनसेवक ५-४-४२ पृ १०

२०

## अहिंसक राज्य-संचालन

[ श्री महादेव दसाजी द्वारा लिखित अहिंसानी मर्यादा से। ]  
अहिंसाके द्वारा राज्य-संचालन कैसे किया जाय ?

गांधाजी यह प्रश्न पूछते समय आप एक बात स्वीकार कर लेते ह अर्थात् अहिंसक स्वरायकी प्राप्ति — यह समझमें आता है क्या ? यदि हमन सचमुच अहिंसक मागस स्वराज्य प्राप्त किया होगा तो हममें से अधिकतर लोग अहिंसक बन चके हाग और हमारे देगका सगठन अहिंसक तरीकेसे हुआ होगा। अगर हमन स्वराय प्राप्त करन जितना अहिंसक तयारी की होगी तो अहिंसक तरीकासे संभालनमें हम मुश्किल नहीं आनी चाहिय। क्याकि अहिंसक स्वराज्य कुछ अपरस तो अतरा नहीं होगा। असे पानके लिज हमें लोगोका बहुमतसे साथ मिला हागा। असे रायका तो यह अय हुआ कि गुड भी हमारे अकुगमें आय हाग। मिसालके तौर पर सेवाप्रामका सात सौकी आवादीमें पाच-सात गुड हा और बाकी सब लागावो अहिंसक तालीम मिली हो तो या तो ब गुड बाकी लोगोके अकुशका स्वीकार करेग या गाव छोडकर भाग जायेंग।

मगर आप देखेंग कि अिस सवालकी चर्चा म सावधानीसे कर रहा ह। मेरी सत्यकी भावना मुझसे कट्लाती है कि गायद हम पुलिसके बिना न चला सकें। और पुलिस भी जिस तरहकी ब्रिटिश सरकार रखती है वसी नहा मगर हमारे ही ढगकी होगी। और फिर हमारी कल्पनाका बालिग मताधिकार हागा अिसलिज २१ वषके यवकका भी राजकाजमें हिस्सा होगा। अिसलिज मन कहा है कि पूण अहिंसक राज्य बिना राजाके पबस्थित राय हागा। अिसलिज वही राज्य अत्तम होगा जिसमें पुलिस अित्यादिका अितजाम कमसे कम हो। मगर बात ता यह है कि रायकी लगाम भरे हायमें देता कौन है। ये तो म राय चलाकर बता दू। अगर म पुलिस रखगा तो वह काप्रसमें स निय हुआ समाज-मुधारकाकी पुलिस हागी।



'मगर, सर साहब' बोल खुठ का प्रसक्के मत्री अहिंसक सत्ता लकर नही आप थे। ५०० गुडे तूफान करने पर तुल जायें और अगर बुह रोका न जाये तो वे चारा तरफ हाहाकार मचा सकते ह। मुझे डर है कि अस लागेक साथ आप भा दूसरा बरताव न करते।

गांधीजी हम पडे और वाल मगर असी परिस्थितिकी कल्पना ता मन की थी और असी हातमें आप लागेको क्या करना चाहिय यह म वहा ही करता था। मत्रा जस प्रसगमें धर या आपिमने निकलकर गुडोके सामने खड होकर अपने प्राण निछावर कर सकते थे। मगर सच्ची बात ता यह है कि हममें असी अहिंसा नही था ता भी हमन मत्रीपद लिया। लिया तो मल लिया। कारण कि जब हमें लगा कि सत्ता छोडनी चाहिय ता खुस छोडनेमें अेक घडा भी नही लगी। हा, अितना कहूंगा कि अगर हमारे मत्रीपदक दो या तीन सागमें हमन अखड अहिंसाका पालन किया होना, तो फाग्रेस अहिंसा और स्वराजकी दिगामें बहुत आप बर गयी हाती।'

बाल साहबन कहा मगर चार या पाच साग पहले जब असा प्रसग आया था तब मने काग्रेसके नेताअमि कहा था कि चला निकला और आगमें बूट पडा। मगर काशी तयार नही हुआ।

गांधीजी यह आप मेरी ही दलीलवा ममयन कर रहे ह। म यही कह रहा हू न कि हमारा अहिंसा हृदमगत नहा हुआ था वह जिह्वा तक ही रही थी। मगर अिन परम अनुमान ता यह निकलता है कि यदि कच्चा अहिंसास भी हम अितन आग बड सक, ता हमारी अहिंसा सच्ची रहती तो हम कितना बड जाते। सम्भव है गायक हम अपना ध्यय प्राप्त भी कर चुक होते।'

प्र० — बाहरी आयमणका अहिंसक रोनिसे आप कसे सामना करग, यह समझाअिय ?

जु० — 'अियवा चित्र म पूरी तरह आपके सामन नही साच समूगा। कपाअि हमारे पाग न ता अिम चाजका अनुभव है और न यह मनरा आज हमारे सामने आवर खडा हुआ है। और आज ता सितता, पठाना और गुराके सरकारी लकर राड हा ह। मरा कल्पना ता यह है कि म अपनी हजार या दो हजाररी मना दोना लडना हुआ फौजके बाजमें रत दूगा। असा करके म दूगरा कोजी परिणाम न नी ला सकू ता दुमनकी हिंसाको ता जरूर कम कर दूगा। अहिंसक सनाके सनापतितवा अिगक मनापतितो ज्यादा तीव्र बुद्धि और ज्यादा समय-मूचयताकी आवयवता रहती है। मगर पहलेस ही सब

१ बाग साहब सर, बम्बया राज्य मुख्यामत्री सन् १९३७-३९ और १९४६-५२ के वर्षोंमें।

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

चित्र खींच सक्नकी शक्ति खुसे भीखर दे दे ता यह अभिमानी बन जाय। और भीखर असा बजूस है नि आवश्यक्तासे ज्याग शक्ति बिसीको देता ही नही।

खर साहब विद्वान पुरुष ह अिसात्रिअ बुन्हान अब गीतानी भापामें अक सवाल पूछा ससार सब द्रव्वा ही बना हुआ है — ह्य गाक सुख दुख भय-माहस। डर हागा तो हिम्मत भी आयगी। डर भी निवम्मी चीज नही है। पहाड पर डरकर न चउ तो कही न-पही खाओमें जा पडेंग। ता क्या आपकी अहिंसक सना द्वातीत होगी गुणातीत हागी ?

पुरत ही गाधीजीन गाताकी ही भापामें अत्तर दिया नही हरगिज नही क्याकि मेरी सेनान अहिंसा जीर हिंसाके द्दमें स अहिंसाका अपनाया होगा। म या मेरी सगा द्वासे परे नही है त्रिगुणातीत नही है। गाताका त्रिगुणातीत तो हिंसा अहिंसासे परे है। डरका अपयोग है मगर डरपोक पनका अपयोग नहा। डरके कारण म सापके महमें अगली न रपूगा मगर डरपोकपनसे सापको देखते ही भयभीत होकर कापन न लपूगा। बात यह है कि हम ता मृत्य जानस पहल ही अनक बार मर जाते ह। डर तो केवल जीरवरका ही हा सक्ता है।

मगर मेरी फौज किस किरमकी हागी यह म समझाजू। सब सनिकाके पास सेनापतिकी वदि होगी असी कल्पना ही नही है। मगर जनमें सेनापतिकी अक-अक जानाका पान्न करनकी निष्ठा और अनुगासन होगा। सेनापतिमें असी चीज जरूर होनी चाहिय कि जिसके कारण सब खुसका हुकम मानें। लाकाके दलके पासस तो यह केवल आगा-पालन ही चाहेगा। दाडीकूच केवल मेरी कल्पना ही थी। पहले तो पडित मातीलालजीन असका मजाक अडाय था और जमनालालजीन कहा था नि अिसस तो वाजिसरायके महल पर कूच करके धावा करना ज्याग अच्छा है। मगर मझ तो नमकके सिवा दूसरी चीज सूझ ही नही सक्ती थी। क्याकि मुग तो करोडाका विचार करके निणय करना था। यह कल्पना बीखर-दत्त थी। पडित मोतालाजीन धाडा दलील की मगर अतमें कहा आखिर सेनापति तो आप ह आप जो कल्पना कर वही सही है। असमें फर फार करनके लिअ म आपका कस कह सक्ता हू ? हमें तो आपमें विन्वास रखकर चउना है। अिसक बात तब जबमरमें वह मयसे मिन्न आय तब अनकी आखें खल गयी था। जनताकी जागृतिकी देखकर अह आश्चय हुआ था। और जागृति भी कसा ? हजारों स्त्रियान अस वक्त जा गात हिम्मत बतायी थी असक जाडनी मिसाल अितिहासमें कहा मिनेगी ?

और असा हाने हुअे भी जिन हजाराने मत्पाग्रहमें हिस्सा लिया था, वे असाधारण स्त्री-पुरुष नहीं थ। युनमें स बआ ता व्यमना हाग और भूल करनेवाे हागे। मगर जासवर ता जा भी मच्च-यक्क माधन मिलत ह युनका अुपयाग कर लता है और स्वय अलिप्त रहता है। कारण यह है कि वह गुणानीत है।'

आगे अुन्हाने कहा और मच्चा मना है कीसा ? तुल्मीटून रामायणमें वानर-सेना भाटू-सनाका बणन ता दिया है पर सच्चा सनाका बणन ता रामचद्रजाके मुपम कहयाया गया है।'

य मद्र चौपात्रिया गाधाजाने पूरा नहीं मुनाओ था, मगर पाठकाओ ग्रातिर म (महोदेवनाओ) अद्र यहा द र्हा हू। प्रमग यह है कि लताकाटमें राजणक सामन जम रामचद्रजा गणसभमें आन ह तब विभाषण रामचद्रजीरो विना रयके पल्ल जात देखकर भयभीत हो जाता है और पूछता है

नाथ न रय नहि तन पन्थाना । कहि विधि जिनत्र वीर बलवाना ॥

जिसक अुत्तरमें रामचद्रजा बहत ह

मुनहु सग्या कह कृपा निधाना ।  
जेहि जय हाअि सा स्पन्न आना ॥  
सौरज धारज तेहि ग्यन्वाका ।  
सत्य मील दूढ़ ध्वजा पताका ॥  
बल विजय दम परहित धार ।  
एमा कपा समता रजु जारे ॥  
औस भजन सारया मुजाना ।  
बिरनि चम मनाप कृपाना ॥  
दान परसु बुधि सक्ति प्रचडा ।  
वर विग्यान कर्नि कान्हा ॥  
अमल अबल मन तून समाना ।  
सम, जम, नियम, सिलीमुख नाना ॥  
कच अमल विद्र मुद पूजा ।  
अहिमम विजय-अुपाय न दूजा ॥

महा अजय सागर रिपु जीनि सजअि सो वार ।

जाक अग रय हाअि दूढ़ मुनहु सग्या मति धार ॥

जिस तरह रामायणका अुल्लेख करके गाधीजी काट, 'सा जीतनेवाणी मना सो यह है। मैं समारण विरक्त नहीं हुआ हू। हाना चाहता भी नहीं।

अंग्रेजों की विरक्तियों में जानता भी नहीं हूँ। मैं तो सेवाप्रामर्श बैठकर जो कुछ काम कर सकता हूँ, अतना करवें और जो काजी मेरी सलाह लन आय असे सलाह देकर सारी मानता हूँ। बात यह है कि हमें श्रद्धाही जल्लरत है। सत्यके माय पर चलकर हम खानवाल क्या हूँ? बहुत होगा तो कुचले जायेंगे। मगर हारनरा क्या कुचला जाना बहतर नहीं है?

'मगर हिमक तयारी करनी हो तो मेरी बुद्धि काम नहीं करेगी। हवाजी जहाज और टका अित्वादिवा विचार करत ही मेरा माया चकरा जाता है। उसके सामने मेरी अहिंसक तयारी ता जितनी आसान है कि कोसी बात हो नहीं। और फिर अूममें अीश्वर-असा सारथी मिला है जा कभी हमें अुलटे माग ले ही नहीं जा सकता। फिर डरनका कारण ही क्या है?'

हरिजनसेवक ३१-८-४ पृ० २४३-४४

## २१

### अहिंसक प्रतिरक्षा

नीचे लिखा हुआ सवाल अक अग्रज मिलिटरी अफसरन भजा है। अुन्हाने २८ जलाजी १९४६ के हरिजन में आजाती पर मेरा लेख बडी दिलचस्पीसे पना है। य अफसर अक फौजी अिजीनियर ह। अमेरिका और यूरोपमें खूब घूमे ह और अपनी आखासे जमनीमें लडाओकी तवाही और बरबानी देख चुके ह।

प्र० — अिन आदग हुकूमतमें (और बेगक यह हुकूमत आना होगी) आत्मी बाहरके हमकोसे किस तरह बच सकता है? आजकल जब कि भंगीनका दौर-दौरा है, अगर राज्यके पास नय नय हथियारोसे लस फौज न होगी तो असे हथियारोवाजी फौज हमला करके देशको जीत सकता है और वहाँ रहनवालाका गुलाम बना सकती है।

अु — सवाल पूछनेवाले भात्री कहते ह कि अुन्हान मेरे लेखको बड ध्यानसे बार-बार पडा है और फौजी आत्मी हानके बावजूद अुस पसन्द भी किया है। मगर साफ पता चलता है कि मेरे लेखमें जो असल बात है अुस वे चुक गय ह। वह यह है कि अेक ब्यक्तिकी तरह अक राष्ट्र चाहे वह कितना ही छोटा क्या न हो और राष्ट्र तो क्या अक बग भी हथियारोसे लस सारी दुनियाके खिलाफ अपनी अिजतका रक्षा कर सकता है। लेकिन शत यह है कि असमें सब अकमतक हा और अुनमें अिस रक्षाके लिय

पक्का भिराण हो। यही निहत्थे लागाका शक्ति और खूबसूरता है जिसकी कोआ मिसाल नहीं मिल सकती। यही अहिंसक रक्षा है, जो किसी मजिठ पर न तो हार जानती है न हार मानती है। जिसलिअे जिस राष्ट्र या समूहने हमेशाके लिअ अहिंसाका रास्ता अपना लिया हो वह अणुगोलोमि भी गुलाम नहीं बनाया जा सकता।

हरिजनगवक, १८-८-४६, पृ० २६९

२२

## पुलिस-बलकी मेरी कल्पना

अब मित्र अिस प्रकार लिखत ह

“अक अप्रज बहूनन, जिसका आपन हालमें ही अुल्लख त्रिया है ठीक ही कहा है कि बाहरी आक्रमणके आग अहिंसाका प्रयोग करना, यह हमेशाके लिअ और आजकी परिस्थितियामें खान जरूरी है और यह भी सभन्न है कि अिसका अधिक अच्छा परिणाम सिद्ध हो। मगर अन्तनी हुल्लडाके सामने अहिंसाका प्रयोग करना ज्याण मुश्किल है। हमार महा मुख्य तीन प्रकारक हुल्लडाकी कल्पना की जाती है साम्प्रदायिक दंग, जहा औछागिब केद्र हा वहा मजदूरोंके झगड और चार डाकुआकी लूटपाट या डाकक जुपद्रव। अिस प्रकारके हुल्लडामें निहित मूल कारण, अस पारस्परिक अविवास, सामाजिक अयाय तथा आर्थिक गोपणमें स पण हुआ गरीबा और चकारी जम तक दूर नहीं हा जान तक तक अिन हुल्लडाका चाहे जितनी जार-जदरल्तीसे दवा त्रिया जाये तो भी व बार-बार होत रहेंग और चाहे जितना बदामस्त हान हुआ भी लोगोको अिनक कारण कल्प-महन कर्न पडग। मूल कारण ता रचनात्मक प्रवृत्तिम ही दूर त्रिय जा सकगे। पर असा कर्नमें वक्त लगगा। अिम दरमियान अग हुल्लडाके अवमर पर अधिकाग मनुष्य हिंसा-बलचालाका रक्षण दूडनके लिअे ही प्ररिण हांग। अस समय पर भा अम मनुष्य जिन्हें अहिंसा पर धडा है अपनी अहिंसाका जितन दरज तक अधिक सत्रिय रूप २ सकग अ्रुतने ऽरजे तक व अिम किम्मक हुल्लडाता निमूल कर्नमें अधिक याग देंग। अिसलिअ हुल्लडाके लिअ भी आगिरी अुपाय ता अहिंसा ही है।

## काग्रसी मंत्री और अहिंसा

श्री गकरराव देव लिखते ह

लोगोंकी समझमें यह बात नहीं आ रही है कि जा लाग अपनको सत्याग्रही कहते व वे मंत्री बनते ही पौज और पुलिसका अुपयोग क्या करते ह। लोग मानते ह कि घम या व्यवहारके रूपमें मानी हुअी अहिंसाका यह भग है और अुपरी खयालसे यह सच भी मालूम होता है। काग्रसी मंत्रियाके विचारोंमें और बरतावमें यह जो विरोध दिखायी देता है अुसका समयन करना आसान न होनेके कारण हमारे कायबर्ता अुलझनमें पड जाते ह और अिस विसगतिसे लाभ अुठानवाले काग्रसी और गर-काग्रसी प्रचारकोंका मुकाबला करना अुनके लिअ मुक्किल हो जाता है।

आम तौर पर काग्रसियोंकी अहिंसा कमजोरकी अहिंसा ही रही है। हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालतमें यही हो सकता था अिसे तो आप भी जानते ह। आप कहते ह कि ताकतवरकी अहिंसामें तेज होता है फिर भी कमजोरको तगडा बनानके लिअ आपन अहिंसाका अुपयोग करना स्वीकार किया यही नहीं बल्कि आप अुनके नता भी बन। अिस तरह दुबल या कमजोर होते हुअ भी आज अुनके हायमें सत्ता आयी है। व अग्रजी हुकूमतके खिलाफ तो अहिंसासे लड केकिन अब अपन हायमें सत्ता केवर देशमें दगा पसादके समय भी अहिंसाका अुपयोग करके अुसे मिटानको वे तयार नहीं ह। अगर वे असी कोशिश करे भी तो न वे असमें कामयाब होग और न अिस काममें अुह आम लोकाका सहकार ही मिलेगा।

मन आपसे पूछा था कि क्या सत्याग्रही अपन हायमें हुकूमतकी बागडोर ले सकता है? अगर ले सकता है तो अस हुकूमतके जरिये वह अहिंसाको कसे आग बडा सकता है? कृपा करके आप अिस पर याडी रोगनी डालिय। अिसन अहिंसाको घम माना है वह कभी हुकूमनमें शामिल होना पसद नहा करेगा। और मेरी राय है कि अुसे असा करना भी नहीं चाहिय। केकिन म मानता हू कि जिन्होन अहिंसाको सिफ नीति या व्यवहारकी दृष्टिसे अपनाया है अुनके लिअ पण केनमें कोअी दिक्कत न होनी चाहिय। बहुतेरे काग्रसियान पद

समाल ह और बिसक लिअ आपने बूह बिजाजत दी है । अमी हाशतमें सवाल यह अठता है कि धुन मन्त्रियोसे जो अहिंसामें मानते ह आपका यह अुम्मीद रखना कहा तक मुनासिब है कि कमसे कम व खुद ता दगा-फसादक मौको पर अहिंसाका अपुयोग कर ? अहिंसाके जरिये सत्ता प्राप्त करनके वां अुसका अपुयोग किस तरह किया जाय, जिमसे सत्ता ही गर-जरूरी हो जाय ? अगर असा कोजी रास्ता आप न सुझायेंग, ता इमार अपने भवसद तक पहुचनेके लिअे मत्याग्रह अंक अधूरा साधन माना जायगा । "

मेरे विचारसे अिसका जवाब आसान है । कुछ समयसे मन यह कहना गुरू कर दिया है कि कांग्रेसके विधान या कानूनसे 'सत्य और अहिंसाका' हटा देना चाहिये । लेकिन कांग्रेसके विधानस य दाना सचमुच हटाये जाय या न हटाये जाय, अगर हम यह मान ल कि वे हटा लिय गय ह तो स्वतंत्र रूपम हम यह समझ सकग कि कोजी काम सही है या नहीं । म मानता हू कि जब तक हम देगमें भीतरी गवितकी रखाके लिअ फौज या पुलिसका अपुयोग करे तब तब अग्रजी सल्तनतके या दूसरी किसी विदेशी सल्तनतके मातहत ही हम रहेंगे — फिर चाहे देगकी सरकार कांग्रेसवालाके हाथमें हो या दूसरोके हाथमें हो । फज कीजिय कि कांग्रेसी मन्त्रि-बडलाको अहिंसामें विस्वास नही है । यह भी मान लीजिये कि हिन्दू मुसलमान और दूसरे हिन्दुस्तानी फौज और पुलिसका सहारा चाहते ह । अगर असा है तो यह बूह मिलता रहेगा । जो कांग्रेसी मन्त्री अहिंसामें विस्वास रखते ह, बूहें फौज या पुलिसकी मद लेना अच्छा न लगेगा । अिसलिअे वे अिस्तीफा दे सते ह । अिसक मानी यह हुअे कि जय तज लागामें आपसमें ही फसला कर लेनेकी तापन नही आती तब तक हुल्लडबाजी होती रहगी और हममें अहिंसाका सच्चा बल पदा ही नही होगा ।

अब सवाल यह रहा कि असा अहिंसक बल किस प्रकार पदा हो सकता है ? अिन सवालका जवाब अहमदाबादस आप हुज अेक पत्रके जवाबमें ४ अगस्तको म द चुवा ह । जब तक हममें बहादुरी और प्रमसे मरनेकी तावत पदा नही हानी, तब तक हममें बीगकी अहिंसाका बल नही आ सकता ।

अब सवाल यह है कि आग्य समाजमें कोजी रातसत्ता रहेगी या यह अर बिलगुल अराअक समाज बनेगा ? मरे सवालमें अना सवाल पूछनसे कोजी पापदा नही होगा । अगर हम अत समाजके लिअे महनत करते रहें ता यह धीरे धीरे किसी ह तब अग्नि-बमें आपेगा, और बूस ह तब सोगारा बूसा फायदा पहुचेगा । मुबिन्दने कहा है कि लाभिन वही हा सकती है जिगमें शोभाजी न हा । लेकिन असी लाभिन न आज तक कोजी

बना पाया है न आग भी बांधी बना पायगा। फिर भी असी लाजिनको सवालमें रखनसे ही प्रगति हो सकती है। जा बात अित मामलमें सच है वह हरअक आदमके बारेमें सच है।

हा अितना यल रखना चाहिय कि आज दुनियामें कही भी अराजक समाज नहीं है। अगर कभी कही बन सकता है ता भुरापा आरम हिदुस्तानमें ही हो सकता है। क्याकि हिदुस्तानमें असा समाज बनानकी कागिनी की गआ है। आज तक हम आतिरी दरजकी बहादुरी नहीं दिता सके लकिन असे दिखानका अक ही रास्ता है। और वह यट है कि जो लाग अुसमें विवास रखते ह वे अुस पर चर कर दिखायें। असा करनक श्रिय जिस तरह हमन जलाका डर छाड दिया है असा तरह मृत्युका डर भी विलकुल छोटना पडगा।

हरिजनसेवक १५-९-४६ पृ० ३०९-१०

## २४

## सत्य और अहिंसाको न छोड़ें

अक सेवाभावी भाजी अपना नाम देकर लिखते ह

आपका साप्ताहिक अखबार हरिजनवच म नियमित पडता ह। १५ सितम्बरके हरिजनवच में श्री गकरराव देवको दिय गय जवाबमें आपन लिखा है मन कुछ समयसे कहना गुरु किया है कि काग्रसके विधानमें से सत्य और अहिंसाको निकाल देना चाहिय। आजकी परिस्थितियामें असा होगा तो काग्रस परसे लोगका विश्वास अठ जायगा। लाग असा समझें कि जब तक काग्रसके हाथमें सत्ता नहीं थी वह लोगको सत्य और अहिंसा पर चलनको समथाती थी। आज सत्ता हाथमें आते ही वह सत्य और अहिंसाको विधानमें से निकालनका सोच रही है।

अगर काग्रसके विधानमें से य दो गल जिनके जरिय काग्रस अितनी आग बनी है और आज अूची चोटी पर बठी है निकल जायेंग तो काग्रस फौरन ही नीचे गिर जायगी। अुसकी प्रतिष्ठा हलकी पड जायगी। आप ही कहते थ कि सत्य और अहिंसाके विना आप अक कदम भी आग नहा चल सकते।

किमलिअ लोग काग्रसवालाको विवासके लायक दयालु मेवामावी हिम्मतवाले — बगरा-बगरा मानते आय ह? सत्य और अहिंसाके ही कारण। सत्य और अहिंसा अुसकी जड है। जडके नाग



होनेसे साराका सारा पद अपन-आप सूख जायेगा। आपको तो यह कोशिश करनी चाहिये कि वह जड़ ज्यादासे ज्यादा गहरी जाम।

अिमलिङ्गे मुझे लगता है कि आप हरजक काग्रसजनको अिन सिद्धान्ताका पालन करनेक लिअ बाध्य कर यन्ि वह अिनका पालन करनेस अिनकार करता है, तो अुम काग्रस छोड देनी चाहिय।

अहिंसाका दावा करनेवाला म अच्छा काम करनेके लिअ भी किसीका मजबूर कस कर सकता हूँ? अेक महान अग्रजन कहा है कि आगा रहकर भूल करना अच्छा है मगर मजबूर हाकर अच्छा बनना बुरा है। म अिम सत्यका मानता हूँ। कारण साफ है। जो दूसरोके दबावसे अच्छा रहता है अुमका िल अच्छा नही रहता अुलटा ज्यादा विगडता है, और जब दबाव हट जाता है तो अन्दर हुआ विगाड अूपर आ जाता है।

और अिमी अक ब्यक्तिक पाम तो अिसा पर दबाव डालनेकी तावत हाना हा नही चाहिये। काग्रस भी जबरन् किसीसे सत्य या अहिंसा पर अमल नही करवा सकता। असी चीजे सुनीना नोना ही हानी चाहिये।

सत्य और अहिंसाका काग्रसक विधानसे निकालनेकी बात पेग किय मुझे अेज सालसे ज्यादा अरसा हो गया है। मरा अिम सलाहक पीछे जोरदार कारण है। सत्य और अहिंसाकी आटमें काग्रसका झूठ और हिंसाको छिपाना काअी मामूली कारण नही है। अगर काग्रसेी लिखावा न करे और सचमुच सत्य और अहिंसाके अिन दो सभाका पकड रह ता अिसने अच्छा और क्या हो सकता है?

मैं तो कभी यह चाह ही नही सकता कि सत्ता हाथमें आने पर काग्रसे जन सत्य और अहिंसाकी अूस सीडीको छोड दें जिसके सहारे व अित्तन आण बड ह। म मानता हूँ कि अगर काग्रसे सत्ता पाकर अिस सीडीको छाडगी, तो अुमका तेज बिल्कुल मल पड जायगा।

अक और भूलसे सबका बचना चाहिये। जो विधानमें नही लिखा हो अुन पर किसीको अमल नही करना चाहिये अैसी बात तो है हा नही। मन तो आगा रसी ही है कि सत्य और अहिंसाक विधानमें स निकट जाने पर भी सब या ज्यादातर काग्रसा अपना अिच्छास अुन पर अमल करेगा और करत-करत मरगा भी।

अक भूल अिसका अिन अिन गवाभावी भाअीन नदी बिसा है, सुधार डू। काग्रसेक विधानमें 'आतिपूण और 'सायग्रगत' शर ह। अुहें अहिंसाक और सत्यपूण माननेका मुसे हक नही। काग्रसेक पास धम नहा कम ही है। अग्रजीमें अुसे 'पॉलिटी' कहेंग। मेर हकका ता सवाल ही नही है। मगर जब तब कम चलता है तब तब यह धम हा जाता है। मानी अुस पर

अमल करनेका बंधन होता है। अगर शान्ति का मतलब अगाति भी हो सकता हो और 'यायसगत' का मतलब झूठ भी हो सकता हो तो मेरी सलाहके लिए कोयी स्थान नहीं रह जाता।  
हरिजनसेवक २९-९-४६ पृ० ३२९

२५

## म अहिंसक साम्यवादमें विश्वास रखता हूँ

[श्री महादेव देसाजीके साप्ताहिक पत्र से।]

हम लोग बहद थक गये थे। सोनवी तयारीमें ही थे क्योंकि दूसरे दिन सबरे तीन बजे अठना था। आध्रके सूफान-पीडित प्रदेशमें घूमना था। गाडी चल पडी थी। अितनमें ही अक दोहरे बदनवे सज्जन दौडते हुए आय और अन्हान खिडकीमें से झाका। पहनावा यूरोपियन था। कहन लग जनाव म ठठ मिन्नसे आ रहा हूँ। हिन्दुस्तानके सबसे बड महापुरुषसे हाथ मिलान और उनसे थोडी-सी बातचीत करनका मौका तो मिलना ही चाहिय। वे अग्रजीमें बोले पर लहजा और जच्चारण फौंच था। अुहे हम क्या कहते? सिवा अदर लेनके चारा ही नहीं था। पर दरवाजमें ताला लगा हुआ था। हमन कहा आप अगरे स्टेशन पर आ जाअिय। पर वे जरा भी समय सोना नहीं चाहते थे। खिडकीमें से ही वे अदर घसे। हमन भी थोडी सहायता की और वे आ गये। अिस बातसे वे बड खस थ कि मिन्नको कुछ तो आजादी मिली। हिन्दुस्तानके प्रति भी अन्होन गभागा प्रगट की।

पर म कुछ सवाल आपसे पूछूँ। म देखता हूँ कि आप काफी थक गये ह पर मुझ अपन जीवनमें फिर कभी असा मौका नहीं मिलेगा। अिसलिए आगा करता हूँ कि आप मुझ जरूर माफ करेग। मारे नीदवे गापीजीकी आखें मुद रही थी। पर अिस प्रमी आगतुनको वे टाल नहीं सने। अच्छा कहिय वे बोले।

कम्युनिमके बारेमें आप क्या सोचते ह? क्या आपने सयालं अुससे हिन्दुस्तानका भला हो सकता है? यह अनका पहला सवाठ था।

रूसी ढगका अर्यात् लोगा पर अपरसे जवरन्स्ती लादा हुआ कम्युनिम हिन्दुस्तानक लिए बिल्कुल नामुमकिन होगा। म तो अहिंसात्मक साम्यवादमें विश्वास करता हूँ। गापीजीन कहा।

पर रूसी कम्युनिम तो खानगी सपत्तिके खिलाफ है। क्या आप खानगी सपत्ति रहन देना चाहते हैं?

अगर कम्युनिज्म अगर किसी तरहकी जोर-जबरदस्तीके आ सकता हो, तब तो बुझवा स्वागत होगा। क्योंकि बुझ हालतमें संपत्ति पर किसीका भी अधिकार तब तक नहीं होगा जब तक कि वह जनताकी आरसे और जनताके लिये नहीं होगा। अक लखपतिक पास लाखा हाग। पर वह जनताकी ओरसे अनवा रसक मात्र होगा। और जब कभी सब-साधारणके हितके लिये बुझकी जरूरत होगी तब राज्य सारी संपत्ति पर अधिकार कर सकंगा। क्या समाजवादके बारेमें आप और जवाहरलालजीके बीच फोकी मतभेद है?

हा है ता। पर वह अितना ही कि वे बुझके अक अग पर जोर देते ह ता मैं दूमेरे पर। व गायद परिणाम पर जोर दत ह और मैं साधन पर देता हू। मैं गायद बुझक स्यालस अहिंसा पर जरूरतस ज्यादा जोर द रहा हू। व भी अहिंसामें विश्वास तो करत ह। पर अगर वे यह देयें कि अहिंसाके द्वारा समाजवाद नहीं लाया जा सकता ता वे अय साधनाका भा काममें लना बुरा न समझेंग। असलमें म ता सद्दान्तिक दृष्टिसे अहिंसाको अितना महत्त्व द रहा हू। मुझ अगर बोझी यह विश्वास दिला दे कि अय साधनामें आजागी लयी जा सकती है, ता भी म बुझ लेनसे अिनकार कर दूगा। वह सच्ची आजागी नहीं होगी।

पर क्या आपका यह स्याल है कि आपके अहिंसात्मक प्रचार (आन्वोलन) स अप्रज हिंदुस्तानको आपके हाथमें सौंपकर यहास चुपचाप चल जायेंग?

हा जरूर मरा यही स्याल है।

पर आपक अिस स्यालका आधार क्या है?

बुझ मित्री सज्जन पर गांधीजीके अिन गलाका बडा अनर पडा। बुन्होंन

य गल लिये लिये और बहन लगे हम अीमात्रा कहलानवालाकी अपेसा आपमें अीसाअी थडा अयिक है। म अिन गलाको सूब मोट माट अगरामें लियकर लगा दूगा।

हा जरूर लिय लाजिय करोकि अार असा न हा ता बुझ अीवरको दयामय कौन बहेगा? तब ता अुम हिंसाका पापक आवर बहना पडगा।

यहा पर वे मित्र हमें छाडकर चले गय। और बाला स्टगन आनसे पहल तो गांधीजी गाडी नीन्में निमग्न हा गय।

हरिजनसेवक १३-२-३७ पृ० ४१३

## हृदय परिवर्तन बनाम वैज्ञानिक समाजवाद

मुझ चिट्ठी-पत्री लिखनवाले कुछ सज्जन बड़ आग्रही ह। व मुझ निग्रह स्थानमें लाना चाहते ह। उनमें स अक नमूना यह है

जब कभी आर्थिक कठिनायिया खड़ी होती ह और जब कभी पूजीपति और मजदूरवाके आर्थिक सम्बन्धोंके विषयमें आपस कोअी सवाल पूछा गया है आपन हमेंगा अपना सरक्षकता का सिद्धांत सामन रख दिया है जो मझ हमेंगा हैरान किया करता है। आप चाहत ह कि धनवान लोग अपनी दौलत और माल मिल्वियत पर गरीबोंकी ओरसे सरक्षक रह और अन्तःक फायदेके लिज्ज खुसे खच करे। अगर म आपने पूछू कि भला यह सभव भी है तो आप कहेग कि म मनष्यको असलम स्वभावत स्वार्थी मानता हू अिसलिअ असे सवाल पूछ रहा हू जब कि आपन अपना सिद्धांत जिस आधार पर कायम किया है कि वह स्वभावत भला होता है। फिर भी राजनीतिक क्षत्रम तो आपके य विचार नहीं ह। नहा तो आपको अपना यह विरवास छोडना पडगा कि मनुष्य असलमें स्वभावत भला होता है। अग्रज भी तो यहा अपनी हुकूमतके समयनमें अिसी प्रकार सरक्षक होनका दावा पेग करते ह।

पर ब्रिटिश साम्राज्य परसे तो आपका विरवास कभीका खुठ गया है और आज अिस साम्राज्यका आपसे अधिक बडा कोअी दुस्मन नहीं है। राजनीतिक क्षत्रमें अक और आर्थिक क्षत्रमें दूसरे नियमका पान्न करे तो यह मेल कसे बठगा ? अथवा आपका मतलब यह तो नहा कि ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश साम्राज्यकी भाति अभी पूजीवाद और पूजीपतिया परसे आपका विरवास नहीं अठा है ? क्याकि आपका यह सरक्षकतावाला सिद्धान्त तो ठीक वसा ही दिखायी देता है जसा राजाआका बीरवरदत्त अधिकारवाला सिद्धांत मातूम होता था। पर अब असे कोअी नहीं मानता। पहले अक आदमीको अपन अय भाधियोकी ओरसे जन्हीके द्वारा दी हुअी राजनीतिक सत्ताको धारण करन दिया जाता था। पर अमन अिसका दुरुपयोग किया और जनतान बुसके खिलाफ बगावत कर दी और अिस तरह लाकसत्ताका जम हुआ। अिसी प्रकार जब वे मुट्गीभर लोग जिह जनतासे आर्थिक

मत्ता प्राप्त होती है और जिस वे अिन लागाकी तरफम धारण करत ह अपनी जिस सत्ताका अुपयोग अपना ही स्वाय साधने तथा औराको नुकसान पहुचानक िय करत लगे ता अुसका अनिवाय परिणाम यही हागा कि जनता अिन थाडम लागाके हायामें स वह अयसत्ता छीन लगी — अर्थात् समाजवाका जम हागा ।

अब तब ता हर भली और बुरी चीजका हासिल करनका सिफ अक हा तरीका — हिंसा — माना गया था । पर जहा किमा भले कामक िय भा हम हिंसाका अुपयोग करन लगत ह ता अुसके साथ अपन-आप कुछ बुराबिया भी आ ही जाता ह और अमस प्राप्त होनेवाल् सुफल पर भी बुरा अमर पडता है । पर अहिंसाका माग हिंसाकी अपक्षा अधिक अुच्च है और वह मनुष्यके पारस्परिक सम्बन्धका विपाकन नही कर दता । म यह भी मानता ह कि आपन जिस अुपायकी वारणरनाका बडी सफलताक साथ सिद्ध कर दिया है । जिसलिअ मरा यह हासिक अभिलाषा है कि आप जिस वतमान अय प्रणालीके साथ अपने अहिंसात्मक तराकास लडकर अिसका अन्त कर दें और अक नवान अय प्रणाली निर्माण करनमें सहायता कर । '

पूजावाद और साम्राज्यवादके साथ मरे व्यवहारमें मुझ काजी अमगति नही िसात्री दती । पत्र-प्रपक्का कुछ विचार भ्रम हो रहा है । मन कमी यद् नहा कहा और न अिसका खयाल ही किया कि राजाका साम्राज्यवादिया और पूजापतियाका क्या दावा है या अुन्हाने क्या दावा किया है । मन ता सिफ यही कहा और लिया है कि पूजाका विनिषोग हमें किम तरह करना चाहिये । फिर दावा करना ता अेक बात है और अुस पर अमल करना जुदी बात है । अुनाहरणाय लोकसबक हानका दावा ता हर बोझी — जैसे मैं भी — कर सक्ता ह । पर कवल दावा करनस हा काजी वसा थाड ही बन जाता है । केविन अगर म अपने दावक अुनुसार व्यवहार भी करने लगू ता सभा मरा कड करगे । अिसी तरह काआ पूजापति मम्पत्ति परम अपना अकान्त प्रभुत्व हाकर म् घापणा कर द कि यह मम्पत्ति ता जनताका है और यह अगवा सरदाष मात्र है ता मयका लगी हागा । बहुत समक है कि मरी मलाह काभी नही मानगा और मर सपन म'च न हा पायेग । पर यह भी ता कौन कह सक्ता है कि समाजवाकियाक सपन मच्चे हाग ? समाजवाका जम अिगलिअ नहा हुआ कि पूजापति अपन घनका दुस्नपात करत ह । जसा कि म बता चुवा ह आगापतिपदूके पहल् मन्में समाजवाक ही नही बल्कि साम्यवाक सिद्धातना भी हाण्ड अुल्लग है । बात असात्में मह है कि अिग हम साम्राजड समाजवाकी विया कहत ह अुसका जम

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

तो तब हुआ जब हृदय-परिवर्तनके तरीके परसे कुछ लोगोंकी थडा अठ गयी। म भी उसी समस्याका हल करनेमें लगा हुआ हूँ जो 'गास्त्रगुद्ध समाजवादियोंके सामने पेश है। हा यह सच है कि म तो हमेशा और सिर्फ 'गुद्ध अहिंसाके रास्ते ही जानवाला हूँ। 'गायद वह असफल भी हो। पर अगर जसा हुआ तो असका कारण अहिंसाकी विधासे सम्बन्ध रखनवाला मेरा अज्ञान ही होगा। म अिसका चाहे प्रवीण प्रवक्तृ न होऊँ पर अिसमें मेरी उद्धा जरूर दिन दिन बढ़ रही है। अखिल भारत भरखा-सघ और अ० भा० ग्रामोद्योग-सघ असी सस्थाओं हँ जिनके जरिये अहिंसाकी बलाकी अखिल भारतीय पमान पर जाच हो रही है। चूकि काग्रसका सचालन पूणतया लोकसत्तात्मक सिद्धान्तोंके अनुसार होता है अत असकी सचालन-नीतिमें समय-समय पर परिवर्तन होना स्वाभाविक है। असे परिवर्तनके कारण मेरे प्रयोगोंमें इन्फ्लैट न आन पायें अिसलिअ काग्रेशन अिन दो सस्थाओंको अल्पत्र किया है जिनके द्वारा म अपन प्रयोग व रोकटोक जारी रख सकूँ। मेरी मनोगत सरसकताकी जाच तो अभी होनको है। सुयोग्य सचालको द्वारा सम्पत्तिका लोकहिताय सबसे अच्छा अपयोग करनका यह जब प्रयास है। अब पत्रके दूसरे हिस्सेको ले। म जीवनको जड दीवारोंसे विभक्त नहीं किया करता। अक 'यक्तिकी भाति राष्ट्रका भी जीवन अविभक्त और पूण हाता है। काग्रस अथवा तपोक्त राजनीतिक जीवनसे मेरे अलग हो जानवे कारण मेरे हृदयसे हिन्दुस्तानकी आजादीके लिअ लगन लेगमात्र भी कम नहीं हुआ है। और न सविनय कानून भंग अहिंसाकी कोअी खास प्रक्रिया है। वह तो अुन अनक अहिंसक प्रक्रियाओंमें स अक है जो किसी प्रकार भी अक-दूसरेसे असगत नहीं हैं। मेरा ता यही काम है कि म जो कुछ भी करूँ असमें अहिंसा ही हो। मेरा तो यह दावा है कि म अपना प्रयोग ठीक 'गास्त्रगुद्ध ढंगसे किय जा रहा हूँ। अहिंसाने बगीचेमें तो कअी पीघ ह। पर अनका अद्गम-स्थान अक ही है। यह कोअी जरूरी नहीं कि सबका प्रयोग अवसाय ही हो। अनमें से कुछ ज्यादा प्रबल हँ कुछ अतन प्रबल नहीं ह। पर ह सब निष्पदवी। फिर भी अुनका अपयोग करते समय कुणालतासे काम लेना पडता है। परमात्मान मुअ जो कुछ भी कौणल दिया है अससे म काम ले रहा हूँ। पर चूकि म किसी खास पीघको छोडकर अक अमुक पीघस काम ले रहा हूँ अिसके मानी यह नहीं कि मन युद्धको छाड दिया है। युद्ध ता लक्ष्यसिद्धिसे पहले रखनवाला नहीं है। अहिंसाक काममें पराजय-असे गदवे लिअ स्थान ही नहीं है।

## क्या आप वर्गयुद्धको टाल सकते ह ?

प्र० — यदि आप मजदूरों किसानों और कारखानोंके श्रमिकोंको लाम  
पहुचाना चाहते ह तो क्या आप वर्गयुद्धको टाल सकते ह ?

अ० — बल्क म टाल सकता हूँ वगैरों कि लोग अहिंसक मागका  
अनुसरण करे। पिछले बारह मास यह अच्छी तरह दिख चुके ह कि  
अहिंसाका नीतिके रूपमें अपनाण पर भी वह क्या कर सकती है। जब  
लोग उसे आचरणका सिद्धान्त मान लते ह तब वर्गयुद्ध असंभव बन जाता  
है। अिस दिग्गमों अहमदाबादमें प्रयाग किया जा रहा है। उसके अत्यंत  
सतोपजनक परिणाम आय ह। और उस प्रयोगके निर्णायक सिद्ध हानकी  
पूरी समावना है। अहिंसक तरीकेमें हम पूजीपतिका नहीं बल्कि पूजीवात्का  
नाश करना चाहते ह। हम पूजीपतिसे कहते ह कि वह अपनाको अन लगाका  
सरसक समझ जिन पर उसकी पूजी बनन टिकन और बनका दारमदार  
है। श्रमिकोंकी पूजीपतिके हत्य-परिवहनकी प्रतीशा बनकी भी जरूरत नहीं  
है। यदि पूजीमें बल है तो श्रममें भी है। बल्का अपुयोग विनाशक और  
रचनात्मक दोनों प्रकारसे किया जा सकता है। दोनों अक-दूसरे पर निर्भर  
ह। ज्या ही मजदूर अपनी ताकतका पहचान लेता है त्या ही वह पूजी  
पतिका गुलाम बना रहनेके वजाय उसका बराबरीका हिस्सेदार बननकी  
स्पितिमें आ जाता है। यदि वह अकेला ही मालिक बनना चाहेगा तो  
वह संभवत सोनका अडा देनेवाली मुर्गीको मार डालेगा। बुद्धि और अव  
सरकी असमानतायें अनन्त काल तक बनी रहगी। नदीके किनारे रहनवाले  
आत्मीके लिअ सूखी मरुभूमिमें रहनवालेकी अपेक्षा फल बुगानका अवसर  
सदा ही अधिक रहेगा। परंतु यदि असमानतायें हमारे सामन ह ता मूलभूत  
समानताओंकी भी हमें अपनी पट्टीके बाहर नहीं समझना चाहिय। पशु  
पक्षियोंकी तरह ही प्रत्येक मनुष्यका जीवनकी आवश्यकताओंके लिअ समान  
हक है। और घूमि प्रत्येक अधिकारक साथ अनुरूप कतव्य और अम पर  
हानवाले हमलको रोजनका अनुरूप अिलाज लगा हुआ है अिसलिअ मूल  
प्रारमिक समानताकी प्राप्ति और रक्षा बननक लिअ अम कतव्य और  
अुपायोंकी ग्राज निवाल्नकी ही बात रह जानी है। यह अनुरूप कतव्य  
है अपन हाथ-परासे परिश्रम करना और वह अनुरूप अुपाय है अम आत्मीसे  
असहयोग करना जा मुझ मेरे परिश्रमका फल छीनना है। और यदि

मुझ पूँजीपति और मजदूरकी मूल समानता स्वीकार है जसा कि होना ही चाहिये तो पूँजीपतिका विनाग मेरा लक्ष्य नहीं हो सकता। मुझ बुसके हृदय-परिवर्तनकी कोशिश करनी चाहिये। मेरा असहयोग वह जो अमाय कर रहा होगा बुसके प्रति अमकी आँखें खोल दगा। मुझ मह डर रखनकी जरूरत नहीं कि मेरे असहयोग करन पर कोजी और मेरा स्थान ले गेगा। क्योंकि मुझ अपने साथिया पर अितना असर डाल सकनकी आगा है कि वे मेरे मालिकके अमायमें सहायता न दें। निस्तानेह सामूहिक रूपमें मजदूरकी असी गिता अक धीमी प्रक्रिया है परतु चूकि अुममें सफलता निश्चित है अिसलिअ वह सबसे तेज भी है। यह आसानीसे प्रत्यक्ष रूपमें दिखाया जा सकता है कि पूँजीपतिके विनागका परिणाम अन्तमें मजदूरका भी विनाग है और जिस तरह कोभी मनुष्य अितना बुरा नहीं होता कि वह सुधारा ही नहीं जा सके वसे ही कोभी मानव प्राणी अितना पूण नहा होता कि जिसे वह भलसं सवथा बरा समझ रहा है बुसके अपने हाया किय नागको अुचित ठहरा सके।

यंग अिडिया २६-३-३१ प ४

२८

### वग विग्रह अनिवाय नहीं है

[ श्री महादेव देसाजीके साप्ताहिक पत्र से। ]

रचनात्मक क्रान्तिके विषयमें वानचीत करते समय श्री वासील मध्युजके गिभागमें कुछ और ही बातके बारेमें गाधीजीस चर्चा करनका विचार पा। अिसीलिअ अन्हान यह विषय छग कि हमारे गावोकी अय रचनामें जमीनार और साहूकारका क्या स्थान हागा ? गाधीजीन कहा आज ता साहूकार अनिवाय बन गया है। पर धीरे धीरे वह अपन-आप हट जायगा। और न सहकारी बकाकी जरूरत रहेगी। क्याकि अब म हरिजनको वह कला सिखा दूगा जो कि सिखाना चाहता हू तब अुहं 'याग नग' धनका जरूरत नहीं रहेगी। अिसके अलावा जो लोग आज भारी मुसीबतमें पस हूज ह वे सहकारी बकाका अपयोग नहीं कर सकते। मझ अह धनका बज या जमीनें दिलानकी अतनी चिंता नहा है मुझ ता अन्के लिअ दाठ रोटी और कुछ दूध जुटानकी चिंता है। जब लोग आल्प्यमें बीतनवाग घटानो दौलतमें बलनकी कला सीख जाते हैं तब हमारी आवश्यकताके अनुसार सारी बातें ठीक हो जाती ह।



पर जमान्तरका क्या होगा ? क्या भूमि भा आप हटा देना या नष्ट कर देना चाहते हैं ?

म जमीन्तरका नष्ट ता नष्ट करना चाहता पर म यह भा नहीं मानता कि भूमिका रहना अनिवाय है। म आपको धुन्धलण कर जरा समझा दू कि अपन सरकारताक मिडाल पर म यहा किम तरह अमल कर रहा हू। किम गावमें जमनालाकजीका तीन-चौपाकी हिस्सा है। अल्पना यहा म सावन्मसकर मा याजना बनाकर नहा बल्कि या ही अचानक आ गया हू। तब मने जमनालाकजाम सहायता मागी ता अन्धान मेर लिअ बेक शोपडा और दूसरे काम करतवाक लिअ मवान बनवा लिय और कहू कि सगावम जा भा कुछ लाभ हा खुस आप गावक लाभक लिअे कायमें लगा दें। अगर म अय जमान्तरका भा जिमी तरह राजी कर सकू ता ग्राममुधार अक आभान बाज हा जाय। बगर अिअक दूसर नवरमें जमीनना सवाल और सरकारका टूटनी समस्या तो है ही। मवाल्क भूमि पहूसे सगध रखनेवाकी कठिनाकिमाता म अभी तो अनी बुराकिया मान लना हू जा अनिवाय हू। अगर मौजूदा कायक्रम मफल हो गया, ता गावक मुझ सरकारी लूका सामना करनका रास्ता भी सूझ जाय।

तब ता आपका वालकिअ अपनीति श्री नेहरूकी अयनीतिमे भिन्न है। क्याकि जहा तक मैन खुहें समझा है व ता जमान्तरका बिलकुल हटा देना चाहते हू।

जी हा, ग्रामाधार और पुनरचनाकी धरी और अनकी बल्यनाक्रमें म जरूर लिखाकी गता है। और मे यह है कि म अक बात पर जोर देता हू ता व दूसरा बात पर। ग्रामाधारकी हलककी तरफ व ध्यान नहीं देन। व बल्यनारखानाका बनाना चाहत हू। पर मुग जिममें गक है कि बल्यनारखाने हिस्सातक लिअ कहा तक लानायक हाय। दूसर व मानत हू कि व किनना भा क्या न टागना चाह अल्पमें जापर वग विग्रह तो हापर रहगा। मरी नाति दूसरी है। मुझ अहिमात्मक तरीकामें जमीनका और पूजापतिपावे लिखा बल्यनारी प्रबल आता और अपना है। किमलिअे मरे लिअे ता वग विग्रहके अनिवाय हान जमी बाकी बात ही नहीं है। क्याकि अहिमाता माग ता अता है जिसमें कममे कम विग्रहका पुजाकिया है। किमानामें अपनी गकिनका मान पैग हात हा जमीनारी प्रपाका बुराकी अपन-आप नष्ट हा जायगा। अगर किमान माक-माक कह दें कि जब तप हमें सान-नपटक लिअे काफी नगी मिन्गा, और अपन आपका तपा बचाका अन्टी तरह गिगा देनक लिअे साधन प्राप्त नहीं हाय, तब तक हम आरकी जमीन पर काम नहीं करग ता बेचारा जमान्तर करेगा ही

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

क्या ? असलमें पदा किय हुआ मालका मालिक तो वह है जो बुसके बुत्पादनके लिय परिश्रम करता है। अगर तमाम श्रमजीवी अवलमदीके साथ अपना सगठन कर ले तो उनकी शक्तिको कौन दबा सकता है ? जिसलिय मुझ वग विग्रह अनिवाय नहीं दीसता। अगर मज्र वह अनिवाय दिसाओ दे तो बुसका प्रचार करन और बुसके तरीके बतानमें मुय काओ हिचकिचाहट नहीं होगी।

हरिजनसेवक ५-१२-३६ पृ ३३४-३५

## क्या समाजवादी क्रांति रामराज्यकी ओर ले जायेगी ?

प्र० — अधिकतर समाजवादियाका यह विदवास है कि समाजवादी क्रांति होतसे हिंदू मुस्लिम झगडा पीछ पड जायगा और आर्थिक सवाल सामन आ जायेंगे। क्या आपकी समझसे यह अठ्ठा होगा कि असी क्रांति हो ? क्या जिससे रामराज्य कायम होतमें मदद मिलेगी ?

अ० — समाजवादी क्रांतिसे हिंदू मुस्लिम झगडा कुछ हद तक तो गत पडगा। अितना तो हम सबका साफ होना चाहिय कि झगडोके बहुतसे कारण होते ह। हिंदू मुस्लिम झगडा मिट जानसे सब झगड मिट जाते ह असा तो नहीं कह सकते। अितना ही कटा जा सकता है कि हिंदू-मुस्लिम झगडन अक भयकर रूप ले रखा है। छोट मोट दूसरे झगड मिट जानसे जिस भयकरताका रूप कम हो जायगा जिसमें गब नहीं है। जब गुलामी मिटकर आजानी जाती है तब समाजकी सारी व्याधिया (बराधिया) धूपर आ जाती ह। जिससे भडकनका कोओ कारण म नहीं पाता। अगर असे मौक पर हुगारा मन स्थिर रहे तो हरअक समस्या हल हो जाती है। हर हात्तमें आर्थिक सवालनो हल होना ही है। आज आर्थिक असमानता है। समाजवादी जडमें आर्थिक समानता है। याडाको करोड और बाकी लोगको सूखी रोटी भी नहा मिलती जसी भयानक असमानतामें राम रापना दान करनकी आगा कनी न रती जाय। जिसलिय मन दक्षिण अफानामें ही समाजवादको स्वीकार किया था। मरा समाजवादिना और दूसरासे यही विराय रहा है कि सब सुधाराके लिय सत्य और अहिंसा ही सबसे बूचे साधन ह।

हरिजनसेवक १-६-४७ पृ १४८

## सेवा और स्वावलम्बनका सिद्धांत

प्र० — जब घनधान कटार और स्वार्थी हो जात ह और बुराजी बराब जारी रहती है, तो लाजिमी तौरम अपनी तमाम भयकरताक साथ जनताका क्रान्ति पदा हाती है। जब जीवन जसा कि आपन कहा है, अबसर बुराजियाके बीच चुनाव है तब प्रान्तिपाने जिनिहामम मिलनवाली गिणाको महेनजर रखते हुअे क्या आप असो अगार तानागाहीका स्वागत करण जा कमस कम जबरनसाके साथ 'घनियाका गणण कर ले, गरीबाके साथ जिसाफ करे और या दानाका सेवा कर ?

बु० — म अदर लयवा किमा और तरहता डिक्टटरगाहाका मजूर नहीं कर सकता। असमें घनियाका लाप नहीं हागा और न गरीबाकी हिफा जत होगी। निदरव ही कुछ धनी मार जायेंग और गरीब मुहताज असहाम हा जायेंग। अब बगके रूपमें घनिक रह जायेंग और अगार विगणक बाबजू गरायाका बग भी बना रहगा। असगा दवा है अहिमात्मक साननय जिमे दूसरे रूपमें सबका सच्चा गिणण कह सकत ह। घनियाका गरीबाकी मवाकी और गरीयाका स्वावलम्बनक सिद्धान्तका गिणा दो जाना चाहिये।

हरिजनसेवक ८-६-४०, पृ० १३८

## बोलोविजम

प्र० — बोलोविजमके सामाजिक अयगाम्भव बारमें आपकी क्या राय है और आपने विचारसे हमारे दाय लिअ असका अनुकरण करना कहा तब ठीक होगा ?

बु० — मुझे स्वीकार करना चाहिये कि बोलोविजम शब्दका अर्थ मं पूरी तरह अभी तक नहीं समस सका हू। मैं अितना ही जानता हू कि दुमना अुद्देश्य निजी सम्पत्तिकी सस्याका सतम कर देना है। यह वाची नयी बात नहीं है। यह तो अय-व्यवस्थाके क्षत्रमें अपरिग्रहके नतिक आग्याका प्रयोग हुआ। और यदि 'आग अिम आग्याको अपनी जिच्छात या समझाने-बुझानेके फलम्बन्ध स्वीकार कर लेत हं तो यहूत अच्छी बात होगी। लेकिन आग्याविजम बारमें मुम जा कुछ जाननेरा दिग्ग है अमन अगा प्रतीत हात है कि यह न बरग दिगार प्रयागका बहिष्कार नहीं करता बल्कि

निजी सम्पत्तिके अपहरणके लिये और उसे राखने सामूहिक स्वामित्वक अधान बनाय रखतक लिये हिंसाक प्रयागकी खप्पी छट देता है। और यदि जसा हा ता मुय यह कहनमें कात्री सकाव नही कि बाल्गाविज्म पासन अपन मौजूदा रूपमें ज्यादा लिन तक नहा टिक सकता। कारण, मेरा दृढ विश्वास है कि हिंसाकी नीव पर किसी भा स्थायी वस्तुका निर्माण नहा हो सकता। "दिन जा भी हो अिममें कात्री सनेह नहा कि बोल्लग विज्म आत्मके पीछे असख्य पुरुषा और स्त्रियाक — जिन्हान असकी सिद्धिक लिये अपना सबस्व बपण कर दिया है — गढनम त्यागका बल है और नसा आत्म जिनके पीछे लनिन जसे महापुरुषाके त्यागका बल है कभी मय नही जा सकता। उनके त्यागका बुद्धल अदाहरण बिरकाल तक जीवित रहेगा और ज्या-ज्या ममय बीतेगा त्या-त्या वह जिस आत्मको अधिकाधिक गार्दि और पग प्रदान करता रहेगा।

यग अिडिया १५-११-२८ पृ० २८१

## ३२

### बाल्गाविज्मका अर्थ

[नावे दिया जा रहा षेव श्री जम० अन० रायन बाल्गाविज्म पर लिख गये मर लेखके अन्तरमें लिख भजा है। म अस खणीसे प्रकाशित करता हू। लेकिन म यह कहे बिना नही रह सकता कि अगर था रायक लेखमें बाल्गाविज्मका सही चित्रण हुआ है तो बाल्गाविज्म बहुत मामूली वस्तु है। जिस तरह म पूजोवादका जुआ बरदाश्त नपा कर सकना असा तरह बाल्गाविज्मका जुआ भी म बरदाश्त नही कर सकता। म मनुष्य जातिका हृदय-परिवर्तन करनमें विश्वास राता हू असका नाग करनमें नहा। कारण बहुत स्पष्ट है। हम सब बहुत अपुण और कमजार हू और यदि हम अस सब गोगाको मारना शुरू कर दें जिनकी रीति-नीति हमें पसन्द नहा है तो जिस पृथ्वी पर अब भा आदमी जीता न बचेगा। भीडका पासन मूजमें व्यक्तिका निरकुण पासन हा है जल्बत्ता अुससे लाख-मुना ज्याग भयकर। जेकिन में आगा करता हू बल्कि मुये लगभग निश्चय है कि बाल्गाविज्मका सच्चा स्वरूप था जम० अन० राम द्वारा खीचे गये अुसके अिम चित्रस नही वादा अच्छा हागा।

— मो० क० गांधी ]

महात्मा गांधीके कुछ अमेरिकी मित्राने बुद्धे असा लिखा है कि धर्मके नाम पर व शायद अनजान ही भारतमें बोलोविष्मके प्रचारका प्रारंभ कर रहे हैं। यह बिन मागी सलाह देनेवाले मित्र—जो जाहिर है कि अपने अिस कायक लिजे (गान्तिवादियाके बानेमें छिपकर रहनवाल) अँगला-सकसन साम्राज्यवादियासे प्ररणा ग्रहण करते हैं—मुसलमान प्रजाओंके विद्रोहको दुनियाकी मुय गतिके लिजे खतरा बतलाते हैं। उनकी अिस भायताका कारण यह है कि बोलोशेविक इस अिस विद्रोहका समयन कर रहा है। महात्माजी जिस अत्यंत बुद्धत पत्रका आमानोसे बडा जवाब दे सकते थे। व अपने अुतरदायी (?) विदशी मित्रा 'को कह सकते थे कि मुस्लिम प्रजाअकि पास विरोध करनका समुचित कारण है, और यह कि जो भी सरकार या राजनीतिक सिद्धान्त अिस विद्रोहका समयन करे आजानीके प्रचारकाकी बुमका आदर करना चाहिय। जिसक सिवा व अिन अमेरिका मित्रासे यह भी कह सकते थे कि अगर दुनियाके लिजे किसी खतरेकी बुद्धे समुचित चिंता है तो बुचित यह होगा कि व अपन देशमें ही बुसने निवारणका प्रयत्न गुरु कर दें। क्या दुनियाकी मुय गतिके लिजे आज अमेरिकी साम्राज्यवात्से बडा कोअी दूसरा खतरा है? क्या मुसलमान प्रजाका विद्रोह कू-बलकम-बलान या 'अमेरिकन लीजन से ज्याग भयकर है? क्या बोलोशेविक अनी-वरवाद अमेरिका जनतंत्रका अशिया-द्रोहा भावनासे ज्यादा अघामिक है?

लेकिन महात्माजीन अैसा सीधा अुतर नहीं दिया। बुन्हान अपने कायका अीचिय यह बहकर सिद्ध किया है कि वे बोलोविष्म प्रवृत्तिसे सवषा मुक्त हैं और उनके विषयमें किसीको अैसी शका नहीं करनी चाहिय। लेकिन आचय यह है कि यद्यपि जसा वे खुद स्वीकार करते हैं वे बोलो विष्मके बारेमें कुछ भी जानते नहीं हैं, फिर भी बुसने बिलाफ बुनकी स्वाभाविक विरोध भावना अितनी बुध है कि व बहुत चिंतापूर्वक यह स्पष्ट करत हैं कि बोलोविष्मके प्रति बुनके मनमें वही कोअी लगाव नहीं है। 'यग अिडिया में अय लेख लिखते हुअ वे कहते हैं 'पहले तो मुझ यह स्वीकार करना चाहिय कि मैं बोलोविष्मका अर्थ नहीं जानता।" कहना होगा कि यह अेक अभी स्वीकारोक्ति है जिससे सवधित अ्यक्तिकी प्रतिष्ठाका बडा धरना लगता है। असा में अिसलिजे कहता है कि बुसका यक्ता अेक विराट जन-आन्दोलनका सवालक है। अगी रूपमें महात्माजीने यह भी कहा है कि वे जानते हैं कि बोलोविष्मके बारेमें अेक-दुगरेके बिन्तुल विरुद्ध दो रायें प्रचलित हैं—'अेक बुगवा अत्यंत डरावना चित्रण करती है और बुस बुरूप बनाती है और दूसरी बुसे दुनियाकी दलित जनताकी मुक्तिका निश्चित बुपाय मानकर बुगवा स्वागत करती है। लेकिन वे यह नहीं जानते कि

अन्य दा विपरीत रायमें से विमर्श विरवान करना चाहिये। यहाँ भी सही निष्पत्ति पर पहुँचने के लिये वे अनेक बहुत आसान थुपाय आजमा सकते थे। वे यह मानूँगे करते—और असा करना बर्तन नहीं—कि बालशक्तिमत्ता वह पक्ष तसवीर काँन ठीक खींचते हैं? यह तसवीर वे लोग खींचते हैं जो दुनिया पर हथियारा और खतपातकी नीतिका अमल करके राय कर रहे हैं। अपना निष्पत्तिताना वृत्तिका आदर करनेके लिये वे दूसरी तसवीर खींचनेवालाकी राय न मानना चाहते ता न मानते। लेकिन महात्माजीका जिस बानका विश्वास दिलानकी जरूरत ता नहा होती चाहिये कि पहला पक्ष मानव-जातिका मित्र या भुक्तिदाता ता नहीं है। जिसलिये जब यह पक्ष किसी चीजको कुरूप बताता है ता मानव जातिका पांडित्य अथ आसानीसे समझ सकता है कि भुक्त जिस कायके पीछे बोझी आगम हेतु है। अतः यह समझनेमें बोझी बर्तनाशी नहीं होनी चाहिये कि तसवीरका डरावना चित्रण करनेमें जिस पक्षका अहंसा धुँहे ठपनका है। युद्धकालमें भारतीय राष्ट्रवादी जिसी महज बुद्धिके द्वारा जब रामटेर मित्रराष्ट्रकी किसी विजयना तार भजता था तब यह समझ लते थे कि जमनीन का सहायिका जानी होगी और इसी सहज बुद्धिका मानकर मेक्सिकोका मजदूर अपनेको गवपूवक बोलाविक कहता है क्योंकि वह देखता है कि अमेरिकी पूँजीपति बोलाविकके बहुत खिलाफ है। लेकिन महात्माजीके असा न कर सकनेका कारण तय यह है कि महात्माका मनोरचना बहुत जटिल होती है और सज्ज बुद्धिको सूझनेवाली बात भुक्त नहीं सूझती।

चूँकि बोलाविकके बारेमें यह ग्राहनीय अज्ञान केवल महात्माजीमें ही नहीं भाराके दूसरे कभी लोगांमें भी पाया जाता है और चूँकि जिस अज्ञानके बावजूद भी वे बोलाविकके बारेमें अपना राय ता बनाते ही हैं जिसलिये जिस खतरनाक सिद्धान्तके बारेमें कुछ गलत कहना अनुचित न होगा—यासकर जिसलिये कि बोलाविक आजका दुनियाका सबसे ज्यादा प्रभावशाली राजनीतिक बल है। (यहाँ यह याद रह कि वह १९१७ की रूसी क्रान्तिका बुनियादी सिद्धान्त है परिणाम नहा जसा कि अक्सर लागाका खयाल है।) जिस तरह सन १७८९ का महान फ्रेंच क्रान्तिन भुक्त कालमें यूरोपके राजनीतिक विचार प्रवाह नीर जावनेका प्रभावित किया था भुक्त तरह यह रूसी क्रान्ति भी हमारे कालमें बड़ी काम करनेवाला है। फल जितना ही है कि रूसकी भौगोलिक स्थिति और असाका प्रातिक प्रत्येक सिद्धान्तके कारण जिस क्रान्तिका प्रभाव ज्यादा बड़ क्षण तक पहुँचेगा और अगिया तथा अफीका भी अतसे अधूरे नहा रहेंगे। यह वस्तुस्थिति है बावजूद ग्रातिका ध्वजा बुढानवाले भुक्त सज्जाने भय और प्रतीपके (अनका जिस प्रतिपिकाका

आमानीसे समझा जा सकता है) जिनकी सद्भावना पर महात्माजी सहज ही विश्वास कर लते हैं किन्तु जिसे दुनियाके अधिक व्यावहारिक लाभ मदहकी दृष्टिसे दमते हैं।

अब जहाँ तक महात्माजीका समय है बाल्गाविज्मके मुख्य सिद्धांत कुछ नम नहीं हैं। वे खुद भी असा ही मानेंगे। लेकिन यदि सिद्धान्ताका कायमें न अतारा जाय तो सिद्धान्ताका प्रेजान गन्तमे ज्याग काभी मूल्य नहा हाता। अपने घोषित लक्ष्य अनुसार महात्माजी यह तो चाहते हैं कि जनता पूजावाकके अजक बाधन मुक्त हो जाय। बाल्गाविज्म भी यही चाहता है। बाल्गाविज्मके पुरस्कर्ता सामान्यतः महात्माजीके अिम कथनसे महमत हैं कि दुनियाके लिये अिम समय सबसे बड़ा गतरा अनुत्पादिवका माय नाम गूय गोपण करनेवाला और लगातार बड़ रहा वह साम्राज्यवादी है जो कमजोर राष्ट्रोंके स्वतंत्र अस्तित्व और विस्तारका नाग करनेके लिये बुद्धन है। लेकिन महात्माजी और बोलगेविज्मके फक यह है कि महात्माजीके हाथमें स्वतंत्रताके अिस मन्गका काभी व्यावहारिक मूल्य नहा रहता, क्याकि वे अुमे नाति पम और अीवरकी अपना गृह्यमय कल्पनाके नियमनमें बाधकर रखते हैं जब कि बाल्गाविज्मके लाभ अपन घ्येय और अपना दृष्टिवा अत भ्रममें घषला नहीं होने देने हैं और दुनिया जमा है वसा हा अुमम व्यवहार करते हैं। फक यह है कि जहाँ साम्राज्यवादी सत्ताओंके सम्मिलित और प्रवृत्त विरोधके हाते हुआ भी दीपवागीन गलामीवी मुदूड श्रृंखलाकी कडियाको लगानार ताडत हुआ बाल्गाविज्म आग बढ़ता जा रहा है वहा गाधावादी अभी अंधरमें अपना गमना हा टटान गहा है और अत नतिक तथा धार्मिक विधि-नियमोंकी मष्टि करता रहता है जो जनताका स्वतंत्रताके लिये लड़नेकी मकल्प गकिनका निर्माण करनेसे रोकते हैं।

म यह मान गता हैं कि महात्माजी गमाजवादी—सॉटे माथिमन टामम मूर, टॉन्स्टाय आदिक कल्पना पर आधारित समाजवादी नहा, बल्कि काउ माकन और फ्रेडरिक अँगल्स द्वारा आर्यिय तथ्या और बर्नार्डिन जानकाराकी भित्ति पर निर्मित बर्नार्डिन समाजवादीक—सामान्य सिद्धान्तोंमें परिचित हाग। ये सिद्धान्त अिम प्रकार हैं (१) अुत्पादनका पूजावागी प्रणालीका अुच्छ (२) कयकितन गम्पतिहा गमापि (३) सामाजिक स्वामित्वके आधार पर अत्यान्त और वितरणके माथनारा पुनगन्त और (४) कर्गोंकी बुराजीम दूगिन समाजका भाजीचारेका भावनाग यकन मालव-परिवारमें ग्पान्तर। यणी मब सिद्धान्त बाल्गाविज्म भी हैं कर्शाकि बाल्गाविज्म गमाजवादीका ही बर प्रारम्भिक अवस्था है जब बर अपन विरोधियोंको परास्त कर गहा हाता है और अिमलिये कुछ अर्थ होता है।

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

बोल्शेविम सरकार को रक्तपात विनाग आतक आदिके साथ जोड़ दिया गया है लेकिन वास्तवमें बुसके मूल अयमें असी कोअी युराअी नही है। बोल्शेविम रूसी शब्द बोल्शेविकीसे बना है और बोल्शेविकीका अय है बहुसख्यक पक्षके अनुयायी। अिस गल्वा प्रयोग पढ़े-पहल तब हुआ था जब सन् १९०३ में कायक्रम और काय प्रणालीक सवाल पर रूसकी सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी दो टुकडोमें बट गयी थी। बहुसख्यक दलके-जिसके नेता लेनिन और कुछ दूसरे लोग थे—कायक्रम और काय प्रणालीका नाम बोल्शेविम पड गया। और चूकि रूसक मजदूर वगन जिसी बहुसख्यक दलके कायक्रम और काय प्रणालीके अनसार लडकर अक्टूबर क्रतिको १९१७ में अपनी विजय प्राप्त की थी अिसीलिअ अक्टूबर क्रतिको बोल्शेविस्ट विजय कहा जाता है। यह बोल्शेविस्ट विजय समाजवादकी पहली विजय है। अब हम रूसी क्रतिके ठोस परिणाम देखें (१) अक अष्ट अनतरदायी और निरकुण शासनका अत हो गया। (२) अन मध्यम वर्गोंका भी सपाया हो गया जो जनतंत्रकी आडमें विदेशी सरकारकी मददसे रूसी जनताका क्रतिके लाभसे वचित करना चाहते थ। (३) जारकी निरकुण सत्ताका मूलाधार जमींदार वग नष्ट कर दिया गया जमीन पूरे राष्ट्रकी सपत्ति घोषित कर दी गयी और किसानोमें बाट दी गयी। (४) बड-बड अद्योग राष्ट्रकी सम्पत्ति घोषित कर दिय गय। (५) बदेशिक यापार पर रायका अकाधिकार हो गया। (६) विधान और शासनकी सारी सत्ता लोक-समुदायकी प्रचड बहुसख्याको यानी मजदूर किसानो और सनिकोको सौंप दी गयी। वे अिस सत्ताका प्रयोग अपनी कौंसिअ या समितियो द्वारा करते ह जिहे रूसी भाषामें सोवियत कहा जाता है। (७) वपकितक सपत्तिका सारा अधिकार और बुसके कारण मिलनवाले सब विश पाधिकार खतम कर दिय गय। य ह बोल्शेविमके सिद्धान्त जिह रूसमें क्रतिके फलस्वरूप व्यवहारमें अुतारा गया है। हमन बोल्शेविज्मकी सामाय जानकारी दे दी अब हम यह जानना चाहेग कि महात्माजी बुसके बारेमें क्या साचते हैं? अिस प्रन्के अुत्तरमें न सिफ भारतको बल्कि सारी दुनियाको दिलचस्पी होगी।

अिसके बाद हम ज्यादा मुक्किल सवाल पर पहुचते ह। महात्माजीको गायद अिन सिद्धान्तोंके खिलाफ कोअी आपत्ति न हो लेकिन अहें कार्यावित्तरणकी रीतिके बारेमें जरूर ही वे अनका शर्तें मनवाना चाहेग। अुनके लिअ ता हर चीजकी अक ही कसौटी है। अगर बोल्शेविम अनीश्वरवाणी है तो वे असके खिलाफ ह। अपन निणायके लिअ अ ह अितना ही काफी हो जाता है। हमन अुहे सक्षपमें बोल्शेविमकी परिभाषा दे दी है। अब



के विचार करें और कहें कि वह अश्वकी अस्वीकृतिका सूचक है या नहीं है। व अश्व अश्वकी अस्वीकृतिका सूचक तब तक नहीं कह सकते जब तक कि व व्यक्तिव सम्पत्ति और स्थापित स्वार्थोंको अश्वरुप विधान न मानता हो। अश्वमें एक कहा कि बोलशविज्म व्यक्तिव सम्पत्ति और स्थापित स्वार्थोंको—जा कि अतिहासके आदिवालय ही मनुष्य-समाजके लिये अभिगम रूप सिद्ध हुआ है—अमान्य करता है। बोलशविज्मका 'यावहारिक' कायत्रममें अश्वर या घमका कोशरी मवाल नहीं है। वह न अश्वरवादी है और न अनीश्वरवादी है। अश्वका सवध मनुष्यके दुनियावा जीवनसे है। अश्वर या घमके साथ अश्वका क्षण्डा यत्न होता है तो तब होता है जब अश्वर और घम अश्वके रास्तेमें आत ह, याना अश्वके 'यावहारिक' कामक्रममें बाधा उपस्थित करत ह। वसी हासनमें बोलशविज्म अश्व सवगक्तिमान माने जानवाले अश्वरकी चुनौती स्वीकार करनमें सक्ताच नहीं करता। तब वह अनीश्वरवादी बन जाता है और महात्माजीकी अनुकूलताको खोनका खतरा बुठा लेता है। ऐकिन असा करने वह न केवल जनताके भौतिक अधिकारके लिये लड़ता है बल्कि अपन हाथमें लागाका बौद्धिक और मानसिक युद्धार करनवाले पानकी माल भी अश्वता है, नाकि अज्ञान और अथविश्वामका वह अश्वर दूर हो जाय जिसमें प्रभुता भोगा घग्ने जनताका युगा-युग तक रसा है।

ऐकिन बोलशविज्मका यह कायत्रम जित महात्माजीका भा मानवता सम्मत मानता पडगा—य जाहिरा सौर पर अपुरी वगके हितारी हिमायन गुन कर दें ता दूसरी बात—व्यवहारमें अतारना आसान नहीं है। अश्वमें एक कहा कि क्रातिक वाद रममें अत्यन्त विनागकारी गृहपुद्ध चला और आतवका राय रहा। ऐकिन अश्वका कारण यह था कि अश्व कायत्रमका कायान्वित हुाना रावनन लिये विरोधियान बडा प्रजल प्रतिराध चलग्या। यह प्रतिराध न सिफ अश्व अभिजात और मध्यम वगके आगाने जा अपनी खापी खाजी फिरने जान ग्या चाहत थे चलाया बल्कि अश्वें सारा दुनियाके अश्व वगैरी प्रगट मन्त्र भी मित्रा। क्याकि अश्वाने देग लिया कि अश्व क्राति अश्व किनेकी प्राचीरमें गोपा पडगा दरार है। अश्व प्रतिराधकी अश्व सनत चलाया घपा मुहिमका अश्व अग मह था कि व बोलशविज्मका विषय अत्यन्त डरायन रगामें करते थ। अश्वका बात है कि महात्माजी भा अश्व हूँ तब अश्व अश्व शूठ विषयम प्रभावित हा गये ह। अश्व यह है कि अश्वस्थित परिस्थितिमें बोलशविज्म क्या कर सकत थ? अश्व सामने दो ही विकल्प थे अश्व ता मह कि व सगी मजदूर और बियानाने बहु देने कि व अश्वरकी और घमकी बात मानकर गुलागागा अश्व जजाराको पुन स्वीकार

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

कर ल जिहे मुन्हान अितनी वहादुरीस तोडा या। और दूसरा यह कि अगर भीस्वर और घम अन्के रास्तेमें आत ह तो अपनी जीती हुअी आजानीकी रसा और मजबूतीके लिअ भीस्वर और घमके खिलाफ भी लड ल। परिस्थितियान बाल्गाविमको दूसरा विकल्प चुननेके लिअ बाध्य किया। कारण रुसी मजदूरों और किसानोंको पुन जा र बादगाहा और पूजीपतियाके अत्याचारी शासनके पागमें फासानके लिअ न सिफ सारे भौतिक साधनाको जिकट्टा किया गया था और काममें लाया जा रहा था बल्कि जीस्वर और घम आन्के हथियाराको भी अन्के खिलाफ अनी अह्म्यस अिकट्टा किया गया था। बाल्गाविम जीस्वरकी भक्तिका जपदेग नहीं करता और बाल्गाविमके अनुयायी या प्रचारक जीस्वरके दूत नहीं ह। किन वाग्ग विम अमुरत्वका हामी भी नहीं है। महात्माजी जनताका हृदयके रास्तेस अन्की सत् प्रवृत्तिके द्वारा छूना चाहते ह। अन्की यह जिछा और कोणिंग मली मालूम हाती है और यदि अपरी वर्गोंकी प्रभता और साम्राज्यवादके अत्याचारस जनताका अद्वार करनम वह अपयोगी साबित हुअी हाती ता तरह महात्माजीकी अनुशासन की बात भी सगयास्पद है। जिती आध्यात्मिक कल्याणके लिअ अछी हा सकती है लेकिन वह आजानीके लिअ लडनकी अन्की सगल्प गकिनको जरूर कमजार करता है। हृदय मत प्रवृत्ति अनुशासन आदिकी य बात स्मरणातीत कालसे कही जाती रही ह जो अह करते रहे ह वे जानते रहे हा या नहीं अन्स निचर वर्गों पर अपरी वर्गके सत्ताके बघन अधिक मजबूत ही हुअ ह। बाल्गाविम किती भी कतयका वह कितना ही अरुचिकर या कठिन क्या न हो टागता नहीं है। वह भीस्वरके अस्तित्वको चनीती देता है और अिस मायतास बुदभूत घम और नीतिकी यवस्थाआका खडन करता है क्याकि आजानीकी लडाओके दरमियान य सब शासकाकी निरकुश सत्ता और अत्याचार और दमनके पन्म खड दिखाओ देत ह।

यन् भीस्वर और पृथ्वी पर अस्के प्रतिनिधि अहिक सवालामें दखल देना छोर् दें तो बाल्गाविम भीस्वरका अस्की जगह रहन देनके लिअ तयार है। अिन यदि व अपनी अति भौतिक (Supermaterial) स्थितिमें सतुष्ट रहनके लिअ तयार नहा ह और पृथ्वी पर गडबड फलात ह तो बाल्गाविम घमन जनताको अगानके जिस जालमें जकड रखा है अुसस अस्का अद्वार करनके लिअ अनीस्वरवाग्गका प्रचार करनमें भी नहीं चूकेगा।

## युवा साम्यवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर

[श्री महादेव देसायीकी 'लदनकी चिट्ठा' स।]

श्रीमती नायडूमें कुछ हल्का-हल्का प्राधान्य रामकी महिलाओं तथा काम्युद्धवा प्रेम है साथ ही अपन नौजवान बच्चाके लिये अतना ही रक्त भी है। उस दिन बुन्हान गाधीजीस युवा भारतीय साम्यवादियान् अक दलका परिचय कराया जिसका नेता अतना सबसे छोटा पुत्र बाबा था। जसा स्वाभाविक था गांधीजाने अिन रक्तहीन प्रतिस्पर्धाका अघ्यक्ष श्रीमती नायडूके ही बनाया गयाकि बुन्हान ही जिसकी अ्यवस्था की थी।

य अभी नौजवान अपनी मातृभूमि अगमन निरागित-सं थे और अमकी सेवाकी सच्ची अगन रखते थे। मरा अणाल है कि अतन सबका गाधीजीस अडा प्रेम था और यह अतनकी समझमें नहीं आता था कि जब गाधीजीका नामाजित अयके लिये अितनी आतुरता और अराजकी अितनी चिन्ता है तब अतनके सिद्धान्तासे सटमत हूअ किना वे कस रह सकते ह। बाबा अश्रीगणन करते हूअ कहा 'हमें आपकी भाषा अमजनमें अकसर अठिनाओं अनुभव हाती है अयाकि आप न कसए अक राष्ट्रका अलिक अग्रजी भाषाका भी नये भाषेमें ढाल रहे ह और हमें अओ बार अगा अगना है कि जब आरक अयनका अक अथ हाता है तब अग अतनका अिलकुल दूसरा ही अथ अगन ह। अिमलिअे हूअ यह अेअन आपे है कि हमारे प्रकट मत अेअने पीछे कभी समान पुच्छभूमि खोजी जा सपता है मा नहीं। मह अकअर बुन्हान अपनी बापी अडा अदनमाला जिस व अान दिन पहल गाधीजीक पास छाड गम थ, गरु की। अतनमें स कुछ अरन और गाधीजीके अततर नीचे अिये जाने ह।

### विनापायिकार-अ्राप्त अगोंकी स्थिति

पहला अरन यह था

आपक अयाअन भारतीय राजा-अहाराजा अमीअर अिल-मालिक, सानूअर और दूसरे मुनाअाअन लोग अनवान कस अनत ह ?

गाधीजीन अततर दिया अभी ता आम अनताका गोपण करके ही अनत ह।

अिर बुन्हान पूछा कना य वग अरतके अनदूरा और अिमानके अायणक किना अनवान अन अकन ह ?

गांधीजीने जवाब दिया हा अमुक हूँ तब ।

क्या जिन वर्गोंके सामूची किसान और मजदूरमे जो धन जुटानेका काम करता है अधिक आरामसे रहनेमें बोझी सामाजिक 'याय है ?'

गांधीजीने स्पष्ट रूपमें ब्युत्तर दिया 'बिल्कुल नहीं।' फिर वे समझाने लगे समाजकी मेरी कल्पना यह है कि हम पन्ना तो समान दरज पर होते ह अर्थात् हम सबको समान अवसर पानेका हक है परंतु हम सबकी क्षमता भवती नहीं है। प्रकृतिकी रचना ही असी है कि सबकी क्षमता भवती ही नहीं सकती। अदाहरणके लिये सबकी जवती बूचाओ भवसा रंग या बुद्धि आदिकी भवती मात्रा नहीं हो सकती। अिसलिये कुदरतन् ही कुठ लोगाकी कमानकी योग्यता अधिक होगी और दूसरोकी कम। बद्धिशाली लोगाकी योग्यता अधिक होगी और वे अपनी बद्धिका अिस कामके लिये अुपयोग करेय। यन्ि वे अपकारकी भावना रखकर अपनी बद्धिका अपयोग करे तो रायका ही काम करेय। असे लोय तो द्रुस्टी या सरक्षक बनकर रहते ह और किसी तरह नहीं। म बुद्धिशाली आदमीको अधिक कमान दूगा असकी बुद्धिको कुठित नहीं करूगा। परंतु अुसकी अधिकता कमाओ रायकी भलाओके लिये बस ही काम आनी चाहिये जैसे कि वापके तमाम कमाओ बटाओी आमन्नी परिवारके बोधम जमा होती है। वे अपनी कमाओको सरक्षक बनकर ही रखेंग। सभव है कि अिसमें मज्ञ बरी तरह अिसफलता मिले परंतु म अिसी िगामें चल रहा हूँ। और बनियानी अधिकाराका घोषणा में भी यही अध निहित है।

### वगपुद्ध

अिसमे वगपुद्धकी चर्चा छिड गयी। प्रदन यन् या कि अुनस किणप अधिकार भोगनेवाले वर्गोंका वाछित कायापलन् किया जा सकता ह या नहा ?

प्र० — क्या आपका यह खयाल नहा है कि किसान और मजदूर आर्थिक और सामाजिक मुक्तिके लिये वगपुद्ध चलाकर ठीक कर रहे ह ताकि वे समाजके मुफ्तसोर वर्गोंका भरण-पोषण करनके भारसे सदाके लिये मुक्त हा जायें ?

अ० — नहीं। म स्वय अुनके पदामें क्रांति कर रहा हूँ परंतु वन् अहिंसक क्रांति है।

प्र० — युक्तप्रातमें लगान कम करानक आन्दोलनसे आप किसानकी स्थितिमें सुधार कर सकने ह परन्तु अस प्रणालीकी जन् नहीं काटते।

अु० — हा। परंतु भव हा माय सब कुछ नहीं किया जा सकता।

प्र० — तो फिर आप सरक्षकता (ट्रस्टाशिप) कैसे लायेंगे? समझा बुझाकर ही न?

जु० — केवल जवानस समझा-बुझाकर नहीं। मैं अपने सुपाया पर सारी शक्ति लगाऊंगा। कुछ लागान मुझ अपने समयका सबसे बड़ा क्रांतिकारी बताया है। यह गलत हो सकता है, परंतु मैं अपने-आपको अब क्रांतिकारी — अहिंसक क्रांतिकारी मानता हूँ। मेरा सुपाय असहयोग होगा। काशी व्यक्ति सर्वधित लागाके अिच्छा या अनिच्छामे किये गये सहायगके बिना धन अिकट्टा नहीं कर सकता।

### विशेषाधिकार प्राप्त वग सरक्षकके रूपमें

परंतु अिससे प्रश्न पूछनवालाको पूरा सतोष नहीं हुआ। व ता कुछ वगोंको प्राप्त आजके विाग अधिकारके आधारका ही चुनौती दे रहे थ। अुन्हान पूछा 'पूजीपतियाका सरक्षक (ट्रस्टा) किसन बनाया? अहूँ कमीगन सेनका हक क्यों है और वट आप कैसे तय करगे?' गाधीजीने समझाया, 'अुह कमीगन सेनका हक अिसलिअ है कि रुपया अुनक कर्जमें है। किसान अुहें मरक्षक नहीं बनाया है। मैं अुनसे सरक्षक बन जानना अनुरोध कर रहा हूँ। जा लाग आज मालिक बन हुआ हूँ अुनसे मैं कहता हूँ कि व मरक्षक बनकर पाम करे अर्थात् उसे सरक्षक बन जाय जा अपने अधिकारस नहीं परंतु जितना अुन्हान गापण किया है अुनक दिया हुआ अधिकारस मालिक रहें। मैं मनमान तौर पर यह तय नहीं करूंगा कि वे क्या कमागन ल परंतु अुनस कहूंगा कि जितना अुचित है अुतना ही ल। अुन्हाहरपाय, त्रिस आदमीक पास १०० रुपय हूँ अुनस मैं कहूंगा कि ५० रुपये तुम लो और बाकी ५० रुपय मजदूराका दे दो। परंतु जिनके पास अब करोड रुपय हूँ अुम पाय अपने लिअ अब प्रतिगत ही रखनको कहूंगा। अिग प्रकार आप देखते हूँ कि मैं कमीगनकी कोजी निश्चिन रखन मुवरर नहीं करूंगा अर्थात् अुनका परिणाम भयकर अयाय होगा।

### अहित बनाने प्रणाली

अिसके बाकी प्रश्नमागाना सबय भारतीय पूजीपतिया और जमागरके विरुद्ध गड जानेवाटे युद्धक प्रति गाधीजीक रक्षक था। अितने गाधीजीको प्रणाली और मनुष्यके धाव-भ्रं करनकी आवश्यकता समझानका अवसर निया। अिगमे वे अपना भूमि-सवधी और आर्थिक कायत्रम भी ठीग रूपमें अुपस्थिन कर गये। साम्यवाणी सवकान कहा 'राजा-महाराजाभा और जमीनाराने अम्रजाका साथ निया। परंतु आपका ता आम जनताक समपन प्राप्त होता है। अुधर आम जनता अिन वगोंका अपना गनु समझती है। जब आम जनता

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

हाथमें सत्ता आ जायगी उस समय यदि असल अिन वर्गोंके भाग्यका निणय कर दिया तो आपका क्या हल होगा ?

गांधीजीन अुत्तर दिया आज तो आम जनता जमींदारों और दूसरे मुनाफाखोराओंके अपना गन्धु नहीं समझती। परंतु अिन वर्गोंकी तरफम विय जानवाते अयायका भान आम जनताको कराना होगा। म आम आगाको पूजीपतियाओंके अपना दुश्मन समझना नहीं सिखाता परंतु म अहे यह सिखाता हू कि वे स्वय ही अपने दुश्मन हं। असहयोगियान लोगका यह कभी नहीं कहा कि अग्रज या जनरल डायर बुरे हं। मुन्हान लोगको यही समझाया कि वे अक प्रणालीके गिकार हं। असलअिअ वह प्रणाली नल् की जानी चाहिय न कि अुसके गिकार बन हूअ यक्ति। यही कारण है कि आजानीकी चाहसे अितनी प्रचलित भारतीय जनताके बीच भी ब्रिटिश कम चारी निभय होकर रह सकते हं।

अपना सामूहिक हमला जारी रखते हूअ अन्हान फिर पूछा यदि आप किमी प्रणाली पर आक्रमण करना चाहते ह तो अक भारतीय पूजीपति और अक अग्रज पूजीपतिमें कासी फक नहीं हो सकता। आप करवनीको जमींदारोंके प्रति क्या नहीं लागू करत ?

गांधीजीन अुत्तर दिया जमादार अक प्रणालीका अस्वभाव है। ब्रिटिश प्रणालीके साथ ही साथ जमींदारोंके खिलाफ भी आंगोलन करना जरूरी नहीं है। दोनोंमें भद करना संभव है। परंतु हमें लोगका जमींदारोंका लगान चकानसे रोकना पडा क्याकि अिन्ही रूपयामें से जमींदार सरकारको देते हं। हमारा लद जमींदारोंके साथ अस वक्त तक कोअी शगडा नहीं है जब तक वे कानकारोंके साथ अगुा बरताव करते हं।

### ठोस कार्यक्रम

प्र — किसान और मजूदरोंको अपन भाग्यका निणय करनका पूण अधिकार लिलानके लिय आपका ठोस कार्यक्रम क्या है ?

अ० — मेरा कार्यक्रम वही है जिस पर म काग्रसके मारफत अमल कर रहा हू। मअ दूल् विश्वास है कि अिसके परिणामस्वरूप आज अुनकी स्थिति अस स्थितिसे कहा थप्ट है जो लोगकी यानमें पहेले किती भी समय रही हो। म अिस वक्त अनकी आर्थिक स्थितिची बात नहीं कर रहा हू। म अस जवरल्सत जागृतिका जिक्र कर रहा हू जो अुनमें आ गयी है और अिमके कारण अुनमें अयाय और गोपणका विरोध करनकी योग्यता पना हो गयी है।

प्र० — किसानों का अनुके ५०० करोड़ रुपयेके बजसे मुक्त करतक लिये आप क्या अुपाय करतऱा चाहत ह ?

अु० — बजकी ठीक रकम नो किसीको भी मालूम नहीं है । मगर जो भा हा यत्न काग्रेसका सत्ता मिली ता जस वह जानवाली विन्नेगी सरकारके अन्तर्गतका जिम्मेदारी अुसका स्वान देनेवाली भारतीय सरकार द्वारा स्वीकार किये जानका जाव करायोगी वम ही वह किसानके कथित कजका भा जाच करानका आग्रह रखगी ।

यग श्रिटिया २६-११-३१, पृ० ३६७-६८

### ३४

## अपनी बुद्धि पर ताला न लगाविये

[धम्बराके मजदूरोंकी अक सभामें बोलत हुअ काशीजीने हिन्दीमें जो भाषण दिया था अुसका मार नीचे लिखा जाता है । अस सभामें कुछ नोजवान साम्यवादिषान गडबड मचाओ थी । — म० ३० ]

म जानता था कि भारतमें साम्यवाणी ह । परन्तु मेण्ट जल्ब मिवा बाहर अुनसे मिलनेका मौका नहीं आया था और न अुनक भाषण मने सुने थ । दो थय पूत्र अपने युवकप्रान्त (अु० प्र०) क बीरेमें मन मरठके बन्धियाके मिलतका राम ध्यान रखा था और अस तरह अुनका कुछ परिचय प्राप्त किया था । आज मन अुनमें से अकका भाषण सुना । म अुनसे कह सक्ता हू कि वे मजदूरके लिअ स्वराय प्राप्त करतका दावा भले ही बहुत करत हा, परन्तु भुस अुनकी गकिनमें गवा है । जब कि अिन नोजवान साम्यवाणियोंमें से किसीका जम भा नहा हुआ था, अुमन बहुत पहल हा मन मजदूरके कामका अपना बना लिया था । मन दक्षिण अन्दी कामें अपन समयका सर्वोत्तम भाग अुनक लिअ काम करतमें लगाया था । म अुनके साथ अुनक मुस-दुसमें अेक सायागी तरह भाग लेत हुअे रहता था । अिमलिअे आपका समझ अेना चाहिय कि म अिमिकाका आरय वाअनका दावा क्या करता हू । मैं आपका निमत्रण अ्ता हू कि आप मरे पाम आशिय और ममस जितन माफ लिये कवा कर सर कीजिये ।

आप साम्यवाणी हानेका दावा करते ह परन्तु साम्यवाणी जीवन ध्यतीत करत लिताओ नहीं दते । म आपका बता दू कि म साम्यवाद गल्ब अुत्तम

अधमें खुसके आदमके अनुसार जीनका भरगव प्रयत्न कर रहा हू। यानि आप केगके अपने साथ ल चाना चाहत हा तो आपमें देगके समझावर खुस पर अगर डालनेकी साम्यता होनी चाहिय। आप दबावम भसा नही कर सकते। आप देशको अस्त विचाराका बनानके लिअ विनागका पय ग्रहण कर सक्ने ह। परन्तु आप कितन औगाना विनाग करगे? करोडाका तो कर नहा सकते। अगर आपके साथ लाला लाग हा ता आप कुछ हजारको मार सकते ह। परन्तु आज ता आप मुटडीभरसे अधिक नही ह। म आपम कहता हू कि आप काप्रेसका मत बल्ल सक्त हा तो बल्लवर खुसे अपन हायमें ले लीजिय। केकिन शिष्टताके प्रारम्भिक नियमाको तोहनसे क्या लाभ? और शिष्टताके अिन नियमाका ताडनका कोओ कारण भी तो नहा है। अपन विचाराको पूरे तरह प्रयत्न करनका आपको अधिकार है। भारतवषमें अिननी सहिष्णता है कि काओ भी अपना बात साथक डगस कह सक तो वह धीरजसे सुन लेगा।

जस्माया सधसे मजदूराका कोओ नुकसान नहा हुआ है। मेरा दावा है कि धरी किसी भी प्रवृत्तिसे मजदूरोका कभा हानि नही हुआ कभी हा ही नहा सक्ती। यदि काग्रस परिपदमें अपन प्रतिनिधि भजगी ता व किसानो और मजदूराक स्वरायके निवा और किसी स्वरायक लिअ अपना जोर नही लगायेंग। साम्यवाणी लले अस्तित्वमें आनम बहुत पहन ही काग्रस निदचय कर चुकी थी कि जो स्वराय श्रमिका और कृषकके लिअ न हो खुसका कोओ अय नही होगा। गायद यहाक मजदूरास किसीको भी २ रुपय मासिकसे कम मजदूरी नही मिन्ती। परन्तु न म सिफ आपके लिअ बलिक अुन धार परिश्रम करनेवाल और बकार लाला लोगके लिअ भी स्वराय प्राप्तिका कोगिा कर रहा हू जिनका एक जून भी पूरा खानका नही मिलता और जिहे बासा राटीके टकड और चुटकी भर नमकसे काम चला केना पडता है। परन्तु म आपका धारा नही दना चाहता। मुझे आपको अवश्य यह चेतावनी दे दनी चाहिय कि म पूजीपतिपाका बुरा नही चाहता म अह हानि पहुचानका विचार नहा कर सक्ता। परन्तु म बल्ल-सहन करके अुनकी कनय भावनाको जगाना चाहता हू। म उनके लिअ पिघलाकर अपन कम भाग्यशाली भाजिसके प्रति अनस पाय कराना चाहता हू। वे मनुष्य ह और अुनमे का मया मेरी अपील व्यय नही जायगी। जापानक इतिहासम त्यागी पूजीपतिपके बहुतमे अन्तहरण मिलते ह। पिठले सत्याग्रहके निनाम पूजीपतिपोने खासी सख्यामें बन् त्याग किया। वे जेलमें गय और अुन्हाने बड बड कष्ट अडाय। क्या आप अह अपनसे अलग करना चान ह? क्या आप नही चाने कि समान अुद्देश्यके लिअ व आपक साथ काम कर?



आपन मुझस यह जानना चाह् है कि मेरठक बन्ध्याकी मुक्तिक लिजे म क्या कर रहा हू। म आपका बताना चाहता हू कि यदि मेरे पास सत्ता होती ता म हमारे जेलामें जितने भी बन्दी ह उन सबका मुक्त कर दता। लेकिन अूनकी मुक्तिका म समझौतेका पूव गत नहा बना सकता था। बसा करना यामाचित न होता। म आपको बताना चाहता हू कि अहें छुडवानके लिजे म अपनी पूरी कोशिश कर रहा हू। यदि गान्त वातावरण पदा करके आप लग भेरे साथ सहयोग करनका निणय कर ती सभव है कि हम अून सबका — यहा तक कि गडवाती बन्ध्याको भी छुटा सकेंगे। आप लोग आजानीकी बात करत ह। क्या म भी अूस अुतना ही नही चाहता जितना आप ? ('आजानीका मार' की आवाजें।) हा ठीक है म आजानीका मार चाहता हू अुसकी छाया नहा। म कहना चाहता हू कि आप यादा धीरज रखें और देखें कि अुचित समय आन पर अपनी अल्पतम मागके रूपमें बाग्रम क्या मागती है। मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि कराचीमें हम अपना ताहीरवाला प्रस्ताव फिर दुहरायेंग और यदि हम लोग गोलमज परिपत्रमें गये तो या ता हम जा चाहत ह वही लेकर लौंयेंग या कुछ भी नहा ँगे।

आपन 'ग्यारह मुद्दा' के बारेमें भी पूछा है। मेरे खयालस अिन ग्यारह मुद्दोंमें आजानीका सार आ जाता है। अूनमें किसानता और मजदूरका पूरी सुरक्षा प्रश्न का गयी है। लेकिन समझौतेका चर्चामें म अिन मुद्दाका अुत्तर नही कर सकता था, क्योंकि य भदे सविनय आनामगके विकल्पके रूपमें पग किये गये थे। अब स्थिति यह है कि सविनय आनामगका आन्तालन हम घना चुके हैं और यन्ि हमें निमप्रण मिन्ता है ता हमें गोल्मेज परि पत्रमें अपनी राष्ट्रीय माग रखनक लिजे जाना है। यन्ि हम वहा सपन्ता प्राप्त करते ह तो ग्यारह मुद्दाकी पूर्ति हो ही जानी है। आप विश्वास रखिये कि जो स्वराय अिन ग्यारह मुद्दोंकी पूर्ति नही करेगा वह मुझे माघ नहीं हागा।

औरकरने आपका बुद्धि और योग्यता प्रश्न की है, अुसका मन्सयान कीजिये। मेरी आपस बिननी है कि अपनी बुद्धि पर ताला न लगाविये। भगवान आपकी सहायता करे।

यग त्रिदिया २६-३-३१ पृ० ५३

## साम्प्रदायिकों का मुकाबला कैसे करें ?

प्र० — साम्प्रदायिकों का प्रसक्त सत्ता विरोध कर रहे हैं। हम जनता प्रवृत्तियों का प्रतिकार कैसे कर सकते हैं ?

बु० — मान्यता होता है कि साम्प्रदायिकों को बखड खड करना अपना पैसा बना लिया है। उनमें मेरे मित्र भी हैं। कुछ तो मेरे लिये पुत्र जैसे हैं। परन्तु वसा दिलाभी देता है कि वे 'याव-अयाव और सच-झूठमें काली फक नहीं करते। वे अिम अिलजामको स्वीकार नहीं करते परन्तु अपने कल्याण समाचारसे अिसको पुष्टि हाती मालूम हाती है। अिसने अलावा मात्रम होता है कि वे 'रसक' आदेशों पर काम करते हैं क्योंकि वे भारतक बजाय रूसको अपना आ-यात्मिक घर मानते हैं। म किसी बाहरी शक्ति पर अिम तरह निर्भर रहना बर-गस्त नहीं कर सकता। मन तो यहा तक कह दिया है कि अपन मौजूग लाल-सकटमें हमें रूसी गहू पर भी दारमदार नहीं रखना चाहिये। हममें अितना सामर्थ्य और माहम होना चाहिये कि विदेशी दानक बजाय अपनी भूमिसे जो कुछ मिल पाय अमी पर हम गजर कर सकें। नहीं तो हमें अक स्वतंत्र देशके रूपमें जिदा रहनका हक नहीं होगा। यही बात विदेशी विचारधाराआ पर लागू होती है। म बु-ह अुमी हूँ तब स्वीकार करूंगा कि अिस हद तक म बु-ह पचा सकूंगा और भारतीय परिस्थितिक अनुकूल बना सकूंगा। म नय विचारोंको राकना नहीं चाहता पर म अुनका गुलाम भी नहीं बनना चाहता।

अिसलिये साम्प्रदायिकों का मुकाबला करनक लिये मेरा मसला यह है कि मैं जनते हाथसे मर जाऊंगा मगर अुन पर हाथ नहीं अठाऊंगा।

हरिजन ६-१०-४६ पृ० ३३८-३९

३६

### शरीर-श्रम क्या है ?

प्र० — जिन टॉल्स्टॉय रोटीव लिखे श्रम करना कहत ह, अउसके बारेमें आपका क्या अभिप्राय है ? क्या आप शरीर-श्रम करने अपनी आजीविका प्राप्त करत ह ?

अ० — सब पूछा जाय ता 'रोटीवे' लिखे श्रम करना म गब्द टॉल्स्टॉयक ह ही नहा। अन्हान दूसरे एक रूसी लेखक बोल्शेव्हम अुहें ग्रहण किया था और अुनका अर्थ यह है कि हरअकको राटा पानेक लिखे आफी शारीरिक महनत करना चाहिय। असलिअ आजीविकाका विगाल अम करने पर यह आवयक नही है कि शारीरिक महनत करत ही आजीविका प्राप्त का जाय। अकिन हर आत्माका कुछ न कुछ अुपयोगी शरीर-श्रम अवश्य करना चाहिय। अभी ता म शरीर-श्रम सिफ बातनेमें ही करत ह। यह तो शरीर-श्रमका एक प्रतीक मान है। म काफा शरीर-श्रम नही कर रहा ह। और यह भी एक कारण है कि म अपनेका मित्राके दान पर जीनवाला कहता ह। अकिन म यह भी मानता ह कि हरअक राष्ट्रमें अम मनुष्याका आवयकता है जो अपना शरीर मन और आत्मा सब कुछ राष्ट्रका अपण कर देने ह और जिहें अपनी आजीविकाक लिखे दूसर मनुष्या पर अघान् औबर पर आघात रचना पढता है।

हिन्दी नवजावन ५-११-२१ पृ० ०५

## 'शरीर-धर्म' के कानूनकी खोज

शरीर-धर्म तमाम मनुष्याके लिअ लाजिमी है यह बात पहले-महल टॉलस्टायका अक निबध पत्रकर मरे मनमें बठ गयी। यह बात अितनी साफ जाननके पहले अुस पर अमल ता म रस्किनका अट न्जि लास्ट (सर्वोदय) पढकर तुरत ही करन लग गया था। शरीर-धर्म अग्रजी गल् ब्रड लेबर का तरजुमा है। ब्रड-लेबर का गदने मताबिक अनुवां है राटी (के लिअ) मजदूरी। रोटीके लिअ हरअक मनुष्यको मजदूरी करनी चाहिय शरीरको झकाना चाहिय यह औस्वरका कानून है। यह मूल खोज टॉलस्टायकी नहीं है लेकिन अुससे बहुत कम मगहूर रशियन लेखक बोदरेह (T M Bondarev) की है। टॉलस्टॉयन अुसे रोगन किया और अपनाया। अिसकी झाकी मेरी आखें भगवद्गीताके तीसरे अध्यायमें करती ह। यन क्रिय बिना जो खाता है वह चोरीका अन्न खाता है असा कठिन गाप यज्ञ नहीं करनवालेको दिया गया है। यहा यज्ञका अय शरीर-धर्म या रोटी मजदूरी ही गोभता है और मेरी रायमें यही मुमकिन है। जो भी हो हमारे अिस व्रतका जम अिस तरह हुआ है। बुद्धि भी अुस चीजकी ओर हमें ले जाती है। जो मजदूरी नहीं करता असे खानका क्या हक है? बाबिबल कहती है अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमा और खा। करोडपति भी अगर अपन पलग पर लाटता रहे और अुसके मुहमें कोअी खाना डाठे तब खाय तो वह ज्यादा देर तक खा नहीं सकेगा। अिसमें अुसको मजा भी नहीं आयगा। अिसलिअ वह कसरत वगरा करके भूख पदा करता है और खाता तो है अपने ही हाथ-मुह हिलाकर। अगर या किसी न किसी रूपमें अगाकी कसरत राय रक सबको करनी ही पडती है तो रोटी पदा करनकी कसरत ही सब क्या न कर? यह सवाल बुद्धरती तौर पर अठता है। किसानको हवाखारी या कसरत करनके लिअ कोअी कहता नहीं है और दुनियाके ९० फीसदीसे भी ज्यादा लोगाका निवाह खती पर होता है। बाकीके दस फीसदी लोग अगर अिनकी नवल करे तो जगतमें कितना सुख कितनी गाति और कितनी तदुहस्ती फल जाय? और अगर खतीके साथ बुद्धि भी मिठ जाय ता एनीसे सबध रखनवाली बहूतमी मुसीबतें जासनासे दूर हो जायेंगी। फिर अगर अिस शरीर-धर्मके निरपवां कानूनकी सव मानें तो अूब-नीचका भद मिट जाय। आज तो

जहा अूच-नीचका वू भी नहीं थी वहा यानी वण-व्यवस्थामें भी वह घुस गजा है। मालिक मजदूरका भद आम और कायम हो गया है और गरीब धनवानस जलना है। अगर सब रातीके लिअ मजदूरी कर तो अूच-नाचका भेद न रह, और फिर भी धनिक बग रहेगा तो वह खुदको मालिक नहीं बल्कि अूम धनका रगवाला या टूटा मानगा और अूसका ज्यादातर अुपयोग सिफ लागाकी सवाके लिअे करगा। जिम अहिंसाका पाउन करना है, मत्यकी मक्ति करनी है, ब्रह्मचयको कुट्टरता बनाना है अूमके लिअे ता शरीर-धर्म रामबाण-सा हो जाता है। यह धर्म सचमुच ता खेनीमें हा है। केबिन सब सती नहीं कर सकत थेसी आज ता हात है हा। अिसलिअे अताक आगाका खयामें रखकर सतीके अवजमें जालमी मट दूमरा मजदुरा करे — जस कताओ, दुनाओ बड़ओगिरा लुहागी बगरा बगरा।

सबको खुदरा भगी तो बनना ही चाहिये। जा साता है वह टट्टी तो फिरेगा ही। जो टट्टी फिरता है वही अपनी टट्टीका जमीनमें गाड द यह अुत्तम रिवाज है। अगर यह नहीं हा सके ता प्रत्येक कुटुब अपना यह फज अटा करे। जिस समाजमें भगीवा अलग पगा माना गया है वहा शओरी बडा दोष पठ गया है, असा मुझे ता बरमासे लगता रहा है। जिस जभरी और तट्टुहस्ती बढानवाले कामको सबसे नीचा काम पहल-पहल किमने माना, जिसका अितिहास हमार पास नहीं है। पर जिमने बना माना अूसन हम पर अुपकार ता नहीं ही किया। हम सब भगी ह यह भावना हमार मनमें बचपनस जम जानी चाहिये, और अूसका सबसे आसान तरीका यह है कि जा समझ गये ह वे शरीर-धर्मका आरम पाताना-मफाजीस करें। जो समझ-बूझपर नालपूवक यह करगा वह अुमी क्षणस धमको निराल बगसे और सही तरीकेस समझन लगगा।

मंगल प्रभात प्र० ९ पृ० ४१-४४

## ‘सर्वोदय’ की शिक्षायें

म नगलक लिज खाना हुआ। पागव' ता मरी सब बातें जानन ग्य ही थे। वे मुय छोडन स्टगा तन आय और यह कह्तर कि यट पुस्तक रास्नम पन्न पाग्य है जिग पढ़ जाजिय आपना पसा आयगी अन्हान रस्किनना अटु निम गस्त पुस्तक मरे हायमें रत दी।

अिस पुस्तकको हायमें 'नेक वा' म अिस छाड ही न सका। अिसन मय पक' लिया। जोहानिस्वगम डखनना रास्ता लगभग चौबीस घटाका या। मुझे सारी रात ना' नहा आभी। मने पुस्तकमें सूचित बिचाराको अम'में गनका जिराना किया।

अिसम पहे' मन रस्किनकी अथ भी पुस्तक नही पनी था। विद्याध्य यनके समयमें पाठय-मुस्तनाके वाहरकी भेरी पढ़ाभी लगभग नहीक बराबर मानी जायगी। कमभूमिमें प्रवा' करनके बाद तो समय बहुत कम बचता था। आज तन भा यही कहा जा सकता है। मरा पुस्तकीय गान बहुत ही कम है। म मानता हू कि अिस अनायास अथवा बरबस पाले' गय समयस मुय कोभी हानि नही हुआ है। बलिन जो थोडी पुस्तक म पढ पाया हू कहा जा मक्ता है कि अुहें म ठीकसे हजम कर सका हू। जिन पुस्तकामें से जिसन मरे जीवनमें तत्काल महत्त्वके रचनात्मक परिवतन कराय वह अट दिम लास्ट ही कही जा सकती है। बामें मन अुसका गुजराती अनुवाद किया और वह 'सर्वोदय' के नामसे छपा।

मरा यट विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्दर गहराजीमें छिपी पडी थी रस्किनक ग्रथरत्नमें मन अुसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देला। और अिस कारण अुसन मूल पर अपना साम्राय जमाया और मजसे अुसमें ~~दिया गय बिचारा~~ पर अमठ कराया। जो मनु' हममें सोजी हुआ अुत्तम भावनाआना जेअित करनकी गक्ति रखता है - हि कवि है। सब कवियाका सब लोगा पर समान प्रभाव नही पडती क्यकि सबके अन्दर सारी सभभावनायें समान मात्रामें नही होती।

म सर्वोदय के सिद्धांतानो अिस प्रकार समझा हू

१ सबकी भद्राजीमें हमारी भलाजी निहित है।

१ श्री अेच० अस० अेल० पोलाक दक्षिण अमीकाके सत्याग्रहमें गाधीजीके सहयोगी थे।

२ बकाल और नाभी दानाके कामका बीमन अवकाशाना चाहिये क्याकि आज्ञाविनाशा अधिकार सबका एक समान है।

३ साण महानन-मजदूराका याना किमानका जावन हा सच्चा जावन है।

पहली चीजका म जानता था। दूसरीका म घुघल रूपमें दन्ता था। तीसराका मन कभा विचार हा नहीं किया था। मर्कदिय ने मुय दावका तरह स्पष्ट लिखा लिया कि पन्ना चाजमें दूसरा दाना चाजें समाना दृजी ह। सबरा हुआ और म जिन मिद्वान्नादा अमल करनके प्रयत्नमें गा।

आत्मनया प० २१ -६० १०५७

३९

## शरीर-श्रमका सुनहला नियम

[श्रा मत्पदन दनाश्रक माप्ताहिक पत्र'स।]

गाधीजी जा कितनी ही मात्स साण बातें बहुत और लिखने ह व ना कुछ लागता पहली-सी मात्स होता है और बूहें सग्यक भवरमें डाट दती है। साणम साण बातका भा कुछ लाग तरह तरुना अय लगान ह और अनेक पदेनिया म्पन करत हैं। गाधीजीन शरीर-श्रम पर जा लय लिखा था असका साधा-साण भावाय ता जितना हा है कि इत्यक आत्मा म्पु अपन पमानका कमाशा याने गो ना पराशम्बन और गराशका सायण बन् हा जाय और विभाका पिना मनुष्यन अमरा गवितन अरिक् काम न ग्ना पये। पर कुछ आग अिमम पबराष्टमें पन् गय ह कि अधि बाग मनुष्य ता मह शरीर-श्रम करत हा नहीं तर बूह राग पानका क्या हक है? बसागरा हा गात्रिये। य गग इजारा म्पम कमात ह। अिनका अक अेक घटेका पीम गपवाकी नहीं, अर्गापिचारी हानी है। जिना तरह डॉक्टर भी सामा चाण बनाव ह। पर य आग कुछ भा शरीर-श्रम नहीं करत। गाधीजीन अिम प्रश्नका जबाब लिया—“जा गग शरीर-श्रम नहीं करत अुन तुम आप्ना क्या करत हा? दुनियामें इत्यक आत्मा अपन पमानेका ही कमाशी सायगा अना कल्पना ता मने कनी नहीं बा। येने ता स्वण नियम भर बनला लिया है। अग पर कानक लिखे तुम म्पु तयार हा या नहीं? यि हा ता जिन मनुष्यमें अिम नियम पर चलनेका ठपारा मा गवित नहीं है अुगक प्रति तुम्हें नेग नहीं पग्ना चाहिय। मैं जा दूय और पन् साण हू अह अगर शरीर-श्रम करक प्राव्य न्हा करला, ता अिनका अय यह हुआ कि म दयाका पान हू, अिन शरीर-श्रमक अुक्क नियमामें बाशी यूनता नहीं आता। ब्रह्मचर-श्रमका पान्त थोडेस जिन गिने

लोग ही करते ह्यंग पर जिसस क्या खुँ ब्रह्मचर्यका पालन न पर सकन वाले करोडा मनुष्योंके प्रति द्वेष करना चाहिये ? वे तो द्वेषके नहीं दयाके पात्र ह ।

असी ही अलक्षनका अक दूसरा अुदाहरण है पर अुसका कारण जिससे अलुटा है । अक सज्जन पूछते ह — मुझ अिस नियमका पालन तो करना है पर मेरा गरीर अितना कमजोर है कि अुसका पालन ही नहीं सकता । मुझ अिस बातका दुःख तो बहुत होता है पर अब करू क्या ? गाधीजीन अुत्तर लिया — मने तो जिस आदम तक हमें पढचना है वह आदम बतलाया है । हरअेक मनुष्य अुसका ययागक्ति पालन करे । अगर आपस किमी भी तरहका गारीरिक श्रम नहीं हो सकता तो अुसके लिअ आप दुःख न करें । आप दूसरा जो गुद्ध घषा कर सकते हो वह कर और अितना ध्यान रखें कि आपके लिअ जो लोग तन गलाते ह अुनका आप खूसें नहीं । आप यह मानते ह कि डाक्टरा कागका गारीरिक श्रम करनक लिअ फुरसत ननी भिउती, तो अुसके लिअ आप चिंता न कर । वे लोग यदि गुद्ध सवाभावस समाजकी सवा करेगे तो समाज अितना ध्यान तो रखगा हा कि अुहू भूला न मरना पड ।

हरिजनसेवक ९-८-३५ पृ० २०२

४०

### श्रमयज्ञ

गीतामें कहा गया है कि आरम्भमें यनक साथ-साथ प्रजाको अल्पन्न करके ब्रह्मान असस कहा जिस यनके द्वारा तुम्हारी समृद्धि हा यह मन तुम्हारी कामधेनु हा अर्थात् यह तुम्हारे अिण्डन फलाका देनवाला हो । जा यह यन किय बिना खाता है वह चारीका अन्न खाता है । तू अपन पमीनकी कामात्री खा, यह वाजिबल्का वचन है । यन अनेक प्रकारके हो सकते हैं । अुनमें स अक श्रमयज्ञ भी हो सकता है । यदि सब लोग अपने ही परिश्रमकी कामात्री खाव तो दुनियामें अन्नकी कमी न रहे और सबकी अवकाशका काफा समय भा भिउ । तब न ता किसाना जनसख्याका वृद्धिकी गिकायत रहे न कोत्री वामारी आव और न मनुष्यको कोत्री कष्ट या कंग हा सतावे । यह श्रमयज्ञ अुचसे अच्च प्रकारका मन हागा । अिममें सल्लह ननी कि मनुष्य अपन गरीर या वृद्धिके द्वारा और भी जनक काम करेगे पर अुनका वह सारा श्रम लाक-कल्याणके लिअ प्रममूलक श्रम हागा ।



बुस अवस्थामें न काआ राव हागा न काआ रक न काओ बूचा होगा न कोओ नीचा, न कोओ स्पृश्य हागा न काओ अस्पृश्य।

मत्र ही यह अत्र अल्प्य आत्मा हो पर जिस कारणसे हमें अपना प्रयत्न बन्द कर देनेका ज़रूरत नहीं है। यद्यपि संपूर्ण नियमका अर्थात् अपने जीवनका नियम को पूरा किया बिना भी अगर हम अपने नित्यके निवाहके लिए अपना शारीरिक धर्म कर ता भी बुस आत्माके बहुत कुछ निकट पहुच ही जायेंगे।

यदि हम असा करेग तो हमारी आवश्यकतायें बहुत कम हा जायेंगी और हमारा भाजन भी सादा बन जायगा। तब हम जानने लिये लायेंगे, न कि खानके लिए जियेंगे। जिस बातका यथायत्नामें जिसे गका हा वह अपने परिश्रमकी कमाओ खानेका प्रयत्न करे। अपने पत्नीका कमाओ खानमें बुस कुछ और ही स्वाद मिलगा बुसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहगा और बुस यह मानूँगे हो जायेगा कि जा बहुतसा विलासकी चीजें बुसने जपन बुपर लाद रवी था व सर विलकुल फिजूल था।

क्या मनुष्य अपने बौद्धिक धर्मकी कमाओ न माये? नहीं, यह ठीक नहीं है। शारीका आवश्यकताआना पूर्ति शारीरिक धर्म ही हानी चाहिये।

कवत्र मस्तिष्कका अथान् बौद्धिक धर्म ता आमाक प्रोत्पप है और वह स्वतः मनोपन्न है। बुसमें पारिधमिक मिलनकी जिच्छा नहा करनी चाहिये। बुस आत्मा अवस्थामें डॉक्टर बकाड आदि पूणत समाजक हितक लिए काम करगे अपने लिए नहा। शारीरिक धर्मक नियम पर ध्यान नमानमें अरु शान्तिमय श्रान्ति पन्न हागी। जावन-अधामक स्थान पर पारस्परिक सवाओ प्रतिस्ववा स्थापित करनमें मनुष्यकी विजय हागा। पारिविक नियमका स्वातः मानवाय नियम न गत।

प्रामाण्य वार शैत्यका अय यह है कि निश्चित रीतिसे शारद-धर्मक धर्मका बुसके सार अर्थात् गाय स्वच्छापूर्वक स्वाकार कर लिया जाय। किन्तु अलावक श्रिय पर यह कृत ह कि कगना भारतवासी आज गामों ही ता रहत ह ता भी बुन बचाराता बहा पटभर भाजन नगाय नहीं हाता और व भूता मर रहे ह।' यान तो बिल्कुल गाय है। सद्भाग्यसे हम यह जानते ह कि वे स्वच्छा नियमका पालन नहीं कर रहे ह। अगर बुनकी चलाता तो अगा शारीरिक धर्म व कर्मी न करत बनि वे किमी बिल्कुल पायरे गहरकी वार वातक लिए दौडा अगर पदा बुनक लिए जगह हाता। मानिकवा हुसम जब जवरस्ताग बजाया जाता है तब बुन परवाता या दासताका स्थिति बरा है। पिताकी आगाता जब स्वच्छा पालन किया जाता

है तब वह आत्मा-भालन पुत्रत्वका गौरव बन जाता है। अिमी तरह शरीर श्रमक नियमका बलात्कार-श्रवक पालन किया जायगा तो अुससे दरिद्रता, रोग और अमनोवकी सृष्टि हागी। जब स्वच्छास अस नियमका पालन किया जायगा तब अुससे अवश्य ही सतोष और आरोग्यका लाभ हागा। और आरोग्य ही तो सच्चा धन है। चानी मोनके टुकड सच्ची सपत्ति नही ह। ग्रामोद्याग सष स्वच्छापूण शरीर-श्रमका जेक प्रमाण है।

हरिजनसंवाक ५-७-३५ पृ १६०

## ४१

### शरीर-श्रमकी आवश्यकता

अक जागरूक मित्र लिखने ह

जमशेदपुरकी समाके आपके भाषणमें जो २० अगस्तक 'यग जिडिया में प्रकाशित हुआ है, पहले पराप्राफमें बौद्धिक श्रमकी तुलनामें शारीरिक श्रमक मन्त्रवका प्रतिपादन करने वाल प्रकाशित रिपोटक अनुसार आपने कहा है यही विचार हिंदू धर्ममें सदाक पाया जाता है। जो मनुष्य शारीरिक श्रम किय बिना खाता है, वह पापको खाता है वह निश्चिन रूपसे चार है। 'यह भगवद्गीताके अक श्लोकका शास्त्रिक अनुवाद है। (तथावधि) शारीरिक और (तथावधि) बौद्धिक श्रमक बीच गीता जसा कोअी फरक कर्ती है या नही अिस सवालको स छाड देता ह। पर यह स कह सक्ता ह कि गीताके अिन श्लोकका वह अर्थ किया जा सक्ता है अिस (रिपोटके अनुसार) आप गाताक किता अब श्लोकका शास्त्रिक अनुवाद कहत ह व श्लोक तताय अध्यायक १२ व और १३ व श्लोकमें मिलते ह। मतलब यह कि अक तो श्रमके समयनमें आप गाताक अिस बद्धरणका अुपयोग करते ह वह अक श्लोकक नही बल्कि अुसके दो श्लोकसे लिया गया है। दूसरे अिन श्लोकामें श्रमकी — शारीरिक या किमा भी अथ प्रशारक श्रमकी — कोअी चर्चा नहा है। बरक पहल श्लोकमें यनके मनव्यको समजाते हअ यह अवश्य कहा गया है कि मनुष्यका चाहिय कि दवान श्रम जो कुछ लिया है असका अुपयोग वह दवाके साथ या अहें अपण करके करे। यदि वह असा नहा करता है ता वह चार है। और दूसरे श्लोकमें यह कहा गया है कि जो लाग बेबल अपने हा लिअ भोजन पकाते ह

व पापका ही खाते ह। जाहिर है कि यह बात गीताने अक दलोकके अम शास्त्रिक अनुवादमे बहुत दूर है, जा आपके पत्रमें अम० वी० (श्री महादेव दसाजी) के द्वारा दिया गया है। म आशा करता हू कि आप अपना सुविधाके अनुसार जिस भूलका स्वाकार करणे।

शास्त्रिक दृष्टिस पत्रलेखकका यह कहना ठीक है कि अम० १० ने जो अनुवाद दिया है वह जब दलावका नहीं वल्कि दो श्लोकके अणके पागका है। और अिस भूल-सुधारके लिये म श्लोकका धयवान देता ह। लकिन अनुकी दलीलका मुख्य जाणय मुझ यह मालूम हाता है कि मेर भाषणकी रिपाटमें गीताके प्रसिद्ध गल — यज्ञका जा अय दिया गया है अुसका कोआ अुचित आधार नहीं है। लकिन म अुम अनुवादका गलत माननसे अनकार करता हू और यह सुज्ञानका साहस करता हू कि गीताके तीसर अध्यायके १२ व और १३ व श्लोकामें यज्ञ गलका अय हा अय हा मवता है। १४ वा श्लोक अुसे विलकुल स्पष्ट कर देता है

अध्या भवन्ति भूतानि पजया अन्न-सभव ।

यनाद् भवन्ति पजया यन्न यम-समुत्भव ॥

गीता अ० ३ श्ल० १४

अन्नस सब प्राणी अुत्पन्न होत ह। वपासि अन्न अुत्पन्न होता है। यन्से वर्षा हाती है। और यन्की अुत्पत्ति यमस होती है।

अतअव मेरी रायमें यहा न बवल शरीर-श्रमक सिद्धान्तका प्रतिपादन किया गया है वल्कि अिस बातकी स्थापना भी की गयी है कि जब श्रम बवल अपन श्रि न हाकर सबक श्रि हाता है तब वह यन्का रूप ेता है। वर्षा बड बडे बौद्धिक कार्योंति नहा हाता है परंतु बवल श्रमक जरिय ही होती है। यह सब-अम्मत धनानिक तथ्य है कि जहा गल लाके पड काट दिये जाने ह पहा वपा बल हा जाता है और जहा पड लगाय जाते ह बल वर्षा श्रि वानी है और बनस्पतिका बद्धिक साध ही वर्षति पानाकी माया भा बड जाती है। कुत्तके चातुनाकी मात्र हाता अभा बाता है। हमने बवल अपरी सतहका ही रभा है। शरीर-श्रमक बल हा जानस जा नतिक और शारीरिक बुर परिणाम हात ह जुन मरता मला सौन जानता है? मुझे श्रम न मममा जाय। म बौद्धिक श्रमकी कोमल यम नहीं करता किन्तु बौद्धिक श्रम विनता भा श्रिमा बाय आम शारीरिक श्रमका पूर्ति नहा हो मवनी। मबर बन्धाणक श्रि शारीरिक श्रम ना हूमें करता ही पाहिये। यह हमारा अमम्राण बनव्य है। बौद्धिक श्रम गुावतामें शारीरिक श्रमक अनक गुना बडा बडा हा मवता है और अमगर हाता है

लेकिन वह भुसकी जगह बभी नहीं ले सकता जैसे कि बौद्धिक आहार अन्नाहारकी जगह नहीं ले सकता यद्यपि अन्नाहारकी तुलनामें भुसका स्थान बही भूचा है। सच ता यह है कि धरतीकी भुपजके अभावमें बुद्धिकी भुग्न ही असभव है।

यग जिडिया १५-१०-२५ पृ ३५५

४२

### शरीर-श्रमका कर्तव्य

[ गाधीजीकी पदत्र यात्राकी डायरी से। ]

गाधीजीन प्रायनाके बादके भाषणमें अनमे पूछ गय प्रश्नके उत्तर देना शुरू किया।

प्र० — जाप हमेगा खरातके खिलाफ रहे ह और जिस असूल्का समनाते रहे ह कि काभी भी जिन्सान मेहनत करनके फजस बरी नहीं है। आपकी भुन लोगाके लिअ क्या सलाह है जो बठ-बठका घाघा करन ह और पिछठ दगामें अपना सब कुछ खा बठ ह? क्या जह अपना बतन छोडकर जसी जगह चला जाना चाहिय जहा व अपनी पुराना जादतके मताबिक जीवन बिता सके? या बुहें आपके अक्त भुसुक् अनसार रोगा कमानके लिअ शरीर-श्रम करना चाहिय? भुस हात्तमें भुनकी खास खूबिया किस काम आयेंगी?

अ० — जसा कि समझा जाना है यह सच है कि म बरसासे खरातके खिलाफ रहा ह और रोटीके लिअ शरीर-श्रम करनकी सीख देता ह। जिला मजिस्ट्रेट खमान साहब और अक पुलिस अफसर मुझसे मिलन आय य। व बआसरा लोगाको खरात देनके बारम मेरी राय जानना चाहते थे। अन्हान पहलसे यह तय कर लिया था कि वे लागाके सामने पानीमें स हेयामिय निकालन सडकाकी मरम्मत करन गावाका सुधार करन और खदवे खताची हदें सुधारकर सीधमें लान और अपनी जमीन पर मकान बनानका काम रखेंग। जा लोग अिनमें से कोभी भी काम करग बुहें रागन पानका पूरा हक हागा। म जिस खयाल्का पसल करता ह लेकिन अपन भुमूलो पर अमल करनवाके नाते म बआसरा लोगाका अक्दम कोभी काम करनके लिअ मजबूर नहा करुगा। कभी तरहके काम लोगाके सामन रख देन चाहिय और अक महानका नाटिस दकर हाकिमाको बुहें यह

कह दना चाहिय कि अगर आप सुनाय गय कामामें स काजा काम नही चुनत और न काजा मजूर करन लायक दूमरा घधा हा सुजाते, वल्कि छट-कट्ट हान पर भी काम करनस अिनकार करत ह ता माहलतके सतम हान पर हमें न चाहने पर भा आप लागावा सरात दना बन करना पडगा। वआसरा लागा और अुनके दास्ताका मरी यह सलाह है कि सरकारकी अिस स्कीममें वे पूरी मन्द कर। किनी भी गहरीके तिजे वगर शरीर-श्रमके रागत पानेकी आगा रखना गलत होगा।

म लागावा बतत छोडनसी सलाह कभा नहा द सकता। म चाहूगा कि अेव अकला हिन्दू भी हर हालतमें अपनरी सही सलामत समझे और मूसलमानासे अुम्मीद रखूगा कि व अपन बीच अस पूरी तरह सलामत रयें। म अिम बातका स्वागत कर्गा कि ळोग अपन-अपन डगम ळीवरकी पूजा कर।

सट्टसे कमाया हुआ रुपया मेरे खयालमें यकीनन जायज रुपया नही है। और न म यह मानता हू कि किसी आत्मीके लिजे अपनी बुरी जात्ताका छाडना कभी नामुमकिन है। अगर हरअेव आदमी अपन पसीनकी कमाजी पर रहे ता यह दुनिया स्वग बन जाय। मनुष्यकी खास खूबियाके अपयागके प्रान पर अलगस विचार करनेकी विलगुल जरूरत नही। अगर अब लाग राटीक लिजे शरीर-श्रम कर तो अुसका यह नतीजा होगा कि कवि गापर डॉक्टर, वकील वगरा मनुष्यकी सवाक लिअ अपना अुन खूबियाका मुफ्त अपयाग करना अपना फज समझेंग। विना किमा स्वापके अपना फज अण करनेक कारण अुनके कामका नतीजा और भी अच्छा होगा।

## अमली शरीर धम

अहिंसाके प्रयोगसे म यह सीखा ह कि अमली अहिंसावा अथ सब लोगोका शरीर-धम है। जेक रूसी दानिष वादरेहने जिसे रोटीव लिअे धम कहा है। अिसका परिणाम लागामें जापममें गहरेने गहरा सहयोग होगा। दक्षिण अफ्रीकाके पहले मयाग्रही सबकी भलाआ और सम्मिलित कोषके लिअ मेहनत करते थ और अ ह अते पछियाकी-भी बेफित्री रहती था। अनमें हिन्दू मसलमान (गिया और सुधरी) भीमाजी (प्रोटस्टेंट और रोमा कथलिक) पारसी और यूहूनी सभी थ। अग्रज और जमन भी थे। धधके लिहाजसे अुनमें वकील जिमारत और विजयीकी विद्या जाननवाले अिजीनियर छापनवाते और व्यापारी थ। सत्य और अहिंसाके सबहारसे धार्मिक झगड मिट गय थ और हमन सब धर्मोंमें सत्यके दान करना सीख लिया था। दक्षिण अफ्रीकामें मने जो आश्रम कायम किय अुनमें अक भी मजदूरी शगडा हुआ हा जसा मुन मा नही आता। सब लोग छपाजी बन्धीगिरी जूते बनाना बागवाना अिमारत वारा हाथके काम करत थ। यह मन्तत किसानोका भाररूप नहीं लगती थी। अुममें सबको जान आता था। सत्याग्रही सेवाका अग्रणी दन् अिन्ही मनी-पुरपो और लकाका बना था। जिनसे ज्यान्त वीर और सच्चे साथी मज नहा मिल सकते थ। हिन्दुस्तानमें दक्षिण अफ्रीकाका-ना हा अनुभव रण और मुझ नरोसा है कि अुममें कुछ सुधार हा हुआ। सभी लग मानत ह कि जहमदाबादका मजदूर संगठन भारतमें सबसे बडिया है। असाका काम जिन डगम गरू हुआ था जुसी तरह चलता रहा ती अल्लमें बहाकी मित्रामें मौजूद मात्रिका और मजदूरको सधुस्त मालिकी हाकर रलेगी। यह स्वाभाविक परिणाम न निकला ता पता च जायगा कि संगठनकी अहिंसामें खामिया थी। बारडालोके विमानान सल्लभभाओको सरदारसी पन्वी दी और अपना लन्आ फतह की। बोरोम और गडाके किसानान भा वसा ही किया। वे सब वर्षोंसे रचनामन कार्यक्रम पर अमल कर रह ह। मगर जिस अमलम अुनक सत्याग्रहा गणाका हास नटा हुआ है। मज पूरा यकीन है कि सविनय आषाभग हुआ ता अहमदाबादके मजदूर और बारडोदी सवा खडाके किसान भारतके और किभी भी हिंसरे किमाना और मजदूरसि जोहर सिवानमें पीछ नहीं रहगे।

चौतीस सालके सत्य और अहिंसाके लगातार प्रयोग और अनुभवसे मुझ दृढ़ विश्वास हो गया है कि यदि अहिंसाका ज्ञानपूर्ण शरीर-श्रमके साथ सम्बन्ध न होगा और हमारे पडासियोंके साथ रोजमरके व्यवहारमें जुसका परिचय न मिलेगा तो अहिंसा टिक नहीं सकेगी। यह है रचनात्मक कायकर्मका रहस्य। यह साध्य नहीं है साधन है मगर है जितना अनिवाय कि उसे साध्य भी समझ लें ता उजा नहीं होगा। अहिंसक विरोधकी शक्ति रचनात्मक कायकर्म पर जीमानदारीके साथ अमल करनेसे ही पदा हो सकती है।

हरिजनसेवक, २७-१-४० पृ० ४०३

४४

## मेरा शरीर-श्रम

'मम इन्द्रिया के कुछ पात्र नम ह, जो अकर्म ब्रह्म प्रश्न पूछा करते ह। लेकिन क्याकि अमुसे अुह जानल हाता है मुझ अितनी अनुविधाका भी सहन कर लना चाहिय और अुनक प्रश्नाका अुत्तर देना चाहिय।

प्र० — आप कहते ह कि आप और आपके माय काम करनेवाटे हमरे लाग अन मित्राकी जुदारता पर अपनी आजीविकाका आधार रखत ह जो सत्याग्रह आश्रमका सब पूरा करत ह। क्या जुम मस्याका जिममें मगक शरीरक लाग हा अपना आजीविकान लिअ मित्राका अुत्तरता पर आधार रपना अचित है ?

अ० — परमेश्वर महालय अुत्तरता-ज्ञान का बँकड गलाप ही समज रह ह। अिस मस्याका हरजब परम स्त्री हा या पुत्र अपन कायमें शरीर और बुद्धि दानाका पूरा अुपयोग करता है। अकिन फिर भी यह ता बहा ही जायगा कि अिस मस्याका आधार मित्राका अुत्तरता पर हा है। क्याकि व जा कुछ भी अग दानमें देते ह अुमके बन्धमें अहें ता कुन भा नहीं मिन्ता है। अुमक लागकी महनतका फल ता राष्ट्रका मिन्ता है।

प्र० — जिम टों-टोंय रागीक लिजे श्रम करते ह अकक दामें आपका क्या अभिप्राय है ? क्या आप शारीरिक श्रम करत अपना अुत्तरता प्राप्त करत ह ?

पर यह आवश्यक नहीं है कि शरीर-धम करने ही आजीविका प्राप्त की जाय। लेकिन हर एकको कुछ न कुछ भुपयोगी शरीर-धम अवश्य करना चाहिये। अभी तो मैं सिर्फ बतलाती हूँ ही शरीर-धम करता हूँ। यह तो सिर्फ प्रतीतमान है। मैं काफी शरीर-धम नहीं कर रहा हूँ। और यह भी एक कारण है कि मैं अपनेको मित्रके दान पर जीनवाला कहता हूँ। लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि हर एक राष्ट्रम अस मनुष्याकी आवश्यकता रहेगी, जो अपना शरीर मन और आत्मा सब कुछ राष्ट्रको अर्पण कर देता है और जिन्हें अपनी आजीविकाके लिए दूसरे मनुष्या पर अर्थात् शीश्वर पर आधार रखना पड़ता है।

हिन्दी नवजीवन ५-११-२५ पृ० ९५

४५

### आश्रम जीवनमें शरीर धमका स्थान

हर स्त्री-पुरुष शरीरसे मेहनत करे जिसे आश्रम अपना धम मानता है। जिस असूलकी जानकारी या मूल मुन टॉल्स्टॉयक अब जेनसे हुआ। मुन्हाने रुमके अब लेवक दोन्दरेके बारेमें लिखत हुये बताया कि रोगी धमकी जहरत जिस जेनकेकी जिस युगकी बहुत बड़ी खोजामें से अक थी। जिसका मतलब यह है कि हर तदुहस्त आदमीको अपन गुजारक लायक शरीर धम करना ही चाहिये। मनुष्यको अपनी बुद्धिकी शक्तिका अपमान आजीविका प्राप्त करन या अनुसे भा ज्योग प्राप्त करनके लिए नहीं बल्कि सेवाके लिए परोपकारके लिए करना चाहिये। जिस नियमका पालन मारी दुनिया करन लग तो सहज ही सब मनुष्य बराबर हो जाय काभी भूला न मरे और जगत बन्तसे पापासे बच जाय।

यह सम्भव है कि जिस स्वण नियमका अमल सारी दुनिया कभी न कर सके। नियमको बिना जान-बूझ तो करोडा लोग जिसका पालन जबर दस्तीसे करते हैं। अनुक मन अनुके विरुद्ध चलते हैं जिसालिए वे दुख पाने हैं और अनुकी मेहनतसे जितना लाभ दुनियाका हाना चाहिये अनुना नहा होता। जो लोग जिस नियमको समझत हैं उन्हें जिस ज्ञानसे जिस नियमका पालन करनका प्रोत्साहन मिलता है। नियमका पालन करनेवाले पर जिसका चमत्कारी असर होना है क्योंकि अस परम शक्ति मिलनी है जिसकी सेवा करनका शक्ति बनता है और असका तदुहस्ती भी बनती है।



मुझ पर टॉल्स्टायका बहुत असर हुआ था और अउनका वाता पर यथासम्भव अमल करना तो मने दक्षिण अफ्रीकामें ही गुरु कर दिया था। आश्रम कायम हुआ तभीस रोटी-श्रमको अुसमें मुख्य स्थान मिला।

गीताका अध्यायन करने पर म अिसी नियमको गीताक तीसर अध्यायमें यन्त्रे रूपमें देखता हू। म यह नहीं कहता चाहता कि यन्त्रा अय बहा शरीर-श्रम ही है। परन्तु यज्ञम पजय होता है, अिस भावमें मुझ शरीर श्रमका धर्म गणना है। यन्त्रम बचा हुआ अन्न वही है जा महत्त करनेक वाद मिलता है। आज्ञाविवाने लिअ पर्याप्त श्रमका गीतान यन्त्र कहा है। पापणक लिअे जितना चाहिय अुसम ज्याण जो खाता है वह चारी करता है, क्याकि मनुष्य आजीविकाक लिअ आरयक श्रम भी मुश्किलमें ही करता है। म मानता हू कि मनुष्यको आजीविकास ज्यादा लनवा अधिकार ही नहा है। और जा मेहनत करत ह अुन सबको अुनता लेनका अधिकार है जितनम अुनता शरीर कायम रहे।

अिसमें बाजी यह न कहे कि अिसमें श्रमक बदलावको गुजाअिण ही नहीं है। मनुष्यकी आवश्यकताअकि अिअे जो भी चीज तैयार होना है, अुसमें शरीर-श्रम ता लगना ही है। अिमन्त्रिअ श्रम चाहे जिम जरूरी क्षत्रमें विना जाय वह राटा-श्रम ही है। अितना थम भी सब नहीं करते अिमन्त्रिअे तदुहस्ती बनाय ग्वनके लिअ 'यायामके नाम पर खाम तौग पर शरीर श्रम करना पडता है। जो प्रतिदिन खतीमें श्रम करता है अुस लगभग म्यायामकी जरूरत नहीं रहती। विमान तदुहस्तीके दूगर नियम पाठ तो वह बीमार ही न पड।

यह देना जाता है कि अिम दुनियामें मनुष्यका राज जितना चाहिये अुनता आश्वर राज पदा करता है। अिसमें स अगर बाजी जपना आवश्यकतासे अधिक काममें अेता है तो अुसक पडोसीको भूखा रहना ही पडेगा।

बहुतम लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक श्रम हैं अिमिलिअ दुनियामें भूखा मरतकी नौबत आती है। हम कुत्तरकी दतरा विभी भी तरह काममें ल, फिर भी कुत्तर तो राज गना पण्ड बराबर ही रानी है। कुत्तरक वहीपातेमें न तो जमामें कुछ बाफी रजता है न नाममें। वहा ता रोज आमन्-सचका हिमाब बराबर हाकन गूय ही बाकी रहता है। अिम गूयमें हमें शूयक गमात बनकर गमा जाता चाहिय।

अुपरक नियममें यह बात बाधन नहीं है कि कभी रमायना और यन्त्रे अरिये मनुष्य जमानत ज्याण पगल पण्ड करता है अपनी महत्तको दूगरी तरह भी सब यन्त्रुअें अुलान करता है। यह कुत्तरकी शक्तिपाका ग्गालर है। सबका आगिरी परिणाम तो गूय ही हानवाला है। अगर हमें रोज

जो कुछ अनुभव होता है अमका पृथक्करण किया जाय तो भुगसे यन्ी अनुमान होना है कि दोना पलने बराबर रहत ह।

बुदरत असा करती हा या नही करती हो मेरी दूसरी दलाअमें सार हो या न हो आध्रममें राटा-ध्रमके नियमका अधिउसे अधिक अछ डगन पालन किया गया है। अिसमें आश्चयका वाअी बात न्नी है। पाअन बननका साधारण आग्रह हा तो पालन आसान है। अगर अमुक दिनक अमक घटामें मेहनतके सिवा दूसरा काम न हो ता मेहनत जरूर हागी। मअ हा अिसमें आअस्य हो काय-दसता न हो मन न हा मगर कुछ घट पूर ता हाग हा। फिर, कुछ मेहनत तुरत फल देनवाला हाती है अिसअिअ अुसमें बहुत आल स्पकी गजाअिग भी नही रहती। अम प्रधान सम्ब्याआम नौकर नही होत या घाड ही होते ह। पानी भरना उकनी फाअना दियाबता तयार करना पाखान और रास्त साफ करना मयानोकी मफाअी रवना अपने अपन कपड धोना रसाअी करना वगरा अनक काम अस ह जा किय ही जान चाहिय।

अिनक सिवा एता बुताअी-काम अुनसे सयधित और दूसरी तरहय जरूरी बढआ-काम गागाला अमार-काम वगरा काम आध्रमके साथ जड हुआ ह। अुनमें खाड बहुत आध्रमवासियके लग बिना काम नही चल सयता।

ये सब काम राटा-ध्रमक नियम-पाअनके अिअ काफा मान जायय। मगर यनका दूसरा अग परमाय या संवाका वृत्ति है। अुस अिन कामामें गागिल करते वकन आध्रमकी कमजारी जरूर मालम हागी। आध्रमका आअन संवाक अिअ ही जीना है। अिम डगने अठनवाली मन्म्यामें आलम्यका कामकी चोराका स्थान नही है। वहा सब काम तन मनस हाग चाहिय। सभा लाग असा करने तो आध्रमकी मेराकी योग्यता बहुत बढ गजी हाीनी। लेकिन असो सुअर स्थितिके आध्रम अब भी दूर है। अिसअिअ यद्यपि आध्रमका हर काम यनरूप है फिर भी आअनका विचार करके दरिद्र नारायणक अिअ कमस कम अब घटकी कताअीका आवश्यक स्थान दिया गया ह।

यह आरोप समय समय पर सुना गया है और आज भी म मुना करता हू कि अम प्रधान सस्यामें वदिके विकासका गजाअिग नहा रहती अिसअिअ क जड बन जाती है। मरा अनुभव अिसम अलटा है। आध्रममें जितन भा लोग आय ह सभाकी बुद्धि कुछ तेज हुआ है किनीकी मअ हुआ हा असा जाननमें नही आया।

बहुत बार असा मान लिया जाता है कि जगतकी अनक घटनाआका बाहरी ज्ञान हा वदिके है। मुझ यह धनूल करना पन्गा कि असा बुद्धि आध्र ममें कम विकसित हाती है। लेकिन अगर वदिका अय समय विवक वगरा हा ता वह आध्रममें काफी विकसित हाती है। जहा मजदूरक रूपमें

महतत सिफ गुजार लिअ हानी है वहा मनुष्यका जड बन जाना सम्भव है। अमुक चीज किमिअ या किस तरह हाना है अिमका पान अुम काभी नही दता है। थुस खुद अिस विषयमें जिनामा नहा हानी न अपने काममें लिचस्पी हाना। आधममें अिसत बुलटा हाता है। हर काम — पापाना सफाअी तक — समय कर करना पना है। अुममें लिचस्पी ली जाती है। वह परमदवरनी प्रसन्न करनेके लिअ हाता है। अिमलिअे अुम करत हुअ भी बुद्धिक विकासका गुजाअिग रहती है। सबका अपने अपने विषयका पूरा ज्ञान प्राप्त करना प्रात्साहन दिया जाता है। जा मह पान अनेका बाअिग नही करले अुनअ लिअ वह दाप माना जाता है। आधममें या तो गमी मजदूर ह या कोअी भी मजदूर नहा है।

यह मानता कि कितानासे हा भेअ-कुर्मी पर बठनस ही पान मिअता है बद्धिका विकाम होता है हमारा धार अतान है भारी वहम है। हमें ता अिसमें स निक् जाना चाहिये। जीवनमें बाअनके लिअे स्थान जरूर है, मगर वह अपनी जगह पर ही गोभा देता है। शरीर-धमका हानि पहुचारर थुस बढामा जाय ता अुमके निरूप विद्रोह करना फज हा जाता है। शरीर-धमक लिअे अिनका ज्यादा समय दना चाहिये और बाचन बाअरर लिअे धोना। आजकल अिस दगमें जहा अमार लाग या बूचे बगव मान जानवा लोग शरीर-धमका अतार करने ह, शरर-धमका अूचा अरजा दनकी बडी जरूरत है। और बुद्धिगवितका मन्वा बग देनेके लिअे भी शरीर-धमकी यानी किमी भी अुपयोगी शरीरिक धममें शरीरका लगानेकी जरूरत है।

अगर बाचनका आधम कुछ ज्यादा समय द सक ता देन जमा है। निररर आधमवासिपाका शिअकी मन् मिअ सक तो वह भी दी जानी चाहिये। फिर भी असा लगता रहा है कि जा जा बाय आधममें हा रहे ह अुनको नुबमान पहुचारर बाचन बगरामें समय न लगाया जाय। शिअय बतनिअ ता रर नही जान। और जब तर बनमान शिअ दनवाये ज्यादा शिअका आधम अपनी तरफ गाच न तर तर जिनन ह अन्हीके बाय चगाया जाता है। स्त्रूअ और कौअरमें पढ़ हुअ या लाग आधममें ह ब धमक गाप शिअका मिग देनेका कलामें पूरी तरह दग नहा ह। हम सब लिअ यह नया प्रयास है। मगर अनुभवकी कामकी समग बढता जा रही है। और जा जम अरबन्धा गवित बढता जायगा कस बम जा गाधारण शिअ पाय हुये जग यह ह बूहे प्राप्त दिया हुअ पान दूगरागे दावा अुपाय मूपता जायगा।

## श्रम और बुद्धि के बीच अलगाव

श्रम और बुद्धि के बीच का अलगाव हो गया है। इसके कारण हम अपने गांवों के प्रति अतिने लापरवाह हो गए हैं कि वह अब गुनाह ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देश में जगह-जगह सुहावन छाट-छाट गांवों के बगल हमें पूरे जैसे गांव देखने को मिलते हैं। बहुतम या या कहिये कि कगीब-अरीब सभी गांवों में घुमते समय जो अनुभव होता है उससे दिलका खपी नहीं होता। गांव के बाहर और आमपाम अतिनी गन्गी हाजी है और वहां अतिनी बगल आती है कि अकमर गांव में जानवालाको आस मूक और नाक दबाकर ही जाना पडता है। ज्यादातर वाप्रसी गांव के वाणिदे हान चाहिये आर अमा हो तो अुनका फज हो जाता है कि वे अपने गांवका सब तरहसे सफाआक नमने बनाय। एकिन गांववालाके हमेशाके यानी रोज रोजके जीवनमें गरीब हान या अुनके साथ घुलने मिलनका जहाय कमा अपना काम माना हा नहीं। हमन राष्ट्रीय या सामाजिक सफाजीको न ना जहरी गण माना और न अमका विकास हा किया। यो रिवाजके कारण हम अपने ढगसे गहा मर लेते ह मगर जिस नये सालाव या कुअेके किनारे हम श्राद्ध या वसा ही कोओ दूमरी धार्मिक क्रिया करत ह और जिन जलापामों पवित्र हानक भिचारस हम नहाते ह अनक पानीको विगाडन या गन्दा करनमें हमें कोओ हिचक नहीं होती। हमारा जिस कमजारीका मैं एक बगल दुगुण मानता हू। जिस दुगुणका ही यह नतीजा है कि हमारे गांवोंकी और हमारी पवित्र नदियोंके पवित्र तन्गी सजाजनक दुगुणा और गन्धपोमे पन होनवाज बोमारिया हमें भोगनी पन्ती ह।

रचनात्मक कार्यक्रम पृ० २७-२८, १९५९



प्रमाण मिलते ही रहने ह कि स्कूल-कलिजासे पास होकर जो विद्यार्थी निकरत ह व महन्त-भगवन्तके काममें मजदूराकी बरामगी नही क सकन । परामी मेहनत की ता माया दुस्तन उगता है और धूपमें घूमना पड तो चक्कर आन गते ह । यह स्थिति स्वाभाविक मानी जानी है । बिना जुन खतमें जैसे धान अग आता है जसा तरह हृदयकी वृत्तिमा आप ही अगनी और कुन्तानी रहती ह और यह स्थिति दमनीय मान जानके बल्ले प्रशसनीय मानी जानी है !

असके विपरीत अगर बचपनसे बालकोके हृदयकी वृत्तियाको ठीक तरहसे मोडा जाय अुहें खता बरसा आदि अपयोगी काममें लगाया जाय और जिस अुद्योग द्वारा अुनका शरीर खूब बमा जा सके अुस अुद्योगकी अपयोगिता और अुममें काम जानबाले औजारा बगराकी बनावट आदिका गान अुह लिया जाय तो अुनकी बुद्धिका विकास सड्ड हा हो जाय और नित्य अुसकी परीक्षा भी होती जाय । असा बरत हुआ जिस गणित आदिके गानकी आवश्यकता हो वह अ ह दिया जाय और बिनोके लिख साहित्यादिका गान भी दते जाय तो ताना वस्तुअ समता हा जाय और काआ जग अुनका अविनमित न रह । मनुष्य न केवल बद्धि है न केवल शरीर न केवल हृदय या आत्मा । तीनाक एक समान विकासमें हा मनुष्यका मनष्यत्व सिद्ध होगा । अिसमें शिक्षाया सच्चा अथगास्त्र है । असक अन्तसार यदि ताना विकास अकसाय हा तो हमारी अुन्नी हवी समस्याओं अनायास सुलझ जायें । यह विचार या अिस पर अमरु तो देगको स्वतयता मिलनके बाद हागा असी मायता भ्रमपूण हा सकती है । करोडा मनुष्योको असे-असे कामामें अगानसे हा स्वतयताका दिन हम नजदीक ला सकते ह ।

हरिजनसेवक १७-४-३७, पृ० ७०-७१

## बुद्धिपूर्वक किया हुआ शरीर-श्रम — समाज-सेवाका अुच्चतम प्रकार

‘ कुछ साधिकाका सहायतासे म अथम चला रहा हू । मुझका बुद्धय हमें अपनका आत्मा विमान बनानका शिक्षा दना है, जिससे कि हम गाबर लगा और गाबर ममाजक साथ बेवत्प हा जाय और अिम प्रकार धुनकी पाठा-बहुत सवा कर सव । जिस बुद्धयका मामन खबर खेतीको यहां आजीविकाका मुख्य साधन बनाया गया है और कताका तथा बुनाजी अममें पूरक बुध्यागका काम दती ह ।

गत जनवरी माममें धानकी मुख्य फसल काट लेनक बाद आथमने अिधर आत मुड और साग भाजी जसी गौण फसलाकी खनी गुरु की है । गये माके जूनमें यानी आथमक आरभ-कालसे आज तक आथमकसाधन औसतन् १० नम्बरका करीब २ लाख ६० हजार गज सूत काता है, और माचक महीनस अक करघ पर बुनाजीका काम भी गुरु कर लिया गया है । बुनाजीका काम भा आथममें होता है । अिम तरह आथमन अपनी सफाई आवश्यकताअकि लिअ काफी सूत बन लिया है और आगा है कि अब यह सारा सूत हमार आथममें ही बन जायगा ।

जिस तरह हमारे आथमका अपने अिस प्रथम बपमें जेक अस स्वावलम्बी धृषक-परिवारक आत्मा तब पहचनेके प्रयत्नमें सफरता प्राप्त हुआ है, जा अपनी प्राय ममा आवश्यकताअका पूर्ति करने ही परि श्रमन कर रना है और गहरका तमाम लू-अवसाय बच जाता है ।

आथमन आज तब कभी अपना आटा दूगरी जगह नहीं पितवाया और न गहरका ही कभी असन अुपयोग किया है । अिछा तीन मदानग हम आथमकामा अपने आथमक धानका ही बिना पालिका धावन काममें ल रह ह ।

आथमका आरभ करत समय अगा साचा गया था कि स्वावलम्बी विमानकी जिन्गा बसर करनेका आत्मा साधनके साथ-साथ हम गग हरिजन-सवा और चरता बगरतब द्वारा गाबरी भा कुछ सवा कर मरग । मगर हमें अिस बुद्धयमें पूरी निरागा ही हुआ है, कसाकि हमें अभी तब आथमक लिअ खोजी अनुबूठ स्थान नहीं मित्र गया है । आजकल अिस जगह आयम है वही अक अक श्रेण परका ही

वस्ती है और ये छोट-छोटे षापडे अब-दूसरेसे आध आध माल या अब अेक मीलके फासले पर ह ।

फिर अब चीजमे आधमक कामका भारी धक्का पहुचा है । आहारके विषयमें मने कभी भारी भूल थी और बुनका पता मुझ अब चला है । मुझ अब असा मालूम होता है कि गरीबीके आदका षर जरूरतसे षादा अत्साहके कारण हमन अपन आगरका मान बहुत नीचा रखा था । बुनहरणके लिये साग माजीको ले लीजिय । सजी आध्रममें तो पदा होती नही थी जिसलिये नियमित रूपसे नही विन्तु कभी कभा हम साग-सरकारी खाते थ । अब दो महीनके बाद हमन जिस भूलका तो सुधार षिया मगर धी-दूध न लेनकी भूल ता रणी ही । धी-दूधको हम भोग विलासकी चीज समझते थ और यह मान बढे थे कि गरीबके भाजनमें तो धी दूध आ ही नहा सकता । जिसलिये धी-दूधका हमन बिल्कुल परित्याग कर दिया था । लकिन अब हमन अेक गाय खरीद ली है और दूध बगर अब उन लग हैं । गाय खरीदे हमें आठेक दिन हुआ ह । तब तक तो हम धीकी जाह नारियणका तेल खाकर ही मतोप मान रह थ । फिर जिस प्रदेशमें मुख्य आहार चावलका है । जिन सब कारणसे आरमवासिवाके स्वास्थ्यका बहुत क्षति पहुची है । आरम्भमें हम बारह आध्रमवासी थ पर आजकल हम केवल पाच ही आदमी रहत ह । मलरियास नी आध्रमवासिवाका तवायत थमजोर रहती है । यह जगली तालुका है जिसलिये मलरिया ता महा बारहा माह डेरा डाले रहता है ।

आध्रम अब तक गारीरिक थ्रमसे ही आजीविका प्राप्त करनके आणका पकडे हुआ है । यत् सही है कि जिस आण पर अगर बुद्धिपूर्वक अमल किया जाय तो हमारा नीतिबल बढे और सिद्धान्तके अनुसार जीवन वितानमें हम दृढ भी बनें । पर जिनके कारण हमारे कुछ साथी हमसे अलग भी रहत ह । प्रश्न यह है कि ब्रेड लेयर (गरीब-थ्रमके द्वारा आजीविका प्राप्त करना) का आण अगुण्य रहत हुअे भी असे वायकर्ता किस तरह आध्रमकी ओर आवर्षित हो सकते ह ।

मित्र तथा सहानुभूति दितानवाके सज्जन और आलाचक टॉल्स्टॉय यके जिस ब्रड लेयर के सिद्धान्तके विषय समाज-सेवाका आदण रखते हैं, और कहते ह कि तुम्हारा आध्रम समाजकी जो सेवा कर सकती है वह जिस सिद्धान्तके कारण एक गजी है । समाज-सेवा करनेके लिये मनुष्य यि ब्रड लेयर के सिद्धान्तके साथ कुछ समझौता कर ले तो



यह कहां तक ठीक समझा जा सकता है? 'होना' और करना अिन दोनोंके बीच यह जो भेद दिखायी देता है वह अवसर क्या आभासमात्र नहीं होता? और असलमें ता 'होना ही क्या 'करना' नहीं होता? ब्रेड लैबर का सिद्धान्त अतिगण्यताको पहुचा हुआ क्या कहा जा सकता है? या यह सब समझा जायगा कि बुमक अवसरा का पालन करके अुसके अयका धान कर दिया गया है?

बौमतन् हम सात बादमिया पर आठ महीनमें नीच लिखे अनुसार सच हुआ है

भोजन	१७१॥)॥॥
कपड	१६॥-॥॥
रोगनी	८॥=)
डाकगच	३१=)॥॥
कुन्वर	६=)५
बरतन	३॥)॥॥
दवाअिया	७॥॥)।
अपवार ('हरिजन')	३॥॥=)
सफर-सच	१०=)।

कुल २२१॥=)११

अिससे यह प्रगट होता है कि प्रति मास प्रति ब्यक्ति भाजन गच ३) और वस्त्रादिका सब १) आया है।"

श्री विगारलाल मगरवालाके नाम अब गुणितान निस्स्वाय कापकर्तान जो पत्र लिखा है, अुगोमें स यह अुद्धरण निया गया है। अब विगुद्ध-हृदय सेयरके प्रयत्नावा यह हूबहू चित्र है, और जा ब्यक्ति स्वामय जीवन बितानका प्रयत्न कर रह हा अुन सबका सभव है अिससे कुछ सहायता मिठ सब।

प्रपन सरास्वतीय है। यह अच्छा है कि लेखक तथा अुसके साधियाका जब काओ भूल नियाजा दनी है तब व अुन स्वीकारने और सुधारनेमें हितचिन्तन नहीं।

यह मैं नहीं जानता कि अुसने अिन पत्रमें जा प्रपन पूछ हैं अुतना श्री विगारलालने क्या जवाब निया है। पर अिन पत्रलसवका अिन प्रवाख प्रपनान परेपन कर रया है अुनमें निलचस्पी अुनवाले माधारण पाठनके सहायताय अुन अुतर देनेका प्रयत्न मैं अनस्य करूंगा।

अेगा मालूम हाता है कि 'ब्रेड लैबर (रागीके लिजे परिधम गरीर धर्म)के सिद्धान्तके विषयमें कुछ गन्तवहमा हा गयी है। यह सिद्धान्त

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

समाज-सेवाका विरोधी तो है ही नहीं। बुद्धिपूर्वक किया हुआ श्रम जुच्चस बुच्च प्रकारकी समाज-सेवा है। कारण यह है कि यदि कोई मनुष्य अपन गारीरिक श्रमसे देशकी अुपयोगी संपत्तिमें वृद्धि करता है तो अिसन जुत्तम और हो ही क्या सकता है? होना निश्चय ही करना है।

श्रमके साथ जो बुद्धिपूर्वक किया हुआ विगणन लगाया गया है वह यह बतलानके लिय लगाया गया है कि समाज-सवामें श्रम तनी खप सत्ता है जब उसके पीछ सेवाका कोअी निश्चित हेतु हा नहा तो यह कहा जा सकता है कि हरअक मजदूर समाजकी सेवा करता है। अक प्रकारसे तो वह समाजकी सेवा करता ही है पर जिस सेवाकी यहा बात हो रही है वह बहुत अूचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिय सेवा करता है वह समाजकी सेवा करता है और जितनस अुसका पेट भर जाय जतना मजदूरी पानका उसे हक है। अिसलिय जिस प्रकारका ब्रड लेवर (गारर-श्रम) समाज-सेवासे भिन्न नहीं है। अधिकाग मनुष्य जो काम अपन गारीक पापणके लिय या बहुत हुआ ता अपन कुटम्बक लिय करत ह उसे समाज-सक सबके हितके लिय करता है।

अिन सात आश्रमवासियाको जाज यह मालम हो रहा है कि अुह अपन अन्न वस्त्रके लिय मेहनत करनके पश्चात दूसरी सेवा करनका समय गायद ही रहता है। य सेवा अगर अपन काममें कुगल होते तो जसी बात कभी न होती। असलमें वे कायकुशल नहीं ह। खती-बाडीके मजदूरोंके रूपम अुहे हम देखते ह ता वे साधारण मजदूरोंकी बराबरी कर ही नहीं सकते। कारीगरोकी कोटिमें भी वे नौसिलिय ही कहे जा सकते ह। भीश्वरका वृपासे प्रत्यक कायकर्ता अब यह जानता है कि सूत कातनवाला अपन औजारको अगर बुद्धिके साथ काममें लावे तो अमुक समयमें वह सूतकी मात्रा सहजमें दूनी कर सकता है अर्पात् अुसकी चरखकी आमदनी दूनी हो सकती है। यह बात अधिकाग वस्तुओंके सबधमें सत्य है। खतीमें अुनके अिन्ही औजारोंमें तरकी करनका क्षत्र अितना विगल है कि यदि प्रवृति बीचमें न पड तो किसान अपनी वदिका अपयोग करके नित्य अुतन ही घट काम करन हुआ अपनी आमन्नी सहज ही चौगुनी कर सकते ह। अिसका मतलब यह हुआ कि आज जितनी आमन्नीके लिय वह जितनी मेहनत करता है अतनी करनकी अुसे जरूरत न रहेगी। अिसलिय य सेवा जब कुगलता प्राप्त कर लग तब आजकी अपेक्षा बहुत कम समयमें वे अपन अन्न-वस्त्रके लायक कमा त्रेग और हरिजन-सेवा अथवा दूसरे किसी काममें व अपनी गक्तिका विना किसी बापाके लगा सक्य। अन्क प्रकारके खर्चोंमें फसे हुआ साधारण गहस्याके लिय यह समस्या अटिल हो सकती है, पर जिस त्यागी सेवकको महीनमें

केवल चार ही रुपयेकी जरूरत है जुनका ता चार रुपये बमानेकी मेहनत मजदूरी कर उनके बाद बहुतसा समय बच सक्ता है।

लेकिन प्रति मनुष्य यह तान रुपयेका मामिक राब दखत हुआ मनुष्यका पट क्या सचमुच भर सक्ता है? डॉ० तिलकन दम्बजीक रिअ जा ५२० का हिमाव बाधा है वह अगर सहा है, ता गावक रहन-महनके लिअ यह तीर रुपया ठीक ही है। और डॉ० तिलकन भाजनका जा सूचा दा है जुनमें म अपना निजा अनुभव जोड दू सब ता काओ कठिनाओ रहता ही नही। डॉ० तिलकन गावका पुराकमें स दूधक चूणको अलग कर दिया है। पर जमा कि व स्वाकार करत ह बिना दूधक काम चर ही नही सक्ता। अिन आश्रमवासियात दूधका जा त्याग कर रिया मा वह जुनरी भूल थी। गह सहा ह कि कराना मनुष्याका दूधकी अक बूद भी नमाव नहा हानी। पर अमा ता अनक चीजें ह जा अूट नहा मिलता। अगर हमें सवा करनक रिअ जावित रहता ह ता अूठें छाननका हमें गाहस नही करना चाहिये। त्रिसलिये जिनके बिना हमारा काम चर हा नग सक्ता असा चाजें हम न छाडें और गाववागना अिममें मरु दें कि व अपन रिअ मा जुन चाजाका पदा कर ल। गह चावउ वाता जुजार जम पूष जनाज और हरी भाजिया जा कल्बी ही साजा जा सक्ता ह और दूध तथा गावामें पग हानवा आम अमरु आमुन बेर आरि मौममी कन निरोगी जावनके लिअ जरुर ह। नीमकी पतीका ता गायद हरी भाजियाका रानी क्ता जा सक्ता है। नीमका पत्तिया भारतमें सक्त्र मिअ सक्ती ह। और मनुष्यक साने लाभ अनक प्रकारका असा घाम भी है जिमका हमें पता नहा। अिमला सब जगह मिलती है। यह भी पेंक दनकी चीज नही है। पर अिमलाक विरुद्ध अक तरहका जा पूवप्रह है अूत समझना कठिन है। कामनी नीबुआकी जगह म अब अिमला काममें लाने लगा ह। और अिसन मुशे बहुत ही लाभ हुआ है। आहारमें क्या क्या गुषार हो सक्त है अिस सबका शोधके लिअ हमार मामन असीम सक्त्र पढा हुआ है। अिम शोधके अम बढ-बढ परिणाम निरु सक्त्र ह जो समाजक लिजे और साठकर भारतक भूता मरलवाले कराना मनुष्याक रिअ काफी महत्त्वका स्थान रखत ह। अिमका यह अथ हुआ कि स्वास्थ्य और संपत्ति दानाका ही जुनस प्राप्ति हा सक्ती है। रमिनक बथनानुसार ता य दाना चाजें अक ही ह। अिम छानन आश्रमक सन्स्थापी य धारणा बिलकुल मही है कि व सग सामाग पर क्तर बडीम बडी समाज-सेवा करगे। जुनरी सेवानी गुणध बहा आगपाग पन्गी और बह सत्रामक मिद्ध हागी। कालातमें यह नवा भावना समस्त भारतमें और फिर अगिल विश्वमें व्याज हा जावगी। अिम गवामें अक्का कल्याण सबका कयाग है।

## बौद्धिक और शारीरिक काम

प्र० — हम किसा रबींद्रनाथ या रामणक लिखे शरीर-श्रम करके ही रोटी कमान पर जोर क्या है? क्या यह अनुकी दिमागी ताकतना निरी बरवादी न हागी? दिमागी काम करनेवालाका अग मेहनत करनेवालोंके बगबग ही क्या न समझा जाय क्योंकि दोनों ही समाजको फायदा पहचानवाला काम करते ह?

जु० — दिमागी काम भी अपना महत्व रखता है और जीवनमें खुसिया निश्चित म्थान है। लेकिन म ता शरीर-श्रमकी जरूरत पर जोर देता ह। मेरा यह दावा है कि खुस फजते किसी भा मनुष्यको छुकारा नहीं मिलना चाहिये। अिससे मनुष्यके दिमागी कामकी अन्नति ही होगी। म तो यग तक कहनको हिम्मत करता ह कि पुरान जमानेमें हिंदुस्तानक ब्राह्मण बौद्धिक और शारीरिक दानो काम करते थे। वे चाहे न भी करने हो लेकिन आज तो शारीरिक कामका जरूरत सिद्ध हो चुकी है। अिस मिलसिलेमें मैं आपको टॉ-स्टॉयक जीवनका हवाग देते हूँ यह बताना चाहूँगा कि अन्हां रूसी विमान वान्दरव्हेके शारीरिक कामक सिद्धान्तको किम प्रकार माहुर किया।

हरिजनमेवक २२-२-४७ प० २८

## बौद्धिक विषय बनाम बुद्धिग

श्री मगहरि परीत लिखते ह

शारी और नशी ताअमक विद्यालयमें बौद्धिक विषय गणका प्रयाग बहुत ही गलत तरीकेसे किया जाता है। अक्षरनाम अथवा पुस्तकका अध्ययन बौद्धिक विषय कहा जाता है। अमुक समय अद्याक लिख है और अमुक समय बौद्धिक विषया लिख — अगा भी कहा जाता है। कुछ विद्यालयमें ता यह भा कहते ह कि अुहें दो घट बुद्धिगमें लगान होते ह और तीन पढनमें। कित्ताकाक गुरु हानम ही यह माना जाता है कि पढाओ आरम्भ हुआ। अिस विषय पर आप लिख तो चुके ह लेकिन फिर मा लिखनकी जरूरत है। बुद्धिगमें बुद्धिना विकास तो होता ही है। अिसलिजे यह नहा

वहा जा सकता कि बुद्धिगो बुद्धिका विषय नहीं है। यह आवश्यक है कि आप जिसके सम्बन्धमें भी स्पष्ट रूपसे लिखें।

लेखककी गिवायत बिलकुल सच है। अन्तरज्ञान बुद्धिका विषय नहीं, वह तो स्मरण शक्तिका विषय है। जिस तरह किमा पदाथका चित्र देखकर गीतना बुद्धिका विषय नहीं अुमी तरह अन्तरके चित्रके बारेमें है। लेकिन अन्तरज्ञानमें अुमके अथका भा समावेश तो है ही। अनेक विषयोंकी किताबें पढ़ना और समझना भी अन्तरज्ञानमें शामिल है। यही बात बुद्धिगोको भी लागू हानी है। औद्योगिक ज्ञानका मतलब केवल कोभी धाचा सीखना ही नहीं बल्कि अुससे सम्बन्धित शास्त्रका भी जानना है। जिस तरहक आध्यात्मिक ज्ञानमें बुद्धिका सिर्फ विकास ही नहीं होना बल्कि अन्तरज्ञानक मुकाबले बहुत अधिक विकास होता है। अन्तरज्ञानमें तो बुद्धिक विकासके साथ स्मरण शक्तिका ही विकास होता है। यह बात हम हाजीस्वूल और पाठशालाके निकले हुए सबका विद्यापिपाके बारेमें कह सकते हैं। बुद्धिगोके शास्त्रज्ञानके विषयमें असा दुष्परिणाम ज्ञानकी समाधान नहीं दीखती। अमी मूलमें अमुक समय अद्योगके लिये और अमुक समय अन्तरज्ञानके लिये यह भू बुद्धिगोके दर्जेको कम करनी यह प्रया दूर ही जानी चाहिये। क्याकि यह नद निश्चिन्ता है और शाय अिना नुबमान भी होता है। विद्यापिपाके मनमें यह भद समा जाता है और जिससे बुद्धिगोके प्रति अुदासीनता और पढ़नेके लिये माह पया हाता है। अिम तरह दाना चीजें बिगड जाती हैं। विज्ञानका बीडा बननस ही बुद्धिका विकास नहीं हा जाना। अुसने तो आप और विचार शक्ति दाना ही सराब हाती ह। बुद्धिगोके प्रति अुदासीनता ज्ञानमें अुमका ज्ञान अूपरी रहता है। प्रत्येक वस्तु अपन स्थान पर ही गोभा दना है। बुद्धिगोके पूरा ज्ञानके लिये पुस्तकके अध्ययनकी आवश्यकता रहती ही है। और अुमके सिलसिलेमें जो कुछ पढ़ना पडता है सा तो समझकर ही पढ़ा जा सकता है। अिम तरह अुममें हानिके लिये अवकाश हा नहा गता। जिनका मैं समझा सरूगा अुनका पूरा विकास ता बुद्धिगोके द्वारा ही करूंगा। अिमाका नाम नया तात्रीम या सन्धा तालाम है। यह तो अपने समकालीनकार आरगा ही। फिर भी अुम समय तब बुद्धिगो और अन्तरज्ञानका भू ता अिम ही जाना चाहिये। जिस तरह गणित माहिय अित्यादि का हाता है अुनी तरह बुद्धिगोका भा हाता चाहिये। सबको गिशाका अग ही समझना चाहिये। यह भम तो निश्च ही जाना चाहिये कि बुद्धिगो गिशा-ज्ञानका अन्तरका विषय है। जब तक यह भम न टूटा विद्यापिपाके विज्ञानमें सराब हानी रहेगा।

## अहिंसक अुद्योग

[लेखक महादेव देसाजी]

अखिल भारत चरखा पथ और गांधी सेवा सघकी मिलीजुली बठकमें जो पिछ्ठे जूनमें हुआ थी खानीके अयगाहकी यापक समझसे सवबित्त कजी प्रश्ना पर चर्चा हुआ। जक बठकमें गांधीजी हाय-अद्यागकी अन्नतिक अहिंसक पहलू पर लव समय तक बोले। अन्हान कहा

अहिमा-परायण मनुष्यके सारे कामकाज और सारी प्रवृत्तिया अहिंसासे रगी हुआ हागी अिसलिअ असका धधा असका व्यवसाय निश्चित रूपस अहिंसक होगा। वसे तो सूक्ष्म दष्टिसे देखा जाय तो बिना धानी अन्त हिंसाके काओ भी काम या अद्याग धधा सम्भव नहां है। कुछ न कुछ हिंसा किय बिना जीना भी शक्य नहीं है। हमारो काम तो यही माचना है कि जसी हिंसाकी मात्रा घटाकर कमस कम कस की जाय। अहिंसा अ भी नकारात्मक है यानी वह जीवनमें अनिवाय हिंसा छोडनके प्रयत्नका सूचक है। अिसलिअ जिसकी अहिंसामें अद्वा है वह जसे ही अद्योग धधमें लगगा जिसमें कमसे कम हिंसा होगी। अुदाहरणके लिअ हम यह कल्पना नहीं कर सनते कि अहिंसामें किस्वास खनवाला मनुष्य कसाओका धधा पसन्द करेगा। अिसका यह अय नहीं कि मास खानवाला अहिंसक नहीं हो सकता। मास खानवालामें असे बहुतसे लोग मिलेग जो मास न खानवालासे ज्यादा अहिंसक हाग। जसे कि दीनवधु अेडूज। लेकिन मास खानवागामें भी जो अहिंसामें अद्वा रखते ह वे णिकारीका धधा नहीं करेग और ल्गाअामें या लडाओकी तयारीमें गामिल नहीं हाग।

अिस तरह कित्तन ही काम और धध अस ह जिनमें निश्चित रूपस हिंसा रहती है। दुहे अहिंसक मनुष्यको छोडना हागा। लेकिन सतीका धधा नहीं छोडा जा सकता यद्यपि अमक मात्रामें अुसमें हिंसा अनिवाय है। अिसलिअ अस मामलामें कसौटी यह है जो धधा हम स्वीकार करना चाहते ह असका आधार क्या अहिंसा पर है? वसे तो हर कामम हर क्रियामें षोडी बहुत हिंसा रहती ही है। हमारो काम अितना ही है कि अस ययासम्भव कम करनका प्रयत्न करे। यह काम अहिंसा पर हादिक अद्वाक बिना नहीं हो सकता। मान लाजिय कि कोओ आत्मी प्रत्यक्ष हिंसा किलकुल नहीं करता मेहनत करने खाता है लेकिन पराया धन या खुगहाली देनकर

हमगा आप्यति जल बुठना है। अमा आग्नी अहिंसक हरगिज नहा माना ना सक्ता। अर्वात अहिंसक घचा वही है जो जडस हिंसा रहित है और जियमें दूमरेकी ओप्या या गोपण नहा है।

‘ मर पास अिस बातना अतिहासिक प्रमाण ता नही है परंतु मन हमगा मह माना है कि भारतवर्षमें अक समय गावाका अयतण असे निर्दोष अहिंसक अंधोग घचा पर रचा गया था। वह मनुष्यक अधिवारा पर नहा यन्त्रि मनुष्यक धर्मों और कर्जों पर लडा था। अस घचामें ग्य हूअ ठाग अपना जाकिना ता कमाते ही थ, अकिन जुनके परिश्रमसे मार ममाजका हित और कयाण हाता था। अुनाहरणके लिअ गावका सुतार गावक मिसानाता जरुरतें पूरा करता था। अस नग पमा नहा मिलता था, अकिन गावक ठाग अुसे अपनी महनतमे पदा की हुजी अनाज बगरा चीजें मेहनतानेक मामें दन थ। मरा कहनना प मत्तअ नगी कि अिस प्रयामें भा अयाय नहा हा सक्ता था अकिन अम अयायकी सभावना अिसमें कमस कम रहता था। म साठ वरसस पहलक बाठिपावाइक लाक जावनकी बात आपका बता रण हू अिसना मुझे निजा अनुभव है। आज हम लागाकी आत्वामें जितना तेज और अुनक हाय-भावामें जितनी अकिनमें देवते हू अुससे अुम जमानक लागाकी आत्वामें ज्यादा तेज और अुनके हाय-भावामें ज्यादा अकिन और सपति दियाआ दता था।

‘ अिन अंधोग घचामें गरीर-श्रम मुख्य फीज थी। विनाल यत्रोद्याग अुम समय नहा थे। क्याकि जब मनुष्य हापस जात सके अुतनी ही जमानम मनाप मानता हो तब वह दूसरका गोपण नही कर सक्ता। हाय-अुद्यागामें गुनामी और गोपणकी गुजाअिग ही नहा है। विनाल यत्रोद्योग अक मनुष्यके हापमें घनके ढर अिकटठे करत हू, अिसक बल पर वह अतक लोपाति अमन लिअ कही महनत कराता है। अपन मजदूरके लिअे आत्मा स्थिति पना करनकी नी गोपण वह कोगिग करता हागत फिर भी अुममें अयाय और गोपण ता रहता ही है और अुसका अथ अमुक रूपमें लिया हा है।

‘ जब म यह बात कहता हू कि अुम जमानमें समाज दूगरके गोपण पर नही किन्तु माप पर रचा गया था तब म अिनना हा बनाना चाहता हू कि सत्य और अहिंसा अम गुण नही हैं तिहू कवअ ध्यक्ति ही मिद कर सकता है अलि मारी जातिया और मानव-समाज भी अुन पर समल कर सकत ह। जो गुण कवअ मठ या कुटियामें ही तिल सकता है या ध्यक्ति ही अिसका विकास कर सकत हैं अुम म गुण ही नही मानता। मरी नजरमें अस गुणरी कोभी कीमत नही है। ’

हम बहुधा यज्ञ शब्दको काममें लाते हैं। हमने कृताञ्चीको दैनिक महायज्ञकी श्रणी तक चढ़ाया है। असलिये यज्ञ शब्दके विभिन्न फलितायों पर विचार करना जरूरी है।

यज्ञका अर्थ है लौकिक अथवा पारलौकिक किसी भी प्रकारक फलनी आकांक्षा रख बिना दूसरोंके हितके लिख किया गया काम। कम शब्दका यहाँ 'यापकसे' 'यापक' अर्थ करना चाहिये असमें वायिक मानसिक और वाचिक—प्रत्येक प्रकारके कामका समावेश माना जाना चाहिये। दूसरो से केवल मनष्य-वर्गका नही बल्कि जीवमात्रका आगम्य है। असलिये और अहिंसाकी दृष्टिसे भी मनष्य-जातिकी सेवाके लिख ही क्या न हो दूसरे जीवाकी बलि देना या अनका नाश करना यज्ञ नहीं कहा जा सकता। वेदादिमें पशु बलिजा जो विधान किया गया बताया जाता है वह हमारे अपरोक्त अर्थकी दृष्टिसे अनचित है। कारण पशुबलि सत्य और अहिंसाकी बनियादी कसौटी पर खरी नहीं अतरती। म वेदका अर्थ करनकी अपनी अपयोग्यता नि सकोच स्वीकार करता हूँ। लेकिन जहाँ तक अस विषयका सम्बन्ध है अपनी अस अयोग्यता पर मुझ कोभी खद नहीं होता। क्योंकि ब्रह्म समाजमें पशुबलिक रिवाजका प्रचलित होना सिद्ध कर दिया जाय तो भी अहिंसाका अपासक असे अनुकरणीय नहीं मान सकता।

यज्ञकी अपरोक्त व्याख्याके अनुसार जिस कामसे ज्यादाने ज्यादा जीवोंका अधिकसे अधिक विनाश क्षणमें कल्याण हो और जिसे ज्यादासे ज्यादा स्त्री पुरुष बहुत आसानीसे कर सक असे कामको अुत्तम यज्ञ कहा जायगा। असलिये तयान्वित अुच्चतर ध्ययके लिख भी किसी दूसरेका अकल्याण सोचना या करना महायज्ञ होना तो दूर यज्ञ भी नहीं है। और गाता सिखाती है तथा हमारा अनुभव बतलाना है कि यज्ञरूप्य कामके सिवा दूसर काम मनुष्यको बधनमें बाधत ह।

असे यज्ञक अभावमें जगत अक क्षणके लिख भी टिक नहा सकता और अिसीलिये गीता दूसरे अध्यायमें ज्ञानका विवचन करनके बाद तासरे अध्यायमें असकी प्राप्तिके अपायाका बधन करती है और स्पष्ट शब्दोंमें कहती है कि यज्ञके भाय हा प्रजाकी सृष्टि हुञ्जी है। असलिये यह शरीर हमें खरी



सृष्टि की सेवाके लिये ही दिया गया है। और यही कारण है कि गीता कहती है जो यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरावा अन्न खाता है। गुद्ध जीवन जीनकी अिच्छा रखनेवाला व्यक्तिवा हरअब कम यत्नप होना चाहिये।

हमारा जन्म यज्ञक साथ हुआ है, अिसलिये हमारी स्थिति जीवन भर अणुकी रहती है और अिसलिये हम हमेंगा जगतकी सेवा करनेक लिये बंधे हुये ह। और जिन तरह कोभी गुलाम अपने स्वामास — जिनका वह भवा करता है — अन्न-वस्थापि पाता है उसी तरह हमें भी जगतका स्वामी जो कुछ द अुस आभारपूवक स्वीकार कर लेना चाहिये। अुसस हमें जा कुछ मिले वह अुसका हमें लिया हुआ दान है। क्यार्कि अुणाका तरह अपन कतव्यका पालन करनेक लिये हम अुसक अेवजमें कुछ भी पानके अधिवारा नहीं ह। अिसलिये यदि हमें वह न मिले तो हम अपन स्वामाका दीप नदी दे सकत। हमारा गरीर अुसका है अतः वह अपनी अिच्छाके अनुसार चाहे रखे चाह न रखे।

यज्ञ स्थिति उसी नहा है कि अुनका गिकायन की जाय या अुस पर श्रेद किया जाय। अुल्ले, यदि विघाताक विघानमें हमारा जन्म स्थान हम समथ ले, तो हमें यज्ञ स्थिति स्वाभाविक सुखद और अिष्ट मालूम हागी। अिस परम सुनका अनुभव करनेक लिये अविचल श्रद्धाका आवश्यकता है। अपने विषयमें कोभी चिंता मत करा सब चिंतायें परमकरका सौंप दो — यह आत्म सब धर्मोंमें लिया गया दीवता है।

अिन्ने विगाता करनेका कात्री कारण नहीं है। जा स्वच्छ मनसे सेवाभावमें रण जाता है अुम अुनकी आवश्यकता दिन प्रतिदिन स्पष्ट हाती जाती है और अुनकी श्रद्धा भी अुगा प्रमाणमें बढ़ती जाता है। जा स्वाय छाडनक लिये और मनुष्य जन्मक साथ अिन् हुआ अिम कतव्यका पालन करनेक लिये तयार नही है वह सेवामाग पर नहीं चल सकता। जान-अनजान हम सब कुछ-न-कुछ निस्वाय भवा करते ही ह। यही सेवा हम विचार पूवक करन लगे, तो हमारी पारमार्थिक सेवाकी कृति अुत्तरातर बढ़ती जाय और न बचल हमें सार्थ सुखनी प्राप्ति हा परंतु जातका भा कारण हा।

२

यज्ञके बारेमें मन पिछे सप्ताह लिया या एकिन अिसक विषयमें और ज्ञान लिखना चाहता ह। अिस सिद्धांत पर जो मानव जातिक साथ

चला आ रहा है, और विचार करना म मानता हूँ लाभप्रद ही होगा। दिनने चौबीसो घट बतय-मालन करना या सेवा करना यन है। इसलिअ परोपकाराय सता विभूतय '—जसी सूक्ति यदि अपकार गल्में दूसरा पर कृपा करनका भाव हो सदोप कही जायगी।

निष्काम सेवा करना दूसरा पर नहीं बल्कि स्वय अपन पर कृपा करना है ठीक जसे कि हम अणका भुगतान करते ह तो हम अपनी ही सेवा करते ह अपन बोझको हल्का करते हँ और अपन बतव्यका पूरा करते हँ। इसके सिवा न केवल भूँडे लोग बल्कि हम सब अपनी साधन सामग्रीको मानव-जातिकी सेवामें लगानके बतव्यसे बध हुअ ह। और यदि जसा कानून है—जसा कि वह स्पष्ट रूपमें है ही—तो जीवनमें फिर भागका कोअी स्थान नहीं रहता और अुसका स्थान त्याग ले लेता है। त्यागका बतय ही मानव जातिकी विापता है पनासे अुसके भदका सूचक है।

लेकिन त्यागका अय यहा ससारको छोडकर अरुष्यम वास करना नहीं है। असका अय यह है कि जीवनकी तमाम प्रवृत्तियोमें त्यागकी भावना हानी चाहिय। कोअी गृहस्थ जीवनको भोगरूप न मानकर बतव्य रूप मान तो असस असका गृहस्थपन मिट नहीं जाता। यथाय व्यापार करनवाला व्यापारी करोडाका 'यापार करते हुअ भी अोकसवाका ही विचार करेगा। वह किसीको धोखा नहा देगा सट्टा नहीं करेगा साल्गीति रहेगा किसी जीवको कष्ट नहीं देगा और किसीका नुकसान करनके बजाय खद करोडाका नुकसान सह रेगा। कोअी यह कहकर अस बातकी हसी न अडाय कि असा 'यापारी केन्ठ मेरी कल्पनाम ही है। दुनियाका सौभाग्य है कि जसे व्यापारी पूवमें भी ह और पश्चिममें भी ह। यह सच है कि अस 'यापारी अगलिया पर गिन जा सकते ह लेकिन यदि अुक्त आदशको प्रगट करनवाला अक भी जीवित नमूना हो तो फिर जुसे काल्पनिक नहा कह सकते। और यदि हम अस प्रश्नकी गहराअीमें जाय तो जीवनके हर क्षत्रमें हमें जसे मनुष्य मिलग जो समपणका जीवन विताते ह। असमें सगैह नहा कि जसे यानिक अपना धवा करते हुअ अपनी आजीविका भी बमाने ह। लेकिन वे धघा आजीविकाके लिअ नहीं करते आजीविका अपने धघका गौण फल है। यनमय जीवन कलाकी पराकाष्ठा है असीमें सच्चा रस और सच्चा आनल है। जो यन बोझरूप मालूम हो वह यन नहीं है। जिस त्यागस बष्ट मालूम हो वह त्याग नहीं है। भोग नागकी ओर ले जाना है और त्याग अमरताकी ओर। रस कोअी स्वतत्र वस्तु नहा है। वह तो जीवनके प्रति हमारे रुव पर निर्भर करता है। किसीको नाटकक परदा पर चित्रित दृषामें रस मिलता है तो दूसरेको आकागमें प्रगट होनवाठ नित्य-नय दृषामें।

त्रिमूर्ति रम व्यक्तित्व और राष्ट्रीय तालीमका विषय है। हमें बचपनमें जिन चीजोंमें रस लाना सिखाया गया हा बचपनमें ही हमें रस मिलता है। और यिना अब राष्ट्रकी प्रजाका जा वस्तु रममय मालूम होनी है वह किसी दूरमें राष्ट्रका प्रजाको रसहीन मालूम हाती है। इस बातके अन्वेषण ता आसानीसे दिये जा सकते ह।

फिर यज्ञ करनेवाले कभी भवक असा माना है कि हम निष्काम भावसे सेवा करते ह इसलिये हमें लागने जरूरी और बहुतसी गर-जरत चीजें भी लानी छू है। यह विचार भवक मनमें ज्या ही आता है त्या ही वह भवक नहा रह जाता तब वह अत्याचारी भावक बन जाता है।

जा सेवा करना चाहता हा अमुन अपनी सुविधाआका विचार नहीं करना चाहिये। अपनी सुविधाआका विचार ता वह अपन स्वामाका —आचरका—सौंप देता है। बीदवरकी अिच्छा हागी ना वह लेगा न हागी ता नहीं देगा। अिमलिअ सेवक जा कुछ अमुन मित्र सा सेव अपन आसामक लिअ नहीं रम लगा, अपन लिअ वह अमुनमें से अतना ही लगा जितनकी अुने गत्वमुव जरूरत है। वाकीना वह त्याग करेगा। अमुन अमु विधामें अगना पठें ता भा वह गात रहगा भाष नहीं करगा और अपना चित्त स्वस्थ रखेगा। मद्गुणाका तरह अमुना सेवारा पुरस्वार सेवा करतका गुण हा है और अुनामें व सनाप मानगा।

अिमक सिवा सेवारासमें किसी तरहकी लापरवाही या दर नहीं चल सकती। जा आत्मी यह समझता है कि भावधानी और परित्यमकी आनखतना ता मिक अपना व्यक्तितगत भाव करतमें है नि गुत्व किया जानवाग सासजनिक भाव अपनी सुविधाक अनुसार जन करना हा तब और जिम तरह करना हा अमुन तरह किया जा मरता है कहना चाहिये कि यह यगना क-न-न भी नहीं जानता। दूसराकी स्वच्छापुत्रक का जाने वाग सेवा अपनी पूरी गक्ति लगाकर की जाना चाहिये यह सेवा पहल और अना निजी भाव आत्ममें—यही सेवाका मून हाता चाहिये। माराग म कि पुढ मय करतवाका अपना कुछ बाका नहीं रहता वह मद् गुणापन कर देता है।

## श्रमका गौरव

विश्वविद्यालयके नवधवक स्नातकाको अपनी पदविपाकी फरी करते हुअे हम राज हा दखत ह । व अस आदमियासे अपना सिफारिग कराने रहते ह जिह गिधा ता कुछ नही मिला है मित्तु जो धनी बहुत ह और १००में स ९० मामलामें ता विश्वविद्यालयाकी पदविपासे कही अधिक अिज्जत अफमराकी तिगाहमें धनीकी सिफारिगका ही ठहरता है । जिससे आविग क्या साबित होता है ? यही न कि दिमागी तालीमसे कही अधिक कीमत धनकी लगायी जाती है । दिमागकी पूछ आग्रकल बहुत कम है । यह क्या ? क्याकि दिमागका धन पदा करनमें सफलता नही मिल सकी है । जिम असफलताका कारण है असे कामोकी कमी जिनमें बुद्धिकी जरूरत पड । मनुष्य समाजमें सबसे अधिक कीमती और तावनवर चीज दिमाग ही है । आज अुसकी माग न होनरे कारण यह बकार वस्तु बन गया है ।

विसानका धन अुसके हाथ ह । जमादारकी ताकत अुसका जमानमें है । जमीनवा काम खेती है । हाथका ताकामका नाम अद्याग है । म जानता हू कि खेतीको भी कुछ लोग अुद्योगमें ही गिनत ह परंतु यदि हम जिनके विगिष्ण तत्वको देयें तो समझमें आया कि कृषि और अुद्योग अलग अलग वस्तुअें ह ।

पारौरिक श्रमक अुस विभागको अुद्योग कहना मुनासिब हागा जिनमें हाथकी तालीमक लिअ बराबर मौका मित्ता जाय और जिसमें हमारी आमदनोके प्रमग बढत जानका सभावना हो । खतीमें काम करनेवाणके वारेमें यह नही कहा जा सकता । हू चलानवाले बीन बोनवाले या खत निरानवाणका जपन हायाकी गिण्ठाके कारण कुछ अधिक मजदूर नही मिल सकेगी । खतीक काममें अधिक आमना करनका निपुणता साखनकी गजालिग नहा है । जब किसी बन्आना ले गजिय । वह छोट छोट मामूली बक्स बनानसे शरू करता है । अम्मामके जरिये वही आन्मी गरावकी दोतल रखनका बक्स भी बनाना साख सकता है । अब यह देखिय कि हायसे काम करनकी निपुणतामें अन्नति होनेके साथ ही साथ अुसकी मजदूरी कितनी बन् गया । आप विश्वास करे कि जिस आन्मीन दो सागावाला बक्स

बनाया है जितव फल हुआ फणाम बोललकी गता हाता है। अम  
 मन मामूनी बरम बनानक लिअ हा नीकर गता था। गरुमें अमकी  
 मजदूरा छह जान राज था आर दा बर्योमें वही बनग बरकर रुपया  
 राज हा गता और अमन बनाय हुआ मामानका बाजारकी कामतस  
 जमन मालिकता चार जान राजका नफा भी हा जाता है। जिनम  
 ना सारक भातर (१३२) स ३६५) का वृद्धि गतनेमें जाता है।

अदिन हमारा जनमख्याक ९८ फामनी गग खेनीका काम करत ह।  
 जमानक रबरका बढ़ता हाता नहा। जनमख्याका वृद्धि सार माय  
 मजदूराकी बरनी हाता जाता है। जिन जमानम २० साल पल्ल  
 ५ आत्मियाता परवरिग हाता था अमी पर अत्र १२ स १५ आत्मि  
 याका बसर हाता है। कुछ हाताम जिन अुपरा बाझका दगातर  
 जाकर कम किया जा सवता है किन्तु अधिकतर मामगमें लाचार  
 हातर प्राणविकिक कम प्रमाणम ही काम चला गता पता है।

अपरान्त गग श्रायुत मधुसूत दासक विहार या मन अिम्पिटघु  
 के मामन १९२४ में दिव मय भापणता अक अग है। जिन भापणका म  
 अपन पास अितन तिनमि अिनलिअ रण रहा कि जब समुचित अवसर मिग्या  
 तत्र जिसक आवस्यक अगाका म अुपयोग करगा। व्याख्यानतानान जा कुछ बहा  
 है अममें बाआ नया बाल नहीं है। परन्तु जिन बानाका असल कामन  
 जिनमें है कि मगदूर बगल हात हुआ नी अपन हाथा काम करतरा व न  
 बवल नफरतका निगाहम नहा दयत ह यलि स्वय वग दुमरमें हाबका  
 कारणरा अुद्धान साग्य है और बह भी बरीर गीवक नही बलि नीजवानाका  
 महनन माकतका बीमत ममज्ञान और य बतगनक लिअ कि आर व  
 दगक व्यवसायाकी आर नजर नहीं करग ता जिन दगाता भविष्य कुछ  
 बहून अच्छा नहीं हागा। श्रायुत गान बरुवमें अेक बमगाग मुलबारा  
 है। यह कारणना कितने हा सवनाके लिअ जा अुमन पल्ल महज अतजान  
 मजदूर म गिगातर बना हुआ है। मगर सवम बग अुद्योग, जिनमें  
 पराडारी महननका जकरत है मून-बाआ हा है। जगन जिन बानका है  
 कि अिन गग विमानाता अपन बडा मग्राका वृद्धिम किया जानवाला  
 अक और काम लिया जाय अिनम अनक हाय आर गिमाग गानाता तागिम  
 मि। अुनन लिअ जा सवम अउअ और गला गिगा वृद्धा जा सतरा  
 है वह पनी है। सवम मनी अिमलिअ कि गिगा मुरत हा आमनी भी  
 हात सगता है। और यि हमें भारतवाममें नावजनिक गिगारा प्रचार करना  
 है ता प्राथमिक गिगा गिगात्री पढ़ात्री और हिमाबरी न हाकर मून  
 बानन और अुमम सबधिन अय गनका हागी। और जब अिनक जरिय

हाथों और आंखों को पूरी तालाम मित्र जानी है तब कहीं बाल्य जिन तीनों का जीवनने लिख तयार हाता है। म जानता हू कि यह कुछ लोगोंको तो असमय और कुछको बिनाकु अव्यावहारिक मालूम हागा। मगर जो बसा सोचते हू वे हमारे करोण भाओ-बहुताकी हालत नहीं जानते। व यह भी नहा जानते कि हिन्दुस्तानके विमानवि कराडा बच्चाको गिशा दनका क्या अय है। और यह गिशा तब तक नहीं दी जा सपती जब तक गिशात भारतवासी जिन्हान जिस देशमें राजनीतिक जागृति पदा की है परिश्रमके गौरवका समझ नहा लेने और जब तक हरअव नौजवान परखा चलानेकी बलाको साखना और गावोंमें फिरसे असे दाखिल करना अपना परम कतव्य नहीं मानता।

हिन्दी नवजीवन ९-९-२६ पृ० २९

५४

## श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानें

[ १६ फरवरी १९१६ का मंगलममें वाजि अम० सी० अ० व ममा महमें लिखे गये अक भाषणम। ]

आप पूछ सकन ह हमें अपन हाथका अुपयोग क्या करना चाहिये ? और कह सकने ह शारीरिक काय तो या अपन ह अनसे करवाया जाना चाहिये। म तो अपन समयका अपयाग केवल साहित्य और राजनीतिक रखावे पठनमें ही कर सकता हू। मरा खयाल है कि हमें श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानना है। अगर एक नाओ या चमार कॉलेजमें जाता है, तो मुम नाओ या चमारका घन्ना छोड़ नहीं देना चाहिये। म मानता हू कि नाओका घन्ना अनना ही अच्छा और अपयागी है जितना कि डॉक्टरका घन्ना है।

स्वाचन्द्र जप्ट रात्रिटिम्ड ऑफ मन्दात्मा गांधी प० ३८९ १९३३

## कर्मयोगका सिद्धान्त

{आ महाश्व देमाजीक माप्ताहिक पत्र स।}

एक मुलात्मान गांधीजीम पूछा कि कर्मयोग पर आपका अनुचित आग्रह भटे न हो, पर क्या आप धुम पर जरूरतसे ज्यादा जोर नहीं दे रहे हैं? गांधीजीम अिमका यह जवाब दिया

नहीं, यह बात विस्तृत नहीं है मन जा भा बहा है अुसका हमका बहा अय दिया है। अिममें काशी अत्युक्ति नहीं है। कर्मयोग पर जरूरतसे ज्यादा जोर देना बात तो कभी हा ही नहीं सकती। म ता गीताक मिलाये हुअे सत्गेका ही दाहरा रहा हू जिसमें भगवान कृष्णने कहा है

यदि ह्यह न वर्तेम तालु कर्मण्यतद्रित ।

मम वर्तमानुवन्त मनुष्या पाय भवत ॥

अथान् म गत जायत रहकर कर्म न कर तो सार मनुष्य मरा अनुकरण करने लग जायग। क्या मन व्यसतापी लोगोंने यह प्रायना नहीं की कि वे गुरु चरणा चंगाकर हमारे तमाम दवावसियाने सामन अब सुन्दर अुनहरण रसें?

भगवान बुद्धरा तरह आपका काअ मनुष्य मिले, ता क्या अुगने भी आप यही बात कहण?

अवरय, अिममें मुह जरा भी हिकरिवाहू नहीं हागा।

“ता फिर तुनाराय और गानेश जम भहान सतके विषयमें आप क्या कहेंग?”

‘अुनवे समयमें विरचन करतवाग में होता बौन हू?’

‘पर यदक सबयमें आप अगा करण?’

‘अगा मन कनी नहा कहा। मन ता मिक यह कण है कि अगर बुद्धरा काटिक विना मनुष्यज प्रत्यक्ष मित्तका मुअे मद्भाग्य प्राप्त हा ता म अुमग यह कहनमें जरा भा गनाच न करुगा कि यह ध्यानपागव स्याड पर कर्मपागवी पुष्टि कर। अिन भहान सतके यति मरा मित्ना हा ता अिनता ना मैं दहा बात कहूगा।

हरिक्रमवक्ता २-११-५ पृ० २९८-२९९

## मेहनत नहीं तो खाना भी नहीं

कुछ दिन पहले मुझ कलकत्ते के गानदार महलमें ठे जाया गया था। मुझे मारबल प्लस कहते हैं। उसमें बहुत कीमती और बहुत मूल्यवान् चित्राँसे बनीया सजावट की गयी है। मालिक महशुब सामन जागतमें जा भी मिदाक वहा जायें अतः सबका खाना खिलाता है। मुझ कहा गया कि अनका नरया कआ हजार हाता है। बशक यह राजाजाना-सा दान है। जिसस दाताओंकी परांपवारकी वृत्ति प्रगट हाता है जा प्रशसनाय है। परंतु दाताओंका जग भा खयाल नहीं हाता कि अक तरफ जिस बहाल मानवताका खिलाना और दूसरी तरफ अस गानदार महलका माना अतःका दुदगाका हमी जुडाना कितना वेमेल है। असा ही अब और दु खद दृश्य म जब मसूरी गया था तब मन देखा था। वहा स्वागत-समितिन जिलेक भिखारियोंको भोजन करानेकी व्यवस्था की था। मारबल प्लस में जिस भीडने मुन घर लिया था वन तमान पर बिछाआ हुयी मली पतला पर ता रहे भिखारियोंकी पकितका पार करके आआ थी। कुछ लागान अतः पतलाका लगभग कुचल लिया था। मसूरीमें जरा अधिक सम्म व्यवस्था थी क्योकि भीडका भिखारियाकी पकित पार करके नहीं आता था। परंतु जा मोटर गाडा मुझ वहा ठ गयी था असे खाना खात हुये भिखारियोंकी पकितके बीचमे घाट घीरे ल जाया गया था। मुझ जिस विचारसे अधिक अपमान महसूस हुआ कि वह सब मेरे सम्मानमें किया गया था क्योकि जसा वहाक अक मित्रन कहा म गरीबाका हितधी हू। अवश्य हा मेरी यह मित्रता या हितपिता बनी भयी चीज है यदि मैं मानव-समाजक बड भागक भिखारा बन रहनम सताप मानू। मेरे मित्राको यह पता नहीं है कि भारतके कंगालाकी तिनपितान मुझ अितना कठार हृदय बना दिया है कि अुनके बिल्कुल भिसमग बन जानका अपेक्षा में अुनका संवधा भला मर जाना लुगीस पसद करुगा। मेरी अहिंसा किसी जसे सद्गुस्त आत्मीको मुफ्त खाना देनका विचार बरदांत नहीं करेगी जिसने अुसके लिअ जीमानगरीसे कुछ न कुछ काम न किया हा और मेरा वग चने तो जिन सन्तानामें मुफ्त भोजन मिलता है व सब सन्तानत म वग कर दू। जिसस राष्ट्रभा पतन हुआ है और सुस्ती ववारा दभ और अपराधाका भी प्रात्माहन मिला है। जिस प्रकारका अनुचित नाल दगाका भौतिक या आध्यात्मिक सम्पत्तिकी कुछ भी वृद्धि नहीं करता और दाताक मनमें पुण्यात्मा हानका झूठा भाव पदा करता है। क्या ही



अच्छा और बुद्धिमानीकी बात हो यदि दानी लाग अमी सस्यामें खाल जहा बुनक लिअ काम करनवाल स्त्री-पुरुषाका स्वास्थ्यप्र और स्वच्छ हालतमें भाजन दिया जाय। मेरा खुदका ता यह विचार है कि चरखा या कपासस मन्त्रिय क्रियाओंमें स काजी भी क्रिया आदा घवा हागा। परन्तु खुद स्त्रीकार न हा ता व काजी भी दूसरा काम चुन सकत ह। जो भा हा नियम यह होना चाहिय कि मेहनत नहा ता खाना भी नहा। प्रत्यक गहरक लिअ भिखमगाका अपनी अपना अलग कठिन समस्या है जिकक लिअ धनवान जिम्मेदार ह। मैं जानता ह कि आलसियाका मुफ्त भोजन करा तना बहुत आमान है परन्तु अगी किसी सस्याको संगठित करना बहुत कठिन है जहा किसीका खाना तैस पहल खुसमे अमानतारीस काम कराना जरुरा हा। आर्थिक दृष्टिसे कमर कम गुम्में लोगसे काम लनके वा खुदें खाना खिलानका खच मौजूदा मुफ्तके भाजनालयाके खचमे ज्याग हागा। खनिन मुये पकरा विश्वास है कि यदि हम तेजीसे देगमें बन्दनवाल आवाारा ग लागाकी मख्यामें वृद्धि नहा करना चाहते तो अन्तमें यह व्यवस्था अधिक मन्ना पहागी।

यम अिदिया १३-८-२५ पृ० २८२

५७

### शर्मनाक

जमी बल्की ही बात है, लगभग पचास वर्षका अक हटा-बटा नौजवान मर पान आया। खुसने मुसम पूछा क्या दानान लिन में आपन पाम ठहर मन्ता ह? व बहगजिवका रतनवाला था। घर पर खुसके यहा कुछ अरु जमान ना है। यम्बजा पाप्रममें गया या तभीम बराबर भ्रमण कर रहा है जोर अतगचित लागकि सहर खुसका निवाह हाता है। रामानुतियामें य लिता लिता है। जगा अगन मुष बनाया व अम खाना और खाडा बहुत रभाडा तन ह। जब मन असम कहा कि अिस तरह दूसराके दान पर तना ठाक नहीं है ता अमन जवाब दिया — मुझ ता अपन गान गवर लिअ भाग मागामें कात्री बुरात्री नहीं मादूम पटना कयाकि म लागाकी गया कवनरा आगा रपता ह। मतलब यह कि गुजारा ता पहा ही माग ल लि तिया गमय अुमक बामें ब्याज-गतिन मवा कर दें। जिगमें अुम यनोतिर कुछ भी नहीं मादूम पहा। चूकि व गाना बकन आया या अिन्नि सबर माय अुग भा गाना दिया गया। अकिन अगक वा मन अुगन बह दिया कि बह हमार माय तभी र गवता है जब कि हमार

साथ सारे लिन जो काम अुस दिया जाय अने करनेका बह तयार हा। तबसे अभा तब हममें से किसीको भी बह लिखात्री नही लिया है। म चाहता ह कि असा मामला फिरसे मरे सामन न आय ता अछा। नौजवान स्त्री-पुरुषाको अपन लिअ भीन मागनमें राम आनी चाहिय। शारीरिक धमके लिअ रामका जा झूठा भाव हममें आ गया है अगर जसस हम मुक्त हा जाय तो जिनमें थोडी-बहुत भी बुद्धि है अस नौजवान स्त्रा-पुरुषाके लिअ कामकी काजी कमी नही है। काफी काम अुनके लिअ पडा हुआ है।

हरिजनसेवक C-३-३५ पृ० २१-२२

५८

## पूर्ण प्रायश्चित्त

कुछ समय हुआ मन जिस पत्रमें सावजनिक दान पर निर्वाह करनेवाये बहराजिकके अंक नवयुवकके विषयमें लिखा था। बादको वह युवक पूरा पन्चात्ताप करने भेरे पास लौट आया यह बात भी जिस पत्रमें लिखी जा चुकी है। अब भी वह मगनवाडामें रहता है और हमार साथ काम करता है। शारीरिक धममें वह अपना पूरा हिस्सा देता है। कुछ ही दिनमें वह बहराजिक जान लायक किरायका पसा कमा गेगा। पर किरायका पसा कमाकर मगनवाडीसे तुरन्त ही चले जानकी असबी जिआ नहा है। जसका विचार यहा रहकर कुछ सीखनका और कुछ अधिक लाभ अटानना है। असक सम्बन्धम जो जागचना हुजी अुसन बहराजिकक मिनाका दिल हुता है। जिस युवकका नाम अवधना है। अवधना मेरी की हआ आलोचनाका औचित्य तो स्वीकार करता है पर अपन बचावमें यह कहता है कि वह दान अ-कर यात्रा करन या खान-पीनमें कौबी पाप जसी चीज नही मानता था क्योंकि असके कथनानुसार रामानुज सप्रणयमें असी प्रथा है। किन्तु अब चूकि अुसन अपनी गलती मान ली है अिसलिअ फिरसे अुस भूतको न करनेका असन मजबबन दिया है। जिस प्रकार अुसन अपनी भूलसे लाभ अठायो है और जो कुछ भी कठक अुसे लगा हुआ था अुस असन मेरी आलाचनास घा डाला है। हम चाहत ह कि दूसरे बहुतस लोग जो अवधनाकी तरह दान पर गुजर करत ह जिस दृष्टान्तस लाभ अठायें और जिसी तरह अपन जीवनमें नया अध्याय आरम्भ कर। मनुष्यसे भूल हाजा स्वामाविक है। पर गौरव मनष्यका जिसीमें है कि जब अस अपनी भूलका पता चल जाय ता वह असे मुफारन और अुस फिरेसे न करनेका दृढ सकल्प कर ल।

हरिजनसेवक १०-४-३५ पृ ७४-७५

## रोटीकी समस्या

अब सज्जन लिखते हैं कि बहुतम बंगाली जिसलिखे राष्ट्रीय काममें नहीं गग मयन और अपना गुलामाका बढिया नहा ताड मकन कि खुनक मामने रोटीका मवाल है। हम पत्र लिखे लागान पटक लिख अद्योग करनेका कलात हम धा लिया है। जुलाग घुनिया आर भूतकारका मजदूराक बन्त दूध सचमुच राटीया मवाल बाकी रही नहीं जाना। आठ घट युनाजी बग्गदाला गुरुआतमें ही, कमसे कम १) राज पदा कर सकता है। हांगियार जुला आज २) राज पदा करत ह। हमें केवल 'कलम क बल पर हा राजा कमानका ध्यान नहीं करते रहना चाहिय।

हिल्नी नवजीवन २-९-१२१ पृ० १८

६०

## शरीर-श्रम ही अकेला हल

मुझसे मिलनके लिखे आय हुअे यजी भाजियाके माय चर्चा करके निमल बारून जो सवा तयार किया है अमका जवाब म अरना ह। मवाल अिम तरह है रागीके लिखे मजदूरी करनके सिद्धान्तम आपका क्या मतय है और मौजूग परिस्थितिमें अिम सिद्धान्तका किम तरह लागू किया जा सकता है? रागीके लिखे मजदूरी करनके सिद्धान्तका अयगास्त्र निम्नगीका चेतना भरा राम्ना है। अिमका मतलब यह है कि श्रधक अिमानका अपन गाने और अगन कपाने लिखे गुग शरीर-श्रम करना चाहिय। अिम रोटीक लिखे मजदूरीक सिद्धान्तकी कीमत और अुमका उदरनका म अगर लागके गल अतार सरू तो यही भी गाने या कपडकी तरी न रह। श्रद्धाक माय अितना बन्तमें मुग जरा भा शिचकिचाहू नहीं हाता कि अगर लोग खेतामें जाकर मजदूरी न कर और सुग न पावें या न बुनें तो खुनके भूया मरने या नग घूमनमें जरा भी बुराभी नहीं है। हम अवधारामें पढ़न ह कि आज सारा हिन्दु रतान कपडके बिना नग रहन और घुगकक बिना भूता मरनेके बिना गढा है। अगर माग मरा याजनाको मजूर कर ल ता य जल्पी ही दगेंग कि हिन्दुस्तानमें धानी सुराज और काम जनता शरा गुग तयार की हुअी धायरी गानी आगामीसे मिग सकती है। बाक अिना काममें आम जनताका यह मागनेमें मन्त दनरी उदरन है कि क विग तरह अरुम जरा तरीकम हांगियारीक माय जमीनका अपयोग कर। गाप ही अुग जानना आर बुनना मिमानका लिखक

और य दाना काम करनेके साधन मिलन चाहिये। बगलमें पानी पुरानक काममें गहरा रस उनवाल् यहाँ मूतपूव गवनर मि० बेसीस अपन अिन तरीतक वारेमें चर्चा करत हुअ मुस सकाच नही हुआ या। मि० बेसीकी यात्रना बहुत बडी है और अस पर अमल करनमें बरसा और लाखा खपकी जरूरत है। जिनम भुलट मरा कार्यक्रम पूरी तरह कामका होत हुअ भी लम्बा-चौग या सर्चोला नही है।

हरिजनसबक २१-९-४७ पृ० २७५

६१

### काम ही गरीबीका अकेमात्र भिलाज है

[ श्री महाश्व देसाजीके साप्ताहिक पत्रसे ]

ग्रामसबक विद्यालयके विद्यार्थियासे बातचीत करते हुअ अक दिन गाधी जीन बताया कि हिंदुस्तानकी बकारीमें तथा पश्चिमके देगामें फली हुअी बकारीमें क्या भद है। जुन्हांन कहा अक तरहस हमारा बकारीका सवाल अतना नाजक नही है जितना कि पश्चिमी देशामें है। क्याकि रहन-सहन भी तो अक महत्त्वपूर्ण बात है। पश्चिममें बकार होन पर भी आदमीको और लोपाकी भाति गरम कपण बूट मोन वगरा तो जरूरी होते ही ह। फिर सद आबो हवावाले मुल्कामें गरम मकान वगरा बहुतसी चीज होना चाहिये। तो अन्की भी असे जरूरत रहती ही है। हमें अिन सबकी जरूरत नही होती।

हमारे देगवी भयकर गरीना और बकारी देखकर सचमच कभी बार मय सलाजी तक जा गयी है। मगर साथ ही मझ यह भी स्वीकार करना पडता है कि हमारा अनान और लापरवाही जिसक लिअ बहुत ह् तक जिम्मेवार है। हम अन्में यह जानते ही नहा कि महनत करना कितन गौरवकी चीज है। मियाजके तौर पर अक चमार सिवा जूते नानक और कोअी काम करना पसन् नणी करेगा वह समझता है कि और सब काम नीचे ह। यह गऊत तया" ह्क हा जाना चाहिये। जा औमानगरीके साथ अपन हाय-परसे काम केना चाह्क ह अन्क न्द्रि हिंदुस्तानमें काफी काम पन् हुआ है। परमात्मान हरअन आदमीका जसी गविन और वडि दे रखी है जिसकी मदन्ने वट अितना पदा कर सकता है कि अन्क खाते-भात भी बच जाय। और जो भी अपन जिन गुणामे काम न्ना गहेगा उस काम ता मिन् ही जायगा। औमानदारीक साथ अपनी राजा कमानकी अिन्डा रखनवाक लिअ काअी भी काम नीच नहा है। तवाल यह है कि जान्मा क्क आन्वरक न्द्रि हुअ हाय-पर हिलानको तयार है या नहा ?"

हरिजनसबक १९-१२-३६ पृ० ३४५-४६

## ‘अेक महान समता-स्थापक’

[श्री चन्द्रावर गुक्लक ‘माप्ताहिक पत्र स।]

मजदूर अग्न ध्ययक प्रति सक्रिय महानुभूति िव्गनमें पीछ नहा है। विंगसपुरमें वी० अेन० रेल्व मजदूर-मघन गाधीजीका भाषण दनके लिअे निर्मात्रित किया और हरिजन-सवाक डिअ पाच सौ रुपयाका थला भेंट की। गाधीजी यह देखकर बहुत खुग हुआ कि मजदूरान ध्ययक प्रति अपना सहानु भूतिर चिह्नस्वरूप अपनी गाथा कमाआक अक हिम्मका त्याग किया। अिस अवसर पर लिय अुनके पूरे भाषणका म नाच दता हू

अगर आप जानत न हा ता अब जान लें कि जबस म दक्षिण अफ्रीका गया तभीसे मेरा मजदूरसि गहरा सबध रहा है। भारतमें या समारक किसी भां भागमें अुन्हान मुझ अपना अक मजदूर भाअी मान लिया है और अपना ही ममनपर मेरा स्वागत किया है। आपको गायक यह जानकर अबभा हागा कि लदागापरमें भी मजदूरान स्वयंप्ररणास मुझ अपनमें से अक मान लिया और गवडा-हजारारा मख्यामें मुझ घर लिया था। हमार बाच अकमात्र अतर यन् है कि म अपनी पसन्स मजदूर बना हू जब कि आप परिस्थितिवाग मजदूर दने

म मजदूर-भाषणे कहता हू कि यह हरिजना जोर आपने बीचचे तमाम भ्रमभाव मिटा दे। म यह जपाण विचारपूर्वक कर रहा हू क्याकि अहमतावात्क मि मजदूरके साथे सपकमें जानके कारण म जानता हू कि मजदूर हरिजना और गर हरिजनके बीच भेदभाव जरूर रगत ह। म और सबकी अपना मनदूरको ये भ्रमभाव मिटा देनकी अधिक आगा रखता हू। मरी यह महरी श्रद्धा रती है कि हम विसा दिन मादुराके द्वारा साम्प्रदायिक अरना जरूर प्राप्त करग। म धमको अरना पदा करनका जवरदस्त माधन मानता हू। यह महान समता स्थापक है। मजदूरामें साम्प्रदायिक फूट हाता गमकी बात है क्योंकि य सब जपन पनीतकी कमाओ रताते हैं और असलिय व सब अक बिगाल भ्रातु-ममाजके अग हैं। जिसलिय वे अस्पृश्यताको सपूणत मिटाकर अिमका आरम्भ कर। यह साम्प्रदायिक अकताकी दिगामें अक बडा कदम हीगा। अक बार हरिजनाक विरमे अस्पृश्यताका कटक मिट जायगा ता हिन्दुजा मुसलमाना और लकी अय जातियाके बीच थापक अकताका रास्ता खुल जायगा।

हरिजन ८-१२-३३ पृ० ५-६

## ६३

### स्वावलम्बन और परावलम्बन

स्वाधनके माना है किसीकी भी मन्त्रक बिना जपन पावो पर कड रहनका गविन। असका मतलब यह नही कि दूसराकी सहायताके भवधमें मनुष्य गपरवाह हा जाय जयवा असका त्याग करे जयवा दूसरोकी मद न चाहे या न माय। परन्तु दूसराका मदद चान्न पर भी मागन पर भी यदि वह न मिल सक तो भी जो मनुष्य स्वस्य रह सकता है स्वमानकी रता कर सकता है वह स्वाधयी है। जो विसान दूसरोकी मदद मिल सकनी हा तो भी स्वय ही हल जोते अनाज बीय फसल काट जताक औजार तयार करे अपन कपड आप ही काते बन या सीय अपन लिा अनाज भी स्वय तयार करे और घर भी स्वय तयार कर वह या ता बवकूप होगा अभिमानी होगा अयवा जगता होगा। स्वाधयमें गरार नम तो वा ही जाता है। अर्थात् प्रत्यक मनुष्यको अपनी आजीविकाक मित्र आवश्यक गरार-श्रम करना ही चाहिय। अिमन्त्रिज जा मनुष्य वाठ घट खनीका काम करता है अुस जुलाना बडकी रनार जादि कारीगरका मदद ननका अधिकार है अनसे मद लेनका अुसका धम है और अुसे वह मदद सहज हा में मिग सरता है। और बडकी लहार आन्ि कारीगर वग विसानकी महन्त लेकर अुससे अन्नान्ि प्राप्त कर सकते है। जा आध

हाथकी सहायताके बिना ही काम चला चलना खिराण रकती है वह स्वाश्रया नहा है बल्कि अभिमानी है। और जिस प्रकार हमारे शरीरमें हमारे अवयव अपन अपने काममें स्वाश्रयी ह फिर भी अक-दूसरका मदद लनक कारण परावलम्बी ह वम ही हिन्दुस्तान रूपी शरीरके हम लोग तीस काटि अवयव ह। सबका अपन अपन क्षत्रमें स्वाश्रया जननका धम पालन करना चाहिय और अपनेका राष्ट्रका अग सिद्ध करनक लिअ अक-दूसरक साथ मन्का विनिमय भी करना चाहिय। यह होगा तभी ता राष्ट्रका विकास हुआ गिना जा सकेगा और तभी हम राष्ट्रवाण गिन जा सकग।

हिन्दी नवजीवन ८-८-२६ पृ० २६९

६४

## नौकरो पर अवलम्बन

घरेलू नौकराकी सस्या पुरानी है। परन्तु मालिकका नौकराके प्रति रवका समय-समय पर बदलता रहा है। कुछ राग नौकराका परिवारक आत्मी समझते ह और कुछ अुह गुलाम या जगम सपत्ति मानत ह। सगपमें सामायत नौकरोके प्रति समाजका जा रवका हाता है वह जिन दो आत्यतिक विचारके वाचमें आ जाता है। आजकल सग यह नौकराका बडी भाग है। अुह अपने महत्त्वका पना ल गवा है और जिसलिअ कुत्सी तौर पर व बतन आर नौकरीक धारमें अपना ही गवें रगत ह। यदि जिनक नाम हा हमारा अुह अपने बतनका मान हा और व अगका पान भी कर ता ठीक हा। अग हातमें व नौकर नहीं रहग और अपा लिअ परिवारक सस्याका रजा प्राप्त कर गग। परन्तु आजकल ता सबका लिअमें विबाग हा गया है। तब फिर नौकर अकिन ढगम अपन मालिकके परिवारक सम्भारा दरजा कम प्राप्त कर गवत ह? यह प्रन अमा है जा पूछा जा सकता है।

मरा रायमें जा आत्मा दूगराका सहयाग चाहता है और अुह सहयाग देना चाहता है अुत नौकरा पर निभर नहीं रहना चाहिये। यदि नाकराका सगीक बवन किमीको नौकर रगता पढता है ता अुन सम्भारा बवन दना पढना है और दूगरी गव गवें मानता पढता ह। जनाका म हाता है कि यह मालिक हातक धराय अपा नौकरका नोकर हा जाता है। यह न मालिकके लिअे अच्छा है न नौकरक लिअ। परन्तु अग विगा अकिरता दूगर मानक-बपुग गुगामी नहा बल्कि सहयाग चाहिय ता यह न बक अपनी ही सवा करेगा अिन अुगभी भी करगा जिनक सम्भाराकी अुग

जरूरत है। जिस सिद्धान्तका विस्तार करनेसे मनुष्यका परिवार बुतना ही विगल हो जायगा जितना यह सगर है और अपन मानव-बन्धन प्रति बुसके रकममें बसा ही परिवर्तन हो जायगा। वाछिन बुद्ध्यकी प्राप्तिका दूसरा बाओ माग नहीं है।

जो जिस सिद्धान्त पर अमन करना चाहता है वह छाट-छाट प्रारम्भ करके सन्नाप मान लगा। मनुष्यमें हजारका मट्याग सवनकी माग्यता होत हुआ भी बुसमें अितना समय और स्वाभिमान होना ही चाहिय कि वह अकेला खडा रह सके। असा ब्यक्ति कभी सपनमें भी किसी आत्मीका अपना दास नहीं समझगा और न बुसे अपन नीचे दबा कर रखनकी कोणिंग करेगा। सब ता यह है कि वह बिल्कुल भूल जायगा कि वह अपन नीकराका मालिक है और बुह अपन स्तर पर लानकी पूरी मागिंग करेगा। दूसरे मागमें जा चीज दूसरोको नहीं मिल सके बुसके बिना काम चलाकर अस सन्तोष कर लेना चाहिय।

हरिजन १ -३-४६ पृ० ४

६५

### काम और फुरसतका दशन

[जी महादेव देसाजीके साप्ताहिक पत्र से।]

आजकल गाधीजीसे मिलनके लिअ जो लोग आत ह वे "यादातर गारीरक" नमकी नीरसता जयवा गारीरक नमके गौरव आदिकी हा बातें करते ह। सादीसे सानी चीजें भी गाधीजीके हाथमें लेनेके कारण अब लोगका रहस्यमय माग्य पडन लगी ह। वे साचमें पड जात ह और पूछते ह अिसका मतलब क्या होगा? लेकिन सब बात ता यह है कि ग्रामोद्योग सघके अद्ध्य और कायका हरअक ब्यक्ति अपनी निजी सकुचित दष्टिसे ही देखता है और गाधीजीक जिस नय कायकमके कारण मुन अपन जीवनमें क्या क्या फरफार करन पंगे हरअक जिमी वानका विचार करता है।

अक मिशन गाधीजीस पूछा लोगको फरसतका समय मिग्ना चाहिय या ननी अिसका तो आप खयाल ही नहीं करते। गरीब लोग बहुत ज्यादा मेहनत मागकत करत रहग तो अहे मानसिक विचार द्वारा बढिको वतान और मनोरजन द्वारा आनन प्राप्त करनके लिज समय ही नहीं मिग्गा। पर आप ता अहे और ज्यादा काम करनकी ही गिमा दे रह ह।

सचमच? म जिन लागाने बारमें सोच रहा ह अनक पास ता अिननी फुरसत है कि अन वचाराकी समयमें ही नहा आता कि अिसका



क्या उपयुक्त कर। जिस फुरसतक ही कारण बुनमें असा मुस्ती आ गआ है जिन बुह निर्जीव पत्थरक समान जड बना लिया है। बुनमें अितना जन्ता आ गआ है कि कितन ही लाग ता जरा-सा हिन्ना-डुलना भा नहीं चाहते।

जहा जबरत हा वहा आप गगाका जरूर काम पर लगायिय। पर आप ता बुनम अपन हाया अपन चाकर और अनाजकी कुशात्री पिसाआ करनक जिन भी कहत हैं। क्या यह अनम सूया नीरम काम करानकी बात नहीं है?

बुह आलस्यमें अपना समय जिताना जितना नीरम मालूम हाता है बुमसे ज्यादा नीरम यह काम नहीं है। और जब व यह समय जायेंगे कि जिसम हमें न मिक कुछ पमाका कमात्री ही हा जानी है बल्कि जिससे हमारी और हमार दगावासियाकी तदुस्तता भी ठाक रहती है ता बुहें यह काम नीरम तहा लगगा। आधुनिक कल-कारगानामें काम करनम ज्यादा नीरम ता निश्चय ही यह काम नहीं है। कात्री काम कितना ही नारम क्या न हा अगर मनुष्यका बुममें यह ममजनका आनन्द मिल सकता हा कि मन कुछ निर्माण किया है ता बुम वह नीरम नहा लगगा। आप किमा जूतके कारखानमें जायिय। वहा कुछ आन्त्री जूताक तर बना रहे हाग कुछ अपरी हिस्से और कुछ अय काम कर रहे हाग। वह काम नारम मालूम दगा क्याकि व गग बढ़ि लगाकर काम नहीं करत। लकिन जा माचा या चमार स्वय पूरा जूता बनाता है अस अपना काम जरा भी नीरम नहीं मालूम पडगा। क्याकि बुसक काम पर बुसका कुशात्राका छाप हागी और बुम जिस बातका आनन्द हागा कि अपन हाया मन कात्री चीज बनाती है। अपन व्यवहारक लिअ पानी भरन और लचडा चारनमें मुझ पडना है। अपन व्यवहारक लिअ पानी भरन और लचडा चारनमें मुझ काभा आपत्ति न हागी बानें कि किगीकी जर जरबस्तान नहीं बल्कि अपनी बढ़िम गाव-ममजनपर म असा करू। काभा भी थम क्या न हा अगर वह बुद्धिपूर्वक और किगी बुच अदृश्यको मामन रखकर किया जाय ता वह बुलायक बन जाता है और बुमन आनन्द भा प्राप्त हागा है।

लकिन जब आप सार जिन मनुष्यक शारीरिक थम करत रखन पर ही जात दन ह तब क्या बुमका बुद्धिका जड बनानका जायिय आप अपन अपर नग ल रहे ह? आप जिनभरमें कितन पन्का शारीरिक थम आवश्यक ममान ह?

मुझे खुशता ता आठ पर काम करनमें कात्री आपत्ति नहीं हागी।

म आपकी बात नहीं करता। आप तो आठ घंटे चरणा बानकर भी आनन्द प्राप्त कर सकते हैं यह मैं जानता हूँ। पर आपकी बात तो अपवादरूप है। क्याकि आपमें तो अतनी बुद्धि और अत्याधिक गति है कि वामके समयमें भी आप अथवा बहुत कुछ अुपयोग कर सकते हैं।

नहीं मैं तो चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति आठ घंटे महानत करके आनन्द प्राप्त करे। सब कुछ काम करनी भावना पर निर्भर है। आठ घंटे लगनके साथ गद्द शारीरिक श्रम करने वाले भी बौद्धिक कामके लिए काफी समय बच रहता है। मेरा बुद्धय तो जड़ता और आलस्यको दूर करता है। जब मैं सत्सत्वा यह कह सकूंगा कि भारतका हर एक ग्राम वासी अपने पसीनेसे २० रुपया महीना कमा रहा है तब मुझ परम सताप प्राप्त होगा।

हरिजनमेवक २२-३-३५ पृ० ३३-३४

६६

## फुरसतका मोह

[श्री महादेव दसाजीके साप्ताहिक पत्र से।]

कुछ समय पहले मैंने श्री अल० पी० जवमकी फुरसतके समय की यह परिभाषा अद्धत की थी मनुष्यके जीवनका वह भाग जिसमें अुसकी आत्मा पर अधिकार जमानके लिए घोर देवामुद-संग्राम होता है और उनके दिव्य हृदय आकडों परसे यह दिखानका प्रयत्न किया था कि फुरसतके समयकी विज्ञान और कला कितनी कठिन है। श्री वरदरुण रसेल जो प्रत्येक नागरिकके लिए काफी फुरसतका समय निश्चित करा देनेके लिए बहुत चिंतित हैं सिर्फ चार घंटका शरीर-श्रम रखना चाहते हैं। लेकिन अुस दिन गांधीजीसे बात करते हुए मैंने अन्तर्णीय मित्रों आश्चर्यचकित होकर कहा क्या फुरसतके समयका प्रश्न सधमुच अितना मुश्किल है? आठ घंटे रोजके शारीरिक श्रम पर आप क्या जार देते हैं? एक सुव्यवस्थित समाजमें क्या यह सम्भव नहीं कि केवल दो घंटे रोज शरीर-श्रम कराया जाय और बौद्धिक तथा कलात्मक प्रवृत्तियोंके लिए काफी फुरसतका समय छोड़ दिया जाय?

हम यह जानते हैं कि श्रमजीवी और मानसिक श्रम करनेवाले दोनों ही वर्गोंके लिए जिन्हें यह सब फुरसतका समय मिलता है अुसका अच्छेसे अड्डा अपयोग नही करते। सब पूछें तो हममें भी अन्तमर खाली दिमाग गतानका पर का बहावत ही चरिताय होने देखी है।

‘ नही, फुरसतका समय हम बकार नहा जाने देंगे। मान लाजिये हम तिनमें दो घटे ता गारीरिक् थम परें और छह घट मानसिक् थम ता बरा यह राष्ट्रक त्रिअ हितकर न हागा ?

‘ म नही जानता कि आपका जिन याजना पर बहा तक अम हा मरगा। मने जिसका हिसाब लगाकर ता नहा दखा पर अगर काभी मनुष्य मानसिक् थम राष्ट्रक त्रिअ नहा बल्कि केवल अपन लामके त्रिअे करगा ता मुने जिसमें सदेह नही कि यह याजना विफल ही हागी। हा सरकार जुसक दो घटके गरीर-थमक लिअ जम बाफा मजदूरा द द और फिर बुसे बगर कुछ त्रिअे दूसरा काम करनक लिअे मजबूर करे ता अलबता बट अक अच्छा चीज हा सक्ती है। पर वह ता सरकारकी अती जोर-जबरदस्ताकी आनाम ही हो सक्ता है जा सब पर अकसी लागू हो।

‘ जुदाहरणके लिअे आप अपनेका ही गीजिये। आप आठ घटका गारीरिक् थम ता राज कर नही सक्त। आठ घट या जिनस भी ज्याना आपका मानसिक् थम करना पडता है। आप अपन फुरसतके समयरा तुल्ययाग ता नही करत ?

‘ यह ता अनिवाय रूपसे करना पडता है। फरसत जिसमें बहा है ? जिन फुरसतमें म टेनिम बगैरा खल्लन ता नही जाता। किन अपने अुना हरणका लखर म आपम यह बहूगा कि अगर हम अपन हायस आठ घटे राज महनत करत हात ता हमारा मानसिक् गकिनयाका अितना अजा विकास हाता कि जिनका काआ ह नहा। हमार मनमें अर नी निरखक विचार न अठता। य बान नही कि मरा मन निरखक विचारमें केवल मकन हा गया है। आज भी मरा जा कुछ प्रगति है बट जिस कारण है कि अरने जीवनमें बहत वल्ले मने थमका महत्त्व जान लिया था।

पर अगर गरीर-थमकी स्वभावत अना महिमा है, ता हमार यहाक लाग ता आठ घटेग ना ज्याना महनत करत ह। पर जिसका बुरा मानसिक् पवित्रता या दुइता पर अना काभी सुल्लगनीय अगर ता पहा नही है ?

केवल गारीरिक् या मानसिक् थम अपने आपमें काभी गिता नही है। हमार लान लाग बिना गमन-बुअ जह मक्ती तरह सल्लम गल्ल महता किसे जाने हैं और जिनस जुनरी मूअ महज बडि निग्राग हा जाता है। मही मरी भवष हिअुअों तबरल्लन त्रिअादत है। थमनीकी पगक लागता अुहात जा काम त्रिअा है बट गरत धीर जगल महनतका है त्रिअमें न ता अुह काआ आनल मिला है और न काभी त्रिअस्पी ही हाती है। अगर गमाअों थ सक्ता हिअुअारी बराबरीत मया जाउ ना जीवनमें जुनरा स्या आत्र मका अधिक गैरगका हाता। यह मु ता

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

असस अगर हमारे आत्मियाका रोज अब ही घटा काम करना हो तो आप सतुष्ट हो जायेंगे ?  
यह करने देना चाहिये। किन्तु मुझ तो अवश्य सतुष्ट हो जाना चाहिये।

यह मुश्किल है। म तब जब तब तमाम आत्मियाका पास काफी उत्पादक काम यानी रोज आठ घटना काम न हो तब सतुष्ट हानका नहीं।

किन्तु मुझ अवश्य होता है कि आप असस काम कम आठ घटने काम पर क्या अितना आग्रह कर रहे हैं ?

क्याकि म यह जानता हू कि करोडा आदमी कामने सातिर ही काममें नहीं लगत। अगर बुद्धे अपन पेटके लिअ काम करनकी जरूरत न हो ता बुद्धे प्ररणा ही न मिठ। मान लीजिय कि चद करोडपति अमेरिकासे आवे और हमारे पास तमाम पान-पीनकी चीजें भज देनके लिअ कह और हमसे प्रायना करे कि आप लग कोअी काम न करे किन्तु हमें परोपकार वृत्तिस अपन यहा सदाव्रत खोल के दें तो म अुनकी यह बात स्वीकार करनसे साफ अनकार कर दू।

क्या अससलिअ कि असस आपके आत्म सम्मानको चोट पहुचेगी ?  
नहीं सिफ अससी कारणसे नहीं वल्कि खासकर अससलिअ कि असस हमारे जीवनके असस मौलिक नियमका मूलोच्छद होता है कि हमें अपन पेटके लिअ म करना ही चाहिय हमें अपने पसीनकी कमाअीकी ही रोटी खानी चाहिय।

पर यह तो आपका यक्तिगत विचार है। क्या आप समाजकी यवस्थाको कु समाज पर ही छोड देंग या चद अच्छ मागदगकोके अुपर ?  
योडसे अच्छ मागदगकोके अुपर मुझ समाजकी यवस्था छोड देती चाहिय।

अससका अय यह हुआ कि आप डिक्टटरशिप के पदामें ह ?  
नहीं महज असस कारण कि मेरा मौलिक सिद्धान्त अहिंसा है और मझ किसी ब्यक्ति या समाज पर बलात्कार नहीं करना चाहिय। मागदगनका अय डिक्टटरशिप नहीं है।

यह बहम न जान कब तक होती रहती पर गांधीजीके पास और अधिक समय नहीं था अससलिअ अुन सजनकी असस दिन अितनसे ही सनोप करना पना।

६८

### आर्थिक समानताका अर्थ

गांधीजी सदासदा दौरा कर रहे थे और जिना रचनात्मक कायदा मन्मन्त्रों धुनस पूछा गया आर्थिक समानताम आपका ठीक-ठीक अर्थ क्या है ?

जनता जवाब यह या मरी कल्याणका आर्थिक समानताका अर्थ यह नही है कि हरअर्थका अन्तरण समी मात्रामें काया चाज मिले। अमना मतलब अितना ही है कि हरअर्थका अपना आवश्यकताम लिअ काफी मिले जाना चाहिये। मिमालक लिअ ठंडक मौसममें ठंडम बचनक लिअ मुझे न साज लगत ह, अकिन मर साय रहनेका मरे पीत्र कनुका मग्म बगडासी काया जरत नही हाती। मूल बकराका दूध सतरे और दूसरे फल गान है। लकिन कनुका काम मामाय आहारम चल जाता है। मुझे कनुम बीया हाती है, लकिन अुसका कुछ मतलब नही। कनु नोजवान है और म तो ७६ सालका बुढ़ा हू। नोजनका मरा मासिक मध कनुस बहुत पाग है, अकिन अिमका यह अर्थ नही कि हममें काभी आर्थिक समानता है। चींगम हाथीका हजार गुनी पाग मुराव चाहिये, परंतु यह जानानताका बिह्न नही है। अिम प्रकार आर्थिक समानताका मच्चा अर्थ यह है 'मरका अपनी अपनी जरतक अनुवार मिले। माकमकी ब्याग्या भी यही है। यकि अकेला आमा भी अतना ही माग अितना स्वा और चार बच्चावाला ब्यक्ति माग ता यह आर्थिक समानताक मिदान्तका भाग हाग।

किमीता यह कहकर अूच बगों और जनभाषारणन राजा और गकर पावन यह भारी अउरका अकित बतानेकी कागिग नहा करनी चाहिये कि पहलका आवश्यकतामें दूगरण अर्थिक ह। यह ब्यपकी दर्ती हाग और मर तरका मत्राय बुझना हाग। अमार-मराबक मौजूद फलम लिअका बडा चाल पट्टचना है। किमी दूनुमन और मार अरत अावामा — नगर-निवासा — जना हो मरीक प्रामाणिका पापन करत ह। य अत्र पग करत ह और भूग रहत ह। य दूध अुपन्न करत है और अतक बच दूपन जिना

रहत है। यह लाजाजनक बात है। प्रत्येक को सतुलित भोजन रहनको अच्छा मकान बचानी गिनाकी सुविधायें और दवा-गारुकी काफी मन्द मिलनी चाहिये। यह है मेरा आर्थिक समानताका चित्र। म प्रारम्भिक आवश्यकताओंसे अधिक हर चीजका निपय नहीं करता मगर भुसका नम्बर तभी आता है जब पहले गरीबोंकी मुख्य आवश्यकतायें पूरी हो जाय। पहले धरन लायन काम पहले ही होने चाहिये।

हरिजन ३१-३-४६ पृ० ६३

६९

### आर्थिक समानताके लिये प्रयत्न

रचनात्मक कामका यह अग अहिंसापूर्ण स्वराज्यकी मुख्य चाबी है। आर्थिक समानताके लिये काम करनका मतलब है पूजी और मजदूरीक बीच झगडाको हमेगाके लिये मिटा देना। जिसका अर्थ यह होता है कि जे जोरसे जिन मटठीभर पसेवाले लोगके हाथमें राष्ट्रकी संपत्तिका बडा भाग अकटठा हो गया है अनकी संपत्तिको कम करना और दूसरी जोरस जो करोडो लोग अधपेट खाते ह और नग रहते ह उनकी संपत्तिक बडि करना। जब तक मुटठीभर धनवाना और करोडो भूख रहनवालाके बीच बअन्तहा अन्तर बना रहेगा तब तक अहिंसाकी बुनियाद पर चलनवाग राज बवस्था कायम नहीं हो सक्ती। आजाद हिंदुस्तानमें देशके बन्स बड घनिकाके हाथमें हुकूमतका जितना हिस्सा रहेगा अतना ही गरीबोंके हाथमें भी होगा और तब नजी दिल्लीके महारा और उनकी बगलमें बसी इन्डी गरीब मजदूर बस्तियोंके टूट फूट झापडोंके बीच जो ददनाक फक आज नजर आता है वह एक तिनको भी नहीं टिकेगा। अगर धनवान लोग अपन धनका जोर भुसके कारण मिलनवाली सत्ताको खद राजी-खनीस छाडकर और सबके कल्याणके लिये सबके साथ मिलकर बरतनको तयार न हाग तो यह तय समन्विय कि हमारे देगमें हिंसक और लखवार श्राति हुअ बिना न रहेगी। ट्रस्टीगिय या सरपरस्तीके मेरे सिद्धान्तका बहुत मजाक अडायया गया है फिर भी म भुस पर कायम हू। यह सच है कि अम तक पहुचन यानी भुसका पूरा-पूरा अमल करनका काम कठिन है। क्या अहिंसाकी भी यही हालत नहीं? फिर भी १९२ में हमन यह सीधी चढाडी चत्नका निश्चय किया था। अब तक हमन भुसके लिये जो पुष्टपाथ किया है वह बर लन जसा था जिसे अब हम समझ चुके हैं। जिस पुष्टपाथकी खास बात यह

है कि राज रोजकी खाज और कोशिश हमें अधिकाधिक यह जान लेना है कि अहिंसाका तत्त्व किस तरह काम करता है। कांग्रेसवालासे यह बुझाना जानी है कि व सब सजागरी और लगनके साथ सचेत रहकर जिस बातका पता लगायें कि अहिंसा क्या चीज है क्या अुसका व्यवहार करना है जार वह किस तरह अपना काम करती है। सबको अिस मन्त्राल पर भी नाचना है कि आजका सामाजिक व्यवस्थामें मनुष्य मनुष्यक बीच जो तरह तरहकी असमानतायें मौजूद ह व हिंसासे दूर हागी या अहिंसाम। भरे गथागमें हिंसाका रास्ता बसा है, यह हम जानत ह। अुस रास्ते समानताके मामलमें कही सफलता मिली हमन जानी नहीं।

अहिंसाके जरिये ममाजम हेरफेर करतके प्रयोग अभी चल रहे ह और उनको तफसील तयार हो रही है। अिन प्रयागमें प्रत्यक्ष लिगाने जमा ता बाता खास या बग काम हमन नहीं किया है। मगर यह तय है कि चाल चाहे कितनी ही धीमी क्या न हा फिर भी अिस तरीने पर समानताका दिगामें काम ता गुरु हा चुका है। और चूंकि अहिंसाका रास्ता हृदय-परि वननदा रास्ता है जिसलिअ अुसमें जा भी हेरफेर जान ह व भायमी हात ह। अिस समाज या राष्ट्रका रचना अहिंसाकी नीव पर हुयी है वह अपनी अिमारत पर हानवाग तमाम बाहरी या अन्दरूना हमलाका सामना करनका तानन रपता है। राष्ट्रीय फायसमें धनदान बाधगा भी ह। अिस मामलमें पहल करव अुह औराका रास्ता दिखाना है। स्वराज्यका हमारी यह लडाआ हरअब कांग्रेसीको अिस बातका मौना देना है कि वह अपन लिखनी पूरी गहराभामें अुतरकर अपन आपका जाके-परव। अपना लडाजीके अतमें हमें अिन हिंदुस्तानकी रचना करनी है अुसम यलि समानताका निद्ध करना हा, ता अुनका बुनियात अभाव पडनी चाहिय। जा लाग यह समझ कर चलन ह कि बड-बड सुधार ता स्वराज्य बायम होन पर ही हाग या किय जायग, व मर जडम ही अिस बातका समझनमें गलता करत ह कि अहिंसक स्वराज्यका काम किय तरह हाता है। यह अहिंसक स्वराज्य किसी अच्छे मूतमें अचानक जामानन नहीं टाक पडगा। बलि जब हम सब मिलकर अक्साय अपनी मन्तनत अक-अक और चुनने चनेगे सभी स्वराज्यकी अिमारत सडी हा सकयी। अिस लिगामें हमन काफी लम्बी और अल्गी मजिल तय की है। अदिन स्वराज्यकी गणुण गाभा और भव्यताका दाव करनस पट्टे हमका अना अिनन भी ज्पाग लम्बा और पचानवाला रास्ता तय करना है। अिन लिअ हरअब बाधगाका अगने-आपग यह मवाल पुछना है कि अिस आदिन समानताकी स्थापनाके लिअ अुसत क्या किया है?

## आर्थिक समानता प्राप्त करनेकी पद्धतिया — गाधीजीकी और साम्यवादियोंकी

[श्री प्यारेलालके गाधीजीका साम्यवाद नामक लखसे।]

प्र० — आर्थिक समानताके ध्येयको हासिल करनेके लिय आपक तरीक और साम्यवादी या समाजवादी तरीकेमें क्या फरक है?

अ० — साम्यवादिया और समाजवादियाका कहना है कि जाज व आर्थिक समानताको जम देतके लिय कुछ नहीं कर सकते। वे बसक लिय प्रचार भर कर सकते ह। जिसके लिय उगामें दूध या बर पदा करत और बुसे बढ़ानमें उनका विश्वास है। उनका कहना है कि राजमन्ता पान और बुसे लोगसे समानताके सिद्धान्त पर अमल करवायेंग। मगी माजनाक अन पर वे लोगसे समानताके सिद्धान्त पर अमल करवायेंग। मगी माजनाक अन सार राज्य प्रजाकी अिच्छाको पूरी करेगा न कि लोगोका आना दगा या अपनी आज्ञा जबरन् जुन पर लादेगा। म घृणास नहीं प्रमकी गकितसे लोगोको अपनी बात समझाऊगा और अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता पदा करेगा। म सारे समाजको अपन मतका बनान तक खूगा नहीं — बल्कि अपन घर ही यह प्रयोग शुरू कर दूगा। जिसमें जरा भी गक नहीं कि अगर म ५० मोटराका तो क्या १० बीघा जमीनका भी मालिक होऊ ता म अपनी कल्पनाकी आर्थिक समानताका जम नहीं दे सकता। उसके लिय मय गरीब बन जाना होगा। यही म पिछले ५० सालोसे या अससे भी ज्यादा समयसे करता आया ह। अिसीलिय म पक्का कम्पुनिस्ट हानका दावा करता ह। अगरच म घनवाना द्वारा दी गयी मोटरो या दूसर सुभीतासे फायदा उठाता ह मगर म उनके बसमें नहीं ह। अगर आम जनताके हितोका बसा तकाजा हुआ ता बातकी बातमें म उनका अपनसे दूर हटा सकता ह।

हरिजनसेवक २१-३-४६ पृ ६३-६४



## आर्थिक समानताकी प्राप्ति

प्र० — रचनात्मक काय करत हुआ काशी कायमा आर्थिक समानताका प्रचार कर सकता है? मविनय आनामगवे कायक्रम पर अमल करने आर्थिक समानताका स्थापना कस का जा सकती है?

अ० — आप जिसका प्रचार अवश्य कर सकते हैं यदि आपकी भाषा सबका अर्थिक है और आपका तरीका ऐसा न हो जसा मुझ मान्य है कि कुछ योगदाने जमाने और पूजापनियाने मपति जवगन् छीन नवा प्रचार करके अस्वियार किया है। परन्तु मन प्रचार करनेन ज्यादा अच्छा ढंग बता दिया है। रचनात्मक कायक्रम देना जिस घयका आर काफी दूर तक ल जाना है। अमुक लिखे यह सबसे अनुकूल समय है। चरखा और अमुक साधके अद्योग पूर सफल हो जाय तो अतम सामाजिक और आर्थिक नाना तरहकी तमाम सममानताओं लगभग नष्ट हो जायगा। अहिंसात्मक लंगारा जा बन मिलता है अमुक नितानि बहुत हुआ परिणामों और वृद्धिपूर्वक अपना दामनारों मह्योग देनेन अिनवार करनेसे आर्थिक समानता अवश्य स्थापित हो जायगी।

हरिजन २५-१-४२ पृ० १६

## समान वितरण

रचनात्मक कायक्रम\* पर अगले पिछले मन्त्रालये नेचमें मन तरह अगामों से अब अग धनका समान वितरण बनाया था।

\* हरिजनगवक १७-८-४० पृ० २२४-२५ रचनात्मक कायक्रम किमलिखे ।

रचनात्मक कायक्रमक १३ अगवे महत्वका धनन करने का गाधीजीन लगन अुपमन्त्रालयक परिच्छेनमें कहा

अगर जिस गवके माय-माय आर्थिक समानताका प्रचार न किया गया तो यह सब निष्फला समझना चाहिये। आर्थिक समानताका यह अर्थ हरिजन नहीं कि हरअकक पास अेक समान धन हागा। अगर यह अर्थ जम्हरे है कि हरअकक पास असा परिवार बन्त और गाने-पानेका समान हागा कि जिसमें वह गुणव रह गव। और जो धानन सममानता मात्र मौजूद है वह बरल अर्थिक अुसायाने ही नष्ट हागी। अगर जिस विषयक लिख अग्य नानी वाक्यवचता है।

समान वितरणका सच्चा अर्थ यह है कि प्रत्येक मनुष्यका अपनी मारी कुशलता जरूरत पूरी करनके साधन मिल जायें जुस्त ज्योग नहीं। जुगहरणाय यदि किसी आत्माका हाजमा कमजोर है और अतः रागक लिअ पात्रभर आत्की ही जरूरत है और दूसरेको आधा भरकी जरूरत है तो दोनोंका अपनी-अपनी आवश्यकताओं पूरा करनका मौका मिलना चाहिये। अिस आदशका स्थापनाके लिअ सारी समाज-व्यवस्थाकी फिरम रचना करना पडगी। अहिंसाक आधार पर बन हुआ समाजका और काया आत्मा नहीं हो सकता। गायद हम अिस ध्ययको प्राप्त न भी कर सकें परंतु हम अुसे ध्यानमें रखना चाहिये और असक निषट पढुवनके लिअ सतत काम करते रहना चाहिये। जिस हद तक हम अपन ध्ययकी दिगामें प्रगति करेंगे वसी हद तक हमें सुख और सजोप प्राप्त हागा और अुतनी ही हद तक हम आर्थिक समाजकी स्थापना करनमें मन्द पढुचायेंगे।

यैकिक लिअ दूसरोके असा करनका प्रनाधा किय बिना अिस प्रकारका जीवन अपना उना पूरा तरह सभव है। और यदि आचरणके बिना स्वाम नियमका पालन एक यैकित कर सकता है तो अिसमें यह निष्पथ निकलता है कि यैकितयाका समह भा वसा कर सकता है। भरे लिअ अिस हकीकत पर जोर देना जरूरत है कि कोना सहा रास्ता अख्तियार करनके लिअ किमोका दूसरोकी प्रतीक्षा करनका आवश्यकता नहीं है। अंगाको जब असा लगता है कि अदृश्यकी सम्पूणत पूति नहा हो सकता तो व काम तीर पर अुन दिशामें पारभ करनमें सकोच करत ह। अिस प्रकारका मनावैतन मचमुच प्रगतिमें बाधा पडता है।

अब हम यह विचार कर कि अहिंसाके जरिये समान वितरण कस किया जा सकता है। अिसके लिअ पहली सीदी यह है कि जिसन अिस आदशको अपन जीवनका अग बना लिया है वह अपन निजा जावाम आवश्यक परिवतन करे। भारतका दरिद्रताका ध्यानमें रखत अब वह अपना जरूरत कमसे कम करे लागा। अुसका कमाओ बआमानास मुक्त हागा। वह सट्टका अिच्छा छोड देगा। असका निवासस्थान नयी जावन-पद्धतिके अनुरूप हागा। जीवनके हर क्षत्रम वड सयमन काम लागा। जब वन स्वय अपन जावनम यथासभव सब कुछ करेगा तभी असकी जमी स्थिति होगी कि वह अपन साधिया और पत्नीसियामें अिस आत्माका प्रचार कर सके।

वास्तवमें समान वितरणके अिस सिद्धांतकी जडम धनवानाके अनावश्यक धनका सरदाकता या ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त होना चाहिये क्यकि अिस सिद्धान्तके अनुसार व अपन पडासियास अक रुपया भी अधिक नहीं रखे मक्ने। यह कन किया जाय ? अहिंसाके द्वारा ? या धनवानोसे अुनकी सपत्ति छीन कर ? असा

करने के लिये हमें स्वभावतः हिंसाका आसरा लेना पड़ेगा। अजिब हिंसक कार-  
वाहीय सम्राज्यका लाभ नहीं हा सकता। सम्राज्य अत्यन्त घातेमें रहेगा, क्योंकि  
अजिब सम्राज्य अज अस आत्माके गुणाम वचित रहेगा जो दोलत जमा करना  
जानता है। अजिलिय अहिंसक भाग प्रत्यक्ष रूपमें घट्ट है। धनवानके पास  
जाना घन रहेगा परन्तु अजका अतना ही भाग वह अपने काममें लेगा जितना  
वह अपनी निजी आवश्यकताओंके लिये अचित रूपमें जारी समझता है और  
बाकाका सम्राज्य अजयागक लिये घराहर समझेगा। अजस तकमें यह मान  
रिया गया है कि सरलक प्रामाणिक हाग।

ज्या ही मनुष्य अपनका सम्राज्यका संवक समथन लगता है अजक  
व्यतिकर बयान रखता है और अजक कायक लिये खक करले लगता है  
त्या ही अजकी बमाथीमें गुदना आ जाता है और अजके माहसमें अजिमाका  
प्रदग हा जाता है। अजके अतिरिक्त यदि मनुष्यके मन जीवनकी अजस  
प्रणाकारी आर मूठ जाय ता सम्राज्यमें अज गानिपूण थानि हा जायगा  
और वह भी बिना किमी कटुताक।

यह पूछा जा सकता है कि क्या अजिमासमें किमी भी समय मानक  
समाजमें अमा परिवतन हुआ पाया जाता है। निस्सन्दह अस परिवतन व्यक्ति  
यामें ना हुने हा ह। गायक सारे सम्राज्यमें अस परिवतन हानका अजुहृण  
न रिया जा सक। परन्तु अजका अज अतना हो है कि अज तर बड पमान  
पर अहिंसाका बभी प्रयाग नहा हुआ है। किमा न किमी प्रकार हम लोग  
अजस गलत विमानमें फस गय ह कि अहिंसा मस्यत व्यक्तियाका हथियार  
है जो अजिलिय अजका प्रयाग व्यक्ति तर ही सीमित रहना चाहिय।  
जसमें यह बात नहीं है। अहिंसा निश्चित रूपमें सम्राज्यका गुण है। अज  
मचात्राका लायाका पकरा विश्वास करानक लिये मरा प्रयत्न और प्रयाग  
दाना कर रहे ह। आत्मीयके अजस युगमें कोमी यह नहीं कहेगा कि नभी  
ज्ञानक कारण ही काभी वस्तु या कल्पना निवन्मा है। यह कहना भी कि  
कतिन हानके कारण यह आभव है अजस युगका मानान अनुसार नहीं  
है। अजस अजाना सनमें भा सपाल नहीं था व राज दनी जा रही ह  
अजसक सग मभव बनता जा रहा है। हिंसाक दारमें अजस रिया हानवा  
दिमपकारी आविष्कार हमें सलन आन्धपनचित कर र ह। परन्तु म  
मानता ह कि अजिमाक शत्रुमें अजस कही ज्ञान अवलिन और आभव  
रियाका दनवा आविष्कार हाग। धमका अजिहाम अमे अजुहृणमि मरा  
पडा है। सम्राज्यक धनमात्रकी जड अजुहृणके प्रमत्त गवया अजभव है।  
और यदि अमा प्रयत्न मर भी हा जाय ता अजसका अज सम्राज्यका विना  
हाग। युग-युगमें अजकका कुरीतिया और हनरी अटिया धममें पुनक

कुछ समयके लिए उसे विगाड़ देनी है। वे जाता है और घनी जाती है। परंतु धर्म स्वयं बना रहता है क्योंकि विस्तृत अर्थमें समारंभ अस्तित्व धर्म पर ही धारण है। धर्मकी अतिम याख्या श्रीबरी कानूनका पालन कहा जा सकती है। आश्वर और अक्षय कानून पर्यायवाची हैं। श्रीबरी अर्थात् अपरिवर्तनीय जीता-जागता कानून। वास्तवमें आज तक किसीने उस नहीं पाया है। परंतु अवतारा और पगम्बरान अपना तपस्याके बलसे मनस्य जातिको उस गाम्बत धर्मकी हलकी-सी याकी दिखायी है।

परन्तु यदि अत्यंत प्रयत्न करन पर भी धनवान लोग सच अर्थमें गरीबोंके सरक्षक न बनें और गरीब दिन दिन अधिक कुचले जाय और भूखसे मर तब क्या किया जाय ?

असि पहिलीका हल डडनके प्रयत्नमें मुख अहिंसक अमृत्याग जोर सविनय अवकाका सहो और अचूक साधन सृजा है। अमीर लोग समाजक गरीबोंके सहयोगके बिना धन संग्रह नहा कर सकते। मनुष्यका प्रारंभ ही हिंसासे परिचय रता है क्योंकि अस यह बल अपन पशु-स्वभावसे अत्तराधि कारमें मिला है। अहिंसाका गतिकका नाम तो अस्की आत्माका तभी हुआ जब वह चौपायकी स्थितिसे अचा अठकर दोपाय (मनुष्य) की हालतमें पहुचा। असि गानवा विकास असके भीतर धीरे धीरे किन्तु निश्चित रूपमें हुआ है। यदि यह पान गरीबोंके भीतर प्रवण करने फल जाय तो व बलवान हा जायेंगे और अहिंसाके द्वारा अपनको कुचक डालनवागी अून असमानतागसे मुक्त करना सीखेंगे जिनके कारण वे भूखमरीक किनार पहुंच गय है।

हरिजन २५-८-४ पृ० २६

७३

## मजदूरीकी समानता

[ गांधीजीकी पदल यात्राकी शायरी से। ]

प्र — जिन लोगोंका सारा व्यापार चौपट हो गया है अउनके लिए आपकी मह सलाह है कि उन्हें खद होकर मजदूर बन जाना चाहिये। तत्र गिना व्यापार और अिसी तरहकी दूसरी बावा पर कौन ध्यान र्ग्या ? अगर आप असि तरह मेहनतक बटवारेको खतम कर दें तो जिसस सहजीव और भूम्यताको नुकसान नहीं पहुंचगा ?

अु — संसार पूठनेवालेन मेरे मतअबको नहा समझा है। अगर काकी आत्मी अपना पहला व्यापार धवा नहा चला सकता तो अुस लाजिमी तौर

पर पानवान साफ करने या पत्थर फोड़न जमा काआ न काभी गारीरिक् काम करना ही चाहिये। अिसमें जुमका पसाद या नापसन्दका काभी सवाल नहीं। मेहनत या कामका बटवारेमें मरा विरवास है। लेकिन म जिस बात पर जार दता हू कि मक्की मजदूरा बराबर हा। अब क्वाल डाक्टर या मास्टरको भगीस ज्याण मजदूरा पानका काआ हक नहीं। जसा हागा तभा कामका बटवारा राष्ट्र या दुनियाका अपर अठायेगा। मन्ची तहजाब या मन्च मुखका जियम बहतरीन काभी रास्ता नहीं। जुमुल्की स्पिरिट अिमानको जीवन देती है। लेकिन जुसवे गल्ल जुस यत्तम कर देन ह। हायीवा सिर बटा हुआ गणपति राक्षसकी तरह है लेकिन जाम् क प्रति निधिबे नाने वह भूचा अुठानवाला प्रताप है। दस सिरवाला रावण बहानी किसका बककूफ था लेकिन अगर जुसका मतलब असे आदमीसे हा जा बअवल और जोगमें आकर कुछ ना कर बठता था, तो वह सचमुच कजी मिरवाला राक्षस था।

हरिजनसेवक २३-३-४७ पृ० ६९

७४

## समान वेतन

[ गांधीजीकी पदल यात्राका छापरि से। ]

प्र० — आपने १९४१ में घनकी बराबरीका बारेमें लिखा था। क्या आपका यह धयाल है कि सब लोगका जा समाजमें अपमाना और जरूरी काम करते ह — चाहे व किसान हा या भगी अिजीनियर हा या डिमाबनवीम डॉक्टर हा या गिगक — समान वेतन पानका नतिक अधिकार है? बाक प्रश्नकी तहमें यह बात मान ली गजा है कि गिगाक या दूसरे मक् मरवार बरणात करणी। हमारा सवाल यह है कि क्या सब छागाका अपनी निजा आवस्यरताप्रति लिअ समान वेतन नहीं मिलना चाहिय? क्या आप नहीं मानत कि अगर हम अिग बराबरीकी मागिग कर ता वह छाआछतका दूसर मक् तरीकामे जल्दी खुलाड फेंकेगी?

म० — मुस काआ गद नहीं कि अगर लिन्गुस्तानका आशाका अपनी आणा जिन्गी बितानी है जा दुनियाक जिअ अधिपारी बाज हा ता मक् भगिया डॉक्टर कबाना खुन्ताण ध्यावागिया आर दूसराका भीमानकारीम निभर काम करने बन्में बराबर मेन्वताना मिलना चाहिय। नल ही हिदुस्तानी समाज अग मजिल तक कभा न पहुच। अगर हिदुस्तानका अब

मुखी देग बनना है तो हर हिन्दुस्तानीका फज है कि वह किमी दूमरकी ओर नही बल्कि जुसी मजिलकी ओर अपन धम्म बढ़ाय।  
हरिजनसवक १६-३-४७ पृ० ५६

७५

## मंत्रियोंके वेतन

१

प्र० — अिस धार काप्रसव बहुमतवाडे प्रान्नाम मंत्रियाकी वेतन-वृद्धि किन सिद्धाता पर की जा रही है? क्या कराचीवाग काप्रस प्रस्ताव आजकी परिस्थितिम लागू नही होता? यदि महागाजीके कारण असा किया है ता क्या प्रान्तोंके बजटमें असी गुजाजि। शभव है कि प्रत्यक सरकारी नौकरका वेतन तिगना किया जा सके? यदि नही तो यह क्या अचित है कि मंत्री अपन वेतन ५ ) से १५ ) कर ले और अक अध्यापक और चपरासीका यह अपुदन दिया जाये कि वह अपनी गुजर (१२) और (१५) माहवारम करे और गासन प्रबधमें काजी अस्थिरता उत्पन्न न करे। क्या कि काप्रम गासन चला रही है?

अु — बात बिशकुल ठीक है कि मंत्रियाको १५ ) क्यो और चपरासी या शिक्षाको १५ ) क्या? अेकिन सवाल अठानसे ही वह हल नही हो जाता। असे अतरका सिलसिला सनातन-सा है। हाथीको मन क्या और चीटीका क्या क्या? अिस सवागमें हां जयाव भरा है। जितनी जिसकी जरूरत है जीस्वर अुसे अुतना दे देता है। मनष्यकी जरूरत हाथी और चीटीकी-सी स्पष्ट हां सके ता बोधी गका ही न अठ। अनुभव तो हमें यही बताता है कि सब मनष्याकी जरूरत अकसी नही हो सकती जस सब चीटियाकी या सब हाथियोंकी होनी है। भिन्न भन्न लोगा और भिन्न भिन्न बीमाका जरूरतें अलग-अलग रहती ह। अिसलिअ आज जो अतर है अुसे कमसे कम करनका गातिस आदोलन कर लोकमत बनायें और अक आदग सामन रखकर अमकी आर कूच कर। जबरदस्तीसे या सत्याग्रहक नामसे दुराग्रह करक परिवनन नही कर सकग। मंत्रिगण लोगामें से ह। मनी बननस पहल भी अुनकी जरूरतें चपरासिया जसा नहा थी। म चाहूंगा कि चपरासी मंत्रीपदक लायक बनें और तब भी अपना जरूरतें चपरासी जितनी रखें। अितना समझ ल कि काजी मंत्री बधी हुआ मर्याता तक तनख्याह लेनक लिअ बधा नही है।

प्रश्नकारका अेक बात साचन लायक अवश्य है। क्या चपरासी (१५) में बिना रिदवत लिय अपना जीर बुट्टुम्बवा गुजारा कर सकता है? यदि नहा तो अुमका काफा मिलना हा चाहिय। अिलाज यह है कि यथासभव इम अपन अपन चपरासी वनें और अिनन पर भा जा आवश्यक हो अुनका अुनकी जरूरतक मुताबिक तनस्वाह दें और अिस तरह मत्रा और चपरासाक जीवनमें जा बढा अतर है अस मिटाव।

मत्रियाकी तनस्वाह (५००) स १५००) क्या हुआ यह भिन्न प्रश्न है लेकिन मूल प्रश्नके मुभावलेमें छाटा है। मूल प्रश्न हल हा सक ता छाटा अपन आप हल हाता है।

हरिजनसचक २१-४-४६ पृ० ९६

२

षोड दिन हुआे मन हरिजन में दरी कम्मस अक परा मत्रियाका तनस्वाह बढानक बारमें लिखा था। असना मझ काफी कामत अदा करनी पयी है। बहुत लम्ब-लम्ब अत पन्न पढत ह जिनमें मरा मावधानी पर अुय प्रगट किया जाता है और मुझ समझाया जाता है कि म अपना राय अन्न दू। मत्रियाका तनस्वाह पहा ही बहुत ज्यादा ह। अिनका और भी बढा तना कहा तक ठीक है, जब कि गरीर चपरासिया और बलबोंका जा तरक्का मिला है अुगमें अुनका गुजारा भी नहा हा पाता। मन अपने नाटकको फिरम पना है और मरा दावा है कि जा कुछ लयक चाहत ह वह सब अुस छाटम नाटमें है। पर काअी गलतफटमी न हो अिमलिअ में अपना अय स्पष्ट करना हू।

मुझ ताना मिला है कि मन बराचावाअ प्रम्नावका मोचा ही नहीं। मत्रियाकी जा खाडी तनस्वाह ेना चाहिय ता मिक अिमलिअ नहीं कि काअेमने अक प्रस्ताव करक हुअम लिा है बल्कि अुसाक लिअ अिमस बढत अुक दरजन कारण ह। सर कुछ भी हो जहा तक म जानता ह काअमन अुम प्रम्नावका कभी बाला नहीं और वट आज भी अुतना हा लागू हाता है अितना कि पाम हानक वक्त होता था।

म यह नहीं पहाता कि जा तनस्वाह बढाभा गयी ह वट नीक हुना है। लकिन म मत्रियाका बात मुन बगर अिमका बरा भला नहा वट सकता। टीका करनकाअका यह मनस लना चाहिय कि मरा अुन पर मा अपन मिवा किमी और पर भी काअी कावू नरा है। म म कानकारिणि-ममितिप साग अणामें होता ह। जब समापति पाहन ह तमी जाता हू। म ता मिक अरना राय द सकता हू अगर अुमकी कुछ भी शीमत हा। और अुमका

कामत तभी हा भवनी है जब वह माच विचार कर ह्वाकनर आधार पर दी जाये ।

अमीर और गरीबमें भूचा नौकरिया और छाटी नौकरियामें भयानक फरकवा सवाल एक अलग विषय है । अिसमें बहुत माच विचारकी जरूरत है और तन्नाली जडमें करना पन्गी । घाड मत्रिया और अनक मन्त्रियाका तनस्वाहाके मिलमिामें लग हाय अिसका निपटारा नहीं हो सकता । गना चाजावा अपन अपन महत्वक अनार निणय होता चाहिय । मत्रियाकी तनस्वाहाका सवाल ता मत्री जाप ही हल कर सकते ह । दूसरा प्रश्न ता अिसम बहुत लम्बा-चौडा है और अममें बहुत धारीनीये जाच पडताल करनकी जरूरत हागा । म ता मह माननका ग्मेगा तयार हू कि मत्रियाकी फौरन हा अपन अपन प्रान्तमें अिस कामका अपन हायमें लेना चाहिय और सबसे पहू नाचा नौकरीवालाका तनस्वाहा पर सोच विचार करके गग जरूरी हा तनस्वाह बना दा जानी चाहिय ।

हरिजनसेवक ९-६-४६ पृ० १७६



सरक्षकताका सिद्धान्त

[श्री महादेव दयाजीवं गांधी-भवा-मध-सम्मेलन-३ लणम।]

सरक्षकताका सिद्धान्त ता मरी समझमें नहीं आता। क्या आप मन्मथम त्रिम समझा सकेंगे? अब सत्यन कहा।

गांधीजी भला कुछ मिनटोंमें म अूस कस समझा सकता हूँ? और जब कुछ मिनटोंमें म अूम नहीं समझा सकता ता कुछ घण्टोंमें भी म अूस समझा सकूंगा या नहीं यह म नहीं जानता। फज काजिय कि विरासतक या अुद्याग व्यवसायक द्वारा मुझ प्रचुर सम्पत्ति मिल गयी तब मुझ यह जानना चाहिय कि वह मय सम्पत्ति मेरी नहीं है बल्कि मरा ता अूम पर अितना ही अधिकार है कि जिम तरह दूधर लाता आम्मी गुजर करत है अुमा तरह म भी अिजतक साथ अपना गुजर भरे करू। मेरी गय सम्पत्ति पर राष्ट्रवा हूक है और अुसीक दिनाथ अुसका अुपयोग हाना आवपक है। अिम सिद्धातका प्रतिपादन मन तब किया था जब कि जमीनारा और राजाअाका सम्पत्तिक सम्बन्धमें समाजवाणी सिद्धान्त दगाक सामन आया था। समाजवाणी अिन मुविधाप्राप्न वगैरका मतम बन गता चाहा ह जब कि म यह चाहता हू कि व (जधानार और राजा) अपने लाभ और सम्पत्तिक स्वामित्वका भावनाका छाठ दें और अपनी सम्पत्तिक बावजू अून लागाने समकन बन जायें जा महनत करक राणी बयान ह। मजदूरका भी मट महसूम करना हागा कि मजदूरका काम करनेको शक्ति पर अितना अधिकार है मालदार आम्मीका अपनी सम्पत्ति पर अुसस भा वम है।

'यह दूमरी बात है कि अिस तरहक मन्व द्रुस्य कितने हा मवने ह। अगर सिद्धान्त ठीक ह तो यह बात गौण है कि अुनका पादन अनेक लाग कर मवत ह या कवन अक आम्मी ही कर मवता है। यह प्रान जान विरागका है। अगर आप अहिमात्र सिद्धान्तका स्वीकार कर ता आपका अुसन अुनुसार आचरण करनेका कागिग करनी चाहिये। चाह अुनमें आपका मपन्नता मिल या अकफलता। आप यह ता कह मवत ह कि अिम पर अमन परना मुश्किल है अतित अिम सिद्धान्तमें अगी काशी बात ली अ अिमर अिज यह कन जा मक कि वह अदिप्राप्त नहीं है।

हरिनारायण ३-६-२९ पृ० १२३

## ट्रस्ट क्या है ?

[ गांधीजीकी पदल यात्राकी डायरी से । ]

आपन धनवानोको सरक्षक (ट्रस्टी) बन जानको कहा है। क्या इसका अर्थ यह है कि उन्हें अपनी संपत्तिका निजी स्वामित्व छोड़ देना चाहिये और अमुका असा ट्रस्ट बना देना चाहिये जो कानूनकी नजरमें जायज हो और जिसका प्रबंध लोकगाहीके ढंगसे हो ? वनमान अधिकारीके मरन पर अमुका वारिस कसे तय किया जायगा ?

अिम प्रश्नके उत्तरमें गांधीजीन कहा धन-संपत्तिक विषयमें मेरे विचार आज भी वही हैं जो वर्षों पहले थे याना प्रत्येक वस्तु औश्वरकी है और औश्वरने ही असे बनाया है। असल्लिअ वह असका सारी मनुष्य-सृष्टिक क्रिअ है न कि किसी व्यक्ति विापक क्रिअ। यदि किसी व्यक्तिके पास जितना असे मिलना चाहिये असस अधिक हो तो वह असका सरक्षक है याना असका अुपयोग लागाने हितमें होना चाहिये।

औश्वर सवगतिमान है असल्लिअ असे जमा करक रखनेकी जम्बल नहीं होती। वह नित्य पदा करता है अिसा प्रकार सिद्धान्तके रूपमें मनुष्यको भी रोजका काम राज चलाना चाहिये और चीज अिकटठी करक नहीं रखना चाहिये। यदि लोग आम तौर पर अिम सत्त्वको अगीकार कर ल तो असे कानूनी रूप मिल जाय और सरक्षकता कानून-सम्मत सस्था बन जाय। म चाहता हू कि यह ससारके लिअ भारतकी देन बन जाय। फिर कोअी शोषण नहीं रहेगा और न जास्ट्रिया तथा दूसरे देशोकी तरह गारा और अुनकी सत्तानके लिअ स्वान सुरक्षित रखना पडगा। अिन भभावामें अम पढके बीज विद्यमान ह जो पिछा दोना यद्दासे भी अधिक प्रच होगा। रही बात अत्तगानिकारीकी से अधिकारारू ट्रस्टीको अपना अत्तरा अधिकारी नामजद करनका हक होगा बगतें कि कानून असे मजूर करे।

हरिजन २३-२-४७ प० ३७ ३९

## सरक्षकताके बारेमें कुछ प्रश्न

प्र० — क्या जा चीज बबल हिंसासे ही प्राप्त की जा सकता है जुमकी रण अहिंसा द्वारा की जा सकती है ?

अ० — जा वस्तु हिंसासे हासिल की जाती है उसकी पहिंसासे रक्षा नहीं की जा सकती । अतना ही नहीं अहिंसाकी गत यह है कि उस पापकी बमाजीका छड दिया जाय ।

प्र० — क्या खुनी या छिपी हुई हिंसाके सिवा और किसी तरह पूजी अेवत्र करना समव है ?

अ० — खानगी व्यक्तिया द्वारा अिम प्रकारका घन-भचय हिंसाके अुपायके सिवा और किसी तरह अमभव है परतु अहिंसाके ममाजमें राय द्वारा असा भचय समव ही नहीं है वाछनीय और अनिवाय भी है ।

प्र० — मनुष्य भौतिक शक्ति अिकटठी कर या नतिक परतु वह करता है समाजके दूसरे मन्स्याकी सहायता या सहयोगसे ही । ता क्या अुसका कुछ भी नाग मुत्पत व्यक्तिगत लाभके लिअ काममें उनका अुस काअी नतिक हव है ?

अ० — नहीं कोअी नतिक हव नहीं है ।

प्र० — किसी सरकाके (ट्रस्ट) का अुत्तराधिकारी कम तय किया जायगा ? क्या अुग किगाके नामका सिफ प्रस्ताव करना हा अधिकार होगा और अन्तिम निणय रायके हापमें रहगा ?

अ० — चुनावका अधिकार प्रथम सरकाके बननवाले मूल मालिकको फाना चाहिय परतु अिम चुनावका अन्तिम रूप राय दे । अगा व्यवस्थाके राय और व्यक्ति दाना पर अकुग रहता है ।

प्र० — सरकाकेतान सिद्धान्त पर अमल हानन अर अिम प्रकार व्यक्ति गन शक्तिकी जगह मावजनिक शक्ति आ जायगा तब क्या स्वामित्व मज्जना हागा जा हिंसासे शायत है या रायके शानुतासे अधिकार पानवाली परतु राजी-गनी और महत्कारके आपार पर बना हुई पचापता और श्पुनिगिषान्दिया अणि मस्थाअारा हागा ?

अ० — अिम प्रश्नमें विचारका कुछ गडबड है । कनी हुई मामाजिक श्पिनियों शानुनी स्वामित्व सरकाके रहेगा रायका नहीं । राय शिचयनका

जन न कर और समाजका सनाव त्रिभुज पूंजी या मिलियनतक माय मालिकानी योग्यता भी समाजक काममें आने असालिअ सरलवताका सिद्धांत अमलमें लाया जाता है। यह भा जल्दरी नहीं कि रायका आधार सग हिमा पर ही हो। सिद्धांतक रूपमें असा हो सकता है परंतु अस सिद्धांतका बायावित करनके लिअ काफी हल तक अहिगाव आधार पर चलनवाल रायकी जरूरत होगी।

हरिजन १६-२-४७ पृ० २५

७९

म कयो सरक्षकताके सिद्धांतको तरजीह देता ह ?

[९ जीर १० नवम्बर १९३४को श्री निमलकुमार वामन गांधीजीक साथ अस विषयकी चर्चा की थी जिसका गांधीजी द्वारा सगाधित विवरण दि मास रिब्यू के अक्टूबर १९३५ के अकमें प्रकाशित हुआ था। अस विवरणमें स कुछ प्रश्नोत्तर नीचे दिय जात ह।]

प्र० — क्या प्रम या अहिंसा परिग्रह या गाणस किमी भी रूपमें सगत ह ? यदि परिग्रह और अहिंसा साथ-साथ नहीं रह सकते ह ता क्या आप जमीन और कारखानाकी ब्यक्तिक मालिकीका अनिवाय बराबरीके रूपमें अुस समय तक समयन करग जब तक लोग जितन अधिक परिपकव या शिक्षित नहीं हो जाते कि अपना काम चला सके ? अगर असा सवाल हो तो क्या यह अधिक अछा नहीं हगा ? कि सारी जमीन — अधिकारमें हो और राय जनताके नियंत्रणमें रहे ?

बु० — प्रम जीर वजनगीठ परिग्रह जससाय कभी नहीं रह सकते। सिद्धांतके तीर पर जब प्रम परिपूण होता है तब अपरिग्रह भी परिपूण होना चाहिय। यह गरीर हमारा जन्तिम परिग्रह है। असिअ बोओ मनप्य कवठ तमी सपूण प्रमका व्यवहारमें ला सकता है और पूणतया अपरिग्रही हो सकता है जब कि वह मानव जातिकी सवाने खातिर मृत्यका आलिंगन करन तथा देहका त्याग करनक लिअ भी तयार रहता है। लेकिन यह सिद्धांतमें ही सत्य है। यथाय जीवनमें हम मुक्तिअ ही सम्पूण प्रमका व्यवहार कर सकते ह क्याकि यह गरीर परिग्रहके रूपम हमेगा हमारे साथ रहनवाला है। मनुष्य सत्व अपूण रहेगा और फिर भी वह सत्व पूण बननकी वागिग करगा। अतअव जब तक हम जीवित रहेंग तब तक

पूण प्रेम या पूण अपरिग्रह अल्प्य आत्मके रूपमें ही रह्ये । परन्तु अुस आत्मका आर बढ़तकी हमें निरंतर कागिग करते रहना चाहिये ।

जिनके पाम जभा मपत्ति है अुनस कहा जाता है कि व अपनी मपत्तिक ट्रस्टी बन जाय और मरीबकि खातिर अुसकी रखा और सार-समाप्त कर । आप कह सकते है कि ट्रस्टीगिग या सरलवक्ता ता कानूनका अक कल्पनामात्र है व्यवहारमें अुमका कही काजा अस्तित्व नही लियाओ पढता । लकिन यदि लाग अुम पर मतन विचार कर और अुम आचरणमें अुतारनकी कागिग भी करते रह ता मानव-जातिवे जीवनकी नियामक गवितक रूपमें प्रमकी आज जितनी मता लियाओ गेती है अुमस कही अधिक दिशाओ दगी । बेगव पूण सरलवक्ता ता युक्तिवकी बिन्दुकी व्याख्याकी तरह अक कल्पना ही है और अुतनी ही अप्राप्य भी है । लकिन यदि हम अुमके लिअ कागिग कर ता दुनियामें समानताका मिद्धिका दिगामें हम दूसर किमी अुपायसे जितने आग जा मवेंगे अुमके बजाय अिम अुपायम ज्यादा आग बड मवेंगे ।

प्र० — अगर आप कहत है कि वयकिनव परिग्रहका अहिंसाके साथ काओ मल नही बड सकता ता फिर आप अुस क्या बरलान्त करते है ?

अु० — यह छट हमें अुन लोपाके लिअ रमनी हाता है, जा घन ता कमान है लकिन अपनी कमाओका अुपयोग स्वच्छामे मानव-जातिकी भलाआमें नही करना चाहत ।

प्र० — तब वयकिनव मपत्तिवे स्थान पर रामक स्वामित्वकी स्थापना करव हिंसाका कमस कम क्या न किया जाय ?

अु० — यह वयकिनव मालिकाम अघिव अछत्रा है । लकिन लिसाकी मरान अेमा किया जाय ता यह भी आपत्तिजनक है । मरा दुइ विचाराम है कि यदि राज्यन पूजीवाल्का हिंसाक द्वारा दबानकी कोगिग की ता वर गुन ही हिंसाक जालमें फन जायगा और कमी भी अहिंसारा विकाम नही कर मरगा । राय हिंसाका अक कद्रित और मरगित रूप ही है । अुपकिनमें आत्मा हाती है परन्तु अुवि राय अक जड यत्रमात्र है अिमलिअ अुम हिंसाक कभा अलग नही किया जा सकता । कसकि लिसा पर हा अुमका अस्तित्व निभर करता है । अिमलिअ में मरगवक्ताव सिद्धान्तका तरजाह देता है ।

प्र० — हम अक विगिष्ट अुग्रहरण पर आये । कल्पना कीजिये कि अक कानावार कुछ बिअ अपने पुत्रके पाग छाड जाता है वह पुत्र राष्ट्रके लिअ अनका काजा मूय नहा ममसता है अिमलिअे वह अहें वच दता या बरयाव कर दता है । अिसस राष्ट्र अेक अुकिनकी मूतताक कारण कुछ वरमूय बिअमि अचित रहता है । अगर आपकी मद् विचारण कर लिसा

जाय कि वह पुत्र अथवा अथर्व सरदाय कभी नहीं बन सकेगा जिस अर्थमें आप असे बनाना पसंद करते हैं और असी स्थितिमें राय कमसे कम हिंसाका प्रयोग करने के चित्र असे छीन ले तो क्या राज्यके जिस कदमका आप अचित्त नहीं मानें ?

अ० — हा, राय सचमुच अन चित्राको छीन लेगा और म मानता हूँ कि राय यदि अिस काममें कमसे कम हिंसाका अुपयोग करे ता वह रायसगत होगा। लेकिन यह टर हमें बना रहता है कि कहीं राय अन गोंगोंके खिलाफ जो असे मतभ्रं रखते ह बहुत ज्यादा हिंसाका अुपयोग न करे। सम्बन्धित लाग यदि स्वेच्छासे सरदाकोकी तरह यवहार करन लें तो मुझे सचमुच बड़ी खशी होगी। लेकिन यदि वे असा न कर तो म मानता हूँ कि हमें रायके द्वारा भरसक कम हिंसाका प्रयोग करक अनकी संपत्ति ले लनी पडगी। अिसी कारणसे मन गोलमेज परिषदमें यह कहा था कि सभी निहित हितवालोकी सम्पत्तिकी आच होनी चाहिय और जहा आवश्यक मालूम हो वहा अनकी सम्पत्ति रायको — स्थितिक अनुसार मआवजा देकर या मुआवजा दिय बिना — अपने हाथमें कर लेनी चाहिय।

ब्यक्तिसगत तौर पर म अिसे ज्यादा पसंद करूंगा कि रायक हाथमें सत्ता केन्द्रित होनके बजाय सरदाकताकी भावना समाजमें ब्यापक बन। क्वाकि मेरी रायमें राज्यकी हिंसाकी तुलनामें ब्यक्तिक मालिकीकी हिंसा कम हानिकर है। लेकिन यदि राज्यकी मालिकी अनिवाय ही हो ता म रायकी कमसे कम मालिकीका समयन करूंगा।

प्र० — तब क्या हम यह समझें कि आपमें और समाजवादियामें मौलिक अन्तर यह है कि आपका विवास है कि मनुष्य अपन जीवनकी यवस्थामें आदतकी अपेक्षा आत्म निर्देगन या सवल्प-शक्तिसे अधिक प्ररित होते ह और अनका विवास है कि मनुष्य सवल्प शक्तिकी अपेक्षा आत्मसे अधिक प्ररित होने हैं ? क्या अिसी कारणसे आप आत्म-सुधारके लिय प्रयत्न करते ह जब कि वे असी पद्धतिकी रचनाका प्रयत्न करते ह जिसमें लोगके लिय दूसरोना गोपण करनकी अपनी अिच्छाको कार्यान्वित करना असभव हो जायगा ?

अ० — यह स्वीकार करते हुअे भी कि मनुष्य वास्तवमें आदताने बल पर जीवित रहता है मेरा विचार है कि अुसका अपनी सवल्प शक्तिकी आचरणमें अुतारकर जीना अधिक अच्छा है। म यह भी विश्वास रखता हूँ कि मनष्यमें अपनी सवल्प शक्तिकी जिस हद तक विकसित करनकी क्षमता है जो गोपणको घटाकर कमसे कम कर दे। म राज्यकी सत्ताकी वृद्धिकी बढसे बढ मयकी दृष्टिसे देखता हूँ। क्वाकि जाहिरा तौर पर तो

वह धारणका कमस कम करव समाजका लाभ पहुचाती है परन्तु मनुष्यक व्यक्तिवका — जा मद्र प्रकारकी शुभ्रतिकी जड है — नष्ट करक वह मानव जातिना बडीस वडा हानि पहुचाता है। हम अस कितने ही अुदाहरण जानत ह जिनमें ागान मररक्षकताको अपनाया है लकिन असा अक भी अुदाहरण नहा ह जहा राज्यका अस्तित्व सचमुच गरीबाके लिअ हो।

प्र० — लेकिन सररक्षकतावे अुदाहरणाक रूपमें आप जिन लोगकि नाम कमी कमी देग करते ह अुनकी अस विगपताका कारण क्यर आपका "यकिनगत प्रभाव ही नहीं है ? आपकी कोटिवे शिक्षक कमी कमी ही आते ह। अनअक यह क्या अधिक अच्छा न होगा कि आप जस मनुष्यकि प्राम गिव आगमन पर निभर रहनके बजाय मनुष्यमें जिन आवश्यक परिवतनाका सिद्ध करनका काम किमी सगठनवा सौप दिया जाय ?

जु० — मेरी बात छोड दीजिय। आप तो यह याद रखिय कि मानव जातिक सभी महान शिक्षाकोका प्रभाव अनेके जीवनक बाद भी कायम रहा है। मुहम्मद बुद्ध या श्रीमाके समान हरअक पगम्बरकी शिक्षाओंमें कुछ स्थायी अग हाता है और कुछ असा जो तत्कालीन जरूरताकी दृष्टिस लिया गया होता है और असलिअ जिसकी अुपयोगिता अुसी कात्क लिअ हानी है। हम अुनकी शिक्षाके स्थायी पन्तूके साथ साथ अस्थायी पन्तूकी भी पाठनकी कोशिश करत ह अिसीलिअे धार्मिक आचारामें अितनी विवृतिया पना हा जाती हैं। लकिन यह ता आप देग सकते ह कि अुनकी मृत्युक बाद भी अुनका प्रभाव निरतर बना रहा है।

अिमके सिवा, मुझे जो बात नापमद है वह है बल पर आधारित सग ठन। साथ अमा ही सगठन है। स्वेच्छापूर्वक विद्या जानेवाला सगठन जरूर हाता चाहिय।

## साथीको पाटनेके लिअे पुल

[श्री महादेव दसाआवे साप्ताहिक पत्र स मसूर नगरपालिकाके मानपत्र पर गाधीजी द्वारा दिय गय अुत्तरका जख अग।]

म राजाके महलसे और लखपतिकी गानदार ह्वेलीसे भीर्पा नहीं करता हूँ। लेकिन मेरा धुमसे सामरोध निवदन है कि अुह अुस साथीका पाटनेके लिअ बुछ करना चाहिये जा अहे किसानासे अलग करती है। वे अस पुाका निर्माण करे जो अुहे गरीब किसानाके नजदीक गाय। वे अपना जीवन जसा बनायें कि उनके जीवनमें और अुनके आसपासके गरीबाकी जिलगीमें वही बुछ मत् तो हो। म अपनी वढिके अनुसार अस पुाको बनानकी कागिण कर रहा हूँ और म अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहता चाहता हूँ कि आप यह पुल आपकी सोनेकी खदाना और भद्रावती जसे कारखानासे नहीं बना सकत ह।

यग अिडिया ४-८-२७ पृ० २४२-४३

## ८१

### कानूनी ट्रस्टीशिप

[श्री प्यारेलालके गाधीजीका साम्यवाद नामक लेखसे।]

आजकं धनवानाको वग-सधप और स्वेच्छासे धनके ट्रस्टी बन जानक दो रास्तामें से जेक रास्ता चन लेना होगा। जहे अपनी जायदादकी रखाका हक हागा। अह यह भी हक होगा कि अपने स्वाधके लिअ नहीं बल्कि देगक भलेके लिअे और असलिअे दूसरोका गोपण किय बिना वे धनका बगानमें अपनी वढिका अुपयोग कर। अुनकी सेवा और अुसके द्वारा हानवाले समाजक बल्याणका ध्यानमें रखकर राय अुहे निश्चित कभीगत भी देगा। अनके बच्चे योग्य हुआ तो ही वे अुम जायदादके सरक्षक बन सकेंग।

सयाा कीजिय कि कल हिदुस्तान आजाद हो जाता है, तो अुस हालतमें सारे पूजीपतियोको अपन धनक कानूना ट्रस्टी होनेका मौका दिया जायगा। मगर असा कोअी कानून अत पर अपरसे गना नहीं जायगा। वट नाचस आयगा। जब लाग ट्रस्टीशिपक मानी समय गय और असके लिअ देगमें



वातावरण पना हो जायगा ता लाग खुद घाम-पचायतासे गुन बरव असा कानून बनायेग और खुस पर अमल करेग। जिन तरहकी बात जब नीचेस पदा हागी ता सब खुसे खानी-खानी मजूर करेग। अपुनस गान्ते पर वह जद चीजक समान वासित मालूम हागी।

हरिजनसवक ३१-३-८६ पृ० ६३

८२

## सरक्षकताका व्यावहारिक फार्मूला

[श्री प्यारेलाक गाधीजीका सरक्षकताका मिद्वान्न नामक ग्रन्थ।]

जेलम छूने पर हम गान्ते जिन ग्रन्थका आगावा महत्का नज्द्वान्न छावनामें जहा छाहा था वहाम फिर हाथमें लिया। विगागालभात्री और नरहरिभात्री भी सरक्षकताका अब साधा-साधा और व्यावहारिक फार्मूला तयार करनेमें शरीक हो गय। वह बापूक समान रता गया। बुन्धान खुसमें योद्धम करवन्न विय। अन्तिम मनोना जिन प्रकार है

१ सरक्षकता (दुस्तीगिप) असा गाधन प्रदान करता है, जिनस समाजकी मौजूदा पूजीवाणी व्यवस्था समतावाणी व्यवस्थामें बदल जाती है। जिनमें पूजीवाणका ता गुजाबिग नहा है मगर यह कतमान पूजीपति-वगका अपना सुधार करनेका मौका देता है। जिसका आधार यह श्रद्धा है कि मानव-स्वभाव असा नही है, जिनका कभी बुद्धार न हा सक।

२ यह संपत्तिक व्यक्तिगत स्वामित्वका कात्री हन मजूर नहा करता हा अममें समाज स्वय अपना भलाआक लिज किर्गी हन तक जिनका अन्तजत द मयता है।

जिनमें धनक स्वामित्व जोर अपुसागक कानूनो निमभनकी मनारी नही है।

४ जिन प्रकार राप द्वारा नियमित सरक्षकतामें कात्री व्यक्ति अपना स्वाप मिद्विक लिज या समाजक हिनक शिष्ट संपत्ति पर अधिचार रगन या जुगका अपुसाग करेव लिज मयत्र नया हागा।

५ जग अचित चुनतम जीवन-वनन मिय करनका बात बता गयी है ठीक जुगी तरह म नी तप कर लिया जाता चाहिय कि समाजमें किर्गी भी व्यक्तिकी गाना ज्वा कितनी आमना हा।

### आर्थिक और औद्योगिक जीवन

न्यूनतम जोर अधिकतम आमदनियाके बीचका फर्क जुक्ति यायपूष और समय समय पर जिस प्रकार बढ़ता रहनवाला हागा चाहिये कि उसका झुकाव अस फर्कको मिटानकी तरफ हो।  
 ६ गांधीवादी अर्थ-व्यवस्थामें बुत्वादनका स्वरूप समाजकी जरूरतसे निश्चित होगा न कि यक्तिकी सनक या लालचसे।  
 हरिजन २५-१-५२ पृ ३०१

### ८३

### अहिंसक समाजमें सरक्षकका स्थान

प्र — आपके जेत्नासे यह खयाल होता है कि आपका सरक्षक एक बहुत सदभावनागील परोपकारी और दानदातास अधिक कुछ नहीं है — वसा ही जस कि प्रथम पारसी बरोनट ताता वाडिया विडंग और गी बजाज आदि ह। क्या यह ठीक है? क्या आप कृपा करने समझा यें कि किमी धनवानकी सपत्तिये लाभ अठानका सबसे पहला हक आप किसका समवते ह? आय और पूजीक हिस्से या रकमकी वह मर्यादा आप बता सकते ह जहा तक वह अपन पर अपन रिस्तेदारा पर और साव जनिक कामा पर खच कर सकता है? जो जिस सीमाका जुल्लघन करे अस जसा करनेसे रोका जा सकता है? यदि वह सरक्षकके नाते अपनी जिम्मे दारी पूरी करनक लिअ अयाम्य हो या अयथा असफल सिद्ध हो तो क्या वह अस सपत्तिके लाभके अधिकारी यक्ति द्वारा या राज्य द्वारा हटाया जा सकता है और हिसाब देनको मजबूर किया जा सकता है? क्या राजाआ और जमींदारा पर भी यही सिद्धांत लागू होते ह या उनकी सरक्षकता भिन्न प्रकारकी है?

अ० — यदि सरक्षकताका विचार जोर पकड जायगा तो परोपकारको जिस रूपमें हम जानते ह वसा वह नहा रहेगा। जिन जिनके नाम आपन गिनाय ह उनमें स जमनालाऊजी ही जिसके निकट पहुँचे थ परलु सिफ निकट ही। सरसकका जनताके सिवा काअी अत्तराधिकारा नहा होता। अहिंसा पर आधारित राज्यमें सरक्षकका कमीशन नियमित होगा। राजाआ और जमींदाराका दर्जा दूसरे धनवानाकासा ही होगा।  
 हरिजन १२-४-४२ पृ० ११६

## अपने धनका सरक्षक

[श्री महादेवभात्री दत्तात्रय अथ रक्षक सवाद-२ अथ बहनक प्रश्न नामक एतसे ।]

प्र०—अहिंसाक सिद्धान्तका माननवाला क्या धन-शौल्य रख सकता है? अगर हा तो अहिंसा द्वारा वह अुसकी रक्षा कस करेगा?

अु०—अहिंसावादी अपनी शौल्यका मालिक नहीं हा सकता। मल अुसक पास लाता रुपये हा मगर वह अपनको अुस धनका सरक्षक ही समझगा। अगर चोर या डाकुआमें जाकर अम रहना है, तो कमस कम सामान अुस अपन पास रखना हीगा। शायद अक लगाटस हा अुग सत्ताप मानना पड। अगर वह असा करेगा ता वह चार-डाकूना हृदय जम्ह पण्ट सकगा।

मगर अितने पर हम कोअी व्यापक सिद्धान्त नहा बना सकत। अहिंसक रायमें तो बहुत कम चोर-डाकू हाग असा मान लना चाहिये। व्यवितक लिज यहा सहज नियम समझा जाये कि अुस पूरा अपरिग्रहा बनकर रहना है। फज कीजिये कि मने जरायम पणा बहलानी कोमक बीचमें जाकर रहनका निबध विमा है तो मुझे चाहिय कि म अपन पास कुछ भी न रखू। खानेका नी अुनस माग नू और अगर व कुछ न दें तो भूसा रहू। जब व दोंग कि म अुन गेगकि बीचमें गुड सवाभावसे ही रहता हू ता व मर मित्र बन जायेंग। अिस मनोवृत्तिमें ही सच्चा अहिंसा है।

हरिजनसवक १४-९-'४० पृ० २६१

## अस्तेय और अपरिग्रह

जिन व्रता पर ज्यादा लिखनकी जरूरत नहीं। पाच बड व्रतामें स य ह। जो आत्म-दंगन करना चाहते ह उनके लिअ य व्रत जरूरी ह। अिसलिअ अिहें आश्रमके व्रतामें स्थान दिया गया है।

### अस्तेय

अिस व्रतके पाठनके लिअ सिफ अिनना ही काफी नहीं है कि दूसरकी चीज असकी अिजाजतके बिना न ले जाय। जो चीज हमें जिस कामके लिअ मिली हा अुससे ज्यादा समय तक असे काममें लेना यह भी चारी ही है। अिस व्रतकी बतियादमें यह सूक्ष्म सत्य है कि परमात्मा प्राणियाके लिअ हमेंगाकी जरूरतकी चीजें ही हमेंगा पदा करता है और अुहें दता है। असस ज्यादा वह पदा ही नहीं करता। अिसका अथ यह हुआ कि अपनी कमसे कम जरूरतसे ज्यादा मनुष्य जितना लेता है वह चोरीका लेता है।

### अपरिग्रह या गरीबी

अपरिग्रह अस्तेयके भीतर ही समाया हुआ है। अनावश्यक चीजें जसे लेनी नहीं जानी चाहिय बस ही अुनका संग्रह भी नहीं होना चाहिय। यानी जिस खुराक या साज-सामानकी हमें जरूरत न हो अुसका संग्रह करना अिस व्रतका भंग करना है। जिसका कुर्सीके बिना काम चल सकता है अुसे कुर्सी रखनी ही न चाहिय। अपरिग्रही मनुष्य अपना जीवन हमेंगा सादेस साग बनाता जाय।

अपरिग्रह और अस्तेय मनकी स्थितिया ही ह। गरीरके लिअ अुनका पूरा अमल असभव है। गरीर खुद ही अक परिग्रह है। और जब तक वह है तब तक दूसरे परिग्रहाकी आशा रखता ही है। कुछ परिग्रह अनिवाय ह। कुछ की तादाद भी हर मानसिक स्थितिके अनुसार होगी। जस जस वह अिन व्रताकी तरफ मुत्ती जायंगी वसे वसे मनुष्य गरीरका मोह छान्ना जायगा और अपनी जरूरतें घटाता जायगा। सबके लिअ अक ही माप निश्चित नहीं किया जा सकता। चीटीका परिग्रह दूसरा ही होगा। कणसे ज्यादा जमा करनेवागी चाटी परिग्रही है। हजारों कण समा जाय अितनी घाम जिस हाथीके सामन पडी हो असे परिग्रही नहीं माना जा सकता।

अमी परेगानियासे सयासकी प्रचलित कल्पना पदा हुआ मालूम हाती है। असे सयासका पाठन करना आश्रमका ध्यय नहीं। किमीके लिअ जसा

मन्याम जरूरी भले ही हा। मन् किमीमें दिग्ग्वर बनकर ममाधि लगाकर गुफामें बठकर विचारमात्रम जगतका कल्याण करतका गक्ति हा। पर मभा गुफामें बठ जाय ता ननाजा सराब हा हागा। साधारण स्त्रा-पुरुषाकि लिअ मानसिक मन्यास हा सभव है। दुनियामें रहत हअ भा मवाभावम और मवावे लिअे ही जो जाता है वन् सपासी है।

असा सन्यास मिद करतका आश्रमका आगा है। वरु अुमा निगामें जा रहा है। अिस मानसिक मन्याममें जरूरी चीजाका सप्रद रहता है फिर भी परिग्रहमात्र (गरीर तकक) त्यागकी तयारी हाना चाहिये। मानी अेक भी वस्तुक जानम चाट न लगनी चाहिये। जीर जब तक गरार है तब तक सवाता जा काम आय वह किया जाय। खान-पहननका मिने ता ठीक, न मिल तो भी ठीक। अमी परीक्षाका समय आय तब काआ आश्रमवासी हारे नहा।

मत्याग्रह आश्रमका अितिहाम पृ० ३८-४० १९५९

## ८६

### अस्तेय-व्रत

[ता० १६-२-१६ का मद्राममें वाय० अम० सी० ५० व सभागृहमें लिखे गये भाषणमें।]

म कहना चाहता हू कि अक दृष्टिस हम सब चार ह। जिम चीजका मर लिअे तुरत अुपयोग न हा असा चाअ अगर म ग्ना हू और अुम अपने पाग रस छाडता हू तो म अुम चाजका चाग करता हू। म यह कहना चाहता हू कि बिना किया अपवाक मृष्टिका यह नियम है कि वह हमारी जरूरतका चाअे राज पदा करती है। और अगर हर आत्मा अपनी जरूरत जिनना ही ल, अुमत अधिक न ल ता अिस नुनियामें गरीबा न रह और न बाआ मनुष्य अुगमरीका ही गिकार हा। हमार बीर यह अयमानता मौजूद है अिगता अप ही है कि हम सब चारी करन ह। मैं ममाजवाता नही हू। और जिनक पाग मपत्ति है अनम म अुम छानना भी नह। चाग्ना। लकिन मैं अिनना जरूर कग्ना चाहता हू कि हममें म जा टकित अधकारमें म प्रकागमें जाना चाहत ह अुम जरूर यह अस्तय-व्रत पाग्ना पानिय। म धिमीम अगकी मपत्तिना अरहण नही करना चाग्ना। अगर म अगा करना हूँ तो अहिमा धमग विमुग हाता हू। मन् मगी अगता बिना दूगक

पास अधिक सम्पत्ति हो। लेकिन मुझ कहना चाहिय कि कमसे कम अपना जीवन व्यवस्थित करनेके लिये तो मझ जिस चीजकी जरूरत नहीं है वह म अपन पास नहीं रख सकता। हिंदुस्तानमें अस तीस लगन मनुष्य ह जिह्द एक जून खाकर ही सतीस मानना पडता है। और वह भी बेवल् सूखी राटी और चटकीभर नमकस ही। जब तक अिन तीस लाख मनप्योको पूर वस्त्र और भोजन नहा मित्र जाता तब तक जापका और मुय हमार पास जो कुछ है भुस रखनका अधिकार नहीं। मुझे और आपका जिहे अधिक पान है अपनी जरूरतें नियमित करनी चाहिय और स्वेच्छापूर्वक भूल भी रहना चाहिय ताकि अिन ढागाका सवा गुणा भोजन और वस्त्रकी व्यवस्था हो सक। जिसमें स अपन-आप ही अपरिग्रह-व्रतका शुद्धभव हाता है।

स्वीचेज अण्ड राडिटरिज आफ महात्मा गाधी चतुथ सस्करण  
 पृ ३७७ १८४

### अच्छिक गरीबी

[ता २१-९-३१ को लन्दनके गिल्ड हाउसमें दिय गय भाषणसे।]

जब मन अपन-आपको राजनीतिक जीवनकी भवरोमें खिचा हुआ पाया तब मन अपन-आपसे पूछा कि मुय अनतिक्रतास असत्यसे और जिसे राजनीतिक नाम कहा जाता है जुससे अछूता रहनेके लिये क्या करना जरूरी है। म आपको अपन अस प्रयत्नकी तफसीलमें नहीं ले जाना चाहता मद्यपि उसके सम्बन्धमें मन जो कुछ किया वह दिग्भ्रम है और मेरे लिये पवित्र भी है—म आपसे सिफ यह कह सकता हू कि आरम्भमें मुझ काफी कठिन सघपस गुजरना पना और अपनी पत्नीक साथ तथा जसा कि म खूब स्पष्टतापूर्वक याद कर सकता हू अपन बच्चाके साथ भी बहुत झगडना पडा। लेकिन जो हुआ भुस जान दीजिय मतलबकी बात यह है कि म जिस दृढ निश्चय पर पडचा कि यलि मुझ अुन ढागाकी सवा करना है जिनके बीच मेरा जावन आ पना है और जिनकी कठिनायियाको म दिन प्रतिदिन दत्वता हू ता मुय समूची सपत्ति तथा मारे परिग्रहका त्याग कर देना चाहिय।

म आपस यह नहीं कह सकता कि ज्या हा म जिस निश्चय पर पडचा त्या ही मन अकाम प्रत्यक् चीजका परित्याग कर लिया। मुझ आपके सामन

स्वीकार करना चाहिये कि पहले-पहल प्रगति धीमी रही। और अब जब म समयके अंशु दिनाका याद करता हूँ तो म देखता हूँ कि आरम्भमें यह दुःख भी था। लेकिन ज्यो ज्यो दिन बीतते गये मने महसूस किया कि कभी अर्थ चांजाका भा जिह म तब तब अपनी मानता या त्याग करना चाहिये और अब समय आया जब अंशु वस्तुआका त्याग मेरे लिये निश्चित रूपम हपका विषय हा गया। और तब अकबे बाद अब य सारी वस्तुओं बहुत तजाम मुयम छूना गयी। और आपकी जपन य अनुभव मुनाते हुआ म यह सक्ता हूँ कि मेरे कचमि अकभारी बोध अंतर गया। मुझे महसूस हुआ कि अर म राहक माय चल सकता हूँ तथा अपने वस्तुआकी सेवाके अपने कायका भा अधिक निश्चिन्ता और अधिक प्रसन्नताके माय कर सकता हूँ। फिर ता किमा भी चांजका परिग्रह मेरे लिये कष्टनायक और भाररूप बन गया।

अस हर्षके कारणकी लाज करते हुआ मन पाया कि यदि म किमी भी चीजका अपनी मानकर अपने पाम रखता हूँ ता मुझ अुसका सारी दुनिघास रसा नी करना पडती है। मन यह भा दता कि कभी गग ह जिनक पाम मह चीज नहीं है यद्यपि व अंशु चाहत ता ह और यन् व भूय अवाल-मीहित लग मुये अवाल स्थानमें पायें ता व कवल मर पासकी अंशु चीजका बटवारा करके ही सन्तुष्ट नहीं हाग बल्कि अस मुझसे छान भा लग और असा हालतमें मुय पुष्टिमका सहायता भी प्राप्त करना हागी। मने अपने-आपम बहा यन् व अस चाहत ह और गन ह ता असा व विसी अीर्षापूर्ण हेतुस नहा करत हैं लेकिन व अमा असिलिय करत ह कि अुनकी आवयरता मरी आवयकनाम बहा अधिक है।

और तब मने अपने-आपसे कन् परिग्रह अपराध है। म तब ही अमुक चीजका सग्रह कर सकता हूँ जब मुझे पात हो कि दूसरे भी जा अंशु पाजाका सग्रह करना चाहत ह अमा कर सकते ह। लेकिन हम जानते हैं—हमें म हरअेक यह अनुभवस कह सक्ता है कि असा होना अमभव है। अन्भव अक ही चीज अगी है जा मवक द्वारा सग्रह की जा सकता है और वह है अ-परिग्रह। दूसरे गलामें स्वच्छापूण रयाग।

तब आप मुझे कह सकते ह लेकिन जब आप स्वच्छा-व्यावृत्त गरीबी तथा आरिग्रहके आरमें बाल रहे हैं अगी समय हम दगल ह कि आप अपन गरीब पर बगुतगी चांजे कारण किये हुआ ह। और यदि आप जिन चांजक कारमें में अमा कह रहा हूँ अमके अककी अूपग तीर पर ही गमस ह ता आपका यह बगुतगी ठीक भी हागा। किन्तु आप अुमक अूपरी अककी नहीं आन्तरिक अकका गमसिये। जब मने आपके पाम गरीब है

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

तब तब आपका शरीरको कुछ-न-कुछ पहनाना भी पडगा लेकिन। तब आप अपन शरीरके लिये वह सब नहीं लग जा आपको मित्र सत्यता है लेकिन यथासभव कम लेग जितनसे आपका काम चला जाय अतना ही लग। आप अपन मकानकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिये अनर हवेलिया नहीं चाहेंगे बल्कि मामूली शोपडोस ही मताप कर लग। आपने भोजन आदिके सम्बन्धमें भी यही नियम लागू होगा।

अब आप देख सकते हैं कि आप और हम जिस चीजको सम्यता समझते हैं और जिस आनन्दपूर्ण तथा अभीष्ट अवस्थाका म आपने सामन चित्रण कर रहा है अतु दोनाके बीच सभप है—असा सभप जो रोज रोज चल रहा है। दूसरी ओर सम्यताका आधार आवश्यकताआकी वृद्धि समझा जाता है। यदि आपके पास अब कमरा है तो आप दा तीन कमराकी अच्छा करते हैं और जितन अधिक कमरे होने ह अतन ही खुग होते ह और जितनी तरह आप आपका मकानमें जितना आ सकता हो अतना ही जियादा साज-सामान रखनेकी अच्छा रखते ह। जिस तरह आप अपनी आवश्यकतायें बढ़ाते रहते ह और आपकी अिस अच्छाका कोअी अन्त नहीं होता। और जितना अधिक आप संग्रह करत ह माना जाता है कि आप जतनी ही अत्तम सस्कृतिका प्रतिनिधित्व करते ह। गायद म अिसे अतनी अच्छी तरहसे आपने सामन नहीं रख पा रहा है जितना कि अुसे अिम सम्यताक हिमायती रखेंग। परन्तु जसा म अिने सम्यता है अुसी ढगम आपने सामन वेग कर रहा है।

दूसरी तरफ आप पाते ह कि जितना कम आप रखते ह जितना कम चाहते ह अतन ही आप अधिक अठ बनते ह। अछ किसके लिये? अिम जीवनक मुखभोगके लिये नहीं लेकिन अपन सृजोवियाकी अस यक्तिगत सवाक मुखका स्वाद त्रेनके लिये जिसके लिये कि आप अपनी देह वद्धि और आत्माका अपण करते ह। यह शरीर भी आपका नहीं है। वह आपको अस्थायी परिग्रहक तौर पर दिया गया है। और जिसन दिया है वह अस आपसे उ भी सकता है।

अिसलिये अपनमें वह अडिग विश्वास रखकर मुझ हमेंगा असी अच्छा करना चाहिये कि औश्वरकी अच्छाके अनसार जिस शरीरका भी समपण हो और जब तक वह मेरे पास है अिसका अपयोग विलासमें न हो न अंग-आराममें हो अविन सेवाके लिये ही हा और हमेंगा—अपनी जागृतिव हर क्षणमें—सवाक लिये ही हो। और यदि यह नियम देहके लिये सही है तो फिर वस्त्रादि वस्तुआके सम्बन्धमें तो कितना ज्यादा सही है?



और जिन्हान अिस स्वेच्छा-स्वीकृत गरीबीक श्रतका सचमुच यथासभव सम्पूणताकी सीमा तक पाउन किया है (सम्पूणता तक पहुचना असभव है केविन मनुष्य जिस सीमा तक जा सकता है उस सीमा तक), जा जिस आत्मा दगा तक पहुच ह व गवाही दत ह कि जब आप अपन सश्रुत्का हरजेक चीजका त्याग कर देत ह तब दुनियाकी सारी धन-सम्पत्ति आपका हो जाती है। दूसरे गढ्यामें आपका व सब वस्तुअें अनायास मिल जाती ह जा आपक लिअें सचमुच जरूरी ह। यदि आपका भाजनकी आवश्यकता है, ता आपको भोजन मिल जाता है।

आपमें से कसी स्त्री-पुरुष प्राथना करनवाल् ह और मैंन बहुतसे अीसा जियाम मुना है कि अूनकी अन्न-वस्त्रका आवश्यकताआकी पूति प्राथनाक पम्बरूप होनी है। मरा अूनकी अिस बातमें विवास है। लेकिन म चाहता ह कि आप भर साथ अक वदम और आगे आयें और मरे माय विवान कर कि जो पृथ्वीकी हरजेक चीजका स्वेच्छापूवक त्याग दत ह — यहा तक कि अपने शरीरको भा अयान् जा हरअक चीजको छाडनेके लिअें तयार ह (और अुह अपनी अिस तयारीकी जाच बारीकीस और सन्नीस करना चाहिये व अपने विरुद्ध हमगा प्रतिकूल निणय देना चाहिय) — जा अिस श्रतका पूरा-पूरा पालन करग व सचमुच कभी भी किसी अभावका अनुभव नही करगें।

अभावका गाल्जिक अय नही लिया जाना चाहिये। पृथ्वीन पं मन अीवर जमा कठोर मालिक नही देता। वह आपकी पूरी पूरी परीशा लेता है। और जब आपको असा लगता है कि आपका थडा या आपका शरीर आपका माय नही द रहा है और आपका नया डूब रही है तब वह आपकी मन्वा किमा न किमी तरह पहुच जाता है और आपका विवास करा दता है कि आपको थडा नही छाडनी चाहिये और यह कि वह आपका सबन पात ही आनका तयार है, परन्तु आपकी गत पर नही अपनी हा गन पर। मन यही पाया है। मुझे अेक भी मौवा असा याद नही आता जब अत बदन पर अुसने मरा साथ छोड दिया ह।

म्पाचत्र अण्ड रार्जिटिग्ड आफ महात्मा गांधी शत्रुय सस्वरण, पृ० १०६६

## ‘आशीर्वादरूप गरीबी’

मेरे अक मित्र अच्छे पढे लिख ह और पस-टकेसे भी काफी सुखी ह। ससारी भोगाका भी अन्होन खासा अनुभव किया है। अिधर कुछ वर्षोंत अन्होन सभी प्रकारकी सवारियाका त्याग कर दिया है। वर्षामें जाडमें धूपमें तदुस्तीमें बीमारीमें आग्रहपूर्वक अन्हान सवारीके त्यागका प्रण निवाहा है। मुच जुनके अिस प्रण-पालनमें कअी जगह अति जान पडी है। पर जुनक आचरणका निणय करनवाग म कौन होगा हू? मुझ वे बराबर चिटठी-पत्री लिखते रहते ह। अुनका अेक पत्र मुझ हरिजन-यात्रामें मिला था। जुसे मन हरिजनबधु के पाठकाके त्रिअ रख छोडा था। अुस पत्रमें स जुन सजनके कुछ अनुभव म नीचे देता हू

या ता मने अनक व्रत ग्रहण किय पर यह पदत्र चलनका व्रत तो मझे बडा ही आनददायक लगा। अिसमें मुझ अनेक जनभव प्राप्त हुआ और होते जा रहे ह। जीश्वर पर मेरी श्रद्धा बहुत बड गयी है। अहमदाबादसे दो बरम पहे जे म भ्रमणके त्रिअे निकला था तबसे आज मेरी वह श्रद्धा शायद तिगुनी बड गयी है।

जिस पदत्र यात्रामें मन गरीबी भी देखी और अमीरी भी। अमीरीमें अधिकतर मन मगरूरी ही पायी और अनक जगह धन वानोका अमर्यादित या अछलत्र जीवन दिखायी दिया। अधिकाारियोंमें प्राय हुकमतका मद देखा। और गरीबीमें स्वभावत जीश्वर-परायणता सेवाभाव और सकट शेलनकी शक्ति देखनमें आयी। गरीबी प्रभुको प्यारी है अमीरी क्या बिचारी है? अिसका मुझ डग डग पर अनुभव मिला। जीश्वर मुझ हमगा गरीबी या फकीरीकी ही हालतमें रख गरीबीमें ही म सदा गजरान करता रहू। किसी भी चीजको जबमें रखनका मुझ मोह न हो। कत्रके त्रिअ रोटीका अक टकडा रख छोडू असी परिग्रह-वृत्तिसे भी जीश्वर मझे दूर रख। म तो अपन रामकी दी हुअी फकीरीमें ही हरदम मगन रहू।

और क्या देखा ससारी लोगामें पापी मनुष्याके प्रति तिरस्कार। अरे हममें से कौन अिस दोपसे मक्त हो सकता है? पापके प्रति घृणाभाव रखो पापीके प्रति नहीं यह महासूत्र भी मेरी समझमें आ गया।

अिन सज्जनने गजरातसे लेकर ठठ अत्तर तक — दहराइनसे भी आगे — पल यात्रा की है। मकाने गावसे य गुजरे और गाववागके सपकमें आये

ह। जिसलिख अूनका यात्रानुभव आदरणाय है। सभी देशों और सभी युगोंके पुरुषोंको पग-भयटन तथा अपरिग्रहके चमत्कारका असा ही अनुभव हुआ है। योरोपी पन्थाओंकी स्तुति पुस्तक वाल्डेन का बौन नहीं जानता? सत्कारके जिन महान मुधारकोंने समय समय पर धर्ममें सन्तोषन किये ह अन्होंने गायद ही सवारीका धुपयोग किया हा। अन्होंने तो हजारों काम पदल चलकर ही अपने धर्मचक्रका प्रवर्तन किया था। आज हवाओ जहाजमें बैठकर अेक जगहस दूसरी जगह अडनवाल मनुष्यासे जा नहीं हो सकता अुस कामका हमारे पूवजान निश्चय ही किया था। अुताबला सो बावला धीर सो गभार'—ठीक असी ही अथ कर्त्तावत\* अग्रजोंमें भी है। ये शैवाकित्या जिस तरह पूवकालमें सच्ची थी अुसी तरह आज भी ह।

हजिननेवक ५-१०-३४ प० ३२४-२५

८९

### धनिकोंका प्रश्न

[श्री महादेव दसाजक साप्ताहिक पत्र से।]

पीअर मेरेमान\* और जा विविन्सा\* को २३ जूनका यरोप जाना था, जिसलिख धर्मि बम्बई तक वे हमार साथ ही आय। वर्षामें मेरेसोन्न अथ असी पुस्तक पनि थी जिसमें कम्युनिस्ट लगवने अहिमा मिडान्तका आलोचना की थी। मेरेमानने कर्त्ता मय अिम आलाचनाकी परवाह नहीं। शैवकी कुछ श्नीकक साथ ता म भी सहमत हू। पर यह बात किमा तरह मरी समझमें नहीं आ रही है कि म साम्प्रदायी ला विन्तुड ही असत्य और मत्यक विवृत रूपका पेश करके अपनी म्बिनिक गमयनका प्रवर्तन आगिर जिसलिखे कर रह ह। मुझ यह बन्त हूँ दुस हाता है कि अिम पुस्तकमें निरा असत्य ही असत्य भरा हुआ है। गाधीके मिडान्तक पन्थारूप पूजीवादक साथ अेक बुरा तरहका गमगीला करना पड़ता है—यह बहुर गताय माननक बजाय यह आत्मी महता क्या है कि गाधी गरीब आगिके साथ प्रमभाव शिपानका ढाग रचना है और

\* Not mad rush but unperturbed calmness brings wisdom

१ आन्तर राष्ट्रीय गवामनाक सम्पादन अध्याय।

२ दीनकपु अण्डूडा कहनस ये भाभी बिहार भूकप-माहित लोकाकी गरापनाके लिख मेरेमानिक साथ आये थे।

धनिकाके प्रति जसवा जो सच्चा प्रेम है अतः वह जिस ढांगके ढकानस ढाङ रहता है और असि तरह पूजीवादको ढिकाय हुआ है। पूजीवाद और पूजी पतियाके साथ हमारु कथा सम्बन्ध है असि विषयकी गवायें ता भरे मनमें भी भरी हुआ है। मगर यह असत्य तो भरी समझमें आ ही नहीं सरता। रेगमें सेरेसालन अपनी असि विषयकी कुछ गकाआको गाधीजीक आग रूस साच विचार कर रखा।

धनिकाके लिअ अनुके रहन-सहनका कोअी नियम क्या हम निश्चित कर सकत ह? जर्थात क्या यह निश्चित किया जा सकता है कि धनिकाका अधिकार कितन धन पर हो और कितन पर नहीं?

गाधीजीन मुस्कराते हुआ कहा हा यह निश्चित किया जा सकता है। धनी मनुष्य अपन सचके लिअ अपनी सम्पत्तिका पाच प्रतिशत या दस प्रतिशत जयवा पद्रह प्रतिशत भाग ले सकता है।

पर ८५ प्रतिशत तो नहीं?

म तो २५ प्रतिशत तक जानका विचार कर रहा था। पर ८५ प्रतिशत तकका विचार तो एक टुरेका भी नहीं करना चाहिय।

पीअर सेरेसाङकी असल कठिनाअी यह थी कि धनिकाके गले यह बात जुसारनके लिअ हमें कब तक राह देखनी चाहिय।

गाधीजीन कहा यही साम्यवादियोके साथ भेरा मतभेद है। मेरी अतिम कसौटी अहिमा है। हमें यह हमगा याद रखना चाहिय कि एक दिन हम लोग भी धनिका जसी ही स्थितिमें थ। हमें अपनी सपत्तिका त्याग करना आसान नहीं माङूम हुआ था। हमन जिस तरह स्वय अपन प्रति धीरज रखा जुमी तरह हमें दूसराके प्रति भी रखना चाहिय। असके अति रिक्त मुय यह मान लेनका कोअी हक नहीं कि म सच्चा ह और वह धनी झठा है। जय तक म उसके गले अपनी बात नहीं अुतार सकता तब तक मुझ राह देखनी ही चाहिय। जिस बीचमें अगर वह कहे कि म २५ प्रतिशत अपन लिअ रखकर बाकीका ७५ प्रतिशत परोपकारके कामामें लगानका तयार ह तो म उसकी बात मान गुगा। क्याकि म जानता ह कि सगीनके भयमे लिअ हुआ १० प्रतिशत धनसे स्वेच्छापूवक लिया हुआ ७५ प्रतिशतका यह दान कही अच्छा है। अहिंसाका अचल ता हम दोनाको ही पङ्ड रसना चाहिय।

जिम पर गायद आप यह कह कि जो मनुष्य आज बगत्वारसे अपना धन सुपुद कर देता है वह क अपनी जिच्छासे असि स्थितिको कबूठ करेगा। यह सभावना मुझे बहुत दूरकी माङूम होनी है और जिम पर म अधिक निभर नहीं करता। जितनी बात पक्की है कि यदि

म आज हिंसाका अपमान करता हूँ तो कल निश्चय ही मुझे अधिक भारी हिंसाका सामना करना पड़ेगा। अहिंसाका अगर हम जीवनका नियम बना लें तो हमें सदेह नहीं कि जीवनमें हमें अनवरत समझौता करने पड़ेंगे। किन्तु अतन्त असन्ध कलहकी अपेक्षा यह स्थिति अधिक अच्छी है।'

'घनी मनुष्यकी याम्य स्थितिका वणन लेक शब्दमें आप किस प्रकार करण ?

"वह ट्रस्टी है। म उसे कितन ही मित्राका जानता हूँ जो गरीबके लिये पसा बमाते हूँ और सच करते हूँ और खुदको अपनी संपत्तिका स्वामी नहा किन्तु ट्रस्टी मानत हूँ।'

मरे भी कुछ अमार और गराव मित्र ह। म खुद अपने पास काशी संपत्ति नही रखता पर मरे घनी मित्र जा घन मुझे दन हूँ खुस म स्वाकार कर लता हूँ। अिस बातका म किस तरह बुचित मान सक्ता हूँ ?'

आप खुद अपन लिअ कुछ भी स्वामार न कर। सर-सपाटेकी गरजम सियटजरलड जानके लिअ आप काशी चक स्वीकार न करें, पर हरिजनाक लिअ कुअें स्कुल अथवा औपधात्य वनवानक लिअ आप लाम रुपये भी स्वीकार कर लें। स्वायकी भावना बुडा दनम यह प्रश्न सहज ही हल हा जाता है।

पर मेरा निजी सच कस चलगा ?

आपका अिस गिद्वान्तक अनुसार चलना होगा कि हरअक मजदूरको समकी मजदूरी मिशनी चाहिय। आपको अपनी बमन कम मजदूरी लनमें बोनी मकाब नहा हाना चाहिय। हम सब यही ता करते हूँ। भणसालीकी मजदूर केश गहूका आटा और नीमकी पत्तिया ह। हम सब भणमागी ता नहा हा मकन। लेकिन ये जमी जिलगी बसर कर रहे हूँ अुमक नजरीक पदुवनका प्रमत्न तो हम कर ही सक्ते हूँ। म अपनी आजाविका प्राप्त करन मताप मान लूगा पर म किमी घनी आन्मीम यह सिफारिश नही कर सकना कि वह मेरे लडकेको अपन यहा किमी अच्छी जगह पर रख लें। मुस तो अितनी ही चिन्ता रखनेकी जरूरत है कि जब तक म ममात्र गवा करता रहूँ, तक तक मेरा यह शरीर टिका रहे।

किन्तु जब तक म किमी वनवानसे अपने निराहका रख लता हूँ, तक तक निरन्तर अुसने यह कहन लना बसा मेरा वनध्य नहा है कि तुम्हारे स्थिति सिनीके लिअ भीषाकी चीज नही है और तुम्हारी आजीविका पर अिना सब होता है अुगद मिसा बाकीकी संपत्ति परम तुम्हें अपना सहाय्य हग लना चाहिये ?

हा अवश्य असा कहना आपका वतव्य है।

पर ये धनी मनुष्य भी सब अब समान धोड़ ही हाते ह ? उनमें से कुछ तो गरावके यापारसे मागमाल बन जात ह।

हा भेद आप अवश्य करे। आप खुद बलवारका पसा न तें पर आपन अगर किसी सेवाकायके लिअ धनकी अपील निकागी हा तो आप क्या करेग ? क्या आप लोगसे यह कहते फिरेग कि जिन्हान यायक पथ पर चक्कर पसा कमाया हो वे ही अिस फण्डमें पसा दें ? अिस गत पर अब पाभीकी भी आगा रखनके बजाय म अपीलको ही वापस लेना पसन्द करेगा। यह निणय करनवाला कौन है कि अमुक मनुष्य धमवान है और अमुक अधमी। और धम भी तो अब सापेक्ष वस्तु है। हम अपन ही दिलसे पूछें तो पता चलेगा कि हम आजीवन धम या यायका अनुसरण करके नहीं चले। गीतामें कहा है कि सबका अब ही लेखा है अिसलिअ दूसरके गुण दोष देखते फिरनके बजाय दुनियामें अल्पित बनकर रहो। अहभावका नाग ही सच्चा जीवन रहस्य है।

सेरेसोलन कहा ठीक अिसे म समझता हू। और थोडा देर वे गत रहे। फिर आह भरकर अन्होन कहा पर कभी कभी स्थिति अत्यन्त क्लेश कर मात्रूम होती है। बिहारमें म कुछ असे आदमियासे मिला हू जो दो जानसे भी कम और कभी कभी तो एक जानसे भी कमकी मजदूरीके लिअ सबरेसे गाम तक जी-तोड़ परिश्रम करते ह। अुन गोगोन मुझ अरुसर यह कहा है कि अमीर आदमी आज अयायका पसा जोड़ जोड़कर खूब मौज जडा रहे ह कदा ही अच्छा हो कि अनसे यह पसा छीन लिया जाय। म यह सुनकर अवाक हो जाता था और आपकी याद दिलाकर अुनका मुह बंद कर दिया करता था।

सेरेसोलकी सभी गकाआका समाधान तो नहीं हुआ। तमाम दिन काम करनके बाद गाधीजीको मारे धकानके नीद आ रही थी नहीं तो सेरेमालकी बातोका सिलसिला जारी ही रहता। पर अुन्होन अपनी मनोदगाका जिस वेदनाके साथ आग रखा और अिस प्रश्नकी चर्चा करत हुआ अनके चेहरे पर जो विपात्की रेखा दिखायी देती थी अुसे देखकर असा लगता था कि यह हो नहीं सकता कि अयामकी असी असी बातें सुनकर किमीके अतरको चोट न पहुचे। अुहे अितना तो प्रकट ही हो गया कि यह प्रश्न अतमें अहिंसाका बन जाता है और तब यह सवाग हमारे सामन आ जाता है कि अहिंसाके पाठनमें हम कहा तक आग बढनको तयार ह।

## धनी सरक्षक ह

जेव मिय लिखत ह

‘आपको यह जानकर खुशी हागी कि धनियाकी सरक्षकता (ट्रस्टीशिप) के बारेमें आपका जा विचार ह अुनकी कल्पना १३०० वष पूव भी की गया था। पवित्र ग्रथ ह्नीसमें अिस आणयका पद्य है—‘लोगाके पास जो कुछ धन-दौलत है वह मेरी सम्पत्ति है बपाकि गरीब मरे बच्चे ह और धनी अुनका पास जा धन-दौलत है अुसके सरक्षक। अिसअिजे जा धनी मेरे गरीब बच्चाकी आरम पच नही करण अुहें न दोजय (नरक) में भज दूगा जहा अुनकी नाभी मार-सम्हाल नही हागा।

यह पद्य गुजरातीमें है और अुसमें किमी अगवारस लिया हुआ जिमका नाम नहां दिया गया है वह सारा पद्य गुजराती लिपिमें अुसका गुजराती अनुवाकके माय लिया हुआ है। देवनागरी लिपिमें अुसका अविबल रूप अिस प्रकार है

अल मानु मानी बत फरराओ अयाली बल अग्नियाआ बरलाआ फमन बसलाव माली अला अयाली अुदराहृधार बला अुवाली।’

पाठकाको यह जानकर आश्चय हागा कि गुजराती पाठक पचीम प्रतिपात धम्माका आमातीसे समथ लेते ह यानी अुनका मापामें य प्रचलित ह।

हरिजनसंवाक ३०-९-३९ प० २६३

## ९१

## अच्छिक गरीबी बनाम धनवानोंकी सरक्षकता

प्र० — धममय अुपायासे लावा रुपय कम बमाय जा सकते ह? स्व० श्री जमनालालजी जो अुत्तम ध्यवमायी थ कहा करत थे कि धन बमानमें पाप तो हाता ही है। पकिव कितना ही सज्जन बया न हो वह अपने बमाये हूअ धनमें स अपना सची जरूरतस कुछ अधिक ता राक कर ही हाता है। यह भी पाप है। अिमअिअ टुम्गी बननेका बात छाडकर धनधान न धनन पर ही जार बया न दिया जाय?

अु० — प्रान अटा है। अिमग पढ़े भी यह मुणग पूछा जा घुरा है। जमनालालजीत जो यह कहा कि धन बमानमें पाप ता है ही वह ठीक बमा ही है जगा पीनामें कहा गया है कि आरम्भमान दापपूण है। मेरा यह अिनाम

## आर्थिक और औद्योगिक जीवन

है कि जान बूझकर पाप न करते हुए भी धन कमाया जा सकता है। बुदाहरणके लिये अगर मुझ अपनी एक एकड़ जमीनमें सानकी बोझी खान मिल जाय तो मैं धनवान बन जाऊंगा। पर धनवान न बनने पर तो मरा जोर है ही। मन जा धन कमाना छोड़ दिया उसका मतलब ही यह है कि धनी लोग अपन धनका अपयाग सवाके लिये करे। यह भी ठीक है कि धनवान भरसक कोशिश करने पर भी जक्सर अपन गरीब साधियाक मुसावर कुछ ज्यादा ही खच कर डालेगा। लेकिन यह बोझी नियम नहीं है। आम तौर पर स्व० जमनागलजी मध्यम श्रेणीके अनक लोगकी ओर अपन साधियाकी तुलनामें कम ही खच करते थ। मन असे सक्डा धनवानाको देखा है जो अपन लिये वड बजस होते ह। वे जसे तसे अपना गुजारा करत ह। पर भी नहीं कि अिसमें वे किसी तरहका गौरव अनुभव करते ह अपन ऊपर कम खच करनका अनका एक स्वभाव ही बन जाता है।

धनवानोके उडकोक बारेमें भी मुझ यही कहना है। मेरा आत्म ता यह है कि धनवान लोग अपनी सतानके लिये धनके रूपमें कुछ न छोडे। हा अनका जजी शिक्षा दें रोजगार धधके लिये तयार करे और स्वावम्बवा बना दें। परतु दुस्र तो यह है कि वे असा नहीं करते। उनक बालक पढने ह गरीबीकी महिमा भी गाते ह लेकिन अपन लिये वे अधिकसे अधिक धन चाहते ह। असी हान्तमें मैं अपनी यावहारिक बढिका अपुपयोग करके अहे वही सलाह देता हू जो उनके बसकी होती है। हम लोगोका जो गरीबीको पसंद करते हँ असे अपना धम मानते ह और अधिक समानताके हामी ह धनवानासे द्रप न करना चाहिय। यदि वे अपन धनका सदुपयोग करते ह तो अससे हमें सतोप होना चाहिय। साथ ही हमें यह उडा रखनी चाहिय कि अगर हम अपनी गरीबीमें सुखी और आनन्तित रहग तो धनवान लोग भी हमारी नक करेग। सच तो यह है कि गरीबीमें धनका दान करनवाले और मिऊन पर भी धनका त्याग करनवाले लोग दुनियामें अिनगिन ही पाय जाते ह। अिसलिये हमें अपन जीवनके द्वारा यह सिद्ध कर दिताना होगा कि असलमें धमके रूपमें स्वीकार की गयी गरीबी ही सच्ची सम्पत्ति है।



## गरीबोंके सरक्षक और सेवक बनें

[७ भाग १९३१ का दिल्लीमें भारतीय व्यापारी-संघक सम्पन्न दिवस गणनीयके भाषणम्।]

आपके अध्यक्ष महोदयन काग्रमकी बहुत तारीफ की है और माय ही अन्धान यह भी गुनाया है कि आर्थिक मामलामें बाजा भा निणय करनेसे पत्र काग्रमका व्यापार विपत्तिका अभिप्राय ले लेना चाहिये। मैं जिन गुनायका स्वागत करता हूँ। काग्रम हमका आपकी सहायता और सहायता पानेका उत्सुक रहेगा। किन्तु मैं आपसे कहना चाहिये कि काग्रम किसी अर्थक प्राप्त बगकी सत्वा नहीं है। वह तो सभा बगीचा है। मगर चूँकि हिन्दुस्तानकी आर्थिक व्यापार व्यापार किसानकी है अतिसिद्ध वह किसानकी प्रतिनिधि बनना चाहती है। काग्रमको दरअसल हिन्दुस्तानका गरीबाना ही प्रतिनिधित्व करना चाहिये। लेकिन अिसका यह अर्थ नहीं कि और सब बगीचे — मध्यम बग व्यापारी बग या जमानारा — का नाम करके गरीबाना हित साधना है। अिसका अर्थ मात्र जितना ही है कि दूसरे सब बगीचोंका गरीबाना हितके अनुकूल होकर रहना है। काग्रम हिन्दुस्तानमें व्यापार प्रयोगका अप्रति चाहती है। अिसके लिये वह बहुत प्रयत्नशील है। धीरे धीरे व्यापार बग काग्रमकी धार आहूत होना चला आ रहा है। पिछले वर्ष व्यापारिकान जलानामें जो सत्ता है वह स्तुत्य है। मुझ भी आपन निमन्त्रण दवर जा आज यह बुलाया है वह मेरे नामके कारण नहीं बल्कि अिसलिये कि मैं काग्रमका नाम सयक हूँ और दखिन्नारायणकी प्रतिनिधि हूँ। व्यापार बगकी धारस का गरीबी सवाभाना मैं भूत नहीं गवता। किन्तु मैं चाहता हूँ कि आप एक सम्म और आग बढें। आप काग्रमको अपनाअिय जुम अपनी बना लिये ता हम सुगी गुना आपका हाथामें अुगकी नाम सोप दिये। यह काम आपके हाथामें जग अन्धी तरह होगा। लेकिन काग्रमकी जगाम आप जगन हाथमें अिया जग पर ले गकें कि आप अपनेका गरीबाने सरक्षक और गवरा सममें मा पडिन मात्रीयजग जगामें वह ता आगना। गद पौडा पाकर गवारा मानना चाहिये। आप कहेंगे कि यह अयम्भर है। लेकिन अमा बात नहीं। गुड नीतिा व्यापार करनेवाल अनेक मित्राका मैं जानता हूँ। अब यह गुनी बात है कि आप चाहें ता आगानीमे काग्रमका बागधार अगन हाथमें ले गवन ह। आप जानन ह कि काग्रमके विधानके जग जोभी लानाहा विधान

नहीं है। वह पिछले दस वर्षों से बिना बिग्री रुकावटों काम करता रहा है। वह वस्तुतः वाणिज्य मताधिकारके आधार पर ही रचा गया है।

यंग इंडिया १६-४-३१ पृ० ७८ ७९

## ९३

### अपनी दौलतका त्याग करके तू असे भोग

[खड़ा जिन्हेके एक गावमें द्विती अक सासत्र डकतीन सिलसिलेमें गांधीजी द्वारा लिखित एक दुखद घटना शीपक लेखसे।]

धनवानाको अपना धन साच लेना है। अगर अपनी जायतदकी रक्षाके लिए अन्हान सिपाही बगरा रख तो मुमकिन है कि लूट-मारके हंगाममें य रक्षक ही अुनके भयक बन जायेंगे। असलिये धनवानाको या ता हथियार चकाना सीख लेना चाहिये या अहिंसाकी दीक्षा ले लेनी चाहिये। अस दीक्षाको लेन और देनेका सबसे जुत्तम मत्र है तेन त्यक्तेन भुजिया — अपनी संपत्तिका त्याग करके तू असे भोग। असको जरा विस्तारसे समझाकर कहू तो यह कहूगा तू करोडा खीस कमा। लकिन समझ ले कि तेरा धन सिफ तेरा नहीं सारी दुनियाका है असलिये जितनी तेरी सच्ची जरूरतें हा जतनी पूरी करनके बाद जो बचे अमका अपुयोग तू समाजके लिए कर। शान्तिकी साधारण अवस्थामें तो अस नसीहत पर अमर नहीं हुआ। लकिन सक्दके अस समयमें भी अगर धनिकान असे नहीं अपनाया तो दुनियामें वे अपन धन और भोगके गुनाम बनकर ही रह सकेंगे और अन्तमें गरीर-बन्धुवालोकी गुनामीमें वध जायेंगे।

म जस दिनको आता दख रहा ह जब धनकी सत्ताका अन्त होनवाला है और गरीबाका सिक्का चलनवाला है फिर चाहे वह गरीर-बन्धुसे चले या आत्मबन्धुसे। गरीर-बन्धुसे प्राप्त की हुअी सत्ता मानव-देहकी तरह क्षणभगर होगी जब कि आत्मबन्धुसे प्राप्त की हुअी सत्ता आत्माकी तरह अजर-अमर रहेगी।

हरिजनसेवक १-२-४२ प० २

[गांधीजीके अपरोक्त नोटके सिलसिलेमें श्री गकरराव देवन जो प्रान पूछा या असका जवाब देते हुअ गांधीजी द्वारा हरिजनसेवक क १ मार्च १९४२ के अकमें प० ६३ पर लिखित अगद ही नहीं शीपक लेख।]

श्री शंकरराव त्वे लिये है

'पिछले हरिजनमवक' के जेक दुसरा घटना गापक अपन लखमें आप धनवानाम बहने ह कि व करोडा खुशीम कमायें लेकिन यह समझ ल कि अतका वह धन सिफ अन्हाका नहीं सारा दुनियाका है, असलिये अपनी मज्जी जरूरताको पूरा करनक बाद जितना धन बच अतका अपुयाग अह समाजक लिअ करना चाहिये। जब मन अिस पना तो पढ़ना सवा मनमें यह सुडा कि असा क्या हाना चाहिये? पहले करोडा कमाना और फिर समाजक खितक लिअ अन्हें रच करना? आजकी अिस समाज रचनामें कराडा कमानेके माधन अगुद ही हा मकत ह, और जा आत्मी अगुद माधनसि कराडा कमाता है अुममें तेन त्यक्तेन मुझाया मत्रक अनसार चलनकी आगा नहा रखी जा मकती, क्याकि अगुद माधना द्वारा कराडा कमानका क्रियामें कमानवायना चरित्र दूषित वा भ्रष्ट हुअ बिना रह ही नहा मकता। अिसन सिवा आप ता हमगाम गुद भावना पर जार देने रह ह। मुझे दर है कि अिन मामलमें कहा लोग मन्तास यह न समझ ल कि आप साधनाकी अपक्षा साध्य पर ज्याग जार दे रह ह।

अतअव मरा निबान है कि आप कमाओके माधनाकी मदता पर भी अधिअ नहीं ता अुतता जार अवय दाजिये जितना कमाय हुअ धतका आवश्यक कामामें खच करन पर दत ह। मरे विचारमें यकि माधनाकी शुद्धिका दुइताम पान्न किया जाय ता कोआ आत्मी कराडा कभी कमा ही नहीं सवेगा और अुस दगामें समाजक खितके लिअ अुमे मच करनकी कठिनाओ बहुत गौण रूप में गी।

म अिसय महमत नहा ह। म निश्चिन रूपम यह मानता ह कि आत्मा बिल्कुल शुद माधनामि कराडा रुपम कमा सकता है। अिममें यह मान लिया गया है कि अुते कानूनन सम्पत्ति रखनका अधिवार है। दनीक तौर पर मन यह माना है कि निजी सपत्ति अपन आपमें अगुद नहीं ममओ मरी है। अगर मर पाग बिगी अर मानका पटा है और मृत अुममें मे अचानक काओ अनमोद हीरा मिल जाना है ता म असाअक कराडपति बन गाता ह और काओ मृत पर अगुद साधनाका अपुयाग करनेका दाप नहीं लगा मकता। ठीन पहा कान अग ममय हुआ पी जब काखिनूरम कहा अरि मूपकान कपूतानन नामक हीरा मिल था। अग और कथा अुनाहण आमानाम गिनाये जा सकत ह। नि मन्ह कराडा कमानका यान मन अम ही मागारे लिअ कहा पी।

म अिस रायके साथ नि सकोच अपनी सम्मति जाहिर करता हू कि आम तौर पर धनवान—केवल धनवान ही क्या बल्कि "यागतर गेग"—अिस बातका विगप विचार नही करते कि वे पसा किस तरह बमोने ह। अहिमक अुपायका प्रयोग करत हुअ हमें यह विवास तो हाना ही चाहिय कि कोभी आदमी कितना ही पतित क्या न हो यदि असका अिगज कुालतास और सहानुभूतिके साथ किया जाय तो असे सुधारा जा सकता है। हमें मनध्यामें रहनवाले दबी अगको जगानका प्रयत्न करना चाहिय। और जागा रखनी चाहिय कि असका अनुकल परिणाम निरुगा। यदि समाजका हरअक सदस्य अपनी गकितयाका अपयोग ब्यक्तित्व स्वाथ-साधनक लिजे नही बल्कि सबक कल्याणके लिअ करे तो क्या अिमसे समाजकी सुख-समृद्धिमें वद्धि नही हागी? हम असी जड समानताका निर्माण नही करना चाहते जिसमें कोभी आभी अपनी योग्यताअारा पूरा पूरा अुपयाग कर ही न सके। असा समाज अन्तमें नष्ट हुअ बिना नहा रह सकता। अिसलिअ मेरी यह सलाह विअकुल ठीक है कि धनवान गेग चाहे करोडा रुपय बमायें (बगक केवउ जीमान्तारीस) केबिन जुनका इत्य वह सारा पसा सबके कल्याणमें समर्पित कर देनका होना चाहिय। तेन त्यक्तेन भुजीथा मत्रमें असाधारण गान भरा पडा है। मौजूदा जीवन-पद्धतिकी गगह जिसमें हरअक आदमी पढोसीकी परवाह किय बिना केवल अपन ही किये जीता है सबका कल्याण करनवागी नयी जीवन-पद्धतिका विकास करना हो तो अुसका सबसे निश्चित माग यही है।

## ‘कलकी चिन्ता न करें’

[ मावजनिव खच’ शायक खम नीचका भाग निया गया है। ]

जब हम असा निश्चिन्तता हासित कर लगे कि खानेका मिल जाये ता ठीक न मिले तो हरि बिच्छा तब हम अनेक झगडासे मुक्ति पा जायेंगे और स्वतंत्रता हमारे आगममें आकर नाचने लागी। बाबू यह न माने कि निश्चिन्त रागाका अन्तमें भूखवा ही निगार होना पडता है। कीडीका कत और हाथीको मन भर देनेवाला भगवान मनुष्यक लिअ भी खुसकी राजकी कराव बुटा हा दता है। सत्यिक जीव कलकी चिन्ता न करके दूसर निन्की प्रतीभा भर करत ह। पर मनुष्यने घमडमें आकर यह मान लिया कि म ही सृष्टिक निर्माण और नागका स्वामी ह। असका यह घमड बीदवर राज अनुतरता है मगर मनुष्य खुस छाडना नहीं चाहता। सत्याग्रह यह घमड दर करनेके लिजे ही आयाजित वस्तु है।

मग अदिमा २१-५-३१, पृ० ११८

## अपरिग्रहकी ओर

क्या जरूरत है कि हम मज लाग जायता रहें? हम खुम कुछ अमें तक रगतक बाग छाड क्या न दें? घमाथमका जिहें खयाल नहीं अम बराबारा बडीमायाम मरे मततगके लिअ असा करत ह ता फिर हम अक यह ओर नातिपुक्त मतलबका हागिल करतक लिअ असा क्या कर? हिंदु अदि लिजे अक लाग अुध ह। ताम पर म मामूनी बात था। प्रत्यक सिद्धस यह आगा रगी जाती थी कि अेक अमें तर गृहम्याथममें रहतक बाग यह वसा ही जीवन अश्लियार करे जिममें जायता पास नहीं रगा जात। यह पुरानी असा रूढ़ि हम फिरने ताजी क्या न कर? आगित अिमका अफ मही होना है कि हम अपन निर्वाहक लिअ अनवा दया पर निभर रहत ह जिहें हमने अपनी जायता मौप टी है। यह विचार मरे लिअ। बडा आकषक मातम होना है। अम विनायने लाग अुगहलागमें अक भी दुष्टान अगा नहीं मिग्गा जितमें विवायका दुरवयाग हुआ हो।

अवश्य जिसमें से कितना हा नतिक सवाल पता होना है। अब पिता-पुत्रता दृष्टांत लीजिये। यदि पुत्र पिताके जमा ही असम्पत्तियों है तो फिर पिता अपनी आयदाकी मालिकीके हक्का बादा भुस पर लाकर उसे क्या लाना चाय ? उसे सवाल नो हमेंगा ही पदा हागे। मनुष्यकी नतिक कीमत कितनी है जिसकी जाय सत्ताचारके अमे गू प्रश्न बारीकीस तोरनकी जुसकी शक्ति कितनी है जिस पर निर्भर है। बर्जोमान गम्साका जिसका दुरुपयोग करनवा मौका न देकर यह रूडि किस तरह व्यवहारमें गभी जा सकती है जिसका नियम तो अब बड असेके अनुभवके बाट ही हो सकता है। फिर भी जिस जगत्में कि असका दुरुपयोग होगा किमीको जिसका प्रयोग करनके प्रयत्नमें रकना न चाहिये। गीताके दिव्य रचयिता जिस गीता का मन्ना देनेमें न रुके यद्यपि व गायद जानत थ कि सब प्रकारकी बुराअिया यहा तक कि खूनका भी पायसगत ठहरानके लिअ अमको खूब तोडा-भगाडा जायगा।

जिन्ही नवजीवन ६-७-२४ पृ० ३८२

## ९६

### पूजीपतियोंका कर्तव्य

श्री धनदामदास बिडलान अस दिन महाराष्ट्र व्यापारी सम्मेलन (गोलापुर) का अध्यक्षता करते हुए अब भाषण दिया जिसमें उन्होंने अपन विचार धाताअके सापन बहुत नि सकोच भावसे प्रगट किये।

पूजीपतियोंके कर्तव्य पर बोल्ने हुए उन्होंने अब जमा आन्ध पण किया जिसमें कोअी सुधार या सगोधन करना अब श्रमिकके लिअ भी कठिन होगा। व्यापार-वर्गके बीच अकताकी बवालन करते हुए उन्होंने कहा

लेकिन मुझे स्पष्ट करने लीजिये कि मैं व्यापारियके लिअ जिस अकताकी सूचना कर रहा हूँ अम अकताका अदृश्य सेवा होना चाहिये शोषण नहीं। जाधुनिक पूजीपतियोंकी अिधर कुछ समयमें काफी निम्न की जानी रही है। लोगकी अमी धारणा ही गयी है कि अमका अब पूयक वग है। लेकिन प्राचीन कालमें परिस्थिति विरकुठ भिन्न थी। अगर हम प्राचीन काठके वशदे कायोंका विरलेपण कर तो हम पायेंगे कि अहें यक्तिगत लाभके बजाय सामाजिक भलाअीय लिअ अुत्पादन और वितरणका कर्तव्य सीपा गया था। अपनी सारी सम्पत्ति वह राष्ट्रक हिनके लिअ अब सरलकके रूपमें रखता था।

पूजीपति यदि अपना वास्तविक काम पूरा करना चाहत है तो खुद गांधीजी के रूपमें न रहकर समाजके सबका रूपमें रहना चाहिये। अगर हम अपना कर्तव्य समझें और उसका पालन कर तो साम्यवाद या बाल्याविषम नहीं पतन सकता। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि अपने कर्तव्यका अुपसा करके हम खुद ही साम्यवाद और बाल्याविषमको बढ़ाने लिये अपना जमीन प्रदान करते हैं। अगर हम अपने कर्तव्यको समझें और अुनका श्रद्धापूर्वक पालन कर तो मुझ पूरा भरोसा है कि हम समाजको कभी बुराजियासि बचा सकते हैं। मैं बता चुका हूँ कि हमारा सच्चा काम उत्पादन और वितरण करना है। आशिये हम समाजकी सबके लिये अुत्पादन और वितरण कर। हम जीयें और यदि सबके हितके लिये हमें अपना बलिदान भी करना पड़े तो हमके लिये तयार रह।

पग जिडिया १९-१२-२९ प० ४१३

९७

## विशेष प्रतिनिधित्व

[अन्तर्गत दूसरी गालमज परिषदका फडरल स्ट्रक्चर कमटीमें लिये हुए गांधीजी के विनम्र विवादन नामस छपे दूसरे भाषणस।]

अब मैं अुपधारा पाव—विशेष वर्गोंके विशेष मतदार मंडलके प्रतिनिधित्व पर आता हूँ। बाल्यि मताधिकारमें मजदूरों और अुनके जस वर्गोंके गान प्रतिनिधित्वका कात्री जहरा नहीं है अिमका कारण मैं आपको समझाऊँगा। कायमकी या मूब गरीबोंकी यह अिच्छा बिल्कुल नहा है कि जमानागमें अुनकी मिलियत छीन ला जाय। व तो कबल यह चाहत है कि जमाना मजदूरोंके सरनक बन जाय। मरे तयालम जमानागका अिम बाल्या गोरव महसूस करना चाहिये कि अुनकी रयत, ये लावा ग्रामवासी, बाह्यम आनका गणा या अपनेमें मैं किसीक बजाय जमानागको ही अपने प्रतिनिधि चुनना पग करती है।

अिप्रतिनिधि जमानाग अपनी रयतका साथ दें अिमय भला और मुन्दर क्या हा मकता है? केनि अगर जमानाग यह आप्रह रखा कि दो समझें हा तो हमें मैं अेकमें अदवा अब मना हा तो अुममें अुनक सास प्रतिनिधि लिये जायें, ता व सबमुब हागडका बीज बापेंगे। और मैं आगा

करता है कि जमींदारों या जैसे किसी बगवानी तरफ से असी मांग नहीं की जायगी।

यंग इंडिया ८-१०-३१ पृ० २९६ २९८

९८

## वैध परिग्रह

अपरिग्रह अस्तेयके साथ जुड़ा हुआ है। कोश चीज मूर्तमें चरात्री हुआ न हो तो भी असे चोरीका माल ही कहा जायगा यदि हम जुम बिना जरूरतके अपन पास रखते ह। परिग्रहका अर्थ है भविष्यके त्रिअ व्यवस्था करना। कोश सत्य गोपक प्रमथका पथिक कलके लिअ कोश वस्तु नहीं रख सकता। अंतर कलके लिअ कुछ भी जमा नहीं रखता। वह वतमानके लिअ जितना आवश्यक हो अतना ही पदा करता है असे अधिक कभी पदा नहीं करता। अिसलिअ यदि हमें अुसकी गक्ति और व्यवस्थामें विश्वास है, तो हमें अिस बारेमें निश्चित रहना चाहिय कि वह हमें अपनी नित्यकी रोटी दे देगा अर्थात् वह हमारी हर जरूरत पूरी कर देगा। सन्ता और भक्तोन जिनका जीवन अिस प्रकार श्रद्धामय रहा है अपन अनुभवस अिस श्रद्धाके सही पाया है। जीश्वरीय कानून मनुष्यके अुसकी दनिक आजीविका देता है, असे अधिक नहीं देता। अिस कानूनके हमारे अज्ञान या जवहेलनाके कारण असमानताओं पदा ही गयी ह और अुनसे तरह तरहकी मुसीबतें हमें अुठानी पडती ह। अमीरोंके पास अनावश्यक चीजोंके भंडार भरे रहते ह जिनकी अुहे जरूरत नहीं होनी और अिसलिअ जिनकी अवहेलना और वरवादी होनी है। अुधर करोडों गोग जीविकाके अभावमें भूखी मरते ह। यदि हरअक अतनी ही चीजें अपने पास रख जितनीकी असे जरूरत हो तो किसीको भी तंगी न रहे और सब सतोपसे रह। जाज तो अमीरोंको गरीबोंसे कम असन्तोष नहीं है। गरीब आदमी अुसपति बनना चाहता है और अुसपति करोडपति बनना चाहता है। सन्तोषकी वक्तिके सबत्र फजानकी गरजसे धन वानाको अपरिग्रहकी दिगामें पहर करनी चाहिय। यदि वे अपनी सपतिको ही साधारण मर्यादाके भीतर रखें ता भी भखाको आसानीसे खाना दिया जा सकता है और वे भी अमीरोंके साथ साथ सन्तोषका पाठ सीख लें। अपरिग्रहके आदाकी सम्पूर्ण सिद्धिकी गत यह है कि पक्षियाकी तरह मनुष्यके पास कोश आमरा न हो कोश वस्त्र न हो और कठके अिअ भोजन सामग्री न हो। वेअक असे अपनी रोजकी रोजकी जरूरत होगी मगर असे



जुगना ओदवरका काम हागा असका नहा। अस आदश तक बिरले ही लाग पडुच सकत ह। थूपरस अमभव दिवात्री देनवाल जिस आदशसे हम साधारण जिनामुआको दूर नही भागना चाहिय। हमें अस आदशा सदा दृष्टिमें रखना चाहिय और असक प्रकाशमें अपन परिग्रहकी जाच करते रहना चाहिय तथा अस कम करनेका प्रयत्न करना चाहिये। सच्चा सम्यता आवश्यकताआका वृद्धिमें नही है, परन्तु जान-बूझकर और स्वच्छापूवक अनुक घटानमें है। असोस सच्चे सुख और सन्तापकी वृद्धि तथा संवागिकाकी वृद्धि हाती है। अस कसोती पर कसकर देखनसे हमें माहूम हाता है कि हम आश्रमवासिआके पास अमी बहुतसी चीजें ह जिनकी जरूरत हम माबित नही कर सकत और अस प्रकार हम अपन पडोसिमोको चोरी करनेका प्रोभाभन दत ह।

गुड सत्यकी दृष्टिसे गरीर भी अब परिग्रह ही है। यह सच कहा है कि भोगकी अिच्छाक कारण आत्माके लिअ गरीरकी सृष्टि हाती है। जब यह अिच्छा मिट जाती है तब फिर गरीरकी आवश्यकता नहा रह जाती और मनुष्य जम मरणक कुचक्रमे मुक्त हो जाता है। आत्मा सब-व्यापक है असे पिजड जस गरीरमें बन्द रहन या अस पिजडक खातिर बुगओ करने या किसीके प्राण लेनकी भी चिन्ता क्या करनी चाहिय ? अस प्रकार हम मपूर्ण त्यागके आदश तक पडुच जाते ह और जब तक गरीर रहता है तब तक सेवाके काममें अुमवा अुपयोग करना सीखते ह यहा तक कि सेवा न कि रोगी हमारे जीवनका आधार बन जाती है। हम केवल सेवाके लिअ गान पीन साने और जागत ह। असा मनावृत्तिस समय पाकर हमें सच्चा सुख और आनन्दप्रापक दृष्टि प्राप्त हाती है। हम सबका अस दृष्टि शोणम आत्म निरीक्षण करना चाहिय।

हमें याद रखना चाहिये कि अपरिग्रहवा मिडाल्न बन्तुआका मानि विचार पर भी लागू होता है। जा मनुष्य अपन मस्तिष्कको व्यय गानम भर एता है वह अुम अमूय मिडाल्नका भग करता है। जो विचार हमें आन्दरस विमुग करते ह या असकी आर नही ए जात व हमारे मागमें बाधक हान ह। अस सम्बन्धमें हम गीताक १३ व अध्यायमें दी हुआ गानकी व्याख्याना विचार कर मनन ह। यहा हमें यह बतयाया गया है कि अमानित्त (नम्रता) आदि गान है अय सब कुछ अज्ञान है। यदि य सब सच है—और अिगब सब हानमें बाधा रका नहा है—ता आज हम गान समझकर जिस गल एगात ह वह सब निरा अज्ञान है और अस लिअ अुगम कोभी एगन हानक बजाय बका हानि ही हाता है। अिना अिमाग भटकना है और अन्तमें गानी हो जाता है। अगन्तव पन्ना है

और जनध बढ़ते ह। कहना न होगा कि यह जडताकी बरालत नही है। हमारे जीवनरा अक अक क्षण मानसिक या गारीरिक प्रवृत्तिते भरा हाता चाहिय। परतु वह प्रवृत्ति सात्त्विक सयोरुत होनी चाहिय। जिसन अपना जीवन सवाके लिअ अपण कर दिया है वह अक क्षण भी बकार नही रह सकता। परतु हमें सत्प्रवृत्ति और दुप्रवृत्तिमें भ्रम करना सीखना हागा। सवापरामण मनुष्यको यह विवेक सहज ही प्राप्त हाता है।

फाम यरवडा मदिर प्रक० ६

### वध परिग्रहका वचाव

प्र० — जब तक धन-दौलत है हर हातमें असकी हिफाजत भी होनी चाहिय। फिर क्या वजह है कि आप जिस चीजको समझ नही पाते ? प्रत्यक स्थितिमें हिंसासे बचे रहना आपका आयह बिन्दु अयावहारिक और असगत है। मेरे विचारमें अहिंसा कुछ चन हुआ गगाके ही कामकी चीज हो सकती है।

अ — जिस सवाका जवाब भिन पथामें और यग अडिया में भी कभी बार किसी न किसी रूपमें दिया जा चुका है। केकिन यह अक सनातन सवाल है। जिसलिअ मेरा काम है कि जितनी बार यह पूछा जाय म असका जवाब द। और जब प्रश्नकतकि समान सच्चे जिज्ञासु पूछने ह तब तो जवाब देना ही चाहिय। मेरा दावा यह है कि आज भी जब हमारे समाजकी रचनाका आधार साव-समयकर अपनायी हुनी अहिंसा नही है सारे ससारमें मनुष्य-जाति अक-दूसरेकी भलमनसाहत पर ही जी रही है और अपनी दौलतको वचाय हुआ है। अगर जसा न होना तो दुनियामें बहत ही धाड जोर बहुत ही क्रूर जादमी बचे हाते। केकिन हकीकत यह नही है। परिवारमें लग परस्पर स्नहके बधनमें बध रहते ह। और परिवाराकी तरह ही सभ्य मान जानवाले मानव-समाजमें राष्ट्राने अलग अलग दल भी परस्परके अिन बधनासे बध हुआ ह। फक अितना ही है कि वे जीवनमें अहिंसाने नियमको सर्वोपरि नही मानते। जिसका मतत्रव यह हुआ कि अभी बुन्धान असकी असीम शक्तियाकी धाह नहा लगायी है। म यह कहूगा कि अब तक सिफ अपनी जडताके कारण ही हम यह मानते रहे ह कि अहिंसाका सपूर्ण पान्न अपरिग्रह आनि समय-सूचक ब्रताको धारण करनेवाले कुछ अनिगिन लोग ही कर सकते ह। बात यह है कि अगर हमें अहिंसाके

क्षेत्रमें नित-नती गोध करना हा जीर मानव जाति पर शासन करनेवाला  
 अिम मनातन और महान नियमका नया नयी शक्तिपाना समय समय पर  
 समारका परिचय कराना हा, ता अिमक लिज यम नियमारा पात्रन आवश्यक  
 है। अगर समारका यहा मन्थ्रेण नियम है ता यह सबक लिजे कबाण  
 काय हाता चाहिये। जा अनक अमफलाअें इमार लवनमें आता ह  
 व अिम नियमका नहा अिमका पात्रन करनेवालाकी ह। क्याकि जनमें भ  
 कजियाओ यह पता तक नहा रहता कि व जान-अनजान अिम नियमक अधान  
 बरत रहे ह। जब मा अपन बच्चक लिज रद करनेको तयार हा जाती  
 है, ता वह अनजान ही अिम नियमका पात्रन करता है। म पिछल पचाम  
 बरमम गाराता यह समयाता रहा हू कि व अिम नियमकी ममज-बुझकर  
 अपनायें जीर अमफला हान पर भी अिमक पात्रनमें लतचित्त बने रह।  
 पचाम वयक अिम प्रयोगरा परिणाम आचयजनक हुआ है और अहिमामें  
 भरी श्रद्धा अुतरात्तर वन्ती आ है। म दाकक साय कहता हू कि ग्यातार  
 प्रयन करने रहनग अक समय वह आयागा जब गग सबक बीमानकारीम  
 कमाये हुये धनरा स्वल्पम आर करग जीर अुमवी रधामें महायन हाग।  
 अिममें गक नग कि यह धन पापका धन न हागा और अिममें अममानताजारा  
 वह अुद्धन प्रगत भी न हागा अिममें आज हम पिरे हुआ ह। अहिमाक  
 कापारीना अयाय जीर अनातिम कमाय जानवाक धनम आनक्ति न हाता  
 चाहिये, क्याकि अुगक पाग हिमारा मफला प्रतिकार करनेक लिज मत्पाग्रह  
 और अमहयागता अहिमक गम्भ मीजू है। जहा कहा अिम गस्त्ररा मचाजक  
 साय पयान्त अुपयाग किया गया है वहा अिमक गस्त्राता वाली आवश्यकता  
 हा नगी र मत्रा है। अहिमाक मपूण गाम्भका जनताक मामन रयना  
 दावा ता मन कभा नहा किया। अमक लिज जमा गवा कभी किया भा  
 नहा जा सकता। जग तर म जातता हू किगा भी नीति गाम्भर लिज  
 यग तर कि गति जम निचित गाम्भक लिज भा अिम करनेका गवा  
 नही किया जा सकता। म ता अर गद गधक मत्र हू और प्रनरनाकी  
 तरह मयका अिम गधमें मरा अनकरण करनेवाक मर कुछ माया भा ह।  
 अपने अिम गाधियाका म आमरण ला हू कि मत्पकी अिम अयन कनि  
 विन्नु अविगय मपूण गधमें व मरा माय है।

## अयायपूर्वक कमाये हुआ धनका त्याग

[ श्री महात्त्व दत्तात्रेय साप्ताहिक पत्र श। ]

ग्रामभवक नियोग्ये विद्याभियोगी जोरम अत्र प्रश्न यत् पूजा गया या  
 आगावे अयायपूर्वक कमाय हुआ धनका कम छोटा जाय ? समाजवाणी  
 यही करता चान्त ह।

साप्ताहिक ज्ञान त्या अत्र यातका निणय कौन करेगा कि यह  
 अयायपूर्वक कमाया हुआ है और यह अयायपूर्वक ? जिसका निणय ता केवल  
 अंत्यामी जीवर ही कर सकता है या फिर धनिका और निरनाके द्वारा  
 नियत किय गय याग्य रिगपन जिसका निणय कर सकते ह। पर अगर  
 तुम यह कान्त हो कि सभी तरहकी मिलियन जोर धन गीतका रचना  
 चोरी है ता फिर सभीका अपनी अपनी मपतिका त्याग कर रना चाहिय।  
 क्या हमन यत् त्याग किया है ? यह जागा रखकर कि दूसरे हमारा अनुसरण  
 करग हम सब मपति परिव्यागरा आरम्भ कर दें। उन योग्य कि  
 जिनका यह विनास है कि अनुकी सत्की सपति अयाय-अजित है जिसके  
 सिवा रमरा कानी माग ही नहा।

हरिजन १-८-३६ प १९३ १०५

## १०१

### अगर धनवान सरक्षक न बनें तो

प्र — आप कान्ते ह कि राजा जमीनार या पूजापति सरक्षक (ट्रस्टी)  
 बनकर रह। आपक सवाग्ने क्या अस राजा जमीनार या पूजापति  
 अभी भोज्य ह ? या वतमान राजा वगरामें से विहीके अत्र प्रकार बदल  
 जानकी जुम्मीन है ?

अ — मेरे सवाग्ने अस कुठ राजा गमानार जोर पूजापति आज  
 भी ह। जिसका मत्यव यह नया कि व पूरे पूरे सरक्षक बन चुके ह।  
 केविन अनुकी गति अस जोर है। यत् पूजा जा सनता है कि क्या वतमान  
 राजाआ जोर दूसरे आगास गरीवके सरक्षक बननकी आगा रखी जा सकती  
 है। यत् वे अपन आप रस्ने नया बन जाने ह तो परिस्थितिका जार जवर  
 दस्ती अनुक यह गुधार करा रेगा। हा व सपूण विनागकी आमजित कर तो  
 दूसरी बात है। जब पचायन राज स्थापित हा जायगा ता गवमत वह काम

करेगा जो शिवा बन्धी नहीं कर सकता। जमानारा पूजीपतिया और राजाआकी बनमान मता तभी तब कायम रह सकती है जब तब साधारण लोग अपना सुखी तावतवा खड़ी तरह पहचान नहा उन। यदि लोग जमानारी या पूजीवादी वुरात्रीव साथ मह्याग कर दें तो वह निष्प्राण हानर मर जायगा। पचायत राजमें पचायतरी ही बात मानी जायगी और पचायत अपन बनाय हज वानूनके जरिये ही काम कर सकती है।

हरिजनमवत १-६-४७ प १४८

१०२

### विपत्तिसे बचें

हाम्म अन्तर प्रज्ञाने औरमें मझ जिनना रूप जिस बातका दखवर हुआ अन्तना और किसी बातसे नहा हुआ कि बन्धी यत्न जमानारा जोर ताजुमनारान अपने जीवनको काफी माला बना लिया है और कामचिन्तण अुमाहम प्रयत्नित हानर व विमानाका भार कम कर र्ता है। मन वदुतग जमानारके पथित त्याचारके भयकर बणन मुन थ और यत् भा मुना या कि व तरह तरहका मोना पर किस तरह पायज और तागायत कर समूह करते ह जिनक परिणामस्वरूप विमानाका स्थिति बिस्तुत गतामरी-मा हा गभी है। अिसलिअ जिम तरहका बन्धा नोजवान ताजुमनार जद मर रूपनमें आय तो मुझ मानक आन्वय हुआ।

परन्तु अिम गुधारके और आग बन्द और सपूण हानकी जरूरत है। अनमें मे अल्प अउते जोर शिवाका वाव अभा भी जक बडा माला है। जो मालाका राम शिवा गया है जकर अिअ जनक मनमें जवबर मूत शृपावी और आत्म-मनापका भावता भी है जो ता गता चाणिय। जन्त बात यह है कि कुछ भा शिवा जाय व शिवाकाका जाता पर रूप लोग केनक शिवा जोर मूत नहीं है। यह वर्गाथम धमका भयकर शिष्टिता परि णाम है कि तपार्थित धर्मिय अपनका रूप मानता है और मगर विमान परम्परागत निष्पताका र्जा नपचाय य मानवर स्वाकार पर र्जा है कि जुगत साममें घरी शिवा है। यदि मान्वाय समाजका गान्धियुग माग पर मधा प्रगति करनी है तो धर्मिय बन्धा शिवा ता र्जा व र्जाकार कर र्जा हागा कि शिवाका नी दगा हा आमा है र्जा र्जा है और अपना दीनक कारण व गरीबम र्जा र्जा है। र्जा जामानक जमराता शिवा अगी र्जा अर्ध भी अपन आन्वय मरणा मारता चाणिय। यत्त लम ता यत है अम यह समयकर अर्ध र्जाता चाणिय कि अमका अुपवाग अर्ध अन

संरक्षित किसानाकी भलाकीके लिये करना है। अगु हालतमें उ अपन परिश्रमके कमीगनन रूपमें वाजिब रकमत ज्यादा नहा गे। अिस समय धनिक बगक सवथा जनावश्यक ठाग्राग और फिजुगवर्चीमें तथा जिन किसानके वाचमें वे रहन ह अनके गदगा भरे वातावरण और कुचग डानन वाके दारिद्र्यमें बोधी अनुपात नही है। अिसलिये अर आगग जमीनार किमा नवा बहुत कुछ बोझा जो वह अभी गग रग है जवतम घग दगा। वट किमानाने गगरे सपकमें आयगा जीर अनकी आवश्यकताआका जानवर अग निरागाके स्थान पर जो अनके प्राणाका मुगाय डार रही है जनमें आगाका सचार करेगा। वह किसानके सफाआ जीर तदुरस्तीक नियमके अनानका दगावकी तरह देखता नहा रहेगा बल्कि अिस अनानको दूर करेगा। किमानके जीवनकी आवश्यकताआकी पूति करनके लिये वह स्वय अपनका लरिद्र बना गेगा। वह अपन किसानाकी आर्थिक स्थितिका अध्ययन करेगा जीर अस स्कूग खोडगा जिनमें किसानके घाचाके भाय साथ वह अपन लरके बचाको भी पगयगा। वह गावके कुअें और तागावको साफ करायगा। वह किसानाको अपनी सडकें जीर अपन पाखान खद आवश्यक परिश्रम करक माफ करना सिखायगा। वह किसानके बरोकटाक डिस्तेमालके लिये अपन सुनक वाग नि सकोच भावस खोड दगा। जो गर जरूरी अिमारतें वह अपनी मौजके लिये रखता है अुनका अपयोग अस्पताग स्कूग या अस ही दूसरे कामोंने लिये करेगा। यदि पूजीपति बग वाडका मकेत समचकर सम्पत्तिके बारेमें अपन अिस विचारको बदल डाले कि अस पर अुसका जीववर प्रत्त अधिकार है तो जा सात गख धूरे आज गाव कटगने ह अुह आनन फाननमें गान्ति स्वास्थ्य जीर सुनके धाम बनाया जा सकता है। मेरा दल बिगवास है कि यदि पूजीपति जापानके अमरावाका अनसरण करे तो वह सचमच कुछ खायगा नही जीर सब कुछ पायगा। बेबड दो भाग ह जिनमें स पूजीपतियाको अपना चनाव कर गेता है। अक तो यह कि पूजीपति अपना अतिरिक्त सग्रह स्वच्छाम छोड दें और अमके परिणामस्वरूप सबका वास्तविक सुख प्राप्त हा गाय। दूसरा यह कि अगर पूजीपति समय रहते न चेतें तो कराडो जाप्रत किन्तु अनान जीर भूख गग देगमें अमी गडबग मचा दें जिस अक बगगागी हुसूमतकी फौजी गावत भी नही मिटा सकती। मन यह आगा रखी है कि भारतवप अिस विपत्तिसे बचनमें सफल रहगा। अुत्तर प्रदेगके कुछ नौबवान तागुकेदारसे भरा जो धनिष्ठ मपक हुआ है अससे मेरी यह आगा बगवती बनी है।

## सूची

अखिल भारत ग्रामाद्याग-मघ ७४  
 -स्वछापूण गरार-थमवा अक  
 प्रयाग है १०२  
 अखिल भारत चरवा-मघ १३ ७४  
 १२२  
 अटुन्मि लास्ट ३२, ४१, ९६ ९८  
 अपरिग्रह १७०-७१ १७२-७५  
 १८७-८८  
 अमेरिका ३३ ४६  
 अग्रह्याग आगालन -जनतामें आत्म  
 गौरव और गकिनका भान जाग्रत  
 करनका प्रयत्न है ३५  
 अस्तनय १७० १७१-७२  
 अस्पता -व्यसन पीडा नतिक पतन  
 और मन्वी गुणमीना बायम  
 रगत ह ४  
 अस्पृश्यता ११-१२  
 अहमतावाता मजदूर-मघ ४२ १०६  
 अहिमा १५४  
 आर्था गमानता १४७ १४८ १४०  
 १५० १५१-५४  
 अिगण १  
 अिगि ००-३१  
 अीगापतिग ७५  
 शुभाचर वनर्जी ११  
 अनी वगण डॉ० ११  
 अङ्गु दानरघु १००  
 अन्न आगविगण ह्यम -वाप्रग  
 जनत ११  
 अम जन गव ८०  
 अम० डा० (महाग्न दगाभी) १०३  
 अग पी० जग १४०  
 अगु गापी १६७

वजन वाअिगे मर ३१  
 वलवता-आधुनिक सम्यताम्पी महा  
 मारीका अहु है ३  
 वाप्रस १८३ -वा अहृस्य १०-१३  
 -वा अकमात्र ग्य है भारतके  
 सभी वर्गोंक हिताकी रसा ३६  
 -वा कराची अधिवानवाला  
 प्रस्ताव १५-१४ -ने १०२०में  
 अस्पृश्यता निवारणका राजनीतिक  
 वायत्रमका अग वनाया ११-१२  
 -मूत किमानाका मगठन है  
 १२ -राजाआके घरतू और  
 आन्तरिक मामगमें हम्मअप किये  
 बिना अुनकी सवा करता है १२  
 -सग भारतीय हिता और मव  
 वर्गोंकी प्रतिनिधि हानका दावा  
 करती है ११  
 वाग माकम ८३  
 वागीचरण वनर्जी ११  
 वावूर ३०  
 वागारगग मगवाग ११७  
 वे० टी० पाग ११  
 वमी मि० १५६  
 वगीवगड ५४  
 वापीजी -अगिक प्रनिरगाव वारेमें  
 ६२-६३ -अगिग गनाक  
 वारमें ६०-६१ -वा आगिक  
 समानताका अय १४७-४८  
 -वा रामगग १८-१०  
 -वा रगनकी गालमत्र परि  
 पकी फडग म्कचर मव  
 कमीक गामन गिया गया  
 माग १०-१८ -वा वगन  
 प्रिदिया नगन गिगन अग

सिपानकी प्रचार-समितिक पर्वो  
 जवाब ७-८ -की बल्पना  
 स्वरायम राजा जीर खरा  
 स्यान २८-४ -की गाधी  
 राय की याख्या ७-८ -की  
 गावाकी जव रचनामें जमागर  
 जीर साहूकारका स्यान ७६-७७  
 -की दृष्टिमें अहिंसा व सत्य जव  
 ही सिक्केके दा पहलू ४३ -की  
 दृष्टिमें धन नहा श्रम श्रेष्ठ है  
 ४२ -की दृष्टिमें सत्ता साध्य  
 नही साधन है २७ -की दृष्टिमें  
 सत्य जीर अहिंसा समाजवादक  
 मूल आधार ह ४४-४५ -की  
 दृष्टिमें समाजवाट ४२-४३  
 -की पृथिग वकी बल्पना ६३-  
 ६५ -की रायमें अगर सब  
 लाग राटीके श्रिअ श्रम कर  
 तो दुनिया स्वग धन राय  
 १०५ -की रायमें अहिंसक  
 मागसे बगबद्ध टाग ना सकता  
 है ७५ -की रायमें अहिंसक  
 विराधकी शक्ति रचनात्मक  
 कार्यक्रम पर अमर बनस हा  
 पदा हा सकता है १७ -की  
 रायमें अहिंसाके कागम पराजय  
 जसा गन नही ७४ -की रायमें  
 काग्रम जन सत्य जीर अहिंसाका  
 न छोडें ६८ ७० -की रायमें  
 काग्रमी बना जीर अहिंसा ६६-  
 ६८ -की रायमें काम ही  
 गरागीका जवमान श्रिगता है  
 १३६ -की रायमें श्रानिकारी  
 तरीका भारतमें सफर नही हा  
 सकता ३५ -की रायमें गाताका

या समयन ही है १००-०४  
 -की रायमें बद्धिपूराक सिया हुआ  
 गरीर उम गमाज गमाजा जच्च  
 तम प्रचार है ११५-१९ -की  
 रायमें भारतक पत्रीपति तापान  
 व जमरावाका जनसरण गर ता  
 कुन तापेग नहा १ ६ -की  
 रायमें भौतिक मुविधाआकी  
 बद्धि नतिक विवासान मर  
 नही करती ४ -की रायमें बद्धक  
 द्वारा भागनता स्वराय जमभव  
 ३५ -की रायमें बग विग्रह  
 अनिवाय नही है ७६-७८ -की  
 रायमें गरीर-श्रमका अय ९५  
 -की रायमें गारीरिक उम हमारा  
 जमशान कतय है १०३ -की  
 रायमें सत्य व अहिंसाको काग्रम  
 क विधानमें निका देना चाहिय  
 ६९ -की रायमें समाजवादी  
 श्रानि रामरायकी आर जायगी  
 ७८ -की रायमें समाजवादी  
 श्रानिस हिंदू मस्तिमका झगडा  
 गान हागा ७८ -की रायमें  
 सर्वोप्य की गि राय ९८-९९  
 -की रायमें हम मरवा खुके भगी  
 बन जाना चाहिय ९७ -की रायमें  
 हिंसा या अत्यागीनररणम स्वराय  
 नहा मिलेगा ३२-३४ -की  
 हिंसाकाकी आजादीकी गना  
 २१-२३ -की गनाकी आजादी  
 १८-१९ -के स्वराय पर कुठ  
 विचार ३५-३८ -को अुनार  
 अयदा काजी भी श्रिगटरगाही  
 मजर नही ७९ -ग्रट श्रिगनन  
 साथ समान भागागरीक विषयमें  
 १४-१५ -पर रस्किनकी



पुस्तक जन्म दिवस 'गल्प' का  
 प्रभाव ०/ -मंत्रियांक वतनर  
 धारमें १५-१८ -मरदाना  
 के मिद्वानवा क्या तर्जनी  
 त्त ह? १६२-६५ -मताका  
 प्पानवरण आनन्दयक मानव थे  
 पर जनताय गायणका अत  
 चान्त ४ ५६ -मि स्वराय  
 में आपनिक मन्थना का ज्ञान  
 दार मन्थन रत्न ह २-६  
 गाथा जिवित ममतीता ६१  
 गाथा-मना-मप १२२  
 गीता १८८ -रा मानसी व्याख्या १०१  
 गरावाणी २ -३०  
 गाथमत्र परिषद १८०  
 ग्रामम्बराय २५-२३  
 घनयामनाय विष्णु १८८ -वै  
 व्यापारी वगवे धीन जनाकी  
 यनाय १८८-१९  
 चर्या ८  
 चरित १० -१ भाषणरा मागना  
 २०-२१  
 जमनागन्त्री (रजाज) ६० ३३  
 १६१ १८१  
 जमान गाथर १ ६  
 जमागर ११० १०४ १० - ६  
 जपप्रवाणारायण ६६ -ना गाथाजी  
 का शिया गगा प्रगाय ४८-१०  
 जसन्तगा नर ३१ ३३  
 ज्ञा विचिन्तन १३३  
 ज्ञान १११  
 टाग्न मू १५  
 टॉन्स १३ ५ ०० १०३ १०१  
 ११० १२०  
 टॉन्स धाम ६१

टम्बीगिप ११२-१३  
 तिन्त्र डा० ११०  
 तुङ्गागम १३१  
 थोरा १३३  
 दाडामूच ६०  
 गन्धभाजा नोगजी ११-१२ -  
 काश्मीर जीर मसूरता प्रस्त ह  
 शिया १२ -भारतके वद्ध पिता  
 मह ११  
 मि मन्थन विष्णु १६२  
 नजी तागम १२१  
 नरन्ति पराय १२०  
 निमन्तुमार धाम १ ५ १६२  
 पत्राय रात २४ १०४-०१  
 पत्रिग्रह १००-०२  
 पीत्र मग्मा १३३-८०  
 पूजीपति १०६-०१  
 अच० जम० पागा ०/१  
 प्यारगन्त्री ६  
 किगाजगाह मन्ता ११  
 फाम  
 फन्कि जगम १  
 चन्तान तदत्रा ११  
 चन्द्रश्री-जाधरि मन्थान्नी मन्  
 माता अद्वा है ५  
 चन्द्रण रगत १४२  
 चाजिर  
 चारडागा १०९  
 चागाम्भर रत्न -६०  
 चागाम्भर ३६  
 दिगर वर मन्थ जिवित्प १००  
 वद्ध १११  
 चागागा ०५ ०० १०६ १०३  
 १०८ १२०

योगविम ७९-८० -वा अय  
८०-८६

ब्रड लेबर ११६-१८ देखिय राटीके  
लिअ थ्रम

भगवदगाता ९६

भणसारी १७९

भारत १६ -वा अतीत अतिगय अुवा  
है १६ -मस्त्रिम और हिदू मस्त्रि  
तिका प्रतिनिधित्व करता है १६

मन्तगज धीगरा ३१-३२

मधुसूदन दाम १२९

मुस्त्रिम गीग ६४

मुहम्मदअली मोगाना ११

मेजिनी २९-३

मोतीगजजी नहरू ६

मार्के ३२

रस्किन ३२ ३४ ४१ ९६ ९८ ११९

रान ११

रामराय १८ ३८

रामायण ६१

रूम ४६

रोटीके लिअ थ्रम १ ७ १०८

११६-१८ देखिय ब्रड लेबर

साकुर्तीवाले ४१

गुजी फिगर ४५-४७

उनिन ४७ ८ ८४

घनयुद्ध ७५-७६ ८८-८९

वलम्भभाजी पत्र १ ६

वालडन १७७

विभीषण ३९ ६१

शकरराव देव ६८ १८५ -वा पत्र

गाधीजीवा ६६-६७

गरीर-थ्रम ९५ ९६-९७ १ ६- ८

१२ १३५ १३८ १४ -४१

१४२-४४ -वा आथ्रम जीवन  
में स्यान १ ८-११

थ्रम १३० -पत्र १ ०-०२

सरगव (ट्रस्ती) ८९ -वा आहमव  
समाजमें स्यान १६८

गरक्षकता (ट्रस्तीगिय) १६१-६२

१६६ १६७-६८ १६९ १८१

-वा सिद्धात १५९ -क्या है?

१६० -धनवानाकी १८१-८२

सत्याग्रह -रे जरिय राजनीतिक  
आर्थिक और नतिक रागाका  
मिटाया जा सकता है ४५

-गेवगिक्षा जीर गेव जागृतिवा  
सबसे बडा माधन ४

समाजवाद ७१

मरोजिनी नायडू ११ ८७

सर्वोन्प ४६

सट साअिमन ८३

सेवाग्राम ६२

स्मटस जनरल ३३

स्टानिन ४७

स्वराय ७-८ २८ ३३ ३९ -की

योजनाम धनवाना जीर गिक्षिता

का अरन स्वायोंको विक्रीन

करना हागा ३६ -की याव

हारिक परिभाषा ९ -जनताको

सत्ताका नियमन और नियवण

करनकी गकिनका भान करानसे

हागा ३७ -नीतिके रास्तेसे

पाना है ३४ -में रेऊ अस्पता

यन और सना जनताके भन्के

लिअ काम करेंगे ७-८

हरिजन १३७

हिद स्वराय ३ ८





## मेरे सपनोंका भारत

लेखक गांधीजी

जिम मग्रहमें भारतके सामाजिक आर्थिक राजनीतिक धार्मिक आदि सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्ना पर गांधीजीके विचार पेग किये गये ह। जिनमे पता चलता है कि राष्ट्रपिता स्वतंत्र भारतमे क्या क्या आगामे रखत थे और खुसका कमा निर्माण करना चाहते थे। राष्ट्रपति डा० राजद्रप्रसाद अपनी प्रस्तावनामें लिखते ह मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक गांधीजीकी शिक्षाके दुनियाका अमूल्यको प्रस्तुत करनवाके साहित्यमें अब कीमती वृद्धि करेगी।

कीमत २५०

डाकच १००

## शरीर-श्रम

लेखक गांधीजी

हमारे समाजमें शरीरकी मेहनतको और मेहनत करके राटी बमानवाका हकी नजरम दया जाता है। गांधीजीने श्रमकी प्रतिष्ठाको बढानेका प्रयत्न किया। यहा जिस विषयमें गांधीजीके जा विचार पेग किये गये ह उनम शरीर-श्रमकी व्याख्या जोर अगुके महत्त्वका युगकी आवश्यकताका और समाजका अंशम हानेवाका गभावा पता चलता है।

कीमत ०२५

डाकच ०१३

## सर्वोदय

लेखक गांधीजी

गांधीजीके मतानुसार सर्वोदयका अर्थ आत्म समाज-व्यवस्था है। जिस पुस्तकमें सर्वोदयकी विस्तृत चर्चा का गयी है और बताया गया है कि कद कद मिट्ट किया जा सकता है। जिस मग्रहका अर्थय समाजक सामने गांधीजीका गानि और स्वतंत्रताका अनात्त सत्ता पेग करना है।

कीमत २००

डाकच ०८५

मदनीयन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४